ॐ

एक ॐकार सद्गुरु प्रसाद ।

अथ

अभिलाखसागर।

श्रीगजवदनगणेशाय नमः ॥ १ ॥ श्रीगुरुदेवसद्गुरवे नमः ॥ २ ॥
श्रीरामकृष्णाय नमः ॥ ३ ॥ श्रीसरस्वतीशारदायै नमः ॥ ४ ॥
श्रीशंकरशिवायै नमः ॥ ५ ॥ श्रीईश्वरपरमेश्वराय नमः ॥ ६ ॥
श्रीभगवन्नारायणाय नमः ॥ ७ ॥

प्रथमतरंग प्रारंभ ।

प्रथम—वारंवार श्रीगुरु महाराज के चरणकमल की धूर को आदि मध्य अन्त तीनों काल में पैरीपैर और मत्था टेकता हूं जो भवसागररूपी संसार महा घोर पार होने के निमित्त सहज जहाज है। और अज्ञानरूपी अन्धकार नाश होने के कारण अखण्ड सूर्य्य है ।

दूसरे—निर्गुण निराकार निरंजन अविनाशी अलख नाम को मन कर्म वचन से कोट्यानु कोटि निहोरा और वन्दना करता हूं । जो सर्वव्यापक और सर्वकर्त्ता और सर्वज्ञ होकर आजतक किसी के निश्चय में नहीं आया । और ब्रह्मा विष्णु महेश शेष गणेश आदिक देवताओं ने भी उस का भेद नहीं पाया ।

[illegible]—उस निराकार की इच्छा माया महामो-

हनी को जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनों अवस्था में महापद्म जु-
हार और नमस्कार करता हूं। जो अद्वैत अखण्ड परब्रह्म
परमात्मा का ज्ञान नष्ट करके आवागमन जन्ममरण गुप्त
उपाधि संसार में सर्वज्ञ चैतन्य साक्षी को मोहित और बं-
धन किया। और कनक कामिनी रूपी विषय होकर चारों
प्रकार के जीव को कीट मर्कट के समान अज्ञान और अ-
शक्त किया।

चौथे–आहार निद्रा मैथुन तीनों प्रकृति को स्थूल सू-
क्ष्म कारण तीनों शरीर से हजारों निछावर और अरदा-
स करता हूं। जो चौरासी लाख योनि में प्रधान होकर
कोई जीव चराचर को क्षणमात्र शान्त नहीं किया। और
जीवन पर्यन्त हर्ष भय तथा दुःख सुख से कोई निवृत्त
नहीं होता।

पांचवें–तमोगुणी अहंकार हम को प्रात मध्यान्ह सा-
यंकाल त्रिकाल में अर्ब खर्ब पालागन और प्रणाम करता
हूं। जो इन्द्रपदवी प्राप्त होने पर भी आशा व तृष्णा व
वासना से रहित नहीं होता। और अज्ञान रूपी शरीर
का तदाकार होकर अपने निराकार रूप को भूलकर शरीर
के दुःख सुख को अपना दुःख सुख जानता है।

छठवें–अपनी माता पिता को भूत भविष्यत् वर्त्तमान
तीनों काल में लाखों विनन्ती और करुणा करता हूं। जिस
ने मल और मूत्र से इस देह को विमल करके अज्ञान समय

में पालन किया। और नानाप्रकार का प्रपंच समान ज्ञान, संसारी मार्ग का उपदेश किया।

सातवें—भेष और बाना को बाल तरुण वृद्ध तीनों अवस्था में साष्टांग अनन्त दंडवत और धोक देता हूं। जिस के बनाने में यह शरीर प्रपंची पंच धातु जड की कुधातु से सुधातु हो जाती है। और पाषाणरूपी जड बुद्धि विमल होकर पारस रूप हो जाती है।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद प्रथम तरंग इष्टदेव आदिक वन्दनविचार नामानिरूपण सम्पूर्ण॥ १॥ A. Pinell

दूसरा तरंग प्रारंभ।

अथ श्रीगुरुदेवाय नमः। अब कुधातु जन्म की कथा अथवा गृहस्थाश्रम की अवस्था की व्यवस्था वर्णन करना इस ग्रन्थ में निरर्थक और विस्तार है। केवल सुधातु जन्म की कथा सूक्ष्म सिद्धान्त ब्रह्मज्ञान का जो सन्त और महात्माओं के सत्संग में प्राप्त हुआ अभिलाखसागर ग्रन्थ नाम धरके गुरु शिष्य का संवाद जो तरंग और लहरी के समान है वर्णन करता हूं। जिस के पढने और सुनने से श्रोता वक्ता अधिकारी जन सिद्धान्त पदार्थ को जानकर आत्मज्ञान और ब्रह्मज्ञान के सुख को प्राप्त हो वेंगे। और अनेक प्रकार की भ्रमना जो ब्रह्म निरा कार की विचार में ब्रह्मज्ञानी जगतज्ञानी वादविवाद करते हैं नाश होकर निश्चय तत्वपद जो अनेकन महा-

त्माओं के सत्संग से सिद्धान्त हुआ जानेंगे, और दास को इस परिश्रम के बदले भूल चूक माफ करके आशीर्वाद देवेंगे । यह मूर्ख अज्ञान सर्व भेष का सेवक अभिलाखदास उदासी जब संचित प्रारब्ध के संयोग से संसारी व्यवहार के योग्य नहीं रहा । अथवा, इस प्रपंच के संयोग अपने में सामर्थ्य नहीं देखा तब जगत् के व्यवहार और सम्पदा से हानि ग्लानि मानकर भगवतशरण जाने की इच्छा की और अच्छे २ सन्त महात्मा सिद्धों के शरण में जाकर भगवतशरण जाने की राह का विचार किया । और बहुत काल सातों पुरी चारों धाम चारों दिशा में ऐसे गुरु की खोजना में जो भगवतशरण जाने की राह शुद्ध निर्मल उपदेश करे भ्रमता रहा। बडे २ सिद्ध महात्मा श्रीमन्त सन्त महन्त स्थानधारी जमातधारी जिन के अखाडे में हजारों चेला नौकर चाकर हाथी घोडा राजेश्वरी स्थान मकान माफी जागीर बरखासनवालेमिले परन्तु अपना मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ। वे लोग भगवतशरण जानेकी राह क्या जानें ? तब लाचार होकर जंगल उत्तराखण्ड को जहां सुमेरुगिरि पर्वत और हिमालय पहाड और सन्त महात्माओं का मूलस्थान और खान है तहां चला गया। वहां भी अनेकन महात्माओं के सत्संग में कुछ काल रहकर उन का ज्ञान ध्यान देखता रहा। जो सन्त महात्मा अपने विचार में अच्छा आता रहा। उस

की सेवा करके प्रसन्न हुए उपरान्त भगवतशरणं जाने की राह पूछता रहा। और वे लोग भी अपने २ ज्ञान बुद्धि-प्रमाण जैसा जिस को अनुभव था, तैसा तिस को भगवत-शरण जाने की राह उपदेश करते रहे। वही संवाद यथार्थ जैसा का तैसा गुरुशिष्य का पश्नोत्तर केवल ब्रह्मज्ञान का सूक्ष्म सिद्धान्त कहता हूं। श्रोता वक्ता अधिकारी सम्बन्धी जन ब्रह्मज्ञानी मेरी वन्दना और नहोरा पर कृपा करके अच्छी तरह ध्यान रक्खें, कि इस ग्रन्थ में महात्मा गुरु-शब्द अनेक हैं उन का विस्तार आगे ग्रन्थ देखने में प्रगट होगा। नाम और पता उन का अच्छी तरह ध्यान में नहीं है। इस कारण नहीं लिखता। और मैं शब्द एक केवल ग्रन्थ का कर्त्ता मूर्खता अज्ञानता की सम्पूर्ण सत्ता **अभिलाखदास उदासी** आत्मज्ञानी अयोध्यावासी हूं। ग्रन्थ का यह कारण (उत्पत्ति) जानना चाहिये।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्य संवाद दूसरा तरंग कारणउत्पत्ति ग्रन्थविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण ॥ २॥

तीसरा तरंग प्रारंभ।

॥ प्रथम लहरी ॥

भगवत शरण जाने की राह भगवान् जाने ।

अथ श्रीइष्टदेवाय नमः। प्रगट हो कि जंगल उत्तराखंड में अनेक पहाडों के बीच में एक बडा पर्वत है।

उस का आदि और अन्त किसी ने नहीं जाना। उस को छोटा सुमेरु गिरि नाम पर्वत कहते हैं। उस पर अच्छे २ महात्मा सिद्ध इच्छारूपी ज्ञानस्वरूपी वास करते हैं। उन का हालसम्पूर्ण देवसमान है। आकाशगंगा का जल, कन्दमूल भोजन, अष्ट प्रहर परब्रह्म का ज्ञान ध्यान, वैराग्य में दृढ, इस रहनी और वृत्ति से सदा आनन्द में रहते हैं। उस मंडली में एक महात्मा सम्पूर्ण ज्ञान और भक्ति के रूप जो दर्शाते थे तब मैं उन के पास गया और सब हाल अपना कहकर भगवतशरण जान की राह पूछा। तब महात्मा गुरु बोले कि मेरे को ४ जुगअथवा ४८ वर्ष हो गये, राह का पता नहीं मिला। मेरे ज्ञान में जिस को वह अपनी शरण में बुलावे वह जाय सक्ता है। और रस्ता भी उसी को प्राप्त होगा। दूसरा कोई जाय नहीं सक्ता, और मार्ग भी प्राप्त नहीं हो सक्ता। मैं हाथ जोडकर कहा कि भगवतके बुलाने का क्या कारण है? उस के दरबार में अपने बिना कौन बडा कार्य है? जो बुलावेंगे। इस ज्ञान में संसारी प्रपंच छोडनेवाले धोबी के कुत्ते हुए। न घर के न घाट के। और मैं भी सर्प की तरह अज्ञान होकर छछूंदर पकड लिया। अब छोडता हूं तो अंधा होता हूं और खाने में प्राण जाता है। और तुमने पहले अपने गुरु से राह का विचार क्यों नहीं किया? और जब गुरु ने राह नहीं बताया तो तुमने क्या उपदेश पाया? और चार

जुग बिना विचारे क्यों परिश्रम किया? आखिर ऊंट का पाद हुआ। और आगे भी जो परिश्रम होगा निरर्थक जावेगा। मेरे ज्ञान में भगवतके बुलाने पर आसरा रखना निश्चय आकाशफलफूल की आशा करना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे। मुझको जबाब दिया कि, मेरे को भगवत शरण जाने की राह नहीं दर्शाती और तुम भी जब खोजना करके हार जाओंगे तब हमारा ज्ञान याद होकर प्रमाण होगा।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंग में प्रथम लहरी मार्गविचार भगवतशरण नामानिरूपण सम्पूर्ण।

॥ दूसरी लहरी ॥

हठयोग आदिक भगवतशरण जाने की राह बहुत हैं।

अथ श्रीसरस्वत्यै नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि भगवतशरण जाने की राह अनेक हैं। इस उपाय के वास्ते चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण व्यास भगवान् ने बनाया। और लाखों ग्रन्थ दूसरे आचार्यों के बनाये हुए मोजूद हैं। और योगशास्त्र प्रमाण अनेक राह भगवत्शरण जाने की प्रगट हैं। उन राहों में से किसी राह पर जाना चांहिये। मैं हाथ जोडकर कहा कि मेरे जाने के योग्य जो राह निर्मल और शुद्ध हो उस का कृपा करके उपदेश कीजिये मैं जाऊंगा। तब महात्मा गुरु बोले कि प्रथम राह भगवत्-शरण जाने की श्रवण मनन निदिध्यास है। भगवत् की कथा

अष्ट प्रहर प्रेम से श्रवण करना और उस का एकान्त में मनन करना। अथवा विचार करना। पीछे उस का निदिध्यास करना अर्थात् दृढ होना। उस प्रमाण चलना। अनेक भक्तों को इसी राह से भगवत् की प्राप्ति हुई। अथवा मुक्ति हुई। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि मुझ को कथा में प्रीति नहीं होती और अर्थ समझ में नहीं आता। और सुनी हुई वार्त्ता भूल जाता हूं और कथा आरंभ पहले निद्रा में नाक से शब्द आरंभ होती है। और पुराणों की कथा पर निश्चय नहीं आता। जैसे कुंभज ऋषि ने सातों समुद्र को हाथ की गदीपर रखकर पान कर लिया और पीछे मूतदिया। इस राह से मेरा जाना किस प्रकार से होवे। तब महात्मा गुरु बोले कि दूसरी राह भगवतशरण जाने की देव प्रतिमा पूजन है। विष्णु शिव शक्ति कोई देवता की मूर्ति पाषाण तथा धातुकी स्थापित करके नवधा भक्ति से विधिपूर्वक आचार्य उपदेश प्रमाण पूजन करेगा और उस मूर्ति के स्वामी को प्रसन्न करेगा तो उस को भगवत् की प्राप्ति होगी। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि मैं वादी के रोग से अशक्त हूं नित्य स्नान नहीं करता जल सांपस्वरूपी दर्शाता है। दो प्रहर तक नींद में पडा रहता हूं। कीर्त्तन भजन मूर्ति में कुछ प्रीति होती नहीं। इस राह से मेरा जाना क्यों कर होवे? तब महात्मा गुरु बोले कि तीसरी राह भगवत्शरण जाने की आत्मा की सेवा भक्ति और उपकार है। यथाशक्ति दूसरी

आत्मा को अपनी आत्माके समान जाने । बहुत भक्तों को इस राह से भगवत् की प्राप्ति हुई, तुम को भी होगी। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि जब अपने भोजन वस्त्र का ठिकाना नहीं है और अपना काम अपने से नहीं होता तब दूसरे का उपकार तथा सेवा होना कठिन है । मुझ को नित्य का कर्म सुमेरुगिरि (पहाड) समान दर्शाता है । इस राह पर मेरा जाना नहीं हो सक्ता। विचार करो। तब महात्मा गुरु बोले कि चौथी राह भगवतशरण जाने की तीर्थयात्रा है । जो कोई सातों पुरी चारों धाम और सर्व तीर्थ की परिक्रमा और दर्शन और स्नान करेगा वह निश्चय करके भगवत्शरण को जावेगा । मैं ने हाथ जोड करके कहा कि मेरे से एक कोस भी चला नहीं जाता। चारों अवस्था में एक भी तीर्थ होना दुर्लभ है। नित्य कर्म को थोडी दूर जाना पहाड हो जाता है । यह राह मेरे जाने योग्य नहीं है। तब महात्मा गुरु बोले कि पांचवी राह भगवत्शरण जाने की समाधि है। जो कोई अष्टांग योग सम्पूर्ण सिद्ध करेगा सो भगवत् को प्राप्त हो जावेगा। मैं ने हाथजोडकर कहा कि मेरे से जप तप क्रिया नहीं पूरी होती । तब अष्टांग योग कैसे सिद्ध होगा ? आसन लगाना, श्वासा चढाना बहुत कठिन है; मैं नहीं कर सक्ता। तब महात्मा गुरु ने छठवीं राह जलशयन जलधारा की बताया। मेरे सेठंढ का सहन नहीं हो सक्ता। सातवीं राह चौरासी

धूनी पंचधूनी के बताया। मेरे से अग्नि का तेज सहा नहीं जाता। आठवीं राह शूलशय्या बताया, उस में कांटा चुभता ''। नौवीं राह झूला बताया, उस में चक्कर आता है। दशवीं राह ऊर्ध्वबाहु होना बताया, उस में क्षणमात्र हाथ उठाया नहीं जाता। ग्यारहवीं राह मौनहोने का बताया, मेरेसे एक पल चुप रहा नहीं जाता। बारहवीं राह ठाढेश्वरी होना बताया, मेरेसे चार घडी खडा नहीं हुआ जाता। कमर में बडा दर्द होता है।

इस प्रमाण महात्मा गुरु ने अनेक राह बताया परन्तु मेरे जाने योग्य कोई राह नहीं पाया। तब जवाब दिया कि इस के सिवाय और कोई राह भगवत्शरण जाने की मेरे ज्ञान में नहीं है। जो कोई आजतक गया सो इसी मार्ग पर गया। तुह्मारा जाना भगवत्शरण में नहीं हो सक्ता। और कदाचित् दूसरा मार्ग तुह्मारे योग्य होवे तो विचार करो। मेरे को ज्ञान कुछ नहीं है।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंगमें दूसरी लहरी मार्गविचार नाम निरूपण संपूर्ण।

॥ तीसरीलहरी ॥

नाम की महिमा से भगवत्शरण को सब जाते हैं।

अथ श्रीशारदायै नमः। मैं दूसरे महात्मा गुरु के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ध्यान से आकाशमार्ग में देखो। और मेरी

आंखों पर अपना हाथ फेर दिया। उस राह की लीला जो देखता हूं तो बडे २ आलसी अकर्मी अज्ञानी अजात विमानों पर चढकर आनन्दसमेत भगवत्शरण को चले जाते हैं। मुझ को यह राह बहुत पसन्द आई और महात्मा गुरु से उस राह पर जाने का उपाय पूछा। तब महात्मा गुरु बोले जो लोग उस राह पर जाते हैं उन से उपाय पूछ लो। मैं उस राह के निकट जाकर एक जानेवाले से तीन प्रश्न किये कि महाराज! आप कौन हैं और कहां जाते हैं और क्यों कर जाने की सामर्थ्य प्राप्त हुई? तब उस जानेवाले ने बडी बेपरवाई से मुझे जवाब दिया कि, मेरा नाम कबीरदास जुलाहा है और भगवत्शरण को जाता हूं। एक समय श्रीमहाराज रामानुजस्वामी ने काशी के मणिकर्णिका घाट पर रात को अनदेखे मेरे ऊपर पांव रख दिया। जब उन को आदमी मालूम हुआ तब दयावान् हो करके भगवत् का नाम मुख से उच्चारण किया। उस नाम को याद करके मैं ने मग्धा देश में प्राण छोडा। जहां जीव को मरने उपरान्त गधा योनि प्राप्त होती है। परन्तु उसी भगवत् के नाम के आधार से मैं भगवत्शरण को जाता हूं। यह सुनकर मैं चुप हो रहा। और दूसरे जानेवाले से भी वही तीन प्रश्न किये। उस ने भी ऐसा जवाब दिया कि मैं गणिका (वेश्या) हूं भगवत्शरण को जाती हूं। एक तोता को नाम पढाती थी उस आधार

से भगवत्शरण को जाती हूं। इसी तरह स्त्रीपुरुष जो कोई मिला, उस से उस राह के जाने की सामर्थ्य नाम की महिमा मालूम हुई यह सुनकर महात्मा गुरु की शरण में जाकर सब कथा विस्तार सहित कह दिया तब महात्मा गुरु बोले कि अब तुझ को क्या सन्देह है? नाम की रटन करके तू भी चला जा। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि भगवत् के नाम अनन्त हैं, किस नाम की महिमा ऐसी है जिस के आधार से मैं भगवत्शरण को जाऊं? यह शंका सुनकर महात्मा गुरु बोले कि यह शंका मेरे से समाधान नहीं होगी। मेरे ज्ञान में भगवत् का सब नाम बराबर है। जिस नाम की रटन करेगा वही मुक्ति दाता है कम सिवाय कोई नहीं है।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंग में तीसरी लहरी मार्गविचार नामनिरूपण संपूर्ण ।

॥ चौथी लहरी ॥

रामनाम प्रधान होकर बारह वर्ष भजन हुआ ।

अथ श्रीजानकीवल्लभाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि यहां से थोडी दूर पर एक विचारनगर की हाट है वहां भगवत् की दशों अवतार की मूर्ति एक २ रुपैये पर बिकती हैं मोल लेकर आओ। तब तुम्हारा बोध कर दिया जावे। मैं तुरत उस हाट में गया और दुकानदार

को दश रुपैया देकर दशों मूर्त्ति भगवत् की माँगी। तब उस ने नौ मूर्त्ति नौ अवतार की मुझ को दीं। और एक रुपैया फेरकर कहा कि राम अवतार की मूर्त्ति मेरे यहां जितनी बनती हैं उतनी सब महादेवजी के यहां चली जाती हैं। और एक मूर्त्ति का दाम लाख रुपैया मिलता है। मैं चुपचाप वह नौ मूर्ति और एक रुपैया फेर लाकर महात्मा गुरु के आगे रख दिया। और हाथ जोड़कर कहा गुरु महाराज! इस मूर्त्ति के ज्ञान से मुझ को बोध होगया कि सब नामों में रामनाम बडा है परन्तु यह संदेह उत्पन्न हुआ कि इस का कारण क्या है? तब महात्मा गुरु बोले कि रामावतार सब अवतारों में राजा हो कर ग्यारह हजार बरस राज्य किया और परशुराम अवतार को जनकपुर में गुप्त ज्ञान दिया और वाल्मीकि ऋषि इस नाम को उलटा मरा मरा जाप करके सिद्ध हुए जो पहले व्याधा के समान थे। रामनाम उलटा सीधा बराबर है। सब में रमा होने से रामनाम हुआ और जो सदा काल अमर रहे उस को रामकहते हैं। और रमापति भी राम को कहते हैं। और शिवजी अपना इष्टदेव जानते हैं। और सर्व उपासनावाले अन्तसमय राम राम सत्य कहते हैं। इस उपदेश को सुनकर मुझ को रामनाम का बडा बोध हुआ और भजन में बडी प्रीति उत्पन्न हुई और महात्मा गुरु से भजन की रीति विचार किया। तब महात्मा गुरु

बोले कि जंगल में पहाड के ऊपर एकान्त में रहना, कन्द मूल फल भोजन करना, प्रहर रात्र बाकी रहे नित्य उठना। स्नान करके नित्य कर्म गायत्री गुरु मंत्र आदिक पढने के पीछे जल अग्नि सन्मुख रखकरके तुलसी की माला लेकर बैठना। एक लाख रामनाम का अजपा कंठ से जाप करना। पांच पहर में पूरा हो जाता है। सांझ को तारा देखकर फलाहार करना। पीछे एक प्रहर रात्र को रामायण का पाठ करना। एक प्रहर पीछे मध्य रात्रि में शयन करना। अष्ट प्रहर राम का ध्यान करना। कोई दिन इस साधन में तेरा मनोरथ सिद्ध होगा और प्रत्यक्ष दर्शन राम का होगा मैं ने महात्मा गुरु की आज्ञानुसार बडे प्रेम से बारह वर्ष जंगल उत्तराखंड में उसी सुमेरुगिरि (पहाड) के ऊपर वनस्पति कदमूल का भोजन करके एक लाख नाम नित्य अजपा जाप किया। और जैसा आहार व्यवहार महात्मा गुरु ने बताया था उसी प्रमाण सब सम्पूर्ण वर्त्ताव किया और तुलसीकृत रामायण के भी तीन पाठ पूरे हो गये। सर्व व्यवहार महात्मा गुरु की आज्ञानुसार पूरा हुआ। परन्तु कुछ चमत्कार प्रत्यक्ष देखने में नहीं आया।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद तीसरे तरंग में चौथी लहरी मार्गविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

इति तीसरा तरंग समाप्त ॥ ३ ॥

चौथा तरंग प्रारंभ ।

॥ प्रथम लहरी ॥

अनेकन जन्म के भजन में भी प्राप्त होना उसका दुर्लभहै ।

अथ श्रीराधावल्लभाय नमः । जब बारह वर्ष रटन करते हो गया और राम का दर्शन प्रत्यक्ष नहीं हुआ अनेक अनुभव भयानक मनोहर शान्त जो हुआ वह भ्रमरूपी यथार्थ नहीं हुआ । कदाचित् सम्पूर्ण उस अनुभव का विस्तार इस ग्रन्थ में किया जावे तो महा भारत हो जावे। इस वास्ते कुछ वर्णन नहीं किया गया । और एक विचार अपने भूल का प्रसिद्ध हुआ कि महात्मा गुरु से सम्पूर्ण विधि भजन की पूछा था। परन्तु परिमाण नहीं पूछा कि कबतक भजन करना चाहिये ।इस संदेह के उत्पन्न होने से भजन की प्रीति सम्पूर्ण जाती रही । और ऐसा ज्ञान दृढ हुआ कि पहले भजन का परिमाण विचार करना चाहिये इस विचार में एक महात्मा के पास जो उसी पर्वत पर विराजमान रहे थे, मैं गया और भजन का परिमाण पूछा । तब महात्मा गुरु बोले कि हम को चौबीस वर्ष हो गये सवा लाख रामनाम नित्य एक पांव से खडा होकर अजपा जाप करता हूं । परन्तु चमत्कार देखनेमें अभी पहला दिन है और पिछले ग्रन्थों के सिद्धान्त देखने से प्रगट होता है कि अनेकन जन्म के भजन में भी प्राप्त होना उस का दुर्लभ और कठिन है। शेषजी दो हजार जिव्हा से सदा अखंड

भजन करते हैं। महादेवजी अठासी हजार वर्ष की समाधि लगाते हैं। सरस्वती शारदा गणेश आदिक देवता सदा भजन करते हैं। भजन का परिमाण कोई नहीं कह सक्ता। तुम को बारह वर्ष में महाप्रलय हो गया। यह ज्ञान सुनकर बडी चिन्ता उत्पन्न हुई। बारह वर्ष का भजन मिथ्या ऊंट का पाद हो गया। रामनाम विष समान कडुआ लगा। ब्रह्मप्राप्ति की आशा जाती रही। अनेकन जन्म के आसरा पर भजन नहीं हो सक्ता। तत्काल फल सब चाहता है। भजन की प्रीति विपरीत हो गई। सब आसन मुद्रा छोडकर जलपान त्याग कर दिया। पंदरह दिन अपने आसन पर निराहार पडा रहा और भूखा मौतका रास्ता देखता रहा।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें प्रथम लहरी भजनपरिमाण विचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ दूसरी लहरी ॥

सर्व जीव जड चेतन राम है।

अथ श्रीरघुवीराय नमः। उस समय में एक महात्मा गुरु सर्वज्ञ वेषवाले आप कृपा करके आये और मेरे दुःख का कारण पूछा। मैं ने सब हाल अपना विस्तारसहित कह सुनाया। तब महात्मा गुरु बोले कि भजन का परिमाण किस वास्ते पूछते हो? तुम को क्या चमत्कार देखने की इच्छा है? मैं ने हाथ जोडकर कहा कि मझ को केवल

राम के दर्शन की इच्छा है और कुछ वासना नहीं है। तब महात्मा गुरु बोले कि मेरे ज्ञान में यह जीव जड चेतन्न सब राम है। सब में वही रमा है। उस का शुद्ध चैतन्यस्वरूप पहले निराकार था। और पांच तत्त्व से भी जुदा था। यह सब को प्रगट है। जब अपनी इच्छा से अपनी माया में मोहित होकर आकार हो गया तब जीव हो गया। फिर जब माया का संग छोड देवे, तब राम हो जावे। जैसे कोई पंडित वेदपाठी वेश्या के संग बाजा बजावे, भडुआ कहावे। जब उस का संग छोड करके पोथी पढे तब पंडित हो जावे। और जैसे सिंह का बच्चा आदि से बकरियों में रहे, सिंह की पुरुषार्थ नहीं रहेगी। इस प्रमाण यह निराकार ब्रह्म माया के संग आकार होकर जीव हो गया। तेरे को चमत्कार देखने की इच्छा है तो माया का संग छोड दे। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि माया बडी प्रबल है। ब्रह्मलोक तक इस का राज्य है। त्रिभुवन में इस को कोई जीत नहीं सका। ब्रह्मा पंचमुख से चतुरानन हो गये, महादेव मोहनी रूप पर कामातुर होकर दौडे, नारद का मुख बंदर का हुआ, चन्द्रमा का कलंक सर्व जगत् को प्रगट है। इन्द्र के शरीर में हजारो भग हो गये, गरुड के मोह को काग भुशुंड ने छुडाया। फिर हम ऐसे पापी जीवों को क्या सामर्थ्य है जो माया को छोड सकें? यह माया शरीर छूटने पर भी संग रहेगी। ऐसा शास्त्र का प्रमाण है। और माया ब्रह्म निराकार की

छाया है, विलग नहीं हो सक्ती। यह सुनकर महात्मा गुरु बोले कि मैं तुम्हारा समाधान नहीं कर सक्ता। मेरे को जो ज्ञान था वह कहा।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें दूसरी लहरी भजनपरिमाणविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ तीसरी लहरी ॥

काच के मोर्चे समान भजन से माया छूटती है।

अथ श्रीसीतापतये नमः। मैं दूसरे महात्मा गुरु के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु ने एक छोटा लोहे का कांच (मुकर) मोर्चे में भरा हुआ बहुत पुराना मेरे को साफ करने को दिया। मैं उस को आठ पहर साफ करके थक गया, पर सफा नहीं हुआ। तब महात्मा गुरु से विनंती की कि यह मोर्चा बहुत मुद्दत का है, एक दिन में नहीं छूटेगा। कदाचित् दो चार दिन में खटाई आदिक में छोडकर सफा करे तब छूटेगा। महात्मा गुरु ने अच्छा कहा। मैं चार रोज में साफ शुद्ध करके लाया, सन्मुख रख दिया। तब महात्मा गुरु बोले कि इसी प्रकार से माया छूट जावेगी। जैसा पापरूपी मोर्चा पुराना होगा वैसा उसके छुडाने में काल व्यतीत होगा। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि यह दृष्टान्त इस सिद्धान्त में प्रतिकूल है। आप ने विना

विचारे दुःख दिया। मोर्चा अनादि नहीं है, माया अनादि है। मोर्चा की खटाई बहुत हैं, माया की कोई नहीं। मोर्चा छुडाना आता है, माया छुडाना नहीं आती। अनेकन महा प्रलय हो गईं इस जीव की गति नहीं हुई। इस महाप्रलय में पचास वर्ष हो चुके, एक दिन हजार चौजुगी का होता है। तब महात्मा गुरु बोले कि माया के छुडाने की उपाय उत्तम सत्संग है और खटाई भजन की बहुत चोखी है। और सौ वर्ष ब्रह्मा का भजन के प्रताप से लो बराबर है। देखो लोमश ऋषि ब्रह्मा के पुत्र भजन के प्रताप से ब्रह्मा के मरने को नित्य की उपाधि जानकर एक बाल अपने शिर का उखाडते हैं। इस कारण तुम अपने जीवात्मा को भजन की खटाई में कुछ काल छोड दो। और सत्संग की उपाय से विमल किया करो। काच के समान हृदय तुम्हारा विमल हो जावेगा। और चौरासी लाख जीव रामस्वरूपी दर्शावेंगे। जैसे सूर्य्य का प्रकाश सब में दर्शाता है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि गुरु महाराज! आप की कृपा से मुझ को यह ज्ञान है और पहले भी था कि भजन के प्रताप से सब कुछ हो सक्ता है और कुछ काल विधिसंयुक्त जैसा चाहिये वैसा भजन किया परन्तु अज्ञानरूपी यह संदेह उत्पन्न हो गया है कि कबतक भजन करना चाहिये कदाचित् आप को भजन का परिमाण आता हो, तो उपदेश कीजिये। मैं फिर भजन करूंगा। यह सुनकर महात्मा गुरु

बोले कि भजन का परिमाण कोई नहीं कह सक्ता । और यह उत्तर मैं नहीं दे सक्ता ।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें तीसरी लहरी भजनपरिमाण विचार नामानिरूपण संपूर्ण ।

॥ चौथी लहरी ॥

माया से ब्रह्म जीव हुआ । भजन औषध है, गुरु वैद्य है ।

अथ श्रीवासिष्ठाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार कर्त्ता जिस को तुम राम कहते हो। वह आप माया के रोग लगने से जीवरूपी आकार हो गया है। भजन उस का औषध है और गुरु वैद्य है । जबतक रोग का नाश न हो जावे, तबतक औषध खाना धर्म है। जब रोग नाश हो जावेगा, तब औषध आप ही आप छूट जावेगा। यह सिद्धान्त सब को मालूम है। इसी प्रमाण भजन करते २ जब माया छूट जावेगी, तब मनोरथ सिद्ध हो जावेगा । और भजन भी छूट जावेगा। इस के सिवाय दूसरा परिमाण भजन का कोई नहीं है । त्रिभुवन में कोई परिमाण नहीं कह सक्ता, सच्चे प्रेम से सदा अखंड भजन करो, परिमाण का विचार मत करो । माया अज्ञान भ्रम वासना भूल एक अर्थ के शब्द हैं चेतन्न को सब साक्षी हैं और शुद्ध आत्मा को घेरे हुए हैं। जब भजन के प्रताप से ये पांचो विकार रोग समान नाश हो जावेंगे, वही आत्मा

परमात्मा स्वरूप प्रकाशमान हो जावेगा और भजन भी छूट जावेगा।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद चौथे तरंगमें चौथी लहरी भजनपरिमाणविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण ।

इति चौथा तरंग समाप्त ॥ ४ ॥

पांचवा तरंग प्रारंभ ।

॥ प्रथम लहरी ॥

पृथ्वी ब्रह्म है ।

अथ श्रीरामनाथाय नमः । जब महात्मा गुरु ने भजन के परिमाण को रोग का दृष्टान्त दिया तब बहुत चिन्ता उत्पन्न हुई, इस कारण कि ब्रह्म निराकार होना सब का मत है। जब निराकार है तो रोग नहीं लगना चाहिये। रोग दुःख शरीर को होता है। और इस सिद्धान्त में माया ब्रह्म से प्रबल हुई। और रोगी के भजन में कोई आरोग्य नहीं होगा। ऐसा ब्रह्म कहां रहता है? और कैसा स्वरूप है? और क्या गुण उस में है? पहले ब्रह्म का निरूपण अच्छी तरह होना चाहिये। पीछे भजन का परिमाणविचार हो जावेगा, ब्रह्म के सिद्धान्त में बडा पोल दीखता है। कोई निराकार कहता है कोई साकार बताता है कोई भोगी जानता है कोई रोगी मानता है। ऐसा विचार करके एक महात्मा के पास जाकर सब हाल अपना कहा। और ब्रह्म पदार्थ का स्वरूपविचार किया। तब महात्मा गुरु बोले

कि स्थूलरूप ब्रह्म का पृथ्वी है। पृथ्वी से आकाश हुआ। आकाश से वायु हुई। वायु से अग्नि प्रकट हुई। अग्नि से जल प्रकट हुआ। सर्व सृष्टि जड चेतन्न पृथ्वी से उत्पन्न होकर पृथ्वी में मिल जाती है। चराचर जो जीव रूपमान में हुआ सो सब पृथ्वी से उत्पन्न हुआ। अन्त में सब पृथ्वी होगा। और प्रथम शब्द का अर्थ ब्रह्म निश्चय अनुमान होता है। नाम सब का अर्थ संयुक्त है। पृथ्वी का नाश नहीं होता। प्रलय शरीरनाश हो जाने को कहते हैं। जल रुधिर है। वायु श्वासा है। अग्नि ज्ञान है। आकाश शब्दस्थान है। और इस का बहुत विस्तार यंत्र[1] पंचीकरण और दोहा चौपाई में देखो।

॥ चौपाई ॥

पृथ्वी रूप ब्रह्म को जानो। जल को बीज रुधिर पहिचानो॥
वायू को शक्ती अनुमानो। अग्नि ज्ञान सब को दरशानो॥
व्योम शून्य कुछ रूप न होई। पृथ्वी ब्रह्म कहै सब कोई॥
रूप मान जो वस्तु दिखावै। ता को कारण भूमि लिखावै॥
स्थूल गंध ताडक जाग्रत। हम अपान अंडज प्रकृत॥
रज गुण गुदा वैखरी भोचर। विषयानन्द खेचरी अच्छर॥
निराकार कुछ काम न आवै। पृथ्वी सर्व अकार दिखावै॥
पृथ्वी रूप अनादी जानो। अविनाशी उस को पहचानो॥

दोहा-परथम जा को नाम है, सोई है भगवान।
पृथ्वी से आकार है, ।

१ यहां का यंत्र ग्रंथके अंत में देखो।

पाँचवाँ तरंग ।

सब का रूप है, रूप बिना कुछ न
ब ब्रह्माण्ड है, और शून्य सब त

ष्टि का आधार पृथ्वी है। सिवाय पृथ्वी के और कोई तत्त्व स्थूल रूपमान नहीं हो सक्ता। युगादि में पहले पृथ्वी की पूजा होती है। मेरे ज्ञान में पृथ्वी ब्रह्म है। मैं ने हाथ जोड़कर कहा कि पृथ्वी जल के ऊपर जमाई है और नित्य एक परिक्रमा सूर्य देवता को देती है। हिरण्याक्ष दैत्य ने छिपा में छिपाया था जिस कारण वराह अवतार हुआ। राजा पृथु ने गौ बनाकर सब औषधि पृथ्वी से निकाला और वे उसी रात को शिराने तकिया बनाकर रख लेते थे। और चन्द्रमा सदा काल पूर्णमासी को पृथ्वी से भोग करता है। और यह शरीर नाशवान् केवल मृत्तिकास्वरूप है। जब चैतन्य जीव साक्षी नहीं रहता तब भयंकर रूप मुर्दा हो जाता है और प्रलय काल में पहले पृथ्वी का नाश हो जाता है इसलिये पृथ्वी को ब्रह्म कहना अनुचित है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में प्रथम लहरी जड ब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

दूसरी लहरी ॥

जल ब्रह्म है

अथ नाम: दूसरे महात्मा के

पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का सूक्ष्म स्वरूप जल है जल से पृथ्वी, पृथ्वी से आकाश, आकाश से वायु, वायु से अग्नि पैदा हुई। यह शरीर जब मुर्दा हो जाता है तब जल नहीं रहता। और जड पदार्थ में जबतक जल है तबतक जीव है। और जड चेतन जो आकार रूपमान है वह सब जल का स्वरूप है। और जल का स्वरूप सिद्धान्त में जीव अनुमान होता है। और आदि में सब की उत्पत्ति का कारण जल दीखता है। और जल को आपरूप कहते हैं। और जल से सब शुद्ध होता है। किसी पात्र में जल कुछ काल रक्खो उस में जीव आप ही आप प्रगट हो जाता है। और वर्षा ऋतु में कदाचित् जल न बरषे तो जगत् में प्रलय हो जावे। और व्यास भगवान् का मत ऐसा है कि उसी जल की इच्छा से आदि में कमल का फूल होता है उस में उत्पन्न होता है। वह ब्रह्मा अपने विचार से सारा जगत् बनाता है और अन्त में सौ वर्ष के पीछे यह जगत् और वह ब्रह्मा दोनों जल हो जाते हैं। इस कारण जल को ब्रह्म निश्चय जानना चाहिये। और विस्तार सहित जल का स्वरूप यंत्र[1] पंचीकरण और दोहा चौपाई में देखो।

॥ चौपाई ॥

जल से कमल कमल से ब्रह्मा। वह सब लोक को सिरजा ब्रह्मा॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

उत्पत्ति स्थिर परलय करै। जल से तीन लोक अवतरै॥
जल से सागर जल से गंगा। जल से सब रस जल से रंगा॥
जल से बिन्दु बिन्दु से काया। निश्चय जल भगवान कहाया॥
जल से चौदह रतन निकारा। जल से चौरासी परचारा॥
जल से जीव जीव से ज्ञान। ज्ञान बिना अन्धा अज्ञान॥
जल है ब्रह्म पृथ्वी माया। रात दिवस सब को दरशाया॥
सूक्ष्म दंड अंगुष्ठ परमाण। जोगानन्द बीज परधान॥

दोहा—लिंग सतोगुण मध्यमा, को हम जलचर खान।
पालन अंडज भूचरी, यजुर्वेद ईसान॥
हरनगर्भ जल को कहैं, मुक्तसमेत विचार।
वामदेव मुख ज्ञान बुध, यह अभिलाखविचार॥

और कोई तत्त्ववादी ऐसा कहता है कि बीज का स्वरूप जल है और वेद में बीज ब्रह्म प्रधान है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि कमल का झाड क्षीरसागर में नारायण की नाभि से उत्पन्न हुआ है, जल से नहीं। और जल स्वतः नहीं रह सक्ता। दूसरे के आधार है। और मुर्दा शरीर में भी जल रहता है। और सूखे लक्कड पत्थर में भी जल रहता है। जल की प्रकृति मलमूत्र की है। मेघ वर्षाता है सूर्य सोखता है। और प्रलय में नाश हो जाता है और जड है। कुंभज ऋषि सातों समुद्र को पी गये। पीछे मूत्र की राह से निकाला। जो स्वतः प्रत्यक्ष में नहीं है उस को ब्रह्म

कहा जो ... पैदा होता है यह सुनकर गुरु चुप हो रहे ।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाषसागर ... गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में श्री लहरी जडब्रह्मा ... निरूपण संपूर्ण ।

श्रीजगन्नाथाय नमः ... दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना ... तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का कारणरूप अग्नि है । अग्नि से जल पैदा हुआ, ... । पृथ्वी से आकाश और आकाश से वायु उत्पन्न हुई । तेजरूप होकर घट २ में ... व्यापक है । जब तेज नहीं रहता तब शरीर ... नष्ट हो जाता है । और आजतक जिस अधिकारी ने ... का अनुभव पाया होगा । सो तेजरूप ही पाया होगा । पश्चिम का मुल्क बहुत पुराना है । वहाँ अग्निहोत्री अर्थात् आतिशपरस्त बहुत हैं। वे लोग अग्नि को ब्रह्म जानते हैं और दीन महम्मदीवाले भी खुदा को नूर कहते हैं । मूसा पैगम्बर को नूर का अनुभव हुआ और श्रीकृष्ण भगवान ने अर्जुन को समुद्र में जो दर्शन कराया वह ज्योतिःस्वरूप का था । राजा दशरथ को चार लड़के अग्नि ने दिये । अग्नि से अन्धकार नाश होता है और गर्मी से उत्पन्न, सर्दी से नाश होना सब

को प्रगट है। और विस्तारसहित इस का स्वरूप यंत्र[1] पंचीकरण और दोहा चौपाई में देखो।

चौपाई

तेजरूप है जग का कर्त्ता। तेज रूप है ब्रह्म अकर्त्ता ॥
तेज न होय शून्य हो जावै। तेज न होय तमोगुण छावै ॥
ज्योतिःस्वरूप ब्रह्म कहै वेदा। ब्रह्म अग्नि में नहीं कछु भेदा॥
घट अद्वैत विकार जलावै । तेजरूप परमेश्वर पावै ॥
चारों दिशा अग्नि की पूजा। करैं नेम से राजा परजा ॥
तेज ब्रह्म में भेद न जानो॥ निर्गुण सगुण ब्रह्म पहिचानो ॥
कारण अर्ध पहर परमाना । सोहं प्राण मनों में ध्याना ॥
रहत सुषुप्ति गुप्त अविचारा। शून्य चाचरी मध्य ओंकारा॥

दोहा–तेजरूप भगवान को, जो जानै कुछ और।
ज्ञानी सन्त समाज में, सपन न पावैं ठौर ॥
तेज ब्रह्म अद्वैत है, ज्योति विदित संसार ।
नेत्र विना अभिलाख से, भटकत फिरैं अपार ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि जल से अग्निनाश हो जाता है और तेज का शत्रु अन्धकार प्रत्यक्ष है । दीन महम्मदीवाले खुदा को नूर नहीं कहते, उस की उपमा है । पश्चिम के मुलक में पैगम्बर लोग आतिशपरस्तों को कतल करके कुरान पढाया। अग्नि में शान्ति शीतलता स्वतःपना स्थिरता जो ब्रह्म लक्षण हैं, सो कुछ नहीं। अग्नि का वि-

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

कार लोभ [illegible] तृषा आलस्य मैथुन पाच हैं। महा [illegible] में [illegible] हैं। और अग्नि का स्वभाव कर्त्ता नहीं है [illegible] न है। अग्नि की उत्पत्ति वायु से है। अग्नि को ब्रह्म कहना अज्ञान है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में तीसरी लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ चौथी लहरी ॥

वायु ब्रह्म है।

अथ श्रीद्वारिकेशाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का महाकारणरूप वायु है। वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी, पृथ्वी से आकाश उत्पन्न हुआ। वायु श्वासा होकर घट २ में व्यापक है। जब वायुरूपी श्वास निकल जाता है तब सब जीव निर्जीव हो जाते हैं। योगी लोग वायु का समाधि में साधन करके ब्रह्मसमान हो जाते हैं और यह ब्रह्मांड वायु के आधार से स्थिर और चर हैं और गर्मी सर्दी बर्सात का वायु कारण है। वायु का बंधन और जीव की उत्पत्ति का अर्थ एक है। जब वायु वायु में मिल जाती है तब जीव की मुक्ति हो जाती है। विचार से सब का कर्त्ता वायु दर्शाता है।

और विस्तार सहित वायु का स्वरूप यंत्र[1] पंचीकरण दोहा चौपाई में देखो

वायू से ब्रह्मांड बनाया । वायू चारों तत्त्व उपजाया ॥
शक्ति विना सब नाश कहावै।शक्ती विना सत्य नहि पावै॥
शक्ती प्राणसमान चराचर। परमानन्द अप्रमेय मंतर ॥
पंच प्राण से रहै शरीरा । वायू सब को करै अधीरा ॥
तीन लोक वायू पर बसै । वायू के बल रोवे हँसै ॥
वायू से वर्षा ऋतु आवै ।वायू शून्य समाधि लगावै॥
वायू सूरज चन्द्र चलावै । पांच तत्त्व ता में दरसावै॥
वायू बोले वायू चलै । वायू बांधै वायू खुलै ॥

दोहा—वायू अर्द्ध मकार है, उत्तम पुरुष विवेक ।
आतम भास अगोचरी, सर्व साक्षि यह एक ॥
वायू ब्रह्म अनादि है, सत्य रूप सब साख ।
ब्रह्म हेत घर घर फिरै,यह मूरख अभिलाख ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि जहां आकाश नहीं है वहां वायु नहीं जा सक्ती।योगी वायु के साधन से ब्रह्म का विचार करते हैं । पकडनेवाला दूसरा है । वायु वायु को नहीं पकड सक्ता।वायु एक तत्त्व जड है । महा प्रलय में उस का भी नाश है। वायु कोई प्रत्यक्ष पदार्थ नहीं है । पृथ्वी जिस प्रकार कमासिवाय रेल प्रमाण चलती है उस

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो ।

प्रमाण वायु का अनुमान होता है । जैसे दौडन मे वायु विशेष मालूम होती है। वायु की संख्या ४९००० है। और शरीर में पंच प्राण पंच वायु हैं और वायु नाम एक देवता का है जिस का पुत्र हनुमान् है और वायु में स्थिरता और स्वरूप नहीं है वह कैसे ब्रह्म होगा यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में चौथी लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण ।

॥ पांचवीं लहरी ॥

आकाश ब्रह्म है ।

अथ नवग्रहाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का केवल रूप आकाश है । आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल, जल से पृथ्वी पैदा हुई । सर्व विस्तार ८४ लाख योनि का इन चारों तत्व से उत्पन्न होकर अन्त में सब आकाश हो जाता है । और सब की सम्मति है । यह जगत् ब्रह्म से उत्पन्न होकर पीछे ब्रह्म में लय हो जाता है। इस प्रकार सारा जगत आकाश से उत्पन्न होकर अन्त में सब आकाश हो जाता है और शरीर में जो पोलाणरूपी आकाश वही जीव चैतन्य अन्तःकरण अनुमान होता है। उस के बंद हो जाने से श्वासा बंद हो जाती है। घट बाहर में आकाशरूपी ब्रह्म सर्वत्र व्यापक है । निर्गुण निराकार

शब्द आकाश को शोभा देते हैं और जिस तरह ब्रह्म अनन्त बेअन्त सब से बडा व सब से छोटा है। उस प्रकार आकाश भी है, और वेद में खं ब्रह्म लिखा है। अनेक महात्माओं का मत है कि ब्रह्म आकाश है। और विस्तार सहित आकाश का स्वरूप यंत्र[1] पंचीकरण और दोहा चौपाई में देखो।

॥ चौपाई ॥

व्योम अकाश स्वर्ग नभ ताका। खम् को ब्रह्म कहैं श्रुति साखा ॥
सब से बडो छोट जो होई । निराकार देखै सब कोई ॥
पकड न आवै सब को पकडे। ब्रह्म अकाश कहैं सब सुधरे ॥
ब्रह्म अकाश का अन्त न पावै। ब्रह्म अकाश न आवै जावै ॥
ब्रह्म अकाश अभेद अनादी। संका करै सो मिथ्यावादी ॥
निराकार निर्गुण निर्लैपा । ऐसो ब्रह्म अकाश अलेपा ॥
केवल बिन्दु उन्मनी निर्गुण। ऐसो ब्रह्म अकाश निरंजन ॥
ब्रह्म अकाश में भेद लगावै । बिना पूँछ का पशू कहावै॥

दोहा—ऐसो ब्रह्म अकाश है, शंका रहित अभेद।
ओंकार कर्त्ता पुरुष, कहत पांचवां वेद ॥
षट् शास्त्र पुराण बहु, चार वेद का सार।
ब्रह्म अकाश अभेद है, यह अभिलाखविचार ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि आकाश को इच्छा नहीं हो सक्ती और वायु आदिक की उत्पत्ति आकाश जड से

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

कहना अज्ञान का मत है। जहां तक सूर्य का प्रकाश है उस को आकाश कहते हैं। महाप्रलय में उस का नाश हो जाता है। जिस में कुछ सार नहीं उस को आकाश कहते हैं ज्योतिष में सात आकाश प्रमाण हैं। पंचीकरण में पांच आकाश हैं। और आचार्यों ने लाखों आकाश पाताल कह दिये हैं। शरीर में अन्तसमय पोलाण को कौन वंद करता है। वह कौन है? और ऐसे ब्रह्म के भजन में क्या आनन्द प्राप्त होगा? आकाश शून्य जड है। आजतक किसी भक्त ने आकाशब्रह्म से फल नहीं पाया। आकाश क्यों कर ब्रह्म हो सक्ता है? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में पांचवी लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ छठी लहरी ॥

पंचतत्त्व मिलकर ब्रह्म है।

अथ श्रीसनकादिकाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का स्वरूप एक तत्त्व नहीं है, पांचों तत्त्व मिलकर उस का स्वरूप सम्पूर्ण होता है। जुदा २ देखने में खंडन दर्शाता है एक आचार्य का मत ऐसा है कि आकाश ब्रह्म का मुख तथा शिर है। वायु हाथ है। अग्नि पेट है। जल कमर है। पृथ्वी पाँव है। जगत् उस का स्वपन है। जैसे अपने को स्वपन में जगत् भासता है। दूसरे

का मत ऐसा है कि आकाश उस का रूप है। वायु श्वासा है। अग्नि प्रकाश है। जल पृथ्वी मल मूत्रसमान है। चौरासी लाख जीव उस के कीडा हैं। उस में उत्पन्न होकर उस में मिल जाते हैं। तीसरे का मत ऐसा है कि पृथ्वी उस का रूप है। जल रुधिर है। वायु शक्ति है। अग्नि ज्ञान है आकाश स्थान है। चौरासी लाख योनि उस के अंग हैं इस सिद्धान्त में विराट पुराण देखो। चौथे का मत ऐसा है कि आकाश कैवल्य शरीर है। वायु महाकारण शरीर है। अग्नि कारण शरीर है। जल सूक्ष्म शरीर है। पृथ्वी स्थूल शरीर है। ये पांचों शरीर जुदा २ नाम को हैं। सब को एक जानना। उस शरीर में चौरासी लाख योनि गुप्त प्रगट होती हैं। पांचवें का मत ऐसा है कि उस का अनादि निराकार रूप आकाश है। यह रूप महाप्रलय के पीछे बना रहता है। जब सृष्टि की रचना उस को बनानी होती है तब अग्निरूप हो जाता है। और वायु उस की शक्ति है। उस को ब्रह्म और माया निराकार रूप कहते हैं। फिर जब दूसरी बार आकार होता है तब जल पृथ्वी का रूप हो जाता है। उस रूप से सब आकार सृष्टि का जड चेतन उत्पन्न होता है। अन्त में निराकार हो जाता है। पंचतत्व का गुण अन्त कोई नहीं कह सक्ता। जिस तरह जल में बुद्बुदा या लहरी या तरंग आप ही आप प्रगट होता है और पीछे उस में मिल जाता है। इसी तरह यह सारा जगत्

पंच तत्त्व के संयोग से उत्पन्न और नाश होकर पंच तत्त्व में मिल जाता है और पांच तत्त्व के कारण से यह जगत् पांच प्रकार का है। अंडज, पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, देव आदिक गुप्त योनि; ये पांच योनि; जगत् में हैं। पांच तत्त्व के सिवाय चौदह भुवन में कुछ पदार्थ नहीं है। तत्त्व पद ब्रह्म है। पंच तत्त्व की सत्ता निराकार से पंच प्राण होता है। उस की सत्ता से अन्तःकरण होता है। वह अन्तःकरण ज्ञान इन्द्रिय से तदाकार है। उस के आधार से पंच विषय को जानकर पंच कर्मेन्द्रिय द्वारा सब कार्य होता है। इस के सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है। जो विचार करो वही पंच तत्त्व की रचना है। प्रगट विचार यंत्र[1] पंचीतत्त्व में और दोहा चौपाई में देखो।

चौपाई॥

पंच तत्त्व सब जग उपजाया। पंच तत्त्व सब देव बनाया॥
शक्ति ज्ञान शब्द सब रहै। पंच देह मानुष की कहै॥
पांच विषय सब तत्त्व विचारो। ब्रह्मा विष्णु महेश अकारो॥
रूपमान सब तत्त्व से होवै। निराकार अनुभव नहिं देवै॥
पंच तत्त्व भोगै चौरासी। पंच तत्त्व जोगी संन्यासी॥
पंच तत्त्व राजा महराजा। पंच तत्त्व जड चेतन साजा॥
पंच तत्त्व पुरुष स्त्री। पंच तत्त्व गोरख भरतरी॥
पंच तत्त्व से खाली कहाँ। ज्ञान बुद्धि जावै नहिं जहाँ॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथके अंत में देखो।

पंच तत्त्व सब ब्रह्म कहावै। अनुभव में दूजा नहिं आवै ॥
पंचीकरण जुदा जो लेखै । ज्ञानवान सब एक हि देखै ॥
पांच से एक एक से पांचा । ऐसो ब्रह्म नचावत नांचा ॥
पंच तत्त्व को ब्रह्म बतावैं । सब अपनी अभिलाख पुरावैं ॥

दोहा–पंच तत्त्व सब एक है, ब्रह्म अलख अद्वैत ।
निराकार निर्गुण अलख, नहीं कृष्ण नहिं श्वेत॥
अनुभव दूजे ब्रह्म की, जो देवै अज्ञान ।
ब्रह्म निरूपण नाँ कियो, नाँ पायो गुरु ज्ञान ॥
आदि युगादि अनादि से, पंच तत्त्व को खेल ।
अनुभव बिन सब झूठ है, मूरख भूले गैल ॥
पंच तत्त्व अभिलाख से, ब्रह्मप्रत्यक्ष प्रमाण ।
भरम भूल अज्ञान में, घर २ गयो मैं श्वान ॥

कवित्त–तत्त्व को पसार सब जगत दिखाय देत तत्त्व को पसार सब शून्य में दिखात है। तत्त्व को पसार सब रूप में प्रकाश होत तत्त्व को पसार सब जीव में दिखात है॥ तत्त्व को पसार सब चार खान देखत तत्त्व को पसार राग दोष में दिखात है। तत्त्व को प्रमाण जान तत्त्व को प्रधान मान तत्त्व अभिलाष ज्ञान तत्त्व सब बात है ॥

मैं ने हाथ जोड कर कहा कि अग्नि का जल से वैर है। और वायु का पृथ्वी से वैर है। इस को एक जगह करनेवाला कौन है ? और सर्व मत का ज्ञान है कि महाप्रलय में पंच तत्त्व का नाश हो जाता है । और जगत् की उत्पत्ति क

कारण बीज दर्शाता है। पंच तत्त्व उस को मदद देते हैं। कदाचित् बीज न हो तो पंच तत्त्व से कुछ प्रकट नहीं हो सक्ता। और सिवाय मृत्यु लोक के चौदह भुवन में जो जीव हैं उन के शरीर मायारूपी हैं। उस में पांच तत्त्व नहीं हैं। अनेकन भक्तों को दर्शन देता है। पंच तत्त्व नरक स्वर्ग में और राम रावण में है। ब्राह्मण भंगी में हैं। गधा और महात्मा में हैं स्वप्न में जो पदार्थ दर्शाता है उस में कोई तत्त्व नहीं, है, चौबीस अवतार वेद पुराण शास्त्र गुरु सर्व पूजनीय का अपमान इस ज्ञान में प्रगट दर्शाता है। जडरूपी पंच तत्त्व को ऐसी सामर्थ्य नहीं है कि सातों आकाश सातों पाताल में चौरासी लाख सृष्टि अनन्त भाँति की उत्पन्न और पालन करके संहार करे। तत्त्व और ब्रह्म दो शब्द हैं। तत्त्व को ब्रह्म कहना मूर्ख का काम है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में छठी लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ सातवीं लहरी ॥

ब्रह्म विराट् रूप है।

अथ श्रीसर्वजगते नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म का रूप विराट है। यावत् ब्रह्मांड उस का रूप है। जब आदि में ब्रह्म अद्वैत रहा तब कोई तत्त्व आदिक नहीं

था और तम प्रकाश भी नहीं रहा । उस के पीछे जो कुछ उत्पन्न हुआ वह अब हुआ । इस कारण सब उस का स्वरूप है। इस के सिवाय जो पदार्थ आदि अनादि से उत्पन्न हुआ है उस का नाश नहीं हुआ । कीडी से ब्रह्मा-तक घास से सुमेरु गिरि (पर्वत) तक ज्यों का त्यों बना हुआ है। और कोई नई सृष्टि भी आजतक नहीं हुई। जैसे समुद्र में लहर उत्पन्न नाश हुआ करती है उस प्रमाण यह चौरासी लाख योनि भी गुप्त प्रगट हुआ करती है। ताम्बूल का पत्ता जैसे नित्य नाश होता है वैसे नित्य उत्पन्न होता है । और एक यंत्र[1] विराट् रूप का दोहा चौपाई में इस के साथ जुदा है वह देखो ।

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म विराट सत्य परधान । वेद शास्तर कहत पुरान ॥
पंच तत्त्व का पुतला बने । चौदह लोक ब्रह्म सब गने ॥
शिर आकाश पाव पाताल। सूरज अलख चरण दिक्पाल॥
मस्तक चन्द्र बरौनी तारा । चोटी बादल अस्थि पसारा ॥
ऐसी उपमा सब जग मोहे । ब्रह्म विराट अखंड पिरोहे ॥
अन्तःकरण ज्ञान सब झूंठा। सहज सुखोपाति में सब डीठा॥
सुख दुःख मान अपमानअनिथ्या॥नरक स्वर्ग सब जानो मिथ्या॥
रूप विराट एक ब्रह्मंडा । पूरण ब्रह्म अभिलाख अखंडा ॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

दोहा—चार खान ब्रह्मांड में, स्वर्ग पताल मिलाय।
ब्रह्म रूप निश्चय करो, और ज्ञान जर जाय॥
शिर आकाश पाताल पग, और मध्य सब अंग।
मल से उपज्यो जीव यह, करत अहम् अहंग॥
यह विराट संसार है, वेद शास्त्र हैं साख।
ध्यान गुरूउपदेश से, करै सदा अभिलाख॥

अनेक ग्रन्थ और पुराण का मत है कि ब्रह्म विराटरूप है। सर्वज्ञ, सर्वव्यापक, अखंड विराट एक है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि विराट रूप ब्रह्म का अनेक ग्रन्थों में लिखा है। आपने सब से अधिक सम्पूर्ण बताया। आप की बुद्धि धन्य है। चौवीस अवतार किस के होते हैं? राम कृष्ण ब्रह्म नहीं थे तो कौन थे? ब्रह्मा विष्णु महादेव मिथ्या हैं या सत्? व्यास भगवान् ने अठारह पुराण में ब्रह्मलीला कही है। उस के वाकय ब्रह्मवाक्यसमान हैं। बडे २ राजा बादशाह जो लाखों सुख को छोड करके जंगल में चले जाते हैं उन को क्या प्राप्त होता है? हजारों भक्तों को कलियुग में परमेश्वर का दर्शन हुआ सो कैसे हुआ? एक ब्राह्मण होता है, उस का पाँव धोकर संसार पीता है। एक भंगी होता है, उस को कोई छूता नहीं। एक पत्थर हीरा है और एक पाखाने में लगाया जाता है सब पंचतत्त्व हैं। परन्तु प्रकाशरूप परमात्मा का कुछ और ही है। पंच तत्त्व के ज्ञान में भक्ति का नाश होता है।

भक्तविरुद्ध पुरुष दैत्य प्रसिद्ध होता है। चैतन्य अवस्था में
[illegible] ेष्ठा नहीं करता। कदाचित् ब्रह्मपद
[illegible] ोटानुकोट योग से भजन कीर्तन पूजा न
होती। अश्वमेध यज्ञ का फल कौन देता है? दिन रात
कौन करता है? इस ज्ञान में मेरा बोध नहीं होगा। लाखों
शंका हैं। ब्रह्मा से भी विराट ब्रह्म का बोध नहीं होगा।
यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग
में सातवीं लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ आठवीं लहरी ॥

शब्द ब्रह्म है।

अथ श्री ओंकाराय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास
गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले
कि शब्द ब्रह्म है। आदि में ओम् शब्द जगत् का कर्ता
वेद में प्रधान है। उस का अर्थ मैं हूं। उस शब्द से चौ-
रासी लाख सृष्टि उत्पन्न हो गई। जबतक ओम् का ओं-
कार रहेगा तबतक यह सृष्टि बनी रहेगी और शरीर
मध्य भी जबतक शब्द है तबतक सब कुछ है। शब्द
नाश होने उपरान्त शरीर भयंकर मुर्दा हो जाता है।
शब्दरहित ब्रह्म का ज्ञान भी नहीं हो सक्ता। ब्रह्मा विष्णु
महेश आदिक देवताओं को जब अनुभव हुआ तब शब्द

से हुआ । आदि में ब्रह्मा को तत्त्वशब्द का अनुभव हुआ । चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण मंत्र गायत्री सब शब्द हैं । भजन, स्मरण, कीर्तन सब शब्द होना अनेक आचार्य का मत प्रसिद्ध है । वे लोग ओंकार को ब्रह्म जानते हैं । कोई ज्ञानी उस को सोहम् कहते हैं जो नासिकाद्वारा सब जीवों के आप ही आप उच्चारण होता है । अर्थ-वही मैं हूं । ओहम् सोहम् जाप वेद परमाण है । जो कोई जाप करे तो ब्रह्म का अनुभव होवे । कुछ चौपाई ओंकारबानी सिद्धान्त की देखने योग्यहै ।

॥ चौपाई ॥

निराकार को माथ नवाऊं। घट२ की अभिलाख मिटाऊं ॥
सब से आदि तत्त्व आकाश। जिस की आदि न पायो व्यास॥
उस की आदि बखानै कौन । इच्छारूपी उपज्यो पौन ॥
पूरण पवन भयो यह जब हीं।पावक तत्त्व प्रगट भई तब हीं॥
पावक पवन मथ्यो आकाश। आप रूप उपज्यो परकाश॥
आप रूप स्थिर जब भयो । ता को रूप पृथ्वी भयो ॥
आदि तत्त्व वेदन में आवै । चार खान के जीव कहावै ॥
बाहर से भीतर जब आवै । निराकार ओंकार कहावै ॥
चार वेद उस का गुन गावै । छहों शास्त्र भेद न पावै ॥
अक्षर तीन एक सुर मानो । वव्वा कक्का ररीं जानो ॥
वा को आदि कहै सब कोई । कर्त्ता धर्त्ता जानो सोई ॥
का को कारन मध्य पहचानो । राको कारज अन्त बखानो॥

कर्त्ता कारन कारज होई । ता को कर्म कहै सब कोई ॥
अक्षर तीन कर्म में आनो । जैसा का तैसा दर्शानो ॥
कर्म प्रधान वेद अस कहै । जैसा करै सो तैसा लहै ॥
व्यंजन तीन एक स्वर जानो । ता को ॐकार पहचानो ॥
ब्रह्मरूप आयो ॐकार । मायारूपी मिल्यो मकार ॥
मम्मा मोहरूप जब आयो । अक्षर चार वेद कहवायो ॥
वानी चार पदारथ चारी । चारों युग अभिलाख पुकारी ॥
वव्वा सामवेद कहवावै । कक्का यजुर्वेद सब गावै ॥
रर्रा को ऋग्वेद बतावैं । मम्मा वेद अथर्वण गावैं ॥
तीन वेद में ब्रह्म विचार । चौथा वेद मोह का सार ॥
अक्षर तीन एक स्वर होई । भये अठाइस अक्षर सोई ॥
योग तिथी नक्षत्र अठाइस । ॐकार की सब पैदाइश ॥
निर्गुण से सगुण जब भयो । लख चौरासी पैदा भयो ॥
वव्वा वास करै मन माहीं । कक्का चित में रहै समाही ॥
रर्रा अवध विलास बखानो । मम्मा अहंकारपद जानो ॥
अन्तस् निराकार कहवावै । शून्य सरूप अकाश बतावै ॥
ॐकार में अक्षर हैं तीन । माया मिले पांच परवीन ॥
पांच तत्त्व का खेल बनाया । रात दिवस सब को दरसाया ॥
ॐकार एक शब्द कहावै । ताको रूप कौन लख पावै ॥
किञ्चित् शब्द पकड में आवै । शब्द करंता लखा न जावै ॥
आप हि आप आप को ध्यावै । तीन लोक में पता न पावै ॥
आदि एक निर्गुण में आवै । पांच तत्त्व हुइ जग उपजावै ॥

पांचों पांच पचीस कहावै । तीस रूप की देह बतावै ॥
पंच विषय अरु पंच विकार। ज्ञान कर्म दश इन्द्री सार॥
पंच प्राण और वायु पंच । पंच अवस्था भये शिर पंच ॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी । तमगुण शंकर कर्त्ता करी ॥
सूरज और गणेश मिलावै । पांच देव का नाम बतावै ॥
शब्द स्पर्श रूप निहारो । रस अरु गंध सुभाव विचारो ॥
त्वचा नाक श्रवण अरु बानी। चक्षु ज्ञान अरु इन्द्री जानी॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा। कर्म इन्द्री जानो सदा ॥
प्राण अपान व्यान समान । पंच प्राण प्रगटे उद्यान ॥
नाक किरकिला कुर्म मानो । दत्त धनंजय वायू जानो ॥
जाग्रत स्वप्न सुषुप्ती सब को। तुर्या उन्मनी योगी जन को॥
चौदह इन्द्रिय रजगुण मानो। चौदह देव सतोगुण जानो ॥
पांच तत्त्व अरु पच्चीस विकार। तम गुण से उपज्यो संसार॥
ॐकार सब जग उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश कहाया ॥
आदि शब्द ॐकार कहावै । ता की महिमा कही न जावै ॥
मंत्र गायत्री है ॐकार । राम कृष्ण जानो ॐकार ॥
महा वाक्य ॐकार कहावै। बीज मंत्र ॐकार कहावै ॥
ओहम् सोहम् है ॐकार । तैंतिस अक्षर का आधार ॥
ॐकार सोलह स्वर जानो। अक्षर रहित नहीं कछु मानो॥
ॐकार चौबीस अवतार । शक्ती भैरव पवन कुमार ॥
अष्टादश पुराण ॐकार । मंत्र यंत्र वरणों ॐकार ॥
ॐकार से ध्यान लगावै । निराकार का दर्शन पावै ॥

श्वासा २ अजपा जापै। परमानन्दमुक्ति से धापै ॥
आसन वज्र खेचरी मुद्रा। जपै शुद्ध होकर दिन पंद्रा ॥
गणित प्रमाण जपै जब लाख। पूरन होय दास अभिलाख॥
सम्वत् उन्निस सै चव्वालिस। कृष्ण पक्ष वैशाख अमावस ॥

कवित्त—शब्द से आकाश और पाताल मृत्यु लोक भयो शब्द से पसार खंड दीप को दिखात है। शब्द से वर्ग वर्ण ब्राह्मण और क्षत्री भयो शब्द से कहाये वैश्य शूद्र चार जात है ॥ शब्द से शरीर जीव इन्द्री और ज्ञान बुद्धि शब्द से अनेक यंत्र मंत्र करामात है। शब्द से है सत्य नाम शब्द से असत्य नाम शब्द से अनेक शब्द शब्द तत्त्व बात है ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि शब्द मुँह से होता है और मुँह शरीर में होता है। उस में आकाश होता है। शब्द आकाश की प्रकृति है। पञ्च विषय में एक विषय है। शब्द जड है। उस का मालिक करनेवाला है। शब्द स्वतः आप ही आप नहीं हो सक्ता। गूंगे पुरुष भी होते हैं। ऊष्मज योनि के जीव शब्द नहीं करते। गुदा से शब्द होता है। वह कुछ प्रधान नहीं है। वेद में ब्रह्म निराकार प्रधान है। जो निराकार ब्रह्म जानेगा वह शब्द को ब्रह्म नहीं कहेगा। ओंकार वाणी बहुत शुद्ध है परन्तु वह शब्द किस प्रकार से ब्रह्म होगा? यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में आठवीं लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ नौवीं लहरी ॥

अक्षर ब्रह्म है ।

अथ श्रीचित्रगुप्ताय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अक्षर ब्रह्म है।कोई पदार्थ जडचेतन अक्षर के बाहर नहीं है। अक्षर की शक्ति मंत्र गायत्री आदिक में ब्रह्मसमान पूजनीय है और अक्षर के रहित ब्रह्म भी नहीं है और जगत् भी नहीं है और माया भी नहींहै। सिवाय अक्षर के और कोई ब्रह्म ऐसा नहीं है जो एक रूप से सर्व व्यापक हो वही अक्षर की शक्ति निराकार ब्रह्म अनुमान होती है ब्रह्म का अनुभव अक्षर आधीन है। किसी भक्त ने ब्रह्म का अनुभव पाया होगा तो अक्षर की सामर्थ्य से पाया होगा। नाम अक्षर आधीन है। जगत-रूपी कागज पर यह सृष्टि अक्षर रूप है। शब्द का नाश है। अक्षर का नाश नहीं है ।तत्त्वमसि ओंकार आदिक महावाक्य तथा चारों वेद जो प्रसिद्ध हैं वो भी अक्षर है। जो अक्षर को नाशमान जानै वह मूर्ख है। ब्रह्म का अनुभव सिवाय अक्षर के दूसरे पदार्थ में देखना अज्ञान है । अक्षर का यंत्र[1] और अक्षरदीपिका जो इस ग्रन्थ के साथ है सो देखो। अक्षर का अन्त नहीं ।

॥अक्षरदीपिका–चौपाई॥

कक्का कर्त्ता करम बनाया। खक्खा खम् आकाश लगाया॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो ।

गग्गा गुरु उपदेश न भावै । घघ्घा घोर नरक मैं जावै ॥
ङा अक्षर व्यंजन नहिं होवै । ज्ञान होय तो सब कुछ होवै ॥
चच्चा चार वेद में पेखो । छच्छा छहों शास्त्र में देखो ॥
जज्जा जगत् एक दरसावै । झज्झा झाड बीज दो गावै ॥
ञा अक्षर ईश्वर पहचानो । ञावां एक ब्रह्म अनुमानो ॥
टट्टा टेक दर्शन की राखै । ठठ्ठा ठाकुर अमृत भाखै ॥
डड्डा डाकिन माया जावै । ढढ्ढा ढोल बजावै गावै ॥
णा अक्षर सब रांड बिरादर । जबतक खसम न देवै आदर ॥
तत्ता तन मन दुइ मत जानो । थथ्था थाह नहीं दरसानो ॥
दद्दा दयामूल है घट में । धध्धा ध्यान रहै प्रकटहि में ॥
नन्ना नाम सत्य है सत्य । यह अभिलाख अन्त असत्य ॥
पप्पा पाप पुण्य पहचानो । फफ्फा फन पर जगत बसानो ॥
बब्बा ब्रह्म अखंड अलेखा । भभ्भा भूल द्वैत बहु भेखा ॥
मम्मा मोह मृत्यु निकट रहै । यह अभिलाख देखके कहै ॥
यय्या याद एक की राखो । ररी राम नाम नित भाखो ॥
लल्ला लीला करै दिखावै । वव्वा वाह गुरू दर्शावै ॥
सस्सा सूरज चन्द्र प्रधान । शश्शा शंकर है भगवान ॥
षा अक्षर कुछ काम न आवै । बिना अर्थ मिथ्या दर्शावै ॥
हह्हा हर हर हर हर गावो । संपूरण अभिलाष पुरावो ॥
आइउ एक होवे ओंकार । सत्य नाम अभिलाख बिचार ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि जिस का रूप है उस का नाश है । अक्षर कारजरूप है कर्त्ता नहीं । नेह अ-

क्षर भी हो सक्ता है ॥ एक अक्षर दूसरे अक्षर का मालि-
क नहीं हो सक्ता । यथार्थ में एक अक्षर का दूसरे अक्ष-
र से विरुद्ध है। जैसे 'ह' और 'न'। और अक्षर का प्र-
माण हिन्दी में छत्तीस और पारसी में बत्तीस और अर्बी
में अठाईस और अंगरेजी में छब्बीस । हरएक मुल्क में
कम सिवाय है। अक्षर लिखनेवाले के आधीन है। और
शुद्ध अशुद्ध का भी विचार हो सक्ता है। अक्षर शब्द का
भेद है। जैसे होठ से प फ ब भ म। इसी तरह तालु
जिव्हा दन्त से जो शब्द निकलता है वह अक्षर हो जा-
ता है। सिवाय मनुष्य के और योनि में अक्षर का ज्ञान
नहीं है। ब्रह्म का ज्ञान सब को है । आगे ऋषि मुनि
व्यास शुकदेव आदिक बहुत विद्वान् थे । उन लोगों ने
तप के बल से अक्षर बनाया। और सब पदार्थ जो अना-
म थे, उनको नाम रक्खा। इस अक्षर के ज्ञान में ब्रह्म का
बोध रती प्रमाण नहीं हो सक्ता। यह सुनकर महात्मा गुरु
चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद पांचवें तरंग में नौवीं
लहरी जडब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।
इति पांचवां तरंग समाप्त ॥ ५॥

चौबीस अवतार ब्रह्म हैं ।

अथ श्रीविष्णवे नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म चौबीस अवतार होकर सदा काल जगत् में रहता है । और सगुणरूप साकार विष्णु नाम है । जब २ इस पृथ्वी पर दुष्ट दैत्य दुःखदायी होते हैं तब २ वह प्रगट होकर उनका नाश करता है । एक अवतार से सदा काल जगत् में बना रहता है । जैसा अब कलंकी अवतार होनेवाला है । जब कलिंजर दैत्य दुःखदायी होगा तब वह रूप प्रगट होगा । अभी गुप्त है । कुछ छन्द और दोहा कवित्त अवतारों के देखने योग्य हैं ।

॥चौबीस अवतार–दोहा॥

मीन रूप भगवान से, चार वेद विस्तार ।
कच्छ रूप होइ अवध में, चौदह रत्न निकार ॥
शूकर होय पृथ्वी रचो, हिरण्याक्ष संहार ।
नरहरि हिरणांकुश हन्यो, कर प्रहलाद उबार ॥
बामन होइ बलि को छल्यो, तीन पैंड विशवास ।
परशुराम अवतार से, सहसबाहु का नाश ॥
रामरूप रावण हन्यो, बाल तज्यो संसार ।

कृष्णरूप शिशुपाल अरु, दन्तवक्त्र को मार ॥
बुद्धरूप से मौन हुई, कियो शुद्ध परसाद।
निष्कलंक अभिलाख है, दश अवतार अनाद ॥
स्वयंभु मनु अवतार है, आदिपुरुष को जान।
नारद हुई भक्ति कियो, दियो जगत् को ज्ञान ॥
विष्णु हुई पालन कियो, पुर वैकुंठ निवास।
सनकादिक चारों ऋषी, बरस पांच परकास ॥
रूपमोहनी सिन्धु पर, सुरा दैत्य को पान।
कपिलरूप हुइ मात को, सांख्य बतायो ज्ञान ॥
व्यास प्रसिद्ध पुराण में, अष्टादश षट चार।
दत्तात्रय चौबीस गुरु, ज्ञान कियो विस्तार ॥
पृथु पृथिवी धेनु कर, सकल औषधी काढ।
हयग्रीव हुई मधुकैटभ को, मारो दैत्य पछाड ॥
बद्रीनारायण पर्वत पर, करत तपस्या शुद्ध।
प्रश्न उत्तर के वास्ते, भयो हंस परसिद्ध ॥
धनवंतरि अवतार हुई, कियो रोग को नाश ॥
यज्ञ ऋषभ हुई जैनमत, कियो जगत परकाश।
ये चौबीस अवतार तू, निराकार के जान।
मुक्त होय अभिलाख से, करै जो अन्तर ध्यान ॥

॥ ध्रुपदछन्द—दश अवतार ॥

वाह गुरु राम सुनो सेवक परणाम तुही पूरण सब काम
सुभग सुन्दर अभिराम तुही दीन तुही मीन तुही शंखासुर

मार चतुर्वेद निकारा। तुही घिरत तुही तेल तुही खेलन में खेल तुही परवत और शैल तुही झाड तुही बेल तुही राह तुही गैल तुही शूकर अवतार हिरण्याक्ष संहारा॥ तुही सिद्ध तुही जोग तुही भाव तुही भोग तुही दुःख तुही रोग तुही हर्ष तुही शोक तुही सायत संजोग तुही कच्छप अवतार रतन चौद-ह सारा। तुही राज तुही पाठ तुही राह तुही बाट तुही पूर तुही घाट तुही तख्त तुही खाट तुही मखमल और टाट तुही नरहर अवतार हरण कश्यप मारा॥तुही तात तुही मात तुही पुत्र तुही भ्रात तुही चाकर परजात तुही आवत और जात तु-ही पांच तुही सात तुही बावन अवतार छल्यो बलि अविचा-रा।तुही ढाल तुही खड्ग तुही भूमि तुही स्वर्ग तुही याज्ञवल्क गर्ग तुही जात तुही वरग तुही सिंह तुही मृग तुही भृगुपति अवतार सहसबाहु को मारा॥ तुही शास्त्र तुही वेद तुही भर्म तुही भेद तुही हर्ष तुही खेद तुही शर्म तुही स्वेद तुही औषध अरु वैद्य तुही राम तुही धाम तु ही दशरथप्यारा। तुही रंग तुही रूप तुही छांह तुही धूप तुही रंक तुही भूप तुही सिंध तुही कूप तुही परगट अरु गुप्त तुही सुन्दर अनु-रूप तुही नन्द दुलारा॥तुही यज्ञ तुही जाप तुही पुण्य तुही पाप तुही मेट तुही थाप तुही मंगल और श्राप तुही पुत्र तुही बाप तुही बुद्ध तुही आप जगन्नाथ संवारा। तुही आदि तुही अन्त तुही साधु तुही सन्त तुही जीव तुही जंतु तुही जीभ तुही दन्त तुही एक तुही लाख तुही पूरण अभिलाख कलंकी प्यारा॥

कवित्त—मच्छ कच्छ शूकर नरसिंह वामन परशुराम राम कृष्ण बुद्ध निष्कलंक दश अकार है। स्वयंभु मनु नारद सनकादिक रूप मोहनी विष्णु कपिलदेव व्यासदेवजी आचार है॥ दत्ता पृथु बद्री हयग्रीव हंस यज्ञ ऋषभ चौबीस धनंतर अवतार गति अपार है। कारण अभिलाख जान समय पाय प्रगट होत चौबीस अवतार ब्रह्मरूप निराकार है॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि चौबीस अवतार का सिद्धान्त एक महात्मा ने मेरे को उपदेश किया था वह सम्पूर्ण कहता हूं सुनो। पहला अवतार मीन हुआ, उसी को मच्छ कहते हैं। चैत्र कृष्ण पंचमी को राजा मनु के कमंडलु से उत्पन्न होकर शंखासुर दैत्य को मारा।सात लाख पैंतीस हजार वर्ष राज्य किया। चारों वेद जो चोर ले गया था प्रगट हुआ। यह मच्छ पुराण की कथा है।उस का सिद्धान्त ऐसा है कि बीजरूपी ब्रह्म जिस को मीन भी कहते हैं लिंगरूपी मच्छशरीर धरके शंखरूपी भग को छेदन करता है। और श्वासा जिसको वेद कहते हैं वह प्रगट होता है। श्वासा शरीर में चार हैं मुख नासिका गुदा लिंग। यह पहला अवतार हुआ। सब का होता है। दूसरा अवतार विष्णु की इच्छा से ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी को क्षीरसागर में कच्छ रूप हुआ और महिषासुर दैत्य को मार करके तीन लाख तेरह हजार वर्ष राज्य किया। और क्षीर सागर को मथन करके चौदह रतन उत्पन्न किये।

दोहा–धनु धन्वन्तरि धेनु हय, कमला शंख गयन्द
जहर सुरा मन कल्पतरु, रंभा अमृत चन्द

यह पुराण की बात है। उस का अर्थ ऐसा है कि वही बी-जरूपी ब्रह्म पेट को मथन करके पिंड हो जाता है। कच्छपके समान पंच कोश के अन्तर में रहता है। और चौदह इन्द्रि-य रतन समान उत्पन्न किया। चार अन्तस पांच ज्ञान पांच कर्म ये चौदह रतन हैं। दूसरा अवतार हुआ। तीसरा अवतार वराह (शूकर) का ब्रह्मा की छीक से हुआ चैत्र कृष्ण तेरस को। इकीस हजार वर्ष राज्य किया। हिरण्याक्ष दैत्य को फाडकरके मारा और पृथ्वी को जो विष्ठा के भीतर छिपा-या था उसे दांतपर धरके लाया। यह पुराण की बात है। उस का अर्थ ऐसा है कि गर्भबंधनरूपी हिरण्याक्ष को फाडकरके व-ही ब्रह्म शरीररूपी पृथ्वी को मल और मूत्र से बाहिर लाता है। जो स्त्री तथा माता के पेट में पडा रहता है। गर्भत्यागरू-पी शक्ति वराह मलमूत्रसंग से शूकर नाम प्रगट हुआ। यह तीसरा अवतार हुआ। चौथा अवतार नरसिंह खंभ फोडकर प्रहलाद के वास्ते हुआ। वैशाख शुक्ल चवदश को प्रगट होकर सत्ताईस हजार वर्ष राज्य किया। और हिरण्यकशि-पु दैत्य को फाडकरके रुधिर उसका पान कर लिया। यह पुराण की बात है। उस का अर्थ ऐसा है कि जंघारूपी खंभ पांव औरत का फोडकर बालक पैदा होता है। बुद्धि सिंह की रूप नरका शत्रुरूपी माता जो जीव को बांधा उस

की छाती पर चढ कर दूध पान करता है। यह चौथा अवतार हुआ। इन चारों अवस्था को चार पांव सत युग के कहते हैं। सत जुग का प्रमाण सत्रह लाख अट्ठाईस हजार वर्ष। लाख वर्ष ऐश अस्थिगत प्राण, इकीस ताड ऊंचे पुरुष बीस हजार ग्रहण। कातिक शुल्क नवमी गुरुवार श्रवण नक्षत्र विष्कंभ योग तुला लग्न में सत युग उत्पन्न हुआ। चारों अवस्था में पाप पुण्य नहीं है। पांचवां अवतार वामन का हुआ। कश्यप और अदिति से भादों शुक्ल बारस को। दो लाख अट्ठाईस हजार वर्ष राज्य किया। राजा बलि को साढे तीन पग पृथ्वी मांगकर तीनों लोक नाप लिया। उस पांव की धोवन गंगाजी हैं। ब्रह्म ने ब्रह्मलोक में धोया था। राजा बलि को पाताल भेज दिया यह पुराण की बात है। उस का अर्थ ऐसा है कि लडकपन की बालचर्या की अवस्था को वामन कहते हैं। उस की बातों पर बडे २ बलवान छले जाते हैं। यज्ञउपवीत में जो मांगता है वह पाता है। बलि का बंधन जनेऊ पहनना एक है। ब्रह्म फांस में कैद हुआ। बडे आदमी बालक के साथ बालक हो जाते हैं वे पाताल जाते हैं। यह पांचवां अवतार हुआ। छठवां अवतार परशुराम का हुआ, जमदग्नि ऋषि व रेणुका से वैशाख शुक्ल तीज को। सत्ताईस हजार वर्ष राज्य किया। सहस्त्रबाहु दैत्य को मारा। इक्कीस बार पृथ्वी निःक्षत्र जीतकर ब्राह्मणों को दान कर दिया। पिता की आज्ञा से माता का

शिर काट लिया । यह पुराण की बात है । उस का अर्थ ऐ-
सा है कि ब्रह्मचर्य की अवस्था को परशुराम कहते हैं ।
भोगरूपी दैत्य जिस के हजारों व्यवहार भोग के हैं उस
को सहस्त्रबाहु कहते हैं । ब्रह्मचर्य में हजारों भोग खंडन क-
रना पडता है । सर्व भोग त्याग करना होता है । और इस
अवस्था में माता का मुख नहीं देखना चाहिये । ब्रह्मचर्य खं-
डन हो जाता है । यही अर्थ शिर काटने का हुआ । और इ-
क्कीस बार पृथ्वी की परिक्रमा करके पुण्य उस का ब्रह्म के अ-
र्पण करना चाहिये । यह पृथ्वी जीतकर दान देना सिद्ध हु-
आ । यह छठवां अवतार हुआ । सातवां अवतार राम का हु-
आ । राजा दशरथ और कौसल्या रानी से । चैत्र सुदी नवमी
को । ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया । रावण और वालि दै-
त्यों को मारे । यह पुराण की बात है । उस का अर्थ ऐसा है
कि गृहस्थ अवस्था में दश इन्द्रिय का भोग है । उस में सुख
उत्पन्न होता है और आराम प्राप्त होता है । उसी आराम को
राम कहते हैं और रावणरूपी मद और वालिरूपी क्रोध इ-
स अवस्था में मारना चाहिये । दीन वृत्ति से रहना चाहिये ।
यह सातवां अवतार हुआ इन तीनों अवस्था को तीन पांव
त्रेता के कहते हैं । त्रेता का परिमाण बारह लाख छियानवे
हजार वर्ष । दश हजार वर्ष ऐश । मांस गत प्राण । चौदह
ताड ऊंचाई । ग्रहण संख्या छत्तीस हजार हैं । वैशाख शु-
क्ल तीज सोमवार रोहनी नक्षत्र शुक्ल योग कर्क लग्न में त्रे-

उत्पन्न हुआ । आठवां अवतार कृष्ण का हुआ । वासुदेव और देवकी से । भादो वदी अष्टमी को। कई वर्ष राज्य किया। शिशुपाल और दन्तवक्त्र और कंस को मारा। सोलह हजार गोपी व्रज में, सोलह हजार गोपी द्वारका में और एक सो आठ पटरानी से भोग किया। बाल ब्रह्मचारी अच्युत पदवी बनी रही।यह पुराण की बात है। उस का अर्थ ऐसा है कि वह अवस्था वानप्रस्थ की है। इस अवस्था में स्त्रीसंग रहती है विषय करना दोष है । रात को वस्त्र पर अर्द्ध बिछौना में तिनका रखना होता है । और कामरूपी शिशुपाल लोभरूपी दन्तवक्त्र, मोहरूपी कंस को मारना पडता है। और सर्व प्रकार की तपस्या इस आश्रम में करना चाहिये। यह आठवां अवतार हुआ। नवाँ अवतार बुद्ध का राजा इन्द्रदमन के वास्ते और पार्वती का शाप पूर्ण होने वास्ते। उडीसा में हुआ। तथा वही पिंड कृष्ण शरीर का समुद्र में वहकर द्वारिका से आया। अगहन शुक्ल तीज को हुआ। तीन लाख तेईस हजार वर्ष राज्य किया। रक्तबीज दैत्य को मारा। हाथ पांव नहीं हैं। जात का भेद नहीं । मौन धारण किया। यह पुराण की बात है । उस का अर्थ ऐसा है कि यह अवतार संन्यास अवस्था है। रक्त और बीज जो शरीर में है उस को मारना चाहिये । हाथ पांव नहीं होना निष्कर्म होना एक अर्थ है। इन्द्रदमन के वास्ते उस का अर्थ इन्द्रिय को दमन करना चाहिये । सर्वनाश तथा अद्वैतमत

संन्यास है । यह नवां अवतार हुआ । इन दो अवतारों को द्वापर के दो पांव कहते हैं । उस का परिमाण आठ लाख चौंसठ हजार वर्ष । हजार वर्ष ऐश रुधिरगत प्राण । सात ताड ऊंचाई । ग्रहण संख्या छियानवे हजार । माघ कृष्ण अमावास्या शुक्रवार श्रवण नक्षत्र सौभाग्य योग वृष लग्न में द्वापर उत्पन्न हुआ । दशवां अवतार निष्कलंकी आगे होगा । सम्बल मुरादाबाद के पास । नैमिषारण्य तीर्थ में । वैष्णव ब्राह्मण की कवारी कन्या से । भादों कृष्ण तेरस रविवार आश्लेषा नक्षत्र व्यतीपात योग मिथुन लग्न में प्रगट होगा । कालिंजर दैत्य को मारेंगे । यह पुराण की बात है । उस का अर्थ ऐसा है कि जब कलंकरूपी शरीर को छोड देवेगा तब निष्कलंक हो जावेगा । दशवां अवतार सब का होना बाकी है । इस अवतार को एक पांव कलियुग का कहते हैं । सौ वर्ष की ऐश अन्नगत प्राण । एक ताड ऊंचाई । चार लाख बत्तीस हजार वर्ष प्रमाण युग का है । जरा काल को कालिंजर कहते हैं । ये दश अवतार चारों जुग में होते हैं । अथवा एक जन्म में दश अवस्था होती हैं ।

और चौदह अवतार सूक्ष्म कारण संयोग से और हुए । उस का भी विस्तार कहता हूं । पहला अवतार स्वायम्भू मनु सृष्टि देखने के वास्ते ब्रह्मा के पुत्र । वह मन इन्द्रिय है । दूसरा अवतार नारद जगत् को भक्ति मार्ग बताने के वास्ते । और फिरने के वास्ते ब्रह्मा के पुत्र हैं । वह चित्त इन्द्रिय है ।

तीसरा अवतार विष्णु संतोषी दृष्टि निराकार से तथा ब्र-ह्मा के पुत्र वह बुद्धि इन्द्रिय है। चौथा अवतार सनकादिक ब्रह्माके पुत्र सदा पांच वर्ष की अवस्था वह अहंकार इन्द्रि-य है। पांचवां अवतार मोहनी दैत्यों से अमृत लेने के वास्ते क्षीर सागर से वह आंख है । छठवां अवतार कपिलजी, कर्दम ऋषि और देवहूति से। सांख्य योग प्रगट करने के वास्ते वह नाकइन्द्रिय है।सातवां अवतार व्यासजी, पराशर ऋषि और मच्छोदरी से। अठारह पुराण बनाने वास्ते । वह जिह्वा है । आठवां अवतार दत्तात्रय । अत्रिऋषि और अनु-सूया महाराणी से, २४ गुरु करने वास्ते । वह कान इन्द्रिय है। नवां अवतार राजा पृथु, वेनु के जंघा से । पृथ्वी को गौ बनाकर औषधि निकाला । वह त्वचा इन्द्रिय है । दशवां अवतार हयग्रीव, हुवा मधुकैटभ दैत्य मारने के वास्ते गुप्त से,वह हाथ है। ग्यारहवां अवतार बद्रीनारायण,धर्म भा-र्या से, तप करने वास्ते। वह पांव है। बारहवां अवतार हंस, उत्तर देने वास्ते प्रश्न सनकादिक के, वह लिंग है । तेरहवां अवतार धन्वन्तरि, क्षिरसागर से, रोगनाश होने वास्ते, वह गुदा है। चौदहवां अवतार यज्ञऋषभ इन्द्र की कन्या से, यज्ञ करने वास्ते। वह मुख है। यह चौदह अवतार सूक्ष्म का सिद्धान्त है । ये चौदह अवतार सूक्ष्म और वे दश अवतार बडे सब चौबीस अवतार ब्रह्म के होते हैं। वह व्यासजी की काव्य है। सब पुरुष का चौबीस अवतार होता है । चौदह

इन्द्रिय दश अवस्था सब की होती हैं। यह अवतार ब्रह्म का नहीं है। शूकर की पूजा, मच्छ कच्छ की पूजा कोई नहीं करता। दुष्ट जीव उस को मारकर खा जाते हैं। ब्रह्म को कौन खा सक्ता है? पुराण का अर्थ जो प्रगट में है, वह सिद्धान्त नहीं है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे। और हाथ जोडकर मुझ को कहा कि आज से यह सिद्धान्त, अज्ञान से मत कहना। मैं ब्रह्म को नहीं जानता।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंग में पहिली लहरी चैतन्यब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

दूसरी लहरी।

राम अवतार ब्रह्म है।

अथ श्रीरामचन्द्राय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि २४ अवतार ब्रह्म नहीं हैं। केवल राम अवतार जो अयोध्या में हुआ और सब कल्प में होता है वह ब्रह्म है। वही राम दूसरा अवतार भी होता है। जब पृथ्वी पर पाप बहुत होता है तब राम का अवतार अनेक रूप से होता है। जानकी जो जनकपुर में प्रकट हुई, वह माया है। हर कल्प में ऐसा होता है। और अन्त में सारी अयोध्या वैकुंठ को जाती है। रावण ऐसा दैत्य जिस ने चौसठ चौयुगी राज्य किया, मारा। उस के साथ कुम्भकर्ण मेघनाद खरदूषण और ऐसी सेना जहां अठारह अक्षौहिणी बाजिंत्र थे, सब ना-

श हुए। वाली ऐसा योधा जिस की कांख में रावण भी षट् मास दबा पडा रहा, नाश हुआ। ताडका, सुबाहु, मारीच जो विश्वामित्र के यज्ञ होने नहीं देते थे, सीक के वाण से मारे गये। समुद्र में सेतु बांधा। गौतम ऋषि की स्त्री जो शिला हो गई थी, चरण छूते अप्सरा होकर स्वर्ग को गई। अठारह पद्म यूथ सेना को इन्द्र पदवी दिया। वाल्मीकि ऋषि जो पहले व्याधा के समान थे, मरा मरा कहकर देवता हो गये। महादेवजी अपना इष्ट जानते हैं। वाल्मीकि ऋषि ने दश हजार वर्ष पहले उन की लीला रामायण में गाई। तीसरी तरंग चौथी लहरी में जो महात्मा ने तुम को उपदेश किया वह बहुत सत्य है। और सदेह सरयू में गुप्त हो गये। ऐसी महिमा दूसरे अवतार की नहीं है। कुछ पद रामचरित्र के देखने योग्य हैं

लावणी रामचन्द्र की सम्पूर्ण कथा॥

राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम। अवध पुरी में सुवरन बरसै दशरथ कीन्हो धरम अगम॥ जय और विजय द्वारपालक को सनकादिक ने दिया शराप। तीन जन्म तक राक्षस होकर फिर वैकुंठ पधारो आप॥ रामचन्द्र जब आप अवतरैं तब तब छूटैं तुम्हरे पाप। इस कारण से गढ लंका में निशिचरपति का बढो प्रताप॥ कुंभकर्ण को महाजु निद्रा ब्रह्मदेव ने किया करम। राम लच्छमन भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम॥१॥

महा पाप बाढ्यो पृथ्वी पर मेघनाद अविचार किया। चैतबदी में तिथि नवमी को रामचन्द्र अवतार लिया॥ यज्ञ राख निशिचर को मार्यो ऋषि पत्नी उद्धार किया। सिया स्वयम्वर धनुष तोडकर परशुराम को हार दिया॥ तिलक भंग जब भयो अवध में दशरथ पायो धाम परम। राम लच्छमन० ॥ २ ॥

सिया राम लछमन सहित जब तीनों बन को जाते थे। पशु और पंछी अवध पुरी में तडप तडप मर जाते थे॥ पांव पियादे जटा बनाये कन्द मूल फल खाते थे। यक्ष गन्धरव रूप बदलकर दरशन को सब आते थे॥ चित्रकूट को पावन करके पंचवटी में किया शरम। राम लच्छमन० ॥ ३ ॥

शूर्पणखा आई जब बन में लछमन उसकी काटी नाक। खर दूषण से भई लडाई चौदह कोटि मिलायो खाक॥ रावण और मारीच कपट कर सीता को ले गयो अचाक। रामचन्द्र पंपापुर पहुंचे गिद्ध जटायू को कर पाक॥ वहां बालि का नाश हुआ और अंगद ऊपर किया रहम। राम लच्छमन ० ॥ ४ ॥

हनूमान लंका में पहुंचे रावण का बन दियो उजार। नगर जारिके पुत्र मारिके सात समंदर आयो पार॥ जनकसुता को धीरज देके रामचन्द्र से कहा पुकार। भई तयारी पम्पापुर में वानर भालू चले अपार॥ सीतापति सुग्रीव केसरी जामवन्त नल नील पदम। राम लच्छमन०॥५॥

चली कटक पम्पापुर से जब सागर ऊपर वास किया। राम लच्छमन तीन दिवस तक सागर से अर्दास किया॥ गर्भ न टूटा जब जलपति का तब लछमन ने कोप किया। अबै जलाऊं सातों सागर रामचंद्र ने शान्त किया॥हाथ जोडकर कहै बिभीषण इस नादान की रखो शरम। राम लच्छमन० ॥६॥

सेतु बांध रामेश्वर थाप्यो लष्कर उतरी एकहि वार। गया बसीठि बाल बांकुडा रावण का कांपा दरबार ॥ प्रथम लडाई मेघनाद से लछमन के भइ शक्ती पार। मूर सजीवन तुरत लिआयो अच्छा कीनो पवनकुमार॥ भई लडाई कुम्भकरण से राम बाण ने किया खतम। राम लच्छमन० ॥ ७॥

मेघनाद को मार्‌यो लछमन रावण छोडो जीत की आश। महिरावण लै गयो राम को वहां पवन सुत कीनो नाश॥रावण मरा राम से लडकर जन्म मरण से भयो खलास। लंकाराज बिभीषण पायो सब देवन की पूरी आश॥ मंदोदरी भई पटराणी निशिचर कुल सब भयो भसम। राम लच्छमन०॥८॥

सीता मिली राम लछमन सो अवध पुरी को चल्यो विमान। भरत मिलाप राजा की शोभा घर२गावैं वेद पुराण॥ कपि भालू सब बिदा भये बर पायो दुर्लभ भक्ती ज्ञान। जनक सुता को वन में भेज्यो लव कुश पुत्र भये बलवान ॥ अश्वमेध ....पूरण करके राम सिधारे निज आश्रम। राम लच्छमन ०॥९

फल लावनी कहै खोफ से दोष न दवे अच्छे लोग। दूजे तीजे फिर जो कहहों उस में कहहों सब संजोग॥ इस के सि

वा मुकाम धार में सब दुनिया का लागा रोग। क
कहे गति अपनी भूल गया सब भक्ती जोग ॥
दयाल होवैं छूट जाय भवजाल भरम । राम
भरत शत्रुहन चारों भाई लिया जनम ॥ १० ॥

॥रामस्तोत्र–कवित्त ॥

चैत के महीना में नवमी बुध शुध पक्ष भगवत् अवतार अवध सरजूतीर लेवत हैं। दशरथ कौशल्या से रामचन्द्र प्रगट भये कैकयी से भर्त्त नाम लेत पाप खोवत हैं॥ लछमन शत्रुहन सुमित्रा से जन्म लियो चारों सुत अवध बीच देखत छबि जोवत हैं। गावत वसिष्ठ वाल्मीक आदि जन्म कथा सुनिके अभिलाख सहित संचित मल धोवत हैं ॥ १ ॥

विश्वामित्र राज ऋषि अरण्य में यज्ञ करे ताडका सुबाहु नित यज्ञ में सतावत हैं। भगवत् अवतार जान दशरथ से मांगन गयो बालक अज्ञान जान नरपति सँकुचात हैं॥ विद्या अभ्यास हेत लायो है राम लखन निशिचर संहार यज्ञ पूरण करवावत हैं। गौतम त्रिय शिलारूप तार्‍यो अभिलाख सहित ऐसी लीला अपार व्यास आदि गावत हैं ॥ २ ॥

गुरु के चरण वंद उठे भोर अवध चन्द सुमन के कारण गये देखन फुलवाई॥वहां सिया पिया हेत पूजत जगदंब अम्ब सखी एक आतुर से जायकर जनाई ॥ पूजन कीजिये भोर देखो दशरथ किशोर आये हैं फुल लेन आज दोऊ भाई ।

शोभा के सेवन सदन देखत छवि मन्द मदन मेरी अभिलाख धनुष तोड हैं राम माई ॥ ३ ॥

साज्यो स्वयम्वर आज जनकराज मिथिलापुर कहत ऋषि राज चलो तुमहू देखिआवो। वडे २ राजा महाराजा नरेंद्र इन्द्र रावण सहसबाहु सब देखिवे को आवो॥ उठै नाहिं शंकर धनु हारे सब वीरजन राम तुम उठाय धनुप तृण सम वहावो। सुरपुर के काम होवें भृगुपति विसराम होवें पूरण अभिलाख होवें राम सिया पावो ॥ ४ ॥

क्रोधित परशुराम आज राखैं भगवान् लाज शोचत मिथिलेश राज काज सब नशायो! पूंछत भृगुपति रिसाय तोड्यो किन धनुष आय जनक नेक दे बताय मृत्यु निकट आयो॥ बोलत कर जोड राज गिरा गोड सहित नाम कम्पत है परशुराम धनुष जब चढायो। हरषित अभिलाख रहै चिरंजीव दोऊ भ्रात साजके वरात सिया अवध को लिआयो॥ ५ ॥

दशरथ ने राज तिलक राम को विचार कियो देवोन ने भंग कियो वन को पठवायो है। श्रीरघुवीर प्राग चित्रकूट जाय वास कियो दशरथ को मरण पाय भरत अवध आयो है॥ लेकर परवार जाय राम से मिलाप कियो आज्ञा प्रमाण राम पांवडी पुजायो है। तमसा के तीर जाय गुफा में भंजन कियो शत्रुहन अभिलाख सहित परजा हित धायो है ॥ ६ ॥

इन्द्रसुत जयन्त चरण चोंच मार भाग्यो जब रामबाण तीनं लोक पीछे दिखरायो है। नारद के मत प्रमाण राम के

शरण गया फोरयो एक नेत्र पास इन्द्र के पठायो है ॥ मारयो विराध जाय पंचवटी वास कियो लछमन के हाथ नाक शूर्पनखा कटायो है। मारयो खर दूषण लंकेश हरयो सीता को पम्पापुर वालि मार सीता सुधि पायो है ॥७॥

कहत सुग्रीवजी देख हनूमान कपि वालि के दूत दोय फिरत बन हैं। धार बटु रूप सनकार मोहि सैन देतजो यह शैल वन बहुत घन हैं ॥ कहत हनुमान पहचान अवधेश मुनिनाथ यह शैल सुग्रीव जन हैं । सहित अभिलाष दोऊ प्रीति दृढ कीजिये जानकी हेत हनुमान तन हैं ॥ ८॥

भजो कपिराज यूथबंदर को सीताहेत अंगद ऋक्ष पवन पुत्र दक्षिणको धायो है। पंछी सम्पात सिन्धु तीर भेद सर्व कह्यो तरक्यो हनुमान सिन्धु कूद फाँद आयो है ॥ सुरसा को बल दिखाय लंकिनी को त्रास दियो घर २ में सिया हेत पवनपुत्र धायो है । मंदिर बिभीषण को देख्यो अभिलाष स-

कीन्हो पहचान तुरत जानकी दिखायो है ॥ ९ ॥

गरजत दशकन्धपुत्र देखो हनुमान बीर मारुत उनचास आज लंक बीच बहत है। होत है पुकार देत रावणहिं गुहार गार करत नहीं अब सहाय लंका शठ जरत है ॥ सुमरत सब अवधनाथ कीजे जल्दी सनाथ रावण असुझ जान कान सब करत है । भाषत अभिलाष वेद शास्तर पुराण शाख नेक पहचानो बात जो सुनकर जरत बरत है ॥ १० ॥

सीतासुधि पाय रामचन्द्र चल्यो लंका को वानर भालू

अपार चहुं दिशि से आवत है । पहुंचे जब सिन्धु तीर आ-
ये बिभीषण राज बांध्यो शिव सेतु कटक लंका में धावत है ॥
पाती लै पहुंचे जब लंका में अंगद बली भागे सब राक्षस
जान पवनपुत्र आवत है । रावण को डाट देत पांव को न
टार सको आयो भगवान पास जुद्ध को बढावत है ॥११॥

कहत दशकन्ध सुन प्राणप्रिया बावरी सहित त्रिपुरारि
कैलाश लाऊं । जीत सब लोक दिकपाल पाताल तक सोन-
घन नाद गढ लंक ठाऊं ॥ भयो दश शीश भुज बीश लंके-
श को भालु कपि मार नर कोट खाऊं । यही अभिलाष सं-
ग्राम कर राम से तिहूं पुर सुयश निज धाम पाऊं ॥ १२ ॥

कहत मंदोदरी सुनो दशकन्ध पिया राम को ब्रह्म अव-
तार जानो । जानकी दीजे विनय बहु कीजे शरण अवधे-
श रघुवंश भानो ॥ जपत त्रिपुरारि दिन रात जेहि राम श-
ठ ताहि नर कहत को हान मानो । कहत अभिलाष सुन
लंकपति बावरे राम की बैर जनि खैर जानो ॥ १३ ॥

कुंभकरण मेघनाद रावण अहिरावण सब निशिचर कु-
लनाश भयो देवन सुख पायो है । लंका बिभीषण को रावण
की नारि सहित त्रिजटा को भक्तिदान सीता लै आयो है ॥ बं-
दर सब बिदा भये रामचन्द्र राज कियो सीता को वन पठाय
यज्ञ को करायो है । लव कुश से युद्ध भयो आये जब रामचन्द्र
पुत्रन को त्याग सिया भूम में समायो है ॥ १४ ॥

कीन्हो अश्वमेध यज्ञ पृथिवी को भार हरयो दशरथ

वरदान कीन दुष्टन को मारयो है। पुत्र न को राज दियो ब्रा-ह्मणनिहाल कियो सरयू में गुप्त भयो भगतन को तारयो है॥ ऐसो अवतार ब्रह्म निर्गुण में भेद नांय गावै त्रिपुरारि शेष गाय २ हारयो है। मूरख अभिलाख ताहि गावत हैं आनमान सूरज को दीप जान उपमा उर धारयो है॥ १५॥

मैं ने हाथ जोड कर कहा कि रावण दैत्य होकर ब्रह्म की स्त्री को चुरा ले गया और हनुमान की खोजना से पता पाया। लक्ष्मण के शक्तिबाण लगने में अज्ञान समान विलाप किया। पवनसुत ने धवला गिरि(पहाड)लाकर अच्छा किया। मेघनाद की नागफांस में गरुड पंछी ने प्राण बचाये। महिरावण के बलिदान से हनुमान ने प्राण बचाये। सहसरावण के युद्ध में सीता को माता कहा तब वह काली रूप होकर उस को मारा। वेद में ब्रह्म निराकार सर्व व्यापक है वहां राम रहीम का चर्चा भी नहीं है। केकयी के श्राप से चौदह वर्ष जंगल में दुःख पाया। वाल्मीक ऋषि ने जो रामायण बनाया है वह आत्मज्ञान का सिद्धान्त है। उस का यंत्र[1] जो ग्रन्थ के साथ है देखो तब बोध हो जावेगा।

॥ परमार्थ सातों कांड रामायण ॥

कैलासब्रम्हांड।

आकाश वायु पुरुष स्त्री से शक्ति उत्पन्न हुई। तेज से संयोग हुआ। दो पुत्र अग्नि और शक्ति से प्रगट हुए। जल और पृथिवी उन को ब्रह्मांड कहते हैं।

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

[illegible]ांड।

उस ब्रह्मांड को शरीर नाम रक्खा। उस में आत्मा देव हुआ। दश इन्द्रिय राजा हैं। त्रिगुणी माया तीनों रानी हैं चार अन्तःकरण चार पुत्र हुए मन चित्त बुद्धि अहंकार। स्वभाव मंत्री, विद्या आई। अविद्या इच्छा भाग नाश हो गई निश्चय प्रीति प्राप्त होने से, सत्य देश धर्म श्रद्धा मिला। बंधन टूट गया। भविष्य के वास्ते परीक्षा हुई। विश्वास हुआ शक्तिप्राप्ति हुई।

अयोध्याकांड।

भूल आया भोग की इच्छा हुई। होतव्य कारण से अकर्म हुआ। फल पाया। भ्रमना हुई। धीरज से भवसागर पार हुआ। गुरु विवेक विचार प्राप्त हुआ। एकान्त में प्राणायाम किया। ममता परवार सम्पाति आई वैराग्य हुआ।

आरण्यकांड।

अशुभ चिन्ता को त्याग दिया। योगसिद्धि प्राप्त हुई। विरुद्ध मर गया। शुद्धता प्रेम आनन्द मिला। दृढता मिलने समय लोभ काम क्रोध मोह मद पाँचो विकार आये, शक्ति जाती रही असत्य देश को भक्ति प्राप्त हुई।

सुन्दरकांड।

दीनता ज्ञान असंग शील संतोष जप तप संयम नियम आसन प्रत्याहार ध्यान धारणा समाधी प्राप्त हुई। अज्ञान का नाश हुआ। अभ्यास करने से पुरुषार्थ मिला। प्रकाश हुआ।

आशा तृष्णा वासना दूर किया मिला हृदय में। सत्संग किया। सद्गुरु मिले। निर्मल बुद्धि प्राप्त हुई।

ोह गर्व ताप परसन्ताप और सब मोह की सेना मारी गई। कीर्ति शान्ति रह गई।

निष्काम

उस में कुछ ब्रह्म का अनुभव नहीं है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें दूसरी लहरी चैतन्य ब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ तीसरी लहरी ॥

कृष्ण अवतार ब्रह्म है।

अथ श्रीकृष्णचन्द्राय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शास्त्र प्रमाण और विचार प्रमाण कृष्ण का अवतार ब्रह्म है। यह अवतार पूर्ण कला से हुआ। त्रेतायुग में एक यवन था उस ने तप किया। उस को वरदान मिला कि अवतार से न मारा जावे। उस ने कंस का रूप पाया। उस के वास्ते पूर्ण अवतार हुआ। राम की कथा रामायण में है। कृष्ण की कथा अठारह पुराण में है। राम ने रावण वालि को मारा।

कृष्ण ने लाखों दैत्यों को मारा। जरासंध की लढाई में इक्कीस अक्षौहिणी दल अठारह बार आया था। सब को मारा। कौरव पांडवों की लडाई में अठारह अक्षौहिणी सेना मारी गई। द्वारिका में छप्पन करोड यदुवंशी आपस में लढकर मर गये। सोलह हजार गोपी, सोलह हजार राजकन्या एक सौ आठ पट रानी से भोग विलास किया। परन्तु बाल ब्रह्मचारी बने रहे। अर्जुन को गीता सुनाया। समुद्र से गुरु का मरा हुआ लडका जीता लाये। अर्जुन को समुद्र में अपना रूप दिखाया। गोवर्द्धन पर्वत छोटी अंगुली से उठाया। बाल अवस्था में हजारों दैत्यों को मारा। यमलार्जुन झाड को गन्धर्व बनाया। राजा नृग को गिरिगट योनि से छुडाया। रहस्यलीला में सोलह हजार कृष्ण हो गये। सुवर्ण की द्वारिका समुद्र में बसाई। गज और ग्राह का झगडा मिटाया। द्रौपदी की लाज रक्खी, कालिनाग को नाथा। ये सब लक्षण ब्रह्म के हैं। और बहुत आचार्यों का मत ऐसा है कि श्रीकृष्ण चन्द्र पूर्ण ब्रह्म हे।

॥ कृष्णाष्टक ॥

कबित्त–भादों अंधियार रात मथुरा में जन्म लियो लेकर वसुदेव तुरत गोकुल पग धारयो है। बेडी और हाथकडी पृथिवी में जाय पड़ो फाटक सब खोल दियो सोवत रखवारे है॥ काली और मेघ सिंह मार्ग में साथ रह्यो यमुना हरषाय रात कारी अंध्यारी है। बालक लै पहुंचे वसुदेव जाय नन्द

बार सोवत नंदरानी सहित कन्या गरु आरी है ॥ १ ॥

कन्या लै आये जब मथुरा में वासुदेव बेडी और हथक-डी पायन में डारी है । फाटक सब बंद भये पहरो सब जाग उठयो कन्या की कूक सुनत दौरयो सुरारी है॥जल्दी से हाथ पकड जाहो दे मारन को बिजलीसी चटक कहत सुरपुर पग धारी है। ऐरे मति मन्द मूढ मोहि पटक लाभ काह तेरो तो काल व्रज जन्म्यों गिरधारी है ॥ २ ॥

कन्या मुख वचन सुनत सोचत भये कंसराज दूती इक-ढिग बुलाय गोकुल पठवायो है। स्तनन में विष लगाय पहुँ-ची व्रजनन्द द्वार जसुधा सो हेत जोड बालक को धायो है ॥ छाती की राह प्राण खींच्यो जब नन्दलाल पहुँची सुरधाम जाय निर्मल गत पायो है। ऐसे बहु दूत कंस भेज्यो व्रज बा-र बार कीन्हो सब नाश पास कंस के पठायो है ॥ ३ ॥

कालीदह फूल लेन भेज्यो है कंसराज मोहन व्रजबीच खेल गेंद को मचायो है।मोहन चढ कदम कूद नाथ्यो है काली नाग फन पर सवार नाग श्राप को मिटायो है॥भेज्यो जब फूल कंस मन में भय मान भयो मारेगो मोहन कृष्ण निश्चय ठह-रायो है । नारद के मत प्रमाण धनुष यज्ञ प्रगट कियो भेज्यो अक्रूर आप काल को बुलायो है ॥ ४ ॥

मथुरा में कंस मार पांडवों को राज दियो कौरवों को नाश कियो जरासंध मारयो है। भौमासुर बाणासुर कोटिन यदुवं-श असुर मारयो शिशुपाल दन्तवक्त्र को उधारयो है॥गोकु-

ल अस्थान छाड द्वारका बसायो जाय गोवर्द्धन पर्वत को चढायके उतारयो है। ब्राह्मण सुदामा को ऋद्धि सिद्धि पूरण कियो पाँयन गजग्राह युद्ध जल में सिधार्‍यो है ॥ ५ ॥

दान की गली में रोकत वृषभानलली कहत ब्रजराज आज दान दैके जैहो। चोरी उठ प्रातकाल बेंचत सब ग्वालबाल सब दिनन को दान आज देकर के जैहो ॥ कैसी ठकुराई लडकाई करत नन्दलाल रोकत पराई नार ब्रज में हँसै हो। मानो अभिलाख खाओ दही दूध मेवा दाख छोडो यह टेक दान छाछ नाहिं पैहो॥ ६ ॥

ब्रज की हँसाई रह्यो चौदह भवन छाई राधा कृष्ण भय कन्हाई अब को कहा हँसै है। कैसी ठकुराई बतराई अंधराई तोहि जानत सब आँख देख आगै और जनै है॥ नन्द की दुहाई जसुधा मात सौंह खाई कहत सत्य हौं सुनाई राधा दान दे बनै है। बिहसत ब्रजनार ठाढ रोषत अभिलाख दोबत की नन्द लाल सो दान ले मनै है॥ ७ ॥

गोकुल के बसैया और हसैया ब्रजघरघर के गोपिन में कन्हैया बलभैया असुरारी को। भगतन के दयाल और दुष्टन के काल जाल नन्द के गोपाल लाल जसुधा महतारी को ॥ योगिन में योगी महा भोगी है भोगन को लोगन को मोहत छबि जोहत बनवारी को । कहत है गुलाब फिर प्यारी से देख आज कुंजन में गया कुँवर साँवलिया गिरधारी को ॥ ८ ॥

॥ राधाऽष्टक ॥

कबित्त-तीरथ के जाये चारो धाम के नहाये ते देव को मनाये राम कृष्ण रट लगाये ते। गीता को गाये और भागवत सुनाये ते व्रत के कराये और आसन लगाये ते॥ नेम के कराये ध्यान धारणा बनाये ते संयम के कराये प्राणायाम के चढाये ते। आठौं योग के कराये अभिलाख सोजु पाये सो सुरपुर को जायगा राधा गुण गाये ते॥१॥

मथुरा में जन्म भयो गोकुल में खेल कियो नन्द के गोपाल भयो पूतना नशायो है। यमला और अर्जुन के सराप को उधार कियो काली को नाथ बांह परवत को उठायो है॥ औरौ सब दुष्ट मार मधु वनमें रास कियो कंस को पछाड उग्रसेन को छुडायो है। ऐसे सब काम कियो पूरण अभिलाख सहित राधा के संग रह्यो राधा गुण गायो है॥ २॥

गोपिन में नायक सुखदायक यदुनायक को सुन्दर सब लायक वरदायक विज्ञानी को। काटत है बाधा जो साधन से साधा ऐसी वो राधा अनुराधा मन ज्ञानी को॥ यशोदा की प्यारी वृषभान की दुलारी अभिलाख तेरी यारी मनमोहन सुखदानी को। जावत गुण खानी सब हानी को प्राप्त भयो उपमा नहिं पायो रूप राधा महारानी को॥ ३॥

शिव की आराधा नारदहू नित साधा करैं ऐसी गुण

अगाधा सब बाधाकी नाशनी। मोहन की प्यारी गिरधारी सों यारी है चाहत नंदलाल बाल वृषभान कामिनी॥ बंधन को काटै यम दूतन को डाटै अभिलाख चरण चाटै ऐसी कृष्ण हरषावनी। व्रज के विहारी बनवारी मुरारी श्याम धावत जिहि नित्य ऐसी राधा व्रजबासिनी॥४॥

सूरज छिप जाय चन्द्र देखत रह जाय और तारा गिरि जाय देख रूप वृषभानी को। चम्पा सरमाय कुन्द कालो परजाय कमल सम्पुट हो जाय देख मोहन मन मानी को॥ तारा और कुन्ता मन्दोदरी द्रौपदी सीता पंच कन्या रहत हाजर निगह बानी को। बोलत अभिलाख सो तो मोहत है नन्दलाल जंगल में दुहत गाय राधा महारानी को॥५॥

दिनन की बारी मतवारी सिंगार साज वन के पनि-हारी तट यमुना के जावत है। देखत नरनारी बलिहारी बलिहारी करत मोहत आचारी ब्रह्मचारी मर जावत हैं॥ मुख की छबि न्यारी लटकारी बादर समान खोलत जब सारी तब सूरज छिप जावत हैं। खोजत गिरधारी अभि-लाखसहित प्यारी को राधा बनवारी की यारी सब गावत हैं॥६॥

मुख की उजियारी अंधियारी को नाश करै पायन की लाली हरियाली दिखरावत है। जोबन सुपारी बलिहारी मतवारी रूप प्यारी निजबारी सब जीवों को भावत है॥ रवि की उजियारी लटकारी सी नाश होत भादों की

कारी अंधियारी दिखरावत है । राधा सुकुमारी बनवारी से प्रीति करत देखत अभिलाख नित परमानन्द पावत है ॥७॥

सकुचत श्रुति शेष और शारद गणेश आदि पावत नाहिं पार ध्यान बार २ लावत हैं । पूर्ण अवतार कृष्ण सबके करतार भये गोकुल में नित्य रास मंडल करवावत हैं॥ माया महारानी ब्रह्माणी जहां पानी भरै रम्भा इन्द्राणी सब देखत सरमावत हैं । ऐसी गुणखानी वृषभानी मनमोहन सो राधा महारानी अभिलाख को पुरावत हैं ॥ ८ ॥

अष्टक की महिमा अभिलाख से बखान करूं गावत जो अष्टकाल सो ही भगवान् है। तीन काल गावै सो देवन से अधिक रहै भोर साँझ गावै सो पंडित परमान है ॥ एकबार गावै सो जगत में निहाल रहै ध्यान जो लगावै सो अष्ट सिद्धिमान है । कबहूं नहिं गावै केवल राधा रट लावै सो सुरपुर को जावै अभिलाख की जबान है ॥९ ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि त्रेता में राम अवतार हुआ द्वापर में कृष्ण अवतार हुआ। पहले का अवतार ब्रह्म नहीं होगा तो दूसरा अवतार ब्रह्म नहीं हो सक्ता। वसुदेवजी चोरी से गोकुल ले गये, माता पिता बंदीखाने में बहुत काल रहे । जरासंध से भाग गये। ब्रज में गाय चराया । चोरी करके माखन खाया। स्त्रियों के वस्त्र न्हाते हुए चुराये। सत्राजित यादव ने मनि की चोरी लगाई । उग्रसेन की चाकरी किया । सन्दीपन से विद्या पढी । रुक्मिणी

को चोरी से लेकर भागे। राधा जो उन की मामी थी उस के साथ विषय किया। बलरामजी की पुरुषार्थ कुछ कम नहीं थी। अन्त में मल्लाह के लडके ने हिरण जानकर तीर मारा पांव में लगा उस कारण से मर गये। यह कौन लक्षण ब्रह्म का है? बडे शरम की बात है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंग में तीसरी लहरी चैतन्यब्रह्मविचार नामानिरूपण सम्पूर्ण।

॥ चौथी लहरी ॥

सूर्य ब्रह्म है।

अथ श्रीसूर्याय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि सूर्य ब्रह्म है। जब आदि में सब ब्रह्मांड में अंधकार था, तब ब्रह्म को ब्रह्मांड बनाने की इच्छा हुई। तब सूर्यरूपी आकार हो गया। प्रकाश उस की माया है। वायु धुआं है। उस से जल उत्पन्न हुआ। जल से पृथिवी प्रगट हो गई। उत्पन्न पालन प्रलय तीनों काम सूर्य के हैं। छःही ऋतु सूर्य की कला है। सूर्य्य उदय न होवे तो संसार नाशमान हो जावे। चौरासी लाख सृष्टि सूर्य के आधार से है। सूर्य्य का प्रकाश उपमा योग्य नहीं है। जिस की उपमा नहीं वही ब्रह्म है। चन्द्रमा सूर्य्य की छाया है। बहुत मुलक में सूर्य्य को ब्रह्म जानते हैं। नव ग्रह पृथिवी सुद्धां सूर्य को परिक्रमा

देते हैं।जैसे देखरेख सूर्य्य की जगत् में प्रत्यक्ष है ऐसी दूसरे की दृष्टि नहीं आती । सूर्य्य को ब्रह्म नहीं जानना अन्धा ज्ञान है। सूर्य्य का यंत्र[1] और दोहा चौपाई कवित्त देखो ।

॥ सूर्यस्तोत्र ॥

दोहा–उदय अस्त जो नित करै, सो सूरज परकाश ।
चौदह भवन तिरलोक में, पूरण ब्रह्म अकाश॥
तम अपार संसार को, नाश करै अविनाश ।
ऐसो सूरज ब्रह्म है, चौदह भवन प्रकाश ॥
तीन देव अवतार दश, नव ग्रह बारह रास ।
सब सूरज के अंश हैं, शेष शारदा दास ॥
उत्पत्ति परलय पालना, सब सूरज से होय ।
और ब्रह्म जो जानै, निश्चय मूरख होय ॥

॥ चौपाई ॥

वंदौ अदिति ईश सुर भाना । जा को तेज विदित जग जाना॥
सर्व पदारथ तुम से दरशै । आतप काल शर्द जल बरषै ॥
तीन लोक के हो तुम कर्त्ता । चौदह भुवन के तुम संहर्त्ता ॥
तेतिस कोटि ज्योति है तुम से। चौरासी लाख उपजे बिनसे॥
सात ग्रहों के हो तुम राजा । बारह राशि के तुम महाराजा॥
तुह्मरे उदय जगत सब जागै।तुम्हरे अस्त शून्य सब लागै॥
तुम ईश्वर परमेश्वर सब के । कर्त्ता धर्त्ता सारे जग के ॥
स्वर्ग नरक सब तुम से राजै । तुम्हरी कृपा दुंदुभी बाजै ॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो ।

पाप पुण्य तुम देखनहारे । सन्त भक्त के तुम रखवारे॥
तिरगुण के तुम सिरजनहारे। शेष शारदा के करतारे ॥
सात द्वीप और सागर साता। तिन को क्षन में करो निपाता॥
तीन लोक तुम ने उपजाया । ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया ॥
रात दिवस सब तुम से होई। तुम्हरी महिमा जान न कोई ॥
देव दैत्य सब तुम को ध्यावें। तुम बिन कोई राह न पावें ॥
तुम्हरे उदय दृष्टि सब होई । हान लाभ के कर्त्ता दोई ॥
चौदह भवन में जोत बिराजै। तीन लोक में कारज साजै ॥
जेते काम जगत में होई । तुम्हरी कृपा सुधरैं सोई ॥
धन सन्तान मिलै सब तुमसे।भक्ति अरु ज्ञान मिलै सब तुमसे॥
व्रत तुम्हार नेम से करै। चार पदारथ घर में धरै ॥
चारों दिशा तुम्हारी पूजा । करै नेम से राजा परजा॥
सब के अर्थ करो तुम पूरा। तुम से विमुख न पावै धूरा ॥
दीन भक्त के तुम हो स्वामी। घट २ के हो अन्तर्यामी ॥
चार तुरंग पवन से परबल। रथ में लगे करै बहु छल बल॥
अरुण सारथी रथ को हाकै। क्षणन में सात द्वीप को डाकै॥
तेज पुंज की राश बखानो। चौदह भुवन जोत प्रगटानो ॥
उदय अस्त मध्यान्ह बनावै । रात समय अन्तर होजावै ॥
रात न होय रहै नहिं पर्दा । ऐसे हो तुम जग के बर्दा ॥
तम अरु अंधकार सब भागै । तुम्हरी कृपा सोवत जागै ॥
राहू केतु दुष्ट दुख देवै । ग्रहन करैं दान बहु लेवै ॥
और देवता को सब त्यागै । तुम्हरे चरण कमल अनुरागै ॥

उत्तर दक्षिण दुइ दिस रहो। घट बढ ज्योति जगत में करो॥
मैं पापी हूँ बहुत जनम का। काटो फंद दुण्ड इस जन का ॥
अपनी ज्योति में ज्योति मिलाओ।अपना दर्शन मोहि दिखाओ॥
मेरी लाज रहै जगमाहीं । मेरो यश गावैं जग मांहीं॥
कर अस्नान अरघ जो देवै । शुद्ध मनोरथ अपनो लेवै ॥
नमस्कार जो करै प्रभाता । चार पदारथ चहुं दिश पाता ॥
वरत करे अतवार अलोना। सुख सम्पत पावै बहु सोना॥
सदा अलोना जो जन खावै। सायुज्य मुक्ति परम पद पावै॥
चार पहर सन्मुख जो रहै । सुफल मनोरथ अपनो लहै ॥
आठ पहर जो ध्यान लगावै । सम्पूरण अभिलाख पुरावै ॥

कवित्त—सूनो संसार अंधकार जान ज्योतीसरूप कियो परकाश तेज भानु को जनायो है। थावर और जंगम चौरासी लाख योनि भयो वर्षा और गरम शरद तिर विधि प्रगटायो है॥ पूरव से पश्चिम तक उदय अस्त नित्य होत भोर मध्य सांझ तीन काल को बनायो है । ऐसे परिपूरण ब्रह्म सूरज अखंड उदित गावत अभिलाखदास निर्मल गति पायो है॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि चार पहर सूरज रहता है। चार पहर नहीं रहता। जो व्यवहार दिन को होता है वही रात को होता है। राहु केतू का ग्रहण होता है। हनुमान बंदर उत्पन्न समय लील गया। नव ग्रह में एक ग्रह अशुभ और सात आकाश में चौथे आकाश का मालिक । और सात वार में एक वार का स्वामी है। सूरज की कन्या चित्रगु-

त्त को विवाही गई। चन्द्रमा अत्रि ऋषि का पुत्र है। और पुराण में सूर्य्य कश्यप ऋषि का पुत्र है। पश्चिम के मुल्क में एक हकीम ने कूप में सूरज बनाया। बारह कोस तक नित्य उस का प्रकाश रहता है। सूर्य्य की संख्या कोई मत में बारह है। सूरज की अवस्था ६० घडी में पांच प्रकार की होती है। ब्रह्म सदा काल एक अवस्था से रहता है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे॥

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें चौथी लहरी चैतन्यब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ पांचवी लहरी ॥

नारायण क्षीरसागरवासी ब्रह्म है।

अथ श्रीलक्ष्मीनारायणाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि नारायण ब्रह्म है। सदा काल क्षीरसागर में शेष नाग के फणपर शयन करता है। लक्ष्मी सदा सेवा में रहती है। उसी को शक्ति और माया भी कहते हैं। वह माया अपनी सामर्थ्य से सारा जगत् बनाती है। ब्रह्म को खबर नहीं वह सदा सुषुप्ति अवस्था में रहता है। ब्रह्मा विष्णु महेश उस शक्ति के पुत्र हैं। और हर एक औलाद में एक एक गुण विलग है। पहले ब्रह्मा उस में रजोगुण, दूसरे विष्णु उस में सतोगुण, तीसरे महेश उस में तमोगुण। रजोगण से १५इन्द्रीय। सतोगण से १०देव।

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

तमोगुण से पंच तत्त्व २५ प्रकृति उत्पन्न हुईं। उस से सारा जगत् उत्पन्न होता है। उस का विस्तार यंत्र[1] और दोहा चौपाई में देखो।

॥ चौपाई ॥

ब्रह्म निरंजन मूल बखानो। शाखा माया परबल जानो॥
ताते तिरगुण उपजे देवा। ब्रह्मा विष्णु महेश अभेवा॥
रजगुण ब्रह्मा सतगुण हरी। तमगुण शंकर करता करी॥
रजगुण से इन्द्री पहचानो। अन्तस कर्म ज्ञान अनुमानो॥
एक २ में पांच बनावै। ऐसे सब को नाम बतावै॥
अंतःकरण चित्त मन बुद्ध। अहंकार अंतस् परसिद्ध॥
त्वचा नाक श्रवण अरु बानी। चक्षू ज्ञान इन्द्री जानी॥
हाथ पांव मुख लिंग गुदा। कर्म इन्द्री जानो सदा॥
सत गुण से सब देव बनाओ। अंतस देव को नाम लखाओ॥
विष्णु शक्ति ब्रह्मा ब्रह्म। शिव शंकर अंतस के धर्म॥
सूर्य कुबेर आश्विनीकुमार। सरस्वती गणेश ज्ञान में सार॥
वरुण इन्द्र दिकपाल करम। प्रजापति जमराज धरम॥
तमगुण से उपजो संसार। पांच तत्व पच्चीस विकार॥
नभ वायु पावक जल भूम। पांच तत्व की देखो धूम॥
काम क्रोध लोभ मद मोह। यह प्रकृति में जानो द्रोह॥
चलन कूद दौडन फैलाव। संकोचन वायू परभाव॥
तेज आलकंश क्षुधा पियास। नीद अग्न में है परकाश॥
रुधिर पसीना चर्व्वी राल। वीर्य्य आप से उपजो जाल॥

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

अस्थि मांस नाडी चर्म रूम । पांच प्रकृति बनावै भूम ॥
ऐसा झाड ब्रह्म का देखो। सागर में नारायण पेखो ॥
शेष नाग का आसन कहै। शक्ति माया हाजिर रहै ॥
ऐसे ब्रह्म को ध्यान लगावै। सब अपनी अभिलाख पुरावै॥

दोहा-पय सागर के बीचमें, शेष नाग के शीश।
शयन करै कर्त्ता पुरुष, सत्य नाम जगदीश ॥
शक्ति सेवा में रहै, माया करे पसार।
तीनों लोक चौदह भुवन,है अभिलाख अधार ॥

अजामिल भीलने अपने लडके को नारायण नाम से पुकारा मुक्ति पाया। वर्तमान में सत्यनारायण की कथा चारों वर्ण में होती है। कोई कल्प में नाभि से कमल होता है। उस में ब्रह्मा उत्पन्न होता है और वेद पुराण का मत भी ऐसा है कि नारायण क्षीरसागरवासी है। जब देवतों को संकट हुआ तब क्षीरसागरतीर जाकर पुकार किया यह सिद्धांत अचल है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि, जब पांच तत्व तमोगुण से हुए तो उस के पहले क्षीरसागर क्यों कर हो सक्ता है। और रूपमान नारायण में कौन तत्त्व थी। और माया भी अविनाशी हुई, ब्रह्म घट २ व्यापक मिथ्या होगा। और जगत की कर्ता माया प्रसिद्ध हुई। ब्रह्म सदा निद्रा में रहता है ये भी कहना उचित नहीं। निद्रा मैथुन आहार, प्रकृति जीव को हैं ब्रह्म को नहीं हैं। नारायण शब्द का अर्थ जलचर प्रसिद्ध होता है। और २४ अवतार ब्रह्म का पुरुषरूप हु-

आ स्त्री नहीं हुआ। लक्ष्मी द्रव्य को कहते हैं। जो नीच ऊंच सब को प्राप्त होती है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें पांचवी लहरी चैतन्यब्रह्मविचार नाम निरूपण सम्पूर्ण।

॥ छठी लहरी ॥

आदिज्योति महामाया देवी ब्रह्म है।

अथ श्रीदुर्गायै नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि आदिज्योति महामाया देवी ब्रह्म है। शक्तीरूप होकर चराचर में व्यापक है। और बड़े२ दैत्यों को पुरुष अवतार होकर मारा। जानकी ने हनूमान को उपदेश दिया था कि अयोध्या में राम अवतार मेरा है। जब रामचन्द्र ने सप्तम रावण के युद्ध में सीता को माता कहा तब वह कालीरूप होकर नाश किया। शुंभ निशुंभ को ऐसा वरदान था कि अवतार से न मारा जावे। उस को अपने असली रूप से मारा। जब २देवतों को संकट पडा तब २ देवी ने उपकार किया। कृष्ण को काली अवतार कहते हैं। अर्जुन को समुद्र में जो दर्शन हुआ वह देवी है। त्रिपुर ऐसा दैत्य काली के वान से मारा गया। स्त्री से पुरुष होता है। पुरुष से स्त्री होना असंभव है। एक स्तोत्र देवी का भजन योग्य है।

॥ देवीस्तोत्र–अष्टपदी ॥

ऐ श्रीकालिका कृपा कीजे॥मोहि निज शरण राख सुख दीजे॥

प्रगटे संपदा विपत छीजे। व्याधि मिट जाय हो रहै जै जै॥ मेरीसब आपदा को हरि लीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥ १॥ तुझ को कहते हैं कालिका देवी। तू ही ब्रह्मा महेश की सेवी॥ तू सकल जगत् में प्रगट देवी। आदिदेवी अनादि तू देवी॥मेरे अपराध को क्षमा कीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥२॥ ऐ भवानी तू जगत् रानी है। तेरी लीला विकट कहानी है॥ तू ही ब्रह्मा महेश बानी है। तू चतुर वेद में बखानी है॥ चित्त को मेरे शुद्ध कर दीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥ ३॥ तू सकल सृष्टि जगत जाती है। तू सकल कामना पुराती है॥ चौदह लोक तू बनाती है। आदि और अंत तू खिपाती है॥ कामना मेरी पूर कर दीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥ ४॥ दैत्य भंजन व देव की माया। है तीनों लोक पर तेरी दाया॥ नरक और स्वर्ग है तेरी माया। चौदह लोक हैं तेरी छाया॥ भर्म भवजाल से जुदा कीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥५॥ पंच कन्या तुझे कहै कोई। आदि माया तुझे कहै कोई॥ नवदुर्गा तुझे कहै कोई। सर्व शक्ति तुझे कहै कोई॥ वासना मेरी नाश कर दीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥६॥ चार जुग में तु ही रही परधान। तेरी लीला का कुछ नहीं परमान॥ चौव्वीस अवतार है तेरी संतान। वंदना तेरी करते है भगवान॥ मोह मद को निपात कर दीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥ ७॥ ऐ जगत मात

सृष्टि की अम्बा। तुझ को कहते हैं लोग जगदंबा॥ दास की आस पूरकर अंबा। मैं तेरा पुत्र तू मेरी अंबा॥ काम और क्रोध शांति कर दीजे। दास अभिलाख पर कृपा कीजे॥८॥

॥ देवीस्तोत्र—चौपाई ॥

श्रीगजवदन गणेश विधाता। ज्ञान बुद्धि भक्ति की दाता॥ गुणावाद माता का गाऊं। सब अपनी अभिलाष पुराऊं॥ देवी शक्ति मात भवानी। चारों नाम मुक्ति की दानी॥ दुर्गा रूप आदि कहवावै। जिह कर यश पुराण में गावै॥ मात शारदा सब को पालैं। देव दैत्य सब के उरशालै॥ ज्ञानविचार सरस्वती देवै। मूरख को पंडित कर लेवै॥ रुक्मिणि दर्शन कर फल पावै। मात अंबिका कृष्ण मिलावै॥ कमला का जो नाम उचारै। सुख पावै वैकुंठ सिधारै॥ चंडी दुष्ट दैत्य को मारै। भक्तन की अभिलाख सुधारै॥ ध्यान महाकाली का करै। संचित पाप दुःख सब हरै॥ करै कालिका जो परसिद्धी। देवै रिद्धि सिद्ध नौ निद्धी॥ काली को पूजे दिनराता। चार पदारथ आवै हाता॥ आदि अनादि जगत बनावै। चौरासी लख को उपजावै॥ हिंगलाज को ध्यान लगावै। मुक्ति सहित परम पद पावै॥ मात कामाक्षी कृपा करै। रिद्धि सिद्ध सब घर में धरै॥ पाटन उत्तर देश विराजे। ड्योढ़ी सदा वधाई बाजे॥ भैरो सहित भैरवी गाऊं। जन्म २ का पाप नशाऊं॥ ब्रह्मचारिणी करै अचारा। तीन लोक में करै सहारा॥ शैलपुत्तरी शीलनिधाना। जा के व-

श शंकर भगवाना॥ उमका झुमका दोनों वहन। दुष्ट दै-
त्य को करती दहन॥ सिद्धी हर सिद्धी को भजे। सब शृंगा-
र सहज में सजे॥ चामुंडा की अस्तुत करो। त्रिविध ताप
को तन से हरो॥ ज्वालामुखी तेज दर्शावै। संतन की अभि-
लाष पुरावै॥ विमला विमल करै सब ज्ञान। पंडित होय मूढ
अज्ञान॥ विन्देश्वरी रहै विन्दाचल। दर्शन करै सो होवै नि-
र्मल॥ परमेश्वरी लगावै पारा। जो पूजे सोलह प्रकारा॥
बाला सब में बाला राखे। सर्व पदारथ का सुख चाखे॥
महा सुंदरी सुंदर करै। नेम प्रेम से पूजन करै॥ अन्नपूर्णा
पूरण रहै। रिद्धि सिद्ध सब घर में लहै॥ जगदंबा जग पावन
माता। मुक्ति क्तभ वैकुंठ की दाता॥ कुश मांडिका रहै कृपाल।
छूट जाय सब माया जाल॥ गौरी सहित गणेश मनाऊं।
स्वामी कार्तिक ध्यान लगाऊं॥ महालक्ष्मी संपत देवै।
अपनी सेवा पूजा लेवै॥ मात कराली परसन रहै। काल-
कराल से निर्मल रहै॥ चंद्रघटिका घंटा साजे। सेवक
सदन दुंदुभी बाजे॥ बगुलामुखी देय संतान। बुधवान ल-
क्ष्मी निधान॥ मात विजाशन पूरै आसा। दुष्ट दैत्य की होवै
नाशा॥ मात शीतला शीतल करै। दुष्ट दैत्य को भंजन करै॥
महाज्योत का रहै उजाला। ध्यान करै जो तीनों काला॥
भीमा देवी द्वापर वाली। चौदह भवन की है रखवाली॥

॥ लावणी ॥

महा जोत अद्भुत सरूप विकराल रूप जय जय माता।

संसार छोड सब मोह तोड हूं हाथ जोड तुझ को ध्याता ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश आदि सब देव तुही को ध्याते हैं । सती लक्ष्मी ब्रह्माणी अर्धंग नार सब पाते हैं॥ राम कृष्ण परशुराम आदि तेरी आज्ञा सब आते हैं । और देव तेतीस कोट शरणागत तेरी जाते हैं ॥ चार आठ सोला चौसठ भुज से भी हैं काल की तूं दाता । महा जो० ॥ १ ॥ शुंभ निशुंभ दैत्य भंजन तू रक्तबीज को नाश किया । महाबली त्रिपुरदानव को एक बाण से फाँस लिया ॥ आदि शक्ति संसारहेतु तूं घट घट अंतर वास किया । आदि अनादि युगादि जगत में चौराशी परकाश किया॥ सहस्र भुजा और कोट शस्त्र से पापमोचनी सुखदाता । महा जो० ॥ २ ॥ विन्ध्यवासिनी दुष्ट नाशिनी वज्रासनी तूं ज्वाला । खड्ग कृपाण बाण गले सो हैं दुष्टन की मुंडनमाला ॥ रंग बरंग रूप दिखलावे तरुण वृद्ध सुंदरबाला । आदि जोत जगदंब अंब ब्रह्मांड अंध की उजियाला ॥ कल्पवृक्ष और कामधेनु नव निधि सिद्धि की तूं दाता । महा जो० ॥३॥ देव असुर संग्राम जीतके दैत्यों को संहार किया। सुर नर मुनि गंधर्व आदि को संकट में उपकार किया ॥ हिंगलाज कामरू कामाक्षी जगत हेत प्रचार किया । जय काली कलकत्तेवाली सुत्रा को अधिकार दिया ॥ मान मथो औरंगजेब को टका दुकान अभय पाता । महा जो० ॥ ४ ॥ शारदरूप बैठ महियर में आल्हको बरदान दिया । श्रीचंद चामुण्डा पूज्यो उन को पद निर्वाण दिया ॥ भैरों भूत

भवानी डाकिन सब को तूं अस्थान दिया। दुर्गा काली यक्ष मतंगी सब को घर घर मान दिया॥ देवमात और दैत्यमात और जगत मात त्रिभुवन माता। महा जो० ॥ ५ ॥ हिंदु मुसलमान ईसाई सब तेरे को ध्यावत हैं। धर्म मोक्ष और अर्थलाभ तेरी किरपा सब पावत हैं॥ तेरी सेवा भक्ती में अपनी अभिलाख पुरावत हैं। सहत लाख अभिलाखदास शरणागत तेरी आवत हैं॥ जनम मरण वैकुंठ मुक्त सुरलोक आदि की तूं दाता। महा जो० ॥ ६ ॥ इति देवी की लावणी समाप्त ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

-मदोदरी रावणगृह, लंका की पटरान।
मेघनाद बलवान सुत, जीतो सकल जहान॥१॥
अनसूया का जोगबल, जानत सकल जहान।
दत्तपुत्र जाके भये, चंद्र पूत बलवान्॥२॥
नार अहिल्या ऋषि की, पति आज्ञा पाषाण।
रामचरण की धूल से, पायो गत प्रधान॥३॥
कुंती पांडव पत कियो, पांच पुत्र बलवान्।
देवन से उत्पन्न कियो, वऱ्यो द्रौपदी रान॥४॥
ताराबाल सुग्रीव संग, पंपा पूर पहाड।
राज करे अभिलाख से, अंगद बली कुमार॥५॥
सीता सती जानकी, जनक सुता परधान।
ध्यान करे अभिलाख से, पावे पद निर्वाण॥६॥

राधा रुक्मिमण कृष्ण संग, मधुवन करे बहार ॥
नाम लेत पातक हरै, मिले पदारथ चार ॥ ७॥
शक्तीरूप अनादि है, वरण सके नाहिं शेष ॥
ब्रह्मा विष्णु पुत्र हैं, सेवा करे महेश ॥ ८ ॥
आदि ज्योत अद्भुत चमक, चिनगारी शिशुभान॥
उत्पति पालन प्रलय सब, शक्ती रची जहान ॥९ ॥

जब जब महामाया ने दुष्टों को मारा रुधिर मांस उन का खान पान कर लिया । और अबतक वो ही नैवेद्य देवी के पूजन में चलता है । शुंभ दैत्य सूकरयोनि हुवा। निशुंभ बकरा हुवा। महिषासुर भैंसा हुवा। रक्तबीज मछली हुवा। रुधिर सुरा होकर चौदा रतन में प्रगट हुवा । इस नैवेद्य से एक कन्यारूपी शक्ति को जो रजस्वला और भोग से निष्कलंक हो पंच मकार से तृप्त करिके विधि-संयुक्त उस की पूजन करे वो आद्य जोत मनोरथ सिद्ध करेगी । और जब से पंचमकारी पूजन बंद हुवा । ब्राह्मण साधू की शक्ति जाती रही। शाक्तमत अनादि है, ब्रह्मा विष्णु महेश देवी के पुत्र हैं। मैं ने हात जोडकर कहा कि वेद में ब्रह्म पुरुष लिखा है। और शक्तिरूप आधीन है। जिसके रूप नहीं उस के शक्ति नहीं। और देवी दुर्गा भजन क्यों करते हैं। हनुमानजी ने पाताल में पांव से दबाया था महिरावण के यहां और रक्तबीज के संग्राम में जब देवी का क्रोध शांत नहीं हुवा तब शिवजी ने मुर्दारूप

... उ ... ्वी ने ...

स्मरण किया, तब चक्र सुदर्शन से काटकर द्वादश लिंग प्रसिद्ध किया। मद्य मांस का नैवेद्य राक्षसी है। बाबा श्री-चंद ने भक्तगिर गुसांईं को हिंगलाज देवी का दर्शन गुरुद्वारा में झाड़ू देते कराया। तब वो गुसांईं से उदासी हो गये। पूरब में उन का भेष बहुत है। इस कारण देवी को ब्रह्म कहना मूरखपना है। करोड़ों देवी भगवान की आज्ञा में हैं ... सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें छठी ...न्यब्रह्मविचार नामानिरूपणा समाप्त।

॥ सातवीं लहरी ॥

शिव महादेव पूर्ण ब्रह्म है।

... नमः। मैं दूसरे ... महा...

गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि, शिव महादेव पूरण ब्रह्म है। शक्ति शंकर की अर्धांगी है। लिंगरूपी शरीर जिस में सतरा पदार्थ प्रसिद्ध हैं। वो शिव है अहंकाररूप चराचर में व्यापक है। सगुण रूप से भी कैलासपर्वतपर विराजमान है। छत्तीस करोड़ देवता अठाशी हजार ऋषि सब शंकर के हुकम में हैं। उस की इच्छा से उत्पत्ति प्रलय होती है। ब्रह्मा विष्णु उस के पुत्र हैं और सब अवतार उस को पूजते हैं। उस के वरदान से एक एक दैत्य ब्रह्म समान हो गये। कैलास पर्वत उत्तर

घड साधन करे। "ॐ फट् स्वाहा"। इस साधन से वज्र अंग

उस राह से महात्मा लोग जाते हैं। और जावेंगे। मार्ग में
वलोक इन्द्रलोक सूर्य-चन्द्रलोक नाग-सिद्धलोक सत्यलो-
लोकवाले जाने में विघ्न करते हैं। अनेक
प्रकार की माया और सुख सन्मुख लाते हैं। जिसपर शंकर
की कृपा विशेष होती है वो उस सुख को देखता नहीं।
सीधा कैलास को चल हैं।
तुर्भुजा रूप

कलियुग में लाख महात्मा सदेह कैलास को जावेंगे। और
शिवाय अवघड मंत्र षडक्षरी के और कोई दूसरा मंत्र
जीव के कल्याण का नहीं है। कदाचित् महादेव ब्रह्म न
होते तो उन के लिंग की पूजा कोई न करता। मूलस्थ
लिंगपुराण शिवपुराण देखो। वेद में शिव भगवान् शब्द
प्रमाण है शिवस्तोत्र देखो

॥ अथ शिवस्तोत्र-प्रभाती ॥

गाई ये त्रिकाल काल महाकाल शिव दयाल गिरिजा अर्धं ग संग सोहत शिर गंगा। ओंकार आद्य ज्योत विश्वनाथ मुक्ति देत रामनाथ निर्गुण पद बदरी दुख भंगा॥शंकर शिव त्रिपुरारि कामदेव दहनहार गावत हैं वेद चार नगन जटल अंगा। नंदीपर है सवार अगड बंब की पुकार स्वामी कार्तिक कुमार गणपत सुत संगा ॥ १ ॥ डमरु कि घोर ताल तांडव की रागमाल शिंगी मृदंग ताल बाजत सुर चंगा। केहरकर मृगछाल सोहै गिरि नाग माल जटाजूट पटलजाल कारी बहु रंगा ॥ जटा भसम मुंड माल तीन नेत्र कर कपाल चंदा सोहै ललाट दैत्य भूत संगा॥जिन के हैं शिव अधार तिन की महिमा अपार गावत अभिलाख दास काशीतट गंगा गाईये त्रिकाल काल महा काल शिव दयाल गिरिजा अर्धंग संग सोहत शिर गंगा ॥ २ ॥

॥ शिवचालीसी-चौपाई ॥

शिव शिव कहत होत आनंदा॥शिव शिव भाखत परमानंदा॥
शिव शिव कहत पदारथ पावे॥शिव शिव कहत मुक्त हो जावे॥
शिव शिव कहत होत कल्याणा। शिव शिव कहत संपदा नाना॥
शिव शिव कहत ज्ञान सब पावे॥शिव शिव कहत स्वर्ग पुर जावे॥
शिव शिव कहत पाप सब जावे ॥शिव शिव तीन लोक दर्शावे॥
महादेव है सब के स्वामी । घट घट के है अंतर्यामी ॥

शंकर शिव त्रिपुरारी भोला। गौरा भांग खिलावे गोला॥
गांजा निशदिन चिलम चढावे। पलके उघडे और रह जावे॥
थूवर आंक धतूर संखिया। भूत पिशाच असंख्य पंखिया॥
सब का भोग गणेश लगावे। स्वामी कार्तिक हाथ धुवावे॥
गौरा पांव दबावें निशदिन। भैरों छाड बिछावें आसन॥
शक्ति शाप ब्रह्म को लाग्यो। विष्णू भस्म भयो शिव जाग्यो॥
शक्ती को अर्धांग बनायो। ब्रह्मा विष्णु तुरत जियायो॥
हरणाकुस ऐसो वर पायो। विष्णू को नरसिंह बनायो॥
रावण कुंभ करण वर पाता। रामरूप होय उसे निपाता॥
ऐसे बहुत दैत्य वर पायो। विष्णु होय अवतार नसायो॥
शंभु वास सर्वज्ञ बतावें। सगुण को कैलास दिखावें॥
सीता भेख सती जो लीना। तहि कारण उन को तज दीना॥
मृगछाला वाघंबर गजचर्म। नाग भसम मसानपर आश्रम॥
कर कपाल शिर खप्पर सोहै। डमरू हाथ मदन छब मोहै॥
शिंगी पुंगी भूत बजावे। तांडव राग गंधर्व गावे॥
नंदीकी छब अधिक बिराजे। जिस की पीठ महाप्रभु राजे॥
शिंग पूंछ खर कान कि शोभा। मनो छबी देखि मदन मन लोभा॥
चौदह भुवन का भार उठावे। क्षण में प्रदक्षिण कर जावे॥
माथे पूरण चंद्र विराजे। शीश जटा में गंगा राजें॥
कर त्रिशूल वरधा असवारा। भूत प्रेत दैत्य के धारा॥
गरुड श्वान चूहा संग रहें। गणपति आदिक उस पर चढें॥
साठ हजार बरस पर्वतपर। पार्वती तप कियो बराबर॥

ति गर्भ बढाया । जग विध्वंस शीस

क्षि में नाराय

काशीविश्वनाथ को ध्यावें । ओंकार नर्मदा चितावें ॥

न कनव

री लावे । दूध अबीर गुलाल चढावे ॥

फल धत्तूर का डोडा लावे । आक फूल बेल अधिक चढावे॥

घृत कपूर को दीप जलावे । अगर तगर पंचांग मिलावे ॥

तीन काल पूजे भगवाना ॥

। अंतकाल वैकुण्ठ कूं जावे ॥

संपूरण अभिलाख पुरावे॥

मैं ने हात जोडकर कहा कि लाखों दैत्य महादेवके वरदानी विष्णुके हाथ से मारे गये। बहुत ठिकाणा दैत्य और विष्णु के युद्ध में महादेव दैत्य के सहायक हुवे। परंतु पीछे हार मान कर स्तुत किया। और सती परम प्रिया को जानकी

सुर के आशीर्वाद में

पुत्र हैं। निराकार हेतु अठाशी हजार बरस की समाधि करते हैं। रामनाम का इष्ट है, और शिव की आयुष्य सौ बरस देव का प्रमाण है। रामाश्वमेध यज्ञ में हनूमान बंदर ने महादेव को बहुत मारा। गाली दिया। शिवनिर्माल्य खाना

उन का शत्रु है, भगवान

पर कामातुर होकर दौडे । जब नहीं पोंहच सके तब लिंग

सुदर्शन से काट

स्वरूप हैं

करता है । ये कौन लक्षण ब्रह्म के हैं? यह सुनकर मह

गुरु चुप हो रहे ।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें

सातवीं लहरी चैतन्य ब्रह्मविचार नामानिरूपण संपूर्ण ।

है

महात्मा

महात्

पंचदेवता को ब्रह्म कहते हैं । वोही पांचों पंचतत्व

स्वामी हैं । पहिले विष्णु आकाश का स्वामी श्वेतवर्ण फीका

त्याग क्रिया । दूसरा शक्ति वायू का स्वामी हरा

क्रिया । तीसरा रुद्र अग्निरूप

ह्मा जल का स्वामी रक्त वर्ण खारो रस पालन क्रिया । पा-

चवा गणेश पृथिवी का स्वामी पीत वर्ण मधुर रस उत्पत्ति

क्रिया । शिवाय इन पांच देव के और कोई देव निराकार सा-

कार नहीं है । इन पाँचों देव का अवतार भी होता है । पी-

छे संसार में पंचतत्व का विस्तार सब को प्रसिद्ध है । सर्व-

जगत में पंचदेव की उपासना है। जिस की निश्चय जिस पर है उस को पूजता है। इसका विस्तार पंचीकरण यंत्र[1] और दोहा चौपाई में देखो।

॥ चौपाई ॥

पंच देव सब जग के करता । पंच देव है ब्रह्म अकरता ॥
पंच देव त्रिगुण के करता । पंच देव सर गुण के करता ॥
पंच देव बिन कुछ नहिं होई । पंच देव जो करे सो होई ॥
पंच देव ब्रह्मांड के नायक । जगतपूज्य पूजन के लायक ॥
पंच देव चौरासी करे । पंच देव अविनाशी करे ॥

दोहा—पंच देव ब्रह्मांड में, ब्रह्मरूप परधान ।
स्वर्ग आदि वैकुण्ठ सब, पंच देव अस्थान ॥
पंच देव के ब्रह्म को, करैजु अंतरध्यान ।
पुर हुये अभिलाख सब, रहै बुद्धि अरु ज्ञान ॥

मैं ने हात जोडकर कहा कि आप के ज्ञान से पांच ब्रह्म हैं। ये सिद्धांत श्रवण योग्य नहीं है। अद्वैत में द्वैत था। अब पंचायत का झगडा उत्पन्न हुवा। इस प्रमाण छत्तीस कोटी देवता हैं। अपने अपने काम में राहू केतू की भी पूजा होती है। वेद प्रमाण ब्रह्म एक है। पांचतत्व एक हैं। सब की उत्पत्ति आकाश से है। और महाप्रलय में देव दानव सर्व सृष्टि की नाश है। ब्रह्म अविनाशी है। विष्णु को ब्रह्मा ने बनाया। शक्ति निराकार की इच्छा है। महादेव को ब्रह्मा ने बनाया।

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

ब्रह्मा कमल के फूल से हुवा । गणेश को पार्वती ने अपने अंग के मैल से बनाया । ये कौन लक्षण ब्रह्म के हैं । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें आठवीं लहरी चैतन्य ब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण ॥

॥ नवीं लहरी ॥

लोकालोकवासी ब्रह्म है ।

अथ श्रीसत्यलोकाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया । और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि कर्त्ता ब्रह्म ब्रह्मलोक में है । वो लोकालोकवासी चौदह लोक का धनी है । सात ऊपर सात नीचे । बीच में ये पंद्रहवां मृत्युलोक है । ब्रह्मलोकतक जो जावे वो ब्रह्म को पावे । वहाँ कोई जाय नहीं सकता । कदाचित् जन्मजन्मांतर भक्ति करे तो उस लोक को प्राप्त होवे । चौदह लोक के नाम ये हैं । सत्यलोक १, वैकुंठलोक २, शिवलोक ३, सूर्यलोक ४, देवलोक ५, पितृलोक ६, सिद्धलोक ७, मायालोक १, यमलोक२ गंधर्वलोक३, यक्षलोक४, किन्नरलोक ५, नागलोक ६, दैत्यलोक ७, ये मृत्युलोक पंद्रहवां बीच में जेलखाना तथा बन्दीखाना है । चौदह लोक के मायारूपी जीव जो कर्मपापसंबंध करते हैं उस का फल या दंड मृत्युलोक में पाते हैं । और लोकों में दंड नहीं हो सकता । पांच प्रकार के अकर्म हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह,

मद। उस का दंड होने के वास्ते पांच मकान बनाया गया। अंडज, पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, देव, या बादल ब्रह्मा विष्णु महेश देवता बन्दीखाने के अधिकारी हैं। चार देव छः शास्त्र अठारह पुराण ये अठाईस ग्रंथ इस बन्दीखाने के शास्तर हैं। उन का भी नाम संपूर्ण वर्णन करता हूं। पहिले चार वेद का नाम ऋग्वेद १, पूर्व के देश में प्रकट हुवा उस में ज्ञान और उपासना कर्म प्रधान है। यजुर्वेद २, दक्षिण के दिशा में प्रकट हुवा, उस में ब्रह्म अकर्ता कर्म कर्ता अहं-ब्रह्म कार्यरूप प्रधान है। सामवेद ३, पश्चिम देश में प्रकट हुवा, उस में तत्वमसि शब्द ब्रह्मवाक्य निर्गुण प्रधान है। अथर्वणवेद ४, उत्तर के देश में प्रकट हुवा, उस में आत्मा परमात्मा ब्रह्म प्रधान है। ये चारों वेद चार लाख श्लोक प्रमाण हैं। अब छः शास्त्र का भेद कहता हूं। पहिले मीमांसा च्यवन ऋषि ने बनाया। उस में कर्म प्रधान है। दूसरा पातंजल पतंजल ऋषि ने बनाया उस में ब्रह्मसमाधि प्रधान है। तीसरा न्यायशास्त्र गौतम ऋषि ने बनाया उस में संयोग प्रधान है। चौथा सांख्यशास्त्र कपिलदेव ने बनाया उस में आत्मा प्रधान है। पांचवा वैदिक वैशेषिक ऋषि ने बनाया उस में कालघडी प्रधान है। छठवां वेदांतशास्त्र व्यासजी ने बनाया उस में अद्वैत ब्रह्म प्रधान है। इस के शिवाय ज्योतिःशास्त्र, धर्मशास्त्र, जैनशास्त्र, नास्तिकशास्त्र के शास्त्र और हैं। अब अठारह पुराण का भेद कहता

हूँ विचार करो। १ मत्स्यपुराण १४ हजार, २ कच्छपुराण १७ हजार, ३ वामनपुराण १० हजार, ४ ब्रह्मांडपुराण १२ हजार, ५ गरुडपुराण उन्नीस १९ हजार, ६ शिवपुराण२४ हजार, ७ भागवतपुराण अठारह १८ हजार, ८ वराहपुराण २४ हजार, ९ अग्निपुराण पंद्रह १५ हजार ४ सो, १० लिंग-पुराण ११ ग्यारह हजार, ११ पद्मपुराण पचपन ५५ हजार, १२ ब्रह्मभूतपुराण१८हजार, १३ भविष्योत्तरपुराण१४५०० चौदह हजार पांचसौ, १४ विष्णुपुराण२३हजार, १५ स्कंद-पुराण ८१ हजार १०० सो, १६ नारदपुराण२५ पचीस ह-जार, १७ मार्कंडेयपुराण ९ हजार, १८ ब्रह्मपुराण दश ह-जार। ये अठारह पुराण सब चार लाख श्लोक बराबर हैं। वेद के उस के ऊपर जो चलता है वो अपना दंड भोग करिके अपने लोक को चला जाता है। और जो उस के प्रति-कूल चलता है वो चौराशी लक्ष योनि भोगता है। और जो सदा भजन स्मरण करता है, वो ऊंचे लोक को जाता है। और ब्रह्म की प्राप्ति होती है, उस का पाप नाश होकर मुक्त हो जाता है। और सृष्टि की उत्पत्ति अनेक प्रकार से आचार्यों ने लिखी है। विराट्पुराण में चौराशी लाख का विस्तार ऐसा है सत्रजखान इक्कीस लाख, उस में तारा नवलाख, मेघ चार लाख, पहाड आठ लाख। अयुज्यखान इक्कीस लाख, उस में नाग नव लाख, जलचर चार लाख, पक्षी आठ लाख। जरायुजखान इक्कीस लाख, उस में दोपदा नव

लाख, चौपदा चार लाख, कीडि आठ लाख। उदरजवी-र्यखान इक्कीस लाख, उस में निर्गंध नव लाख, सुगंध चार लाख, कंदमूल आठ लाख ये सब चौराशी लाख हुवे। कोई सूक्ष्म ऐसा कहता है कि रजोगुण से बत्तीस ३२ लाख, सत्वगुण से सोरा १६ लाख, तमोगुण से छत्तीस ३६ लाख, ये सब चौराशी लाख हुवे और तुलसीदास गुसाँईं ने दोहा कहा है।

दोहा–नव लख जल को जंत हैं, दस लख पंछी जान।
एकादश कट भृंग हैं, स्थावर बीस बखान॥
तीस लाख पशुयोनि हैं, चतुर्लक्ष नर होय।
इन में जो रामे भजे, तुलसी धन है सोय॥

ये चौराशी का विस्तार है, मृत्युलोक में ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हो सकती। भजन के प्रताप से जब ब्रह्म लोक की प्राप्ति होगी तब ब्रह्म का दर्शन हो सक्ता है। चौपाई कबित्त और यंत्र[1] चौदह लोक के देखो।

॥ चौपाई ॥

ब्रह्मलोक में ब्रह्म बिराजे। लोकालोक दुंदुभि बाजे॥
चौदा भवन राज है उस का। नीचे सात सात ऊपर का॥
मृत्युलोक पंद्रहवां गावे। चौदा लोक के बन्दी आवे॥
पांच विकार जीव में सोहै। काम क्रोध लोभ मद मोहै॥
पांच जोन उपजे संसारा। चौदा भवन के जीव अपारा॥
कामविकार मेघदल सोहै। इच्छारूपी जल में मोहै॥

---

१ यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

क्रोध जोन अण्डज में आवे। अधर पवन में पंख डुलावे ॥
ऊष्मज योनि लोभ से आवे। उतपति परले छिन हो जावे॥
अस्थावर है मोह विकारा। चार योनि का प्राण अधारा॥
पिंडज मदविकार से पावे । शूकर कूकर होइ उपजावे ॥
दंडप्रमाण भोग चौराशी । अपने लोक जाय सुखराशी ॥
अवध बीच कुछ अकर्म होवे।ता को दंड अधिक दुख होवे॥
अवध बीच कुछ सुकर्म होवे। ऊंचे लोक जाय सुख होवे॥
कर्म करत चौदा घर जावे। ता को ब्रह्म दर्शन में आवे॥
ब्रह्मरूप सत गुरु उपदेशा। तब अभिलाख मिटे अंदेशा॥

॥ कवित्त–वेद ४ ॥

पूरव ऋगवेद कहें ज्ञान और उपासना कर्म को प्रधान करे ब्रह्म एक गायो है । दक्षिण यजुर्वेद शुद्ध अहं ब्रह्म कार्य रूप ब्रह्म को अकर्ता कर्म कर्ता ठहरायो है ॥ पश्चिम में सामवेद अहं ब्रह्म तत्त्वमसि निर्गुण प्रधान ब्रह्म शब्द में समायो है। उत्तर में अथर्वण अहं आत्मा परमात्मा निर्गुण अभिलाख चार लाख सब बतायो है ॥

॥ कवित्त–शास्त्र ६ ॥

मीमांसा में च्यवन ऋषी कर्म को प्रधान करें पातंजल प्रधानं ब्रह्म खोजत सब आचार में। गौतम संयोग न्यायशास्त्र में प्रमाण करे कपिल देव सांख्यशास्त्र आत्म के विचार में॥वैदिक विशेषक काल घडी को प्रसिद्ध करे अद्वैत वेदान्त कहें व्यासदेव सार में । ऐसे षटशास्त्र विचारत

अभिलाख लाख पावत नहीं सार कछु अचार में विचार में॥

॥ कवित्त-पुराण १८ ॥

मच्छ कच्छ वामन ब्रह्मांड गरुड शिव पुराण भागवत वाराह लिंग पद्म अग्नि गायो है। ब्रह्म भूत भविष्य उत्तर विष्णुपुराण सब से स्कंद अधिक व्यास ने बनायो है॥ नारद मारकण्डयो ब्रह्म को पुराण भयो अष्टादश चार लाख सत्रा सो गायो है। ऐसे प्रगट पुराण गावत सब ज्ञानवान् भाषत अभिलाख पार कोई नहिं पायो है॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि। कोई ब्रह्मज्ञानी चौदह लोक का विस्तार शरीर में बताता है। ब्रह्मांड आंख, कान, नाक, मुख, कंठ, हृदय, हाथ, पेट, पीठ, पाव, लिंग गुदा, नाभि दूसरा लोक कोई नहीं है। चौवीस अवतार ब्रह्म का मृत्युलोक में हुवा वो बंदीखाने में कैसे आया। और ब्रह्म लोकालोकवासी साकार है या निराकार है। अठाईस ग्रंथ जो प्रमाण के आप ने उपदेश किया उस में ब्रह्म घट घट व्यापक है। चौदह लोक से इस बंदीखाने में आना कुछ प्रमाण नहीं है, मैं पहिले किस लोक में था, यहाँ कबतक रहूंगा, और पीछे कहाँ जाऊँगा, और किस अपराध से यहाँ आना हुवा इस सिद्धांत का निश्चय जबतक न हो तबतक आप का सिद्धांत बोधयोग्य नहीं है। भक्तमाल देखो। हजारों साधुवों को भगवान् प्राप्त हुवा। पंचतत्त्व के शिवाय आत्मा का अनुभव नहीं हो सकता। पृथिवी शरीर है। जल

जीव है। अग्नि ज्ञान है। वायु श्वास है। आकाश शब्द है। आप का सिद्धांत अट्ठाईस ग्रंथ के प्रतिकूल है। चौदह लोक की संख्या प्रसिद्ध नहीं है। लाखों आकाश पाताल कोई कहता है। कोई सर्वसृष्टि को ब्रह्म जानता है। उस को विराट् कहते हैं। ये सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद छठवें तरंगमें
नवीं लहरी चैतन्यब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण ।
इति छठवां तरंग समाप्त ॥ ६ ॥

सातवां तरंग प्रारंभ।

॥ पहिली लहरी ॥

ज्ञान ब्रह्म है।

अथ श्रीकेशवाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। उस का ज्ञान से अनुभव होता है। अथवा ज्ञान ब्रह्म है। ज्ञान की आँख से देखा जाता है। जिस को ज्ञान नहीं है उस को करोडों ब्रह्म नाशवान हैं। चौदह भवन ब्रह्म का जो प्रसिद्ध है वो ये हैं। विवेक,१ विचार२, संतोष३, सत्य४, वैराग्य५, प्रेम६, भक्ति७, योग८, धर्म९, दया१०, निश्चय११, प्राणायाम१२, उदास१३, आनंद१४, ज्ञान, दृष्टि से अनुभव होताहै। और ये जगत् तथा सुख दुःख अज्ञान से भासता है । ज्ञानी को अद्वैत दर्शाता है। ज्ञान

प्राप्त होना जीवन्मुक्त होना एक अर्थ है। जिस पदार्थ का ज्ञान नहीं है उस का सुख दुःख व्यापक नहीं होता। जो भाषा अपने को नहीं आती उस भाषा में कोई गाली देवे अथवा प्रशंसा करे उस का हर्ष शोक नहीं होगा। सब का कर्ता ज्ञान है। ब्रह्म और माया और जगत् तीनों का भेद ज्ञान है। एक झगडा कर्म ज्ञान का इस सिद्धांत में देखने योग्य है। निद्रा आहार से तृप्त हुवा अज्ञान बालक ब्रह्मसमान है।

॥ झगडा ज्ञान कर्म- चौपाई ॥

वाह गुरू को माथ नमाऊँ। जे सुमरे निर्मल मत पाऊँ॥
सो मत पाय कहानी गाऊँ। ज्ञान करम संवाद सुनाऊँ॥
देह नगर एक देश कहावे। ता में राज सत्य को छावे॥
ता की नार शांती रानी। भगिनी तास कीर्ती जानी॥
पिता नाम निष्काम बखानो। माता मुक्त पाँचवी जानो॥
सत्य शांति भोग जब करे। ज्ञान कर्म दो सुत अवतरे॥
पहिले कर्म भयो संसारा। पीछे ज्ञानलीन अवतारा॥
जबतक सत्यराजपर रह्यो। कर्म ज्ञान दोउ बालक रह्यो॥
कुछ दिन गये सत्य जब मरई। कर्म ज्ञान में झगडा पडई॥
कर्म कहे मैं कुछ नहीं दीहों। ज्ञान कहे मैं आधा लीहों॥
कर्म कहे मैं बडा सयाना। ज्ञान कहे मैं चतुर सुजाना॥
कर्म कहे मैं तीरथ करूं। ज्ञान कहे मैं दर्शन करूं॥
कर्म कहे मैं गंध बनाऊं। ज्ञान कहे मैं सूंग बताऊं॥
कर्म कहे मैं कहूं पुराण। ज्ञान कहै मैं सुनू बखान॥

कर्म कहे मैं सब कुछ करूं । ज्ञान कहे मैं समुझत रहूं ॥
कर्म कहे मैं सब उपजाऊं । ज्ञान कहे मैं षटरस खाऊं ॥
कर्म कहे मैं ज्ञान बताऊं । ज्ञान कहे मैं कर्म सिखाऊं ॥
विग्रह बढी शांति गई । आपुस में पंचायत भई ॥
पांचों प्राण पंच कहवावे । मन अरु बुद्धि गवाही जावे ॥
काम क्रोध आदिक पँच भैया । ये सब बैठे खेल दिखैया ॥
खोजत खोजत रह्यो भुलानू । कर्म ज्ञान का अंत न जानू ॥
कर्म राम की उपमा लावे । ज्ञान कृष्ण का नाम बतावे ॥
विषय पांच से पूछा गया । उन दोनों को एकी किया ॥
मंत्री एक विचार सत्य का । बूढा बडा रहा मुद्दत का ॥
वो दोनों को पास बुलावे । बहुत प्रेम से न्याय चुकावे ॥
सुनो कर्म हम तुमें बतावे । बाप तुह्मारे सत्य कहावे ॥
उन के घर में जो धन आया । सो सब हम ने हात गमाया ॥
तिन के पुत्र भयो तुम दोई । इन में छोट बडो नाहिं कोई ॥
चार पदारथ तुमरे घर में । दो छोडो दो राखो वश में ॥
मैं चारों को प्रगट बताऊँ । विलग विलग सब के गुण गाऊँ ॥
अर्थ काम दो तुम को ध्यावे । धर्म मोक्ष दो ज्ञान को भावे ॥
कर्म कहे मैं चारो लीहों । ज्ञान कहे मैं कुछ नाहिं दीहों ॥
तब विचार देख्यो मनमाहीं । कर्म ज्ञान दोउ समझत नाहीं ॥
फिर दोय भाग चार करि लावे । पुरुषारथ निष्कर्म दिखावे ॥
कर्म कहे पुरुषारथ भावे । ज्ञान कहे निष्कर्म सुहावे ॥

ये ... म ज्ञा ...

... मर गयो। एक ज्ञान बाकी रह गयो ॥

... किये। अमर अजर होय जग में रह्यो॥

... नो ...

कार्तिक मास पक्ष उजियारा। अठातिस संवत चंद्र पसा...

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि इस चौदह स्थान के शिवाय लाखों स्थान हैं। उस में कौन रहता है। प्रेम ज्ञान पशु को है। आनंद भय सब जीवों को होता है। और जब वो निराकार है तब ज्ञान से भी देखा नहीं जावेगा। पंच ज्ञान-इंद्रियन को रूप का अनुभव है, अरूप का नहीं। ज्ञान का अर्थ निर्मल बुद्धि, वो अंतर इंद्रिय है। सिवोरी, गणिका, अजामील, रोहिदास, कुबरी, धना, पीपा, सैन, आदिक बडे विद्वान् नहीं थे। पीछे ब्रह्म मिलने से सर्व गुण के मूल हो गये। ध्रुव को छोटी उमर में जब ज्ञान नहीं था, तब ब्रह्म मिला। ज्ञान अज्ञान वृत्ति है, वो कुछ पदार्थ नहीं है। ज्ञान जगत् का कर्ता नहीं हो सकता। और निराकार का अनुभव कोई प्रकार से नहीं होगा। कदाचित् ब्रह्म कुछ पदार्थ होवे; तब ज्ञान से देखा जावे। ये सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें पहिली लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

सिद्धि न होती तो निश्चय जाती रहती। निश्चय होने से रज्जू में सर्प; मसान में भूत का अनुभव होता है। निश्चय से

जाती है, तब ब्रह्म पद निश्चय होता है। मृत्तिका की मूर्ति करने से ब्रह्म समान प्रधान है। कोई पूजा, ध्यान, भजन, विना निश्चय निरर्थक है। मेरे ज्ञान में निश्चय आप ब्रह्म है। जो कोई किसी देवपर निश्चय करेगा जरूर फल पावेगा। चौपाई दोहा देखो।

॥ चौपाई ॥

पहिले प्रीति गुरु से कीजे। प्रेम डगर में पग तब दीजे॥
जहँ देखो तहँ रूप है न्यारा। कारण कारज कर्ता सारा॥
शून्य स्वरूप अकाश बतावे। तेजरूप पावक दरशावे.॥

सूक्ष्म रूप वायु में जानो। आपुरूप जल में पहिचानो ॥
रूप विराट पृथिवी देखो। चारों तत्त्व हरी हर पेखो ॥
आदि अंत अरु मध्य दिखावे। उत्तम मध्यम नष्ट कहावे ॥
अंडज पिंडज ऊष्मज माहीं। स्थावर जड चेतन के माहीं ॥
तम प्रकाश दोनों में देखो। स्वर्ग पताल भूमि में पेखो ॥
चारों दिशा वो हि दरशावे। चारों कोन वोंहि कहवावे ॥
तीनों लोक रूप है उस का। धरा अकाश होत है सब का ॥
कफ पित वात रोग सब वो है। हर्ष उदास शोक सब वो है ॥
ज्ञान वैराग्य योग सब वो है। राजा रंक भोग सब वो है ॥
आगे पीछे बांयें वो है। दहिने बाये तिरछे वो है ॥
जाग्रत स्वप्न सुषोपत वो है। चार अवस्था तुरिया वो है ॥
सूक्षम रूप विराट वो ही है। कारण महाकारण भी वो है ॥
देव दैत्य मानुष सब उस में। विष अमृत पारस सब उस में ॥
तंत्र मंत्र यंत्रन के माहीं। वेद पुराण शास्तर माहीं ॥
सूरज चंद्र नव ग्रह माहीं। बारा राशि नछत्तर माहीं ॥
योग करण तिथि लग्न वही है। भरणी भद्रा ग्रहण वही है ॥
मूरत और प्रतिमा वो है। चेतन जीव आतमा वो है ॥
इंद्रिय प्राण प्रकृती वो है। गुण स्वभाव स्मृति ही वो है ॥
ब्राह्मण वैश्य क्षत्री शूदर। चार एक उस के है सुंदर ॥
शक्ति शिव वैष्णव वो है। सर्व भेष में भक्ती वो है ॥
प्रकट गुप्त अवतार वही है। जंगल नदी गांम वो ही है ॥
स्त्री पुरुष नपुंसक वो है। अक्षर एक मात्रा भी वो है ॥

तीर्थ गया प्रयाग वो ही है। सरिता कूप तडाग वो ही है ॥
पुरी धाम पुर धाम वो ही है। कारण कारज काम वो ही है ॥
शक्ति भूत प्रेत निरंतर। जिन्न मोक्कल उस के अंदर ॥
राग रागिनी सुर सब वो है। तबला ढोल पखावज वो है ॥
नाच नकल नट विद्या वो है। नजर बंद हठ विद्या वो है ॥
भोग विलास अमीरी उस की। भूख प्यास फकीरी उस की ॥
आदर भाव निरादर वो है। कादर सूर बहादुर वो है ॥
औषधी कल्प की मिया वो है। गुटका कज्जल अंजन वो है ॥
लोभ काम मद मोह वो ही है। तृष्णा मोह वासना वो है ॥
सत संतोष शांति ही वो है। तेज प्रकाश भि कांती वो है ॥
तेतीस कोटि देव मैं देख्यो। लख चौराशी जीव मैं पेख्यो ॥
सात अकाश पाताल वो ही है। उत्पत्ति जीवन काल वो ही है ॥
अकर्म कर्म धर्म में वो है। निश्चय प्रेम भरम में वो है ॥
ओहं कोहं सोहं माहीं। मैं तैं मोर तोर सब माहीं ॥
हां नाहीं दोनों में वो है। जहँ देखो तहँ प्रकट वो है ॥

दोहा—अलख लखै अस आख से, गुरु पूरे अभिलाख।
लाख प्रकार सकार है, वेद शास्तर साख ॥
वेद हि शास्त्र ज्ञान है, कही बडोनी रीत।
उस प्रमाण से जो चले, सोई ज्ञान अतीत ॥
आदि अनादि युगादि से, देखी सुनी जु बात।
कहे दास अभिलाख हट, सब में अलख लखात ॥
कोई मत ऐसा कहै, ब्रह्म नहीं कुछ सार।

हां नाहीं

हां में हां

अलख शब्द का अर्थ है, जाय लखे नाहिं कोय।

के नाहिं योग्य।

॥

जैसे सूरज तपत को, चिन्ह नहीं दरशात ॥

अधिक सतासी ईसवी, जग आयो कलि काल॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि निश्चय और भ्रम जगत में सब को है। जैसे ज्ञान अज्ञान ये बुद्धि का भेद है। मैं आप को विष देता हूँ, आप उस को अमृत निश्चय करिके खा जावे, मेरे को दोष नहीं लगना चाहिये । और आप को भी विष का दुःख नहीं होकर अमृत का फल प्राप्त होना चाहिये। निश्चय से रात्रि दिवस नहीं होगी । जो पदार्थ आदि से जैसा है उसी प्रमाण रहेगा। रज्जू के सर्प में विष नहीं है। झूठी निश्चय फलदायक नहीं है। ब्रह्म निराकार पर निश्चय होना समझ में नहीं आता । मेरे ज्ञान में निराकार का अर्थ मिथ्या है। जिस को ज्ञान होगा वो इस सिद्धांत को जानेगा। निश्चय वृत्ति पदार्थ बिना नहीं होता, और निश्चय से हाथी कीडी

कहना से

का अनुभव होना मिथ्या है। यह सुनकर मह

है।

आप ब्रह्म है ।

जैसे लकडी और पत्थर के अग्नि बिना उपाय या कारण प्रकट नहीं हो सक्ती। उसी प्रमाण ब्रह्म बिना प्रेम प्रगट नहीं होगा । जिस को प्रेम नहीं है उस को ब्रह्म प्राप्ति की आसरा करना आकाश का फल चाहना है। गोपियों के प्रेम में सोला हजार कृष्ण हो गये। सिवरी के प्रेम में झूठे बोर खाया । कूबरी के प्रेम से अपना पति बनाया । करमाबाई के घर खिचडी खाया। सुदामा के कारण रुक्मिणी पर क्रोध किया। विदुर के घर शाक भात खाया । जिस को मिलेगा प्रेम से मिलेगा। प्रेम भक्ति को कहते हैं। भक्ति नव प्रकार की है। श्रवण, कीर्तन, स्मरण, उदार आचरण, वंदन, दास्य, हर्ष, उदास। यश सुनना १ यश गाना२ सेवा करना ३ आज्ञा पा-

लना ४ याद रखना ५ बडा जानना ६ सब में जानना ७ एक जानना ८ आप में जानना ९ ब्रह्म के मिलने का प्रेम रास्ता है। जैसा तुम ने बारा बरस भजन किया था। कदाचित् प्रेम करते तो मनोरथ सिद्ध हो जाता। अब भी प्रेम करिके देखो। और इस प्रेम चालीसी को पढो, जो इस के साथ है।

दोहा-जनकप्रेम अद्भुत अगम, सीताप्रेम अगाध।
प्रेम कियो प्रहलाद ने, मार्यो दैत्य असाद॥
प्रेम धना को जब भयो, पत्थर रूप बनाय।
मित्रभाव से कछुक दिन, ते घर गाय चराय॥
प्रेम भयो व्रजिनार को, सोरा सहस्र सरूप।
रासमंडल में नाचकर, पीछे हो गयो गुप॥
प्रेम रुक्मिणी को भयो, भाग्यो रथ बैठाय।
रुक्मैया को बांधकर, डाढी मूंछ मुडाय॥
प्रेम विदुर को देखिके, खायो तंदुल शाग।
दुर्योधन घर ना गयो, रचो जहां बहु पाग॥
प्रेम बिभीषण को भयो, पायो लंकाराज।
बाल मार सुग्रीव को, अंगद को युवराज॥
प्रेम सुदामा को भयो, पायो धन संतान।
दास मलूक के प्रेम से, शिरपर ढोये धान॥
प्रेम भयो गजराज को, फस्यो ग्राह के फंद।
पांव पयादे धाय कर, काट्यो ता के बंद॥

पीपाजी के प्रेम से, रच्यो द्वारिका छाप ।
छींपा छान छबाइ के, बांद उठावे आप ॥
सैन भक्त के प्रेम को, अंत लख्यो नहिं जाय ।
राजा की सेवा करै, ता को रूप बनाय ॥
प्रेम जटायू को भयो, पायो पद निर्वाण ।
केवट जात अजात को, भेट्यो श्रीभगवान ॥
प्रेम अजामिल को भयो, अंत मिल्यो भगवान ।
गणिका कीर पढाय कर, पायो पद निर्वान ॥
प्रेम यशोदा को भयो, गोद खिलायो राम ।
राधा प्रेम अगाध है, मोहन को विश्राम ॥
प्रेम अहिल्या को भयो, शिला गई सुरलोक ।
हनूमान के प्रेम कूं, जानत तीनों लोक ॥
तुकारामजी प्रेम से, गये सदेह अकाश ।
रामदास के प्रेम से, दासबोध परकाश ॥
नरसी प्रेम अगाध है, हुंडी दियो सिकार ॥
माधवदास के प्रेम से, मल धोवे करतार ॥
पलटुप्रेम प्रकाश है, शुद्ध भयो परवार।
सात महल सिद्धी रही, विदित जगत् संसार ॥
नीचजात रोहिदास को, प्रेम प्रगट संसार ।
काशी मध्य समाज में, ब्राह्मण रूप हजार ॥
सजन कसायी प्रेम से, पूजे शालिग्राम ॥
संतन के ढिग ना रह्यो, पलट गये उस ग्राम ॥

गर ... न्, सूर कियो है

...हुत कियो, ... गयो स

गोरख के संवाद में, दियो सिद्ध दर्शाय ॥

दादू प्रेम अपार है, जाहि घर सुंदर दास ।

सर्व सिद्धि के रूप है, दूजे निश्चल दास ॥

...

दंतवक्त्र शिशुपाल असुर, जरासंध अरु कंस ।

... हूं रह्यो, तातें कियो विध्वंस ॥

पांडव प्रेम अपार है, कौरव गर्व अपार ।

अष्टादश दिन बीच में, हर्यो भूमि का भार ॥

प्रेम भर्तरी अगम है, गोपीचंद अखंड ।

अंबरीष के प्रेम में, दुर्वा...

सारी बढ़ी अगाध जब, हार दुशासन खींच ॥

प्रेम कूबरी को भयो, पायो कृष्ण मुरार ।

प्रेम शबरी को भयो, झूठे बोर अहार ॥

गिरिधर भड्डर नरहरि, पद्माकर कवि गंग ।

सब को प्रेम प्रकाश है, विदित जगत् रसरंग ॥

ब्रह्म में हो सकते हैं। सब में जो है, उस का प्रेम असंभव और जब एक है तो प्रेम अनुचित और जब अपने में है, तब प्रेम निरर्थक। आप अपना प्रेम किस प्रकार करे। जब कुछ रूप दर्शावे, तब प्रेम होवे। चकोर चन्द्र का प्रेम है। जो दृष्टांत भक्तों के आप ने कहा, वो अवतारों का प्रेम है। राम, कृष्ण, परशुराम, वामन, आदिक उन को प्रसन्न हुये, उन का मनोरथ सिद्ध हुवा। ऐसा मानुषशरीर-वाले का प्रेम जिस का अब कहीं होय सकता है। निराकार का प्रेम ज्ञान में नहीं आता। पहिले निश्चय होना चाहिये पीछे प्रेम का उपदेश स्वार्थ होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें तीसरी लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥चौथी लहरी॥

मंत्र आप ब्रह्म है।

अथ श्रीभगवते नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। मंत्र आधीन है अथवा मंत्र आप ब्रह्म है। जिस काल विधिपूर्वक मंत्र उच्चारण होवे। ब्रह्म का दर्शन तथा अ-नुभव निश्चय करिके हो। तुमारा ज्ञान ऐसा है कि निराकार तथा आदृष्ट का अनुभव नहीं हो सक्ता। यह ज्ञान मिथ्या हो सक्ता है सुनो अपनी आंख में कज्जल अदृष्ट है, परंतु

सत्य है। काच में अनुभव
निकट है १। दूसरे
अदृष्ट हो जाता है। परंतु ऊपर रहता है। कुछ काल
जब नीचे आवेगा, तब अनुभव होगा। अदृष्ट का कारण
अति दूर है २। तीसरे अणु सर्व आकाश में भरे है अदृष्ट है।
परंतु कोई छिद्र में सूर्य का प्रकाश होवे तब अनुभव हो
सक्ता है। अदृष्ट का कारण अति सूक्ष्म है ३। चौथे जल में
जल मिला हुवा विलग अदृष्ट है। परंतु उस में है। पात्र में
पहिले कम था, पीछे विशेष हुवा। इस प्रकार से अनुभव हो
सक्ता है। अदृष्ट होने का कारण मिश्रित है ४। पांचवें सन्मुख
पदार्थ रक्खा था कोई लै गया। अदृष्ट है, परंतु सत्य करिके
लै गया। खोजने से अनुभव हो जावेगा। अदृष्ट होने का
कारण ध्यान नहीं रहा ५। छठवें दिन को तारा नहीं दर्शाता।
अदृष्ट है। परंतु वो स्थिर है। जब सूर्य का प्रकाश कम
होगा तब अनुभव होगा। अदृष्ट का कारण तेजरहित हो
गया ६। सातवें दीवार या पहाड आदिक के ओट में जो
पदार्थ है वो अदृष्ट है। उस पार जाने से अनुभव होता है,
और सत्य है। अदृष्ट होने का कारण बीच में परदा है ७।
आठवें आंख के अंधे को सब अदृष्ट है, परंतु जगत् सत्य
है। स्पर्श आदिक से अनुभव होता है। अदृष्ट होने का
कारण अज्ञान दृष्ट है ८। यह आठ दृष्टांत अदृष्ट देखने के
हैं। जैसे ये उपाय अदृष्ट के है इसी प्रमाण ब्रह्म मंत्र से

मारण सब मंत्र आधीन है। सर्व साधन में मंत्र प्रधान है। गुरु उपदेश को भी मंत्र कहते हैं।चालीस मंत्र नित्यकर्म के देखो॥

॥ मंत्र जाग्रत का ॥

॥

लोकी नाथ । दै

सोहं प्रकाश अदिति देव । ब्रह्मा विष्णु न जाने भेव ॥
पंच तत्व को करै नमस्कार । जिस की माया अपरंपार ॥
जाग्रत होय गायत्री पढे। सहत अभिलाख ज्ञान बुध बढे॥१॥

॥ मंत्र पात्र का ॥

॥ किरत

पाहेला कमडलु मनु ने बनाया । मत्स्यरूप ता में दर्शाया ॥
पात्र विचार ज्ञान जल । भ्रम को नाश संतोष अस्थल ॥
उस पात्र में अमृत भरा।नव नाथ चौरासी सिद्ध के आगे धरा॥
ऐसा कर पात्र अभिलाख राखे।निर्गुण मुक्त प्रेम रस चाखे॥२

॥ मंत्र मल मूत्र का

सत्य की माया असत्य की काया।दश इंद्री का भोग बनाया॥
वास । चंद्र सूरज करै प्रकाश ॥

प्राण अपान गुदा में फिरे । मल मूत्र की क्रिया करे ॥
विनती करे । सहत मर्याद मल मूत्र करै ॥
प्रथम अभिलाख गायत्री पढे। पीछे एकांत मल मूत्र करे॥३॥

॥

न अर्ध । लावे ध्यान ॥
धावे गायत्री बुद्धि पुरुषार्थ बढे ॥
मस्तक बांच लगावे राख । सुख संपत पावे अभिलाख ॥४॥

सागर विचार ज्ञान जल । निश्चय धाम विवेक अस्थल ॥
गंगा यमुना त्रिवेणी घाट । दत्त दिगंबर लावे थाट ॥
शील लंगोटी धरम जनेऊ । मंजन करे सुजाने भेऊ ॥

ऐसा स्नान अभिलाखसे होवे। पाप की मैल हृदय से धोवे॥५॥

ज्ञान की रुई विज्ञान की कपास। सूत कातय दत्त अविनाश ॥
उस सूत का जनेउ बनाया । ब्रह्मगाठ ब्रह्मा ने लगाया ॥
छानवे चौवा नाप प्रमाण । जनेऊ पहरे आप भगवान् ॥
चारों वर्ण को जनेउ दिया। यज्ञ उपवीत करि के शुद्ध किया ॥
जनेउ पहरे सहत अभिलाख । वेद पुराण शास्तर साख॥६॥

॥ मंत्र लंगोटी का ॥

।लकड धात ऊन कुश पटसन॥
वज्र लंगोट हनुमान पहिरावे॥

करधन लंगोट को शुद्ध किया।अठ्याशी हजार ऋषि को आज्ञा दिया॥
करधन लंगोट की गायत्री पढे। सहत अभिलाख सुरलोक चढे ॥७॥

॥ मंत्र कंठीमाला का ॥

तुलसी मलयागर हलदी कमलाक्ष। सुवर्ण मूंगा मोती रुद्राक्ष ॥ कंठी माला सुमरण बनाया। ब्रह्मा विष्णु महेश के मन भाया॥ घट में सोहं सुमरण जाप। जपे निरंजन आपे आप॥मणि का विचार ज्ञानमाला। दत्त दिगंबर बैठ मृगछाला ॥ अजपा जपै नित्य प्रति लाख। निर्गुण लहै अभिलाख ॥ ८ ॥

॥ मंत्र रुद्राक्ष का॥

निराकार की माया। गौरी शंकर वृक्ष लगाया॥ उस वृक्ष का नाम रुद्राक्ष धरा। उस में पंचमुखी फल फरा॥ उस फल को महादेव पर चढाया। चारमुखी चारों दिशा को भेजाया॥ एकमुखी माला जपे निर्वाण। एक सो आठ ऐषप्रमाण ॥ ओहं सोहं सहत अभिलाख। मुक्त पावे जपे जब लाख ॥ ९ ॥

॥ मंत्र जटा का ॥

जटा लटूरी भूरे केश। गोरखनाथ बनावे भेष ॥ पांच

केश को राख मुडावे। सत्यनाम को दोनों भावे॥ कंगा करे लगावे तेल। डाढी भसम बनावे सेल॥ जटा जडाव मुकुट बनावे। सनकादिक की आज्ञा पावे॥ ऐसी जटा करे अभिलाख। वेद पुराण शास्तर साख॥ १०॥

॥ मंत्र तिलक का॥

केशर कस्तूरी कपूर गोरोचन। कृष्णागर चंदन वंश-लोचन॥ अगर तगर और देवदार। कंकु सिंदूर द्वादश प्रकार॥ द्वादश तिलक देवें त्रिपुरार। तिलकी झलक झलके संसार॥ आडा खडा गोल त्रिभाग। प्रेम से लगावे संहत अनुराग॥ सोहं तिलक सर्व आकार। जपे अभि-लाख नाम निराकार॥ ११॥

॥ मंत्र भस्मी का॥

सुरा गाय का गोवर आया। अग्नि में जलाकर भ-स्मी बनाया॥ वो भस्मी श्मशान से आवे। नव नाथ चौ-राशी सिद्ध चढावे॥ भसमंती सतवंती सर्व योग की माता। ऋद्धि सिद्ध नव निधि की दाता॥ भस्मी लगाया तीरथ बनाया। चार पदार्थ परम पद पाया॥ भस्मी सब की अ-भिलाख पुरावै। भस्मी से अलख निरंजन दर्शावै॥ १२॥

॥ मन्त्र चोला का॥

कुरता बंडी बारातनी। कोट अंगरखा और कफनी॥ अलफी चादर पाटंबर। सब को पहिरे दत्त दिगंबर॥ गोरख पहिरे गोपीचंद। हटक पटन जंजीर अबंद॥ उ-

लटा सीधा [illegible] रदा ॥ ऐसा चोला अभिलाख चढावे । जनम मरण का ज्ञान भुलावे॥१३॥

लक्कड चरम रूप पोलाद । करें पावडी पहिरे आद ॥ पौला खूंटी द्वार सपाट । महादेव का लगे कपाट ॥ तीन लोक में विचरत डोलै । गोरख दत्त दिगंबर बोलै ॥ पहर पांवडी आवे जाय । शुद्ध अशुद्ध को दे बचाय ॥ ऐसी पांवडी अभिलाख राखै । विमल पवित्र शुद्ध सत भाखै ॥ १४ ॥

॥ मंत्र भगवां का ॥

भग से उपज्यो भगवा का रंग । शिव भगवान पार्वती संग ॥ भग से तीन लोक उपजाया । आदिपुरुष अरु लिंग बनाया ॥ भगवां पहिरे ब्रह्मा विष्णु महेश । नारद सनकादिक आदि गणेश ॥ भगवां रंग अनादि जुगाद । सोहं शब्द अनाहत नाद ॥ मुक्त अनेक वैकुण्ठ लाख । भगवां पहिरे सहत अभिलाख ॥ १५ ॥

॥ मंत्र धूनी का ॥

ज्ञान अग्नि भ्रम लक्कड । धूनी तापे दत्त दिगंबर ॥ उस धूनी में जरै ज्वाला । चंद्र सूरज करै उजियाला ॥ धुवां की धूम ब्रह्मांड में रह्यो । ज्योतिस रूप प्रकट भयो ॥ भ्रम को जलावें ज्ञान पावै । ऐसी धूनी निराकार को भावै ॥ उस धूनी की निर्मल राख । निर्गुण मुक्त होवै अभिलाख ॥ १६ ॥

॥ मंत्र चिमटे का ॥

धातु लोह की जात । पोलाद् खेडि और असपात ॥
सोला अंगुल सब से छोटा । अस्सी अंगुल सब से मोटा ॥
दृढ
नारद गोरख सूर कबीर । चिमटा के बल राखै धीर ॥
।हिन । हि ।२

पूत ॥

आसन सिद्ध मनोरथ करैं । दृढ आसन हृदय में धरै ॥
सोहं ध्यान आतम उदास । आतम अनुभव होय प्रकाश ॥
पूरण अभिलाख आसन शांत॥निर्गुण मत विचार वेदांत॥१८

॥ मंत्र आसन का दूसरा ॥

मृग केशरी और गज चरम । उन का पट कुश रेशम नरम॥
खाक पाक सब अष्ट प्रकार । आसन शुद्ध कियो कर्तार॥
ऐसा आसन बैठे योगी । भोगी बैठे होवै रोगी ॥
आसन ऊपर ध्यान लगावै । निर्गुण मुक्ति परम पद पावै ॥
ऐसा आसन अभिलाख बिछावै।षट्चक्र आतम दर्शावै॥१९

॥ मंत्र विघ्ननिवारण का ॥

भूल चूक अक्षर को फेर । उलटा सीधा देर सवेर ॥
लोम अनुलोम अजपा जाप । विघ्न निवारण छूटे पाप॥
दिशा भूम आसन संवाद । सायत घडी वार मरयाद ॥

गिरा गणेश सरस्वती शेष । सिद्ध मनोरथ होवै हमेश ॥
ऐसा विघ्न अभिलाख निवारै। सर्व प्रकार का ध्यान धारै ॥२०॥

॥ मंत्र शरीररक्षा का ॥

तीन ताप और पाँच विकार। गिरा दिशा को करे उद्धार ॥
देव दैत्य देवी वेताल । जिन मोकल काल दुकाल ॥
जादू मंतर तुटका मूठी। शत्रु मित्र करे सब छूठी ॥
गोरख भैरव पाँचो पंडा । हनूमान का शिरपर दंडा ॥
ऐसी रक्षा अभिलाख करे।कलुवा महँदा की चौकी फिरे॥२१॥

॥ मंत्र चित्त एकाग्र करने का ॥

पांच प्राण को घट में राखे । दृष्टि नासा ऊपर नाखे ॥
मन और चित्त कूँ एक बनावे । सर्व सृष्टि को भूल मिलावे॥
सहज शिशुपत मूर्छत तुरया । परमहंस की राखे क्रिया॥
गौरी गणपत शंकर दत्त । ध्यान करे होवे चित सत्त ॥
चित्त एकाग्र करे ये भांत।कहत अभिलाख विचार शांत॥२२॥

॥ मंत्र ध्यान का॥

जैसे चंद्र चकोर का ध्यान । बालमृग शशि देख लुभान॥
पपैया बूंद स्वाती चाहै । कछुवा अंडकि प्रीत निवाहै ॥
क्षुधा प्रगट भोजन का ध्यान। काम प्रकट कामिनी का ज्ञान॥
गुरुमुख ब्रह्म को ध्यान लगावै। सहज सुषूपत गत हो जावै॥
ऐसा ध्यान करे अभिलाख । वेद पुराण शास्तर साख॥२३॥

॥मंत्र आवाहन का ॥

ग्राह से गज को जाय बचावे। रुक्मिण को चोरी ले जावे॥

जूठे बोर का भोग लगाया । धना के घर गाय चराया ॥
सैन भक्त की सेवा करे । दीन वचन सुन कृपा करे ॥
दीन वचन और निरछल सेवा । कर्मा के घर खिचडी मेवा ॥
दीन वचन अभिलाख पुकारे।निराकार का मंत्र उचारे ॥२४॥

॥ मंत्र नमस्कार का ॥

नमो नमो निर्गुण कर्तार । नमो निरंजन अलख अपार ॥
नमो नमो त्रिगुण के भेवा । नमो नमो परमेश्वर देवा ॥
नमस्कार है सत्यनाम की । नमो सर्व शिव कृष्ण राम की ॥
नमस्कार मेरी सुन लीजे । जयजयकार हमारी कीजे ॥
नमस्कार अभिलाख पुरावे।नमस्कार निर्मल गत पावे॥२५॥

॥ मंत्र देवसन्मान का ॥

हृदयासन में करो निवास । काम क्रोध की होवे नाश ॥
चरण धोय चरणोदक पावे । भागीरथी शीर अन्हवावे ॥
फूल पान अरगजा सुपारी । शक्कर घृत सहत दधि चारी ॥
वस्त्र भेंट सब आगे धरे । निराकार के अर्पण करे ॥
ऐसी पूजा देव की करे । चार पदारथ अभिलाष से धरे॥२६॥

॥ मंत्र भोजन नैवेद्य का ॥

छत्तिस व्यंजन छपन प्रकार । छः रस चाखे आप निराकार ॥
शक्ति बनाया देव खाया । राम कृष्ण को भोग लगाया ॥
अग्नि मुख खावे जलमुख नहावे । गुरु आज्ञा से भोग लगावे ॥
घृत मिष्टान्न वासुदेव को चढावे । पहिला कौर अग्नि को खिलावे॥
इस प्रकार से भोजन करे।अपनी अभिलाख संपूरण भरे॥२७॥

अगर तगर चंदन कृष्णागर । ऊद पंचांग कस्तूरी केशर ॥
अग्निदेव के मुख में देवे । उस की वास निरंजन लेवे ॥
काल पाय शक्कर घृत शुद्ध । ज्ञान पुरुषारथ निर्मल बुद्ध ॥
सर्व प्रकार की धूप सुहावे । प्रेम नेम से अगनि जलावे ॥
ऐसी धूप अभिलाख जलावे । पाँचदेव की आज्ञा पावे ॥२८॥

दीननाथ दीन के स्वामी । भक्त सहायक अंतर्यामी ॥
घट घट की पीरा तुम जानो । दुष्ट भक्त तुम सब पहचानो ॥
मेरे नेत्र सुफल तुम करो । हृदय भीतर आसन करो ॥
संचित प्रारब्ध त्रिय ताप । नाश होय सब मेरे पाप ॥
अपनी ज्योत में मोहि मिलावो । ये मेरी अभिलाख पुरावो ॥२९॥

॥ मंत्र दीप का ॥

घृत कपूर कपास की बात । तीन पांच सोरा नव सात ॥
धात पात्र में दीप जलावे । जोती सरूप को जोत दिखावे ॥
प्रेम आरती देव उतारे । व्यास वेद की ऋचा उचारे ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश भवानी । अगम अगोचर प्रभु निर्वानी ॥
पढे मंत्र आरती उतारे । सहत अभिलाख सुरलोक सिधारे ॥३०॥

॥ मंत्र विसर्जन का ॥

मंगल ध्यान विसर्जन देव । हृदयवास करो तज भेव ॥
स्वर्ग लोक कैलास स्थान । गोलोक सागर परधान ॥
ब्रह्मलोक इंद्रासन नाम । सातों पुरी और चारों धाम ॥

। गृहवास सब करो ॥

जाग्रत

द्धि सिद्धि नव निद्ध घर घरे ॥
ताल की शब्द काल भागे।सहत अभिलाख सोवे जागे ॥३२॥

॥ मंत्र अमल का ॥

से आ

साँप कैअरी बंदर की प्यारी । एक का कोढा एक असवारी॥
राजा प्रजा योगी सब पावे । महाकालि का ध्यान लगावे ॥
सूके कुसुंभा मदक प्रधान । पोस्ती परम पदारथ जान ॥
ऐसी अमल अभिलाख से खावे।चारों मुक्त पदारथ पावे॥३३॥

में गांजा है परधान ॥
षट् दर्शन सब गांजा पीवे । गांजा के बल जोगी जीवे ॥
गांजा तमाखु प्रेम से मिलावे।दम खीचे जोतीसरूप दरसावे॥
मन को आधार बुद्धी को अंजन।पिये अभिलाख देखे निरंजन॥३४॥

॥ मंत्र भांग का ॥

जंगल की पत्ती शंकर का ध्यान।ब्रह्मा का जीवन विष्णुका ज्ञान ॥
घोटे कालभैरव श्याम कार्तिक गणेश । छाने पार्वती पीवे महेश ॥

चारों वर्ण चारों आश्रम । चारों वेद का पूरा धरम ॥
विजया माता जगत विख्याता । पंचानंद मुक्त की दाता ॥
प्रेम की विजया अभिलाख पावे । चौदह भवन मिथ्या दर्शावे ॥ ३५ ॥

धन्वंतर ने बनाया वर्ण को प्याया । चौदह रतन क्षीरसागर में पाया ॥
सुरा वारुणी तीरथ मद । योगी पीवे राखे हद ॥
देवी भैरव सिद्ध पुरंदर । शुद्ध किया सब नलका यंतर ॥
गुड महुवा मेवा स्थावर । सब की दारु कनकबराबर ॥
सुरमाता को देवे साख । तीर्थपान करे अभिलाख ॥ ३६ ॥

॥ मंत्र विषय का ॥

आदि निराकार निर्गुण आकार । ज़िसकी महिमा न पावें त्रिपुरार ॥
भग से भक्ति रती प्रसंग । काम की शोभा कामी उमंग ॥
पुरुष प्रकृती परमार्थ भोग । जगत की वृद्धी अनादि योग ॥
भग से लिंग लिंग से भग । जग से ईश्वर ईश्वर से जग ॥
गुप्त विचार अभिलाख भाखे । पढ गायत्री विषय रस चाखे ॥ ३७ ॥

॥ मंत्र मांस मछली का ॥

जलचर नभचर भूचर नाना । पशू मच्छ पक्षी परमाणा ॥
आत्म द्रोही जो न भरमावे । उन की नाश करत फल पावे ॥
ऐसी बहुत जोन में आवे । प्राण जाय तब दूजे पावे ॥
गोरख दत्त मछिंदर खाया । देवी भैरव भोग लगाया ॥
राम कृष्ण ने देखा चाख । ऐसी मांस खावे अभिलाख ॥ ३८ ॥

झोली

झोली बांधे दत्त दिगंबर। गोरख गोपीचंद जलंधर॥
झोली हनूमान को भावे। झोली से शीव अलख जगावे॥
झोली अंदर चौदा रतन। झोली भीतर चौदा भवन॥
कोन में गांठ लगावे॥३९॥

एकांत में जाप करो। ब्रह्म का अनुभव होगा। मैं महात्मा गुरु की आज्ञा प्रमाण विधिपूर्वक वो मंत्रजाप किया कुछ अनुभव प्रत्यक्ष नहीं हुवा। तब महात्मा गुरु से हात जोडकर कहा कि मंत्र अक्षर से बनाया गया। अक्षर का सिद्धांत पाहिले प्रकट हो चुका। सांप विछू का जहर मंत्र से नहीं उतरता, हजारों मर जाते हैं। गुरु का मंत्र सब को आता है। कोई सिद्ध हो ... सब को झूठा मंत्र सुनाता है। इंद्रजाल ग्रंथ संसार में सब के पास है। चार आना में आता है। हजारों मंत्र उस में लिखे हैं। कोई सिद्ध नहीं हुवा। लंडन की विलायत में अठरा सलतनत हैं उस मुलुक में कोई मंत्र नहीं जानते। विचार की बात है कि मंत्र मुख से पढा जाता है वो आकाश में नाश हो जाता है। वो एक शब्द है। ऋषि लोगों ने संसार बनाने वास्ते और भक्ति मार्ग चलाने के कारण जात का धर्म निर्वाह होने निमित्त लाखों प्रकार का मंत्र बनाया। उसी प्रमाण आपने भी ये चा-

लीस मंत्र बनावे उस में कुछ सार नहीं। शब्द के भेद अनंत हैं। कोई कहे नहीं सक्ता, यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें चौथी लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ पांचवी लहरी ॥

मानसिध्यान ब्रम्ह है ॥

अथ श्रीब्रह्मदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। मानसिक पूजन से अनुभव होता है। तथा मानसिक ध्यान करने वाला मन आप ब्रह्म है। इस पूजा के वास्ते जगा बहुत एकांत होना चाहिये। कोई शब्द कान में न आवे। उस को शुद्ध पवित्र करके अर्धरात्र मध्यान्ह के समय तथा दो पहर दिन को नित्य कर्म करिके मानसिक पूजा करे। पद्मासन लगावे। अगोचरी मुद्रा धारण करे। श्वासा में सोहं जाप रक्खे। चित्त एकाग्र करे पीछे गुरूपदेश प्रमाण हृदय में आसन बनावे। उस परब्रह्म की मूर्ति विराजमान करे। गंगाजल दूध आदिक से स्नान करावे। चन्दन केशर कस्तूरी का तिलक लगावे। वस्त्र पहिरावे, सुगंध लगावे। धूप कर्पूर जलावे। नैवेद्य भेंट आदिक जो प्रकट पूजा में चढाया जाता है सब चढावे। पीछे उस रूप को अपने ध्यान में दृढ करे। अपने को भूल जावे। उस के उपरांत आँख खोलकर देखे सन्मुख दर्शन हो जावेगा। प्रश्न का उत्तर देवेगा और सब

मनोरथ सिद्ध करेगा। यह ध्यान सब को नहीं मालूम। अछे अछे परमहंस सदा इस ध्यान में आनंदित रहते हैं। मन का यंत्र[1] देखने योग्य है ।

मैं तीन महीना महात्मा गुरु की आज्ञा प्रमाण बडे प्रेम से इस साधन को सिद्ध किया। यथार्थ में ऐसा अनुभव हुआ कि जैसा रूप अपने हृदय में दृढ करता वैसा प्रत्यक्ष सन्मुख दर्शाता। कारण अपना ध्यान उस रूप में ले रहता था, जब ध्यान जाता रहे तब रूप भी जाता रहे। कुछ दिन ये तमाशा इंद्रजाल का देखा कुछ सामर्थ्य प्राप्त नहीं हुवा। जैसे स्वप्न में अनेक वार्ता देखे जाग्रत में उस का कुछ स्वाद नहीं है। मन की संकल्प से वो रूप ध्यान में दृढ हो जावे। वो ही भ्रमरूपी चर्मचक्षु से भी कुछ घडी दरसावे। ऐसा सिद्धांत निरर्थक देखकर छोड दिया। और महात्मा गुरु से हात जोडकर कहा कि यह रूप ब्रह्म नहीं है। भ्रम है। मेरे को अच्छी तरह ध्यान में ब्रह्म आया। कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें पांचवी लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ छठी लहरी ॥

समाधि ब्रह्म है ॥

अथ श्रीवासुदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास

[1] यहां का यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले [illegible] ह्म निराकार है। अष्टांग योग समाधि में अनुभव होता [illegible] अथवा समाधि आप ब्रह्मरूप है। सर्व साधन में समाधि प्रधान, प्रसिद्ध है। नारद सनकादिक महादेव सब समाधि लगाते हैं। समाधिवाले पुराने साधु अबतक पहाड खोदे जाने से अब दुनिया में मिलते हैं। उन की शरीर महाप्रलयतक रह सकती है। और चौदह भवन को देख [illegible] हैं, काल का भय छुट [illegible]

[illegible]

चाहिये। पीछे आसन मुद्रा ध्यान धारणा करना चाहिये। पीछे इडा पिंगला सुषुम्णा नाडी का भेद कुंभक पूरक रेचक का भेद जानना चाहिये। तत्त्व समाधि ताल में जिव्हा का उलट पलट ब्रह्मांड का विचार करना चाहिये। षट्चक्र द्वादश कमल सोलह कला सूर्य चंद्र का गुण सब जानना चाहिये। इस विचार के उपरांत आत्मा ब्रह्मांड में स्थिर हो जाता है। वो पुरुष जीवन्मुक्त हो जाता है। अष्टांग योग का नाम ये हैं। संयम, नेम अथवा यम[2], आसन[3], व्रत अथवा प्राणा[4]याम, प्रत्याहार[5], धारणा[6], ध्यान[7], समाधि[8] उस के सिद्ध होने में आठ सिद्धि प्राप्त होती हैं। उस के नाम ये हैं। अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व ये अष्ट सिद्धि हनूमान को थीं। क्षणमात्र भोग में जो सुख होता है वोही समाधि चढ जाने पर आत्मा को अखंड सदा आनं-

नद, से

ब्रह्मानंद पाचों आनंद हैं एक आनंद से दूसरा
ंद हजार गुण विशेष हैउ मुक्ति कहते हैं। सालो-
सा सायुज्य

में हैं। और विस्तार यंत्रे में [1] खो

मैं ने हात जोडकर कहा कि इस सिद्धांत में ब्रह्म का कुछ बोध नहीं हुआ। समाधि में बडी सामर्थ्य है। योंही समाधिवाला आप ब्रह्म हो जाता है। आनंद मुक्ति का भोक्ता हो गया। जैसे मद्यपान किया हुआ पुरुष अपने को बादशाह जानता है। अनेकन महात्मा समाधिवाले देखते मर गये। कोई अमर नहीं हुआ। श्वासा प्राण का मार्ग है। उस के बंद करने से वो घबडाता है। अभ्यास करते करते स्थिर हो जाता है। ज्ञान पदार्थ जो मुक्ति का दाता है वो नहीं रहता। कितने साधक शरीर शुद्धि में मर जाते हैं। मुरदा होकर महाप्रलयतक बैठना निरर्थक है। भांड नकल करने में समाधि लगाता है। एक भाँड का प्राण समाधि में चढ गया। एक साल ज्यों का त्यों बैठा रहा। पीछे जब प्राण उतरा तब उठकर कहने लगा कि लाओ घोडा जोडा, श्वासा का रोकना समाधि है। मेरे ज्ञान में खेल तमाशा दर्शाता है। जैसे नट विद्या का साधन कठिन है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें छठी लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

१ यहां के यंत्र ग्रंथ के अन्त में देखो।

।ः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया।और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि शांतिपद ब्रह्मपद एक है । सर्व व्यवहार सुख के कारण हैं। वो सुख शांति में है। शांति प्राप्ति में है। प्राप्ति प्रीति में है।प्रीति निश्चय में है।निश्चय ज्ञान में है।ज्ञान सत्संग में है।सत्संग संयोग आधीन है। संयोग प्रारब्ध आधीन है। जिस के पास शांति नहीं है उस को करोंडो ब्रह्म के मिलने में सुख नहीं हो सकता। जैसे आंखवाला पुरुष सूर्य का प्रकाश सर्व पदार्थ में देखता है उसी प्रमाण शांति प्राप्त होनेसे सर्व पदार्थ में सुखरूपी ब्रह्म दर्शाता है। किसी के दर्शन की तथा भजन कीर्तन की चाहना नहीं रहती। दुःख। चिंता कोई प्रकार का नहीं रहता। ये शरीर और जीव मरने उपरांत पंचतत्त्व में मिलजाता है।गुप्त प्रकट होना वायु का कारण है।मरने के पीछे शिवाय नेकनामी और बदनामी के कुछ नहीं रह जाता। परमात्मा घट घट व्यापक है।घट पंचतत्त्व का है।पंचतत्त्व अनादि है। जैसे किसी वन में एक नदी रही।उस में एक नाव पडी थी उस का स्वभाव इधर आना उधर जाना।उसपर मुसाफर बटोई उतर जाते थे।एक दिन कोई राहगीर उस नावपर सब के साथ सवार था। सब से विचार किया कि ये बन किस का है नदी कहां से आई नाव किस ने

बनवाई उस का उत्तर कौन देवे । सब बटोई दो घडी के आये हुये थे। इस प्रमाण ब्रह्मांड को वन, पंच तत्त्व को नदी, शरीर को नाव, जीव को बटोई सिद्ध करो। और इस दृष्टांत को अच्छीतरह जब गुरुमुख से सुनोगे तब भेद प्रगट होगा। मेरे ज्ञान में जो शांति है वो ब्रह्म है । जो भ्रम में है वो नरक में है। शांतवाणी देखो ।

॥ शांतबाणी–चौपाई ॥

गुरु नानक को टेकूं माथ । श्रीचंद को जोडूं हाथ ॥
सतगुरु को अभिलाख प्यारा। सत्यनाम को भेष हमारा ॥१॥
कर्ता पुरुष सत्य है नाम । निर्भव निर्विकार निष्काम ॥
मूरत सत्य काल नहिं व्यापे। जो न भंग गुरुमुख को जापे॥२॥
आदि अनादि सत्य सब सत्य । है युगादि होगा भी सत्य ॥
सत्य सत्य सब खेल बनाया॥रात दिवस सब को दर्शाया॥३॥
वेद पुराण शास्तर कथा । इन में खोज रहे सब यथा ॥
चार वर्ण षटदर्शन देखे। चार आश्रम बन वन पेखे॥ ४॥
अगम निगम भेद नहिं पाया। ब्रह्मा विष्णु महेश बनाया॥
पंडित ज्ञानी साधक संत। सोचे सोचे न पावे अंत ॥ ५ ॥
निर्गुण सगुण ब्रह्म विचार । त्रिगुण में भूला संसार ॥
जनमे मरे रहे कुछ काल । मिथ्या बीते तीनों काल ॥ ६ ॥
पूजा पाठ कीर्तन भजन। तीरथ ब्रत दास स्मरण ॥
माता पिता मरे सब जाने। अपनी मौत हृदय नांहि आने॥७॥
भाई बहिन पुत्र सब मरे । अपनी मौत याद नहिं करे ॥

बालक तरुण वृद्ध हो गये। मिथ्या तीनों वृथा गये ॥ ८ ॥
रूप शृंगार शक्ति सब गई। मोह रूप तृष्णा नहिं गई ॥
पाके केश नेत्र नहिं सूजे। दांत गिरे तबहू नहिं बूझे ॥ ९ ॥
तोर मोर में जनम गमाया। तोर मोर का भेद न पाया ॥
मैं मैं कहत अर्थ नहिं जानत। अजया शब्द लाज नहिं मानत ॥ १०
हं कोहं सोहं नाहिं जाने। आतम ब्रह्म नहीं पहिचाने ॥
हं कोहं सोहं जो जानो। अहंकार की गत पहिचानो ॥ ११ ॥
शब्द स्पर्श रूप रस गंध। ऐसे पंच विषय मत मंद ॥
तीन स्वभाव शब्द में जानो। भय रोचक विश्वास बखानो १२
कोई गुंगा मैं मैं करे। कोई बहिरा श्रवण करे ॥
जो अपने मन में मैं कहे। गुंगा बहिरा जैसे रहे ॥ १३ ॥
बालक बोली मैं नहिं कहे। परमहंस ऐसी गति रहे ॥
पढ़त कबित्त विवेक न जाने। सर्वरूप को एकी माने ॥ १४ ॥
होय विवेक ज्ञान जब आवे। सत्संगत में कोई पावे ॥
राम वसिष्ठ ज्ञान से लीजे। पुरुषारथ पर निश्चय कीजे ॥ १५ ॥
अष्टावक्र एक सब जाने। दुःख सुख में भेद न जाने ॥
च्यवनऋषी को कर्मप्रधान। गौतम कालघडी को ज्ञान ॥ १६ ॥
ऐसे बहुत ऋषी कह गये। नामप्रकाश जगत् कर गये ॥
वर्तमान में लाखों गावे। भेद नहीं कुछ उस का पावे ॥ १७ ॥
कोई कहे समुंदरवासी। कोई गावे रमानिवासी ॥
कोई पुर वैकुंठ बतावे। कोई शेष नागपर गावे ॥ १८ ॥
कोई पीपल पात लखावे। हिरणगर्भ ता को दिखलावे ॥

कोई ब्रह्मा उत्पन्न करता। कोई विष्णु पालन करता॥१९॥
कोई शंकर को बतलावे। कोई आद गणेश बतावे॥
कोई कहै भवानी माता। कोई पंच तत्व का ज्ञाता॥२०॥
कोई दश अवतार बतावे। चौविस रूप तिथंतर गावे॥
कोई कहे झूंठ सब जानो। जगत युगादि अनादि बखानो२१
पंच तत्त्व का गुण दरशावे। उपजे विनशे आवे जावे॥
कोई कहे स्वप्न सब जानो। निद्रारूप देह अनुमानो॥२२॥
ऐसे कोटरूप को धावे। एकरूप बिन मुक्त न पावे॥
एक रूप को खोजो कहां। वेद पुराण शास्तर जहां॥२३॥
रूप न रंग न रेख बखाने। निराकार निर्गुण कर जाने॥
कोई खुदा महंमद जाने। कोई ईशा को पहिचाने॥२४॥
ऐसे भरम बहुत जगमाहीं। अंतसमय सब के कुछ नाहीं॥
कोई कहे ब्रह्म सब करे। कोई कहे भलाई करे॥२५॥
कोई कहे नहीं कुछ करे। कर्म प्रधान जगत में रहे॥
कोई व्रत करे फलहार। कोई मादिरा मांस अहार॥२६॥
कोई हिंसा नरक पग धारे। बल देवे वैकुंठ सिधारे॥
मलमूत्र कोई नाहिं खावे। पंचगव्य से पातक जावे॥२७॥
रोम चरम से करे विचार। कंबल वाघांबर आधार॥
मारे गौ नाश हो जायी। दिन दिन दूना होय कषायी॥२८॥
जे ते दुःख शास्तर में गावे। चारों युग में शूद्र बसावे॥
ब्रह्मदेव मानुष सब हने। ता को दुःख नहीं कोउ गिने॥२९॥
समरथ को नाहिं दोष गुसांईं। रवि सुर पुर पावक की नाईं॥

गुण अवगुण को भेद न जाने। कुलरीत जगत पहिचाने॥३०
सत्यनाम को सच्चा जाने। तीन लोक उस को पहिचाने॥
रहे उदास नाम को जाने। मोहरूप मिथ्या करि माने॥३१
कर्म गुमान करे जो कोई। सपन्यो अर्थलाभ नहिं होई॥
कर्म करे मिथ्या करि जाने। शुभ अशुभ झूठ सब जाने॥३२
सत्य नाम राखे आधार। देह कर्म का कुछ नहिं सार॥
देह कर्म पावे जब देह। विना देह पावे नहिं देह॥३३॥
जीव कर्म सब जी को होई। शांतरूप पावे फल सोई॥
ऐसी रीति रहे सुख पावे। विन संतोष न काम नशावे॥३४॥
हम मिथ्या निश्चय करि जानो। देह नहीं अपनी कर मानो॥
बालक तरुण वृद्ध हो जावे। हम मिथ्या कुछ खबर न पावे३५
नींद क्षुधा मैथुन सब आवे। हम मिथ्या कुछ पता न पावे॥
हर्ष शोक बिमारी आवे। हम मिथ्या कुछ जान न पावे॥३६॥
ऐसी वस्तु विगानी होवे। उस को कैसी अपनि करावे॥
मरे जिये कुछ काबू नाहीं। ता को मूरख कोय लिपटाहीं॥३७
श्वासा आवे जावे तन में। बंद होय जब उस के मन में॥
अपने किये नहीं कुछ होवे। कर्ता करे सो अनुभव होवे॥३८॥
शांतरूप वैराग्य बढावे। त्याग विना निष्काम न पावे॥
जगत पदारथ मिथ्या जाने। अपनी देह अनित्य हि माने३९
सत्यनाम से ध्यान लगावे। सत्यरूप सच्चा हो जावे॥
जीवन्मुक्त उसी को कहिये। कर्म करे फिर न्यारा रहिये॥४०
कर्ता धर्ता आप न माने। आपन रूप साक्षी जाने॥

देह कर्म सब देखा करे। अपने मन में आनंद करे ॥ ४१ ॥
अंतःकरण शुद्ध जब होवे। आतम अनुभव सच्चा होवे॥
आतमज्ञानप्राप्ती होवे। जरा मरण से छूटे सोवे ॥ ४२ ॥
नाम अधारी जीवे लाख। जीवन्मुक्त होवे अभिलाख ॥
संवत् उन्नीस से चवालिस।फागुन शुदि मिति अग्यारस॥४३॥
बुधवार मास फरवरी। सन् सत्याशी है शरवरी ॥
मुल्क बडार हैदराबादी। खामगांव ओछी आबादी ॥४४॥

मैं ने हात जोडकर कहा कि जड सृष्टि को भ्रमना नहीं दर्शाति।सर्वप्रकार से शांत दरसाते हैं। और जिस मनोरथ की सिद्धि नहीं प्राप्ति होती। अंत में शांति हो जाती है।शांति और भ्रम सर्व जीवों को है। जिस को ज्ञान है ये वृत्ति बदल भी जाती है।जैसे शांति में भ्रम उत्पन्न हो जाता है। जो अशक्त होता है वो शांत होता है। शांति एक शब्द है। जिस में पांच अक्षर हैं। निद्रा मैथुन आहार की शांति जीवमात्र को नहीं है। चौरासी लाख सृष्टि अनंत प्रकार की रचना शांति से नहीं होती। शांति सरूप को है। जैसे कोई कहता है कि मेरे को शांति हुई उस को ब्रह्म कहना। आप का काम है ये ज्ञान चौदह भवन के प्रतिकूल होगा। हजारों भक्त निष्कपट और प्रेमी को वर्तमान में दर्शन होता है। अठारह पुराण में भगवान की लीला ऐसी अद्भुत अपार व्यासजी ने गायी है जो सुनकर भी प्राप्त होता है। वसिष्ठजी ने रामचंद्र को उपदेश दिया है कि पुरुषार्थ करो। शांति से अथवा देव

के भरोंसा पर कुछ भला नहीं होगा । कर्म प्रधान है । यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे ।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें सातवीं लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण ।

॥ आठवीं लहरी ॥

निष्काम पद ब्रह्म है ।

अथ श्रीनरसिंहाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया । और सब हाल अपना कहा तब महात्मा गुरु बोले कि निष्काम पद ब्रह्म है । शांतिपद निराशा होने पर भी प्राप्त हो सक्ता है।जिस को काम है उस को जन्म मरण है।सर्व सृष्टि कामना से है । वो माया है । ब्रह्म को जब मायारूपी कामना होती है तो जगत् उत्पन्न होता है । तीस नाम ब्रह्म के आ अक्षरपर श्रवण करने योग्य है अनाम १ अरूप २ अकाम ३ अकर्ता ४ अजन्म ५ अगम ६ अभोग ७ अशोग ८ अरोग ९ अशोक १० अवर्ण ११ अलेख १२ अलख १३ अभेष १४ अयोन १५ अजात १६ अदेश १७ अनाद १८ अकाल १९ अकलंक २० अकाश २१ अनाश २२ अकर्म २३ अमान २४ अशंक २५ असंग २६ अटल २७ अगाध २८ असंख्य २९ अनंत ३० हजारों ग्रंथ का प्रमाण है कि सृष्टि ब्रह्म की कामना है । जब निष्काम होता है ये जगत् उस में लय हो जाता है । जो जीव निष्काम होता है शरीर उस की पंच तत्व में लय हो जाती है । जीव

अकाम अरूप होजाता है। निष्काम का रूप निर्गुण है निरं-
जन है, निरामय है, निराकार है, निर्भव निर्वैर है। इस कार-
ण उस का वर्णन नहीं हो सक्ता। जो स्वतः सामर्थ्यवान
होगा वो निष्काम होगा। शांतिपद लाचारी पद है। निष्का-
मपद श्रीमंत पद है। जो किसी के आश्रित न हो स्वतः
स्वतंत्र सब काम उस का चल जावे वो ब्रह्मसमान है। नि-
ष्काम पदार्थ किसी के आश्रित नहीं। सर्व उपमा ब्रह्म की
निष्काम को शोभा देती है। तीन अष्टपदी देखने योग्य हैं।

॥ पहिली अष्टपदी—ब्रह्म निराकार ॥

कवित्त—शंकर को पूजें और शक्ती को ध्यान धरें देवी को
सेवें और गणेश को मनावत हैं। ईश्वर नारायण परमेश्वर भ-
गवान् राम कृष्ण की कहानी सब घर घर में गावत हैं॥
सूरज और चन्द्र बुध मंगल गुरु शुक्र शनि राहु और
केतु ग्रह घर घर पुजवावत हैं। ऐसो नहीं पावे पार
बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताय ढूंढे कब पावत हैं
॥१॥ वाल्मीक भारद्वाज गौतम वसिष्ठऋषि अंगिरा
व्यास पुलह भेद नहीं पावत हैं। विश्वामित्र च्यवन ऋषि
अष्टावक्र शुकाचार्य उद्दालकमुनि वासुदेव अष्टकाल ध्यावत
हैं॥ लोमश दुर्वासा ऋषि दत्ता जडभरत ऋषी कर्दम रोहि-
ण्यऋषी निशि दिन गुण गावत हैं। ऐसे नहीं पावे पार
सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूंडे कब पावत
हैं॥२॥ जोगी अरु जंगम संन्यासी वनवासी आदि ब्रह्म-

चर्य बालचर्य निशिदिन गुण गावत हैं। वानप्रस्थ परमहंस सुथरा शरभंगी नाथ भर्तरि अघोर सतनामी सब ध्यावत हैं॥कूका और अकाली निर्मला गुलाब पंथी सेवडा अनुरागी वैरागी दुख पावत हैं। ऐसे नहिं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ताहे ढूंडे कब पावत हैं॥३॥ जमद्गन पुलस्त्य ऋषि नाचिकेत शांडिल्य ऋषि ऐसे सब और ऋषि मन में गोहरावत हैं। कश्यप दाल्भ्य ऋषि श्रवण मारीच ऋषि ऋषभदेव वासुदेव अष्ट प्रहर ध्यावतहैं॥ भृगुऋषि जनक ऋषि गर्ग ऋषि पराशर ऋषि भीषम पितामह ऋषि रण में दुख पावत हैं। ऐसे नहिं पावें पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ता हे ढूंडे कब पावत हैं॥४॥ धना और नामदेव पीपा रोहिदास दास सजना कसाई विदुर ढूंडे नहीं पावत हैं। नरसीजी सिवरी गणिका करमा द्रौपदी कुंती और तारा अहल्या सब ध्यावत हैं॥ रामदास युगुलदास संतदास माधवदास पलटुदास मोहनदास नित्य ध्यान लावत हैं। ऐसे नहीं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ता हे ढूंडे कब पावत हैं॥५॥ शृंगीऋषि शृंगीऋषि याज्ञवल्क्य रोमऋषि धौम्यऋषि विमलऋषि निशिदिन गुण गावत हैं। पाकऋषि कपिलऋषि आत्रिऋषि पादशाहन ऋषभमुनि अगस्त्यमुनि अनंतर सब ध्यावत हैं॥ शुकदेव वामदेव देवमुनि वसिष्ठमुनि मित्री सज्जन शरभंग ध्यान लावत हैं। ऐसे नहीं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अ-

ता है ढूंडे कब पावत हैं ॥ ६ ॥ शारद और नारदमुनि सूत सनकादिक सब इंद्र और उपेंद्र सब ध्यान को लगावत हैं। गंगा और यमुना त्रिवेणी सरस्वती शरयू मंदाकिनी शोणभद्र धावत हैं ॥ जगन्नाथ बद्रीनाथ रामनाथ द्वारकानाथ मथुरा उज्जैन अवध काशी सब जावत हैं। ऐसे नहीं पावे पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ता हे ढूंडे कब पावत हैं ॥७॥ दादू कबीर सूर तुलसी गुरु नानकशाह स्वामी परिणामी नित्य नया मत चलावत हैं। गोरख मछिंदर जलंदर और गोपीचंद प्रेमनाथ नेमनाथ जैन में कहावत हैं ॥ रामानंद रामानुज बिंद्रावन रामसनेही विठ्ठलजी तुकाराम दक्षिण में पुजावत हैं। ऐसे नहीं पावें पार बैठे सब हार हार मूर्ख अभिलाख ता हे ढूंडे कब पावत हैं ॥ ८ ॥

॥ दूसरी अष्टपदी ॥

कवित्त—अनाम है अकाम है अकर्म है अभर्म है अदेख है अलेख है अनाद है अपार है । अरूप है अनूप है अभंग है असंग है अछूत है अभूत है अकार है नकार है ॥ अरोग है अशोक है अभोग है अयोग है अदेश है अभेष है वकार है मकार है। अनंत है असंख्य है असीख है अभेख है अखाद है अजाद है असत्य है असार है ॥ १ ॥ न नाम है न काम है न कर्म है न धर्म है न रेख है न देख है न वार है न पार है।

न रूप है न रंग है न भूत है न अंग है न छूत है न संग है न मिष्ट है न खार है॥ न रोग है न शोक है न भोग है न योग है न राग है न दोष है न कार है न वार है। न आद है न अंत है न साधु है न संत है न जीव है न जंत है न सत्य है न सार है ॥२॥ शून्य है अकाश है अखंड है प्रकाश है अभेद है अभाष है अनाश है विनाश है। भूख है प्यास है पचीस है पचास है अदेश है अदास है अवास है सुवास है॥ वर्त है उपास है वियोग है सपाश है नकाश है बकाश है उसांस है हवास है। भूत है पिशाच है हुलास है विलास है सुदास है उदास है समास है मसास है ॥३॥ न एक " न दोय है न तीन है पचीस है न वीस है न तीस है न पांच है न चार है। न रक्त है न श्वेत है न कृष्ण है न पीत है न श्याम है न नील है न रंग है न सार है॥ न मंत्र है न यंत्र है न सुक्ख है न दुक्ख है न रात है न दिवस है न लग्न है न वार है। न दुष्ट है न दैत है न भूत है न प्रेत है न लेत है न देत है न जीत है न हार है॥४॥ हमेश है गणेश है महेश है मुनेश है सुरेश है विशेष है अदेश है अनाम है। सुदेश है विदेश है दुरेश है अक्लेश है सुभेष है कुभेष है सुनाम है कुनाम है॥लाल है गुलाल है जमाल है विशाल है कठोर है कराल है सरूप है सुनाम है। काम है अकाम है कयाम है मुकाम है कलाम है सलाम है हलाल है हराम है॥५॥ न मच्छ है न कच्छ है न वाम है न दक्ष है न सूर है न प्रथ है न

न व्यास है। न कृष्ण है न पृश्नि है न वैद्य है धन्वंतर है न ग्वाल है न बाल है न दत्त है न दास है॥ न नरहरी न बद्री न शिंबुमुनि न कपिलमुनि न हंस है न बालऋषभ न अश्व है न आस है । न यज्ञऋषभ न धर्म है न मोहनी न बाउ-ली न परशुराम राम है कलंक सर्व नाश है ॥ ६ ॥ ज्ञान है विचार है अजान है अचार है अरूप है अनूप है अगूप है स्वभाव है । शब्द है स्पर्श है सुगंध है सरूप है श्वास है अलक्ष है अनंद है चुवाव है॥ हान है गिलान है प्राण है अपान है समान है बयान है उदान है उद्‌भव है। लोक है सलोक है सरूप है सायुज्य है समीप है स्वयंभु है अहं है अभाव है॥ ७॥ न जीव है न जगत है न देव है त शक्त है न श्वेत है न रक्त है न कारो है न लाल है। न ज्ञान है न भक्त है न योग है न युक्त है न बंध है न मुक्त है न कर्म है न काल है ॥ न ब्रह्म है न ईश है न भाल है न केश है न पांव है न शीश है न रोम है न बाल है। न हां में है न ही में है कहां में है कहीं में है वहां में है वही में है जहां में है जमाल में है ॥ ८ ॥

॥ तीसरी अष्टपदी–सवैया ॥

रूप न रंग न रेख न भेख न नाम न गांव न जात न धर्मा ।
बाप न पूत न बंधु न ताऊ न मित्र न शत्रु न काल न कर्मा॥
एक न दोय न बास न बोय न मिष्ट न खार न सीत न गर्मा।
ब्रह्म न क्षत्री न वैश्य न शूद्र न ज्ञान न ध्यान न शांत न भर्मा।

ब्रह्म न रुद्र न शक्क न विष्णु न शेष गणेश न राम रहीमा ।
कृष्ण न नंद न काव्य न छंद न देव न दैत्य न काल करीमा ॥
आदि न अंत न साधु न संत न जीव न जंत न अर्जुन भीमा।
रक्त न पीत न हर्ष न भीत न हार न जीत न वाद न बीमा॥२॥
अंड न पिंड न थावर जंगम कीट पतंग न योन न बरणा ।
शून्य अकाश न अंध प्रकाश न देह न श्वास न शीश न चरणा॥
भूत न प्रेत न वैर न प्रीत न कृष्ण न श्वेत न शिष्य न शरणा।
साहु न चोर न सर्प न मोर न सांझ न भोर न जन्म न मरणा॥३॥
योग न भोग न रोग न शोक न सत्य असत्य न प्रीत न प्रेमा।
राग न रंग न त्याग न संग न कूप न गंग न लोह न हेमा॥
दर्ब न सर्व न अर्व न खर्व न संयम नेम न आसन नेमा ।
मुक्त न भक्त न ज्ञान न जक्त न बुद्ध न उक्त न धीरज क्षेमा॥४॥
तेज कहे तो सुमेर नहीं और आप कहे तो न आप है कर्ता ।
शब्द कहे तो स्पर्श नहीं रस रूप कहै तो न गंध है कर्ता॥
सुक्षम स्थूल का मूल नहीं अरु कारण कर्म न धर्म है कर्ता।
ईश न जीव न देह न गेह न नेह न मेह न खेह है कर्ता॥५॥
कोई कहे वो शेष विराजे कोई कहे वो सागर वासी।
कोई कहे वो घट २ व्यापक कोई कहे सुरलोक निवासी॥
कोई कहे वो घट में राजे कोई कहे की रहे अविनाशी।
कोई कहे वो शून्य में व्यापक कोई कहे वो मिलो चौराशी॥६॥
कोई कहे शिव श्रेष्ठ उपावे कोई कहे कि गणेश है कर्ता ।
कोई कहे रवि चंद्र हैं मालिक कोई कहे चतुरानन कर्ता ॥

कोई कहे सब शक्त का खेल है कोई कहे कि अनाम है कर्ता।
कोई कहे जग अनादि युगादि है कोई कहे सत नाम है कर्ता॥७॥
बीज से झाड के झाड से बीज के पूत से बाप के बाप से पूता।
दिवस से रात के रात से दिवस के सूत कपास कपास के सूता॥
कर्म से जीव के जीव से कर्म के भूत से भर्म के भर्म से भूता।
ज्ञान से भक्त के भक्त से ज्ञान के मूत से देह के देह से मूता॥८

मैं ने हात जोडकर कहा कि जो पुरुष निष्काम, निष्क्रोध, निर्लोभ, निर्मोह, निर्मद हो गया। वो कौन है। शरीर में पांच विकार होते हैं। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, कदाचित् काम जाता रहा तो चार विकार शरीर में रहेंगे। जड सृष्टि में कामना नहीं है। कामना निष्काम वृत्ति को कहते हैं। जब ब्रह्म का ज्ञान होगा, तब निष्काम होगा। ब्रह्म का चोवीस अवतार होता है। और भक्तों को दर्शन देता है। दिन रात कर्ता है। चौरासी लाख योनि उस का भजन करते हैं। जिस को ब्रह्म प्राप्ति होगी, उस को शांति और निष्काम पद प्राप्त होगा। दूसरे को नहीं होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें आठवीं लहरी निराकारब्रह्मविचार नाम निरूपण सम्पूर्ण।

॥ नवीं लहरी ॥

बडाई ब्रह्म है।

अथ श्रीपरशुरामाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास

गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म निराकार है। संसार में जिस को बडाई प्राप्त हुई, उस को ब्रह्मपदवी प्राप्त होती है। और चारों वर्ण चारों आश्रम बडाई को चाहते हैं। व्यास वाल्मीक आदिक ऋषि और सब ऋषि मुनि बडाई से पूजे जाते हैं। और उन के ग्रंथ पूजनीक हुवे, और जिस कवि ने उलटा सीधा दो चार पद बनाया अमर हो गया। बडाई वैकुंठ है बडाई मुक्ति है। बडाई ब्रह्म है। जो कुछ कहो वो बडाई है। कलियुग वर्तमान में तुलसीदास सूरदास कबीरदास रामदास तुकाराम पलटुदास जगजीवनदास ऐसे हजारों साधु महात्मा—गुरु ग्रंथ की बडाई से अमर पदवी को प्राप्त हो गये। और जबतक वोह ग्रंथ जगत् में रहेगा तबतक अमर रहेंगे। जैसे ग्रंथ मंगलभवन के बनाने से तू अमर रहेगा। या देवता समान जन्म पावेगा। जैसे वाल्मीक ऋषि तुलसीदास गुसाई हुवे। जिन की कीर्ति जगत् में विदित है, उन को वैकुंठ और मुक्ति प्राप्त है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि पशुयोनि में जडयोनि में बडाई की चाहना नहीं है। उन का संबंध ब्रह्म से रहेगा या नहीं। बालक अज्ञान बावला आदमी बडाई नहीं चाहता। उन को ब्रह्म का बोध कैसे होगा। और जिस की बडाई गाने से सब अमर हो जाते हैं, वो कौन है। जन्म मरण का दुःख जिस की बडाई गाने में जाता है उस के दर्शन में कुछ प्राप्त नहीं होगा। यह असंभव है।

दोहा- ।त जृ [illegible]

गुरुपद पद्म प्रयाग को, महिमा कही न जाय ।
मो सम क्रूर कपूत को, दीनो नाम सुनाय ॥ २ ॥
वेद न पावत पार जहँ, शेष कहत सकुचाय ।
सुर माया बलवान को, मंगल भवन सुहाय ॥ ३ ॥
भजन भरो से राम के, चार दिशा चौकोन ।
त्रिभुवन में अभिलाख को, सब विध मंगल भोन ४
गिरिजापति त्रिपुरारि शिव, सब देवन के देव ।
प्रिय सहत अभिलाख हिय, वास करो तज भेव ५
संत शिरोमणि सुभग शठ, कलियुग साधु फकीर ।
मंगल भवन सराहिये, तुलसी सूर कबीर ॥ ६ ॥
जाहि न भावत मुक्त फल, जाय न भावत ज्ञान ।
मंगल भवन न भावई, भावत नरक निदान ॥ ७ ॥

॥ मंगल बत्तीसी ॥

कवित्त–माते श्रीभवानी तीनों लोक में बखानी महा-माया महारानी ध्वजा स्वर्ग फहरात है। पूजत हमेश तोय ब्रह्म और महेश दूर होत सब कलेश शेष वर्णत दिन रात है॥ मुक्ति की दाता विधाता माता संसार की रिद्ध सिद्ध आ-दिक तोय पूजत मिल जात हैं। कहत अभिलाख राख ध्यान चरण कमल बीच बूडत हूं अथाह थाह तू हीं एक दिखात

॥ १ ॥ काहू को अधार राजकाज परवार धन काहू को नौबत निशान सुलतानी है। काहू को अधार यार दोस्त नात बात है काहू को अधार बल पौरुष जवानी है ॥ काहू को अधार स्थान देश जन्म भूमि काहू को अधार नौकर चाकर सब स्वानी है। कहत अभिलाख सब के सब कुछ अधार मेरे तो तू अधार जगदंबा महाराणी है॥ २॥ मोहे तो पुकारत करत आरत विलंब भई तोय तो उबारत मात देर नहीं लागत है। दीन की दाता विधाता सृष्टिकर्ता संसार की पूजत तो चरण कमल कोटन अघ भागत है॥ मोसम आधीन छीन तन्मलीन दीन देख्यो भर नैन तिहूं लोक में तू छाजत है। चरणन में ध्यान रहे शरणन में मान रहे माता अभिलाख की विधाता मुक्त मांगत है॥ ३ ॥ दशरथ के बारे भये नंद के दुलारे आप आपी भये रामचंद्र आपी घनशाम है। आपी करत अवधराज आपी भये ब्रजराज अवधपुरी वृन्दावन दोनों सुरधाम है॥ आपी भये गोवर्धन तोडो आप शंकरधनु आपी भये राधा कृष्ण आपी सिया राम है। दुष्टन के दहनहार संतन के प्राणअधार शोभित अभिलाख हृदय सुंदर दो नाम है ॥ ४ ॥ कोटन ब्रह्मांड रोम रोम में विराजत है कोटन वैकुंठ नरक कोटन सुरधाम है। कोटन कैलास ब्रह्मलोक गौलोक कोटन आकाश पाताल पुरी धाम है ॥ कोटन रवि चंद्र इंद्र नारद सनकादि कोटन कोटन महादेव कोटन दशरथ नंद ग्राम

है।कहत अभिलाख वेद शास्तर पुराण कोटन कोटन अव-
तार एक दूसरो न राम है ॥ ५ ॥ शारद लजाय शेष शरमित
भये गाय वेद खोजत बनाय शास्त्र शोधत है जाहे को । गावत
गणेश जाय रटत है महेश ध्यान लावत मुनीश ब्रह्मा
ढूंडत हैं जाहे को॥ज्ञानी विज्ञानी महादानी गुणखानी आदि
नारद सनकादि भेद पावत नहीं जाहे को । जा के नहीं आदि
अंत पावत नहीं साधु संत घामड अभिलाख मूढ खोजत है
ताहे को ॥ ६ ॥ उदर में सम्हार्‍यो जलबूंद से सरूप सुभग
गोद में खिलावत मात पिता सुख पावत है । आई तरुणाई
सुखदाई अनेक भांत कोटन विलास ऋद्ध सिद्ध दरसावत
है ॥ चौथे पण आय सब भुलान्यो व्यवहार भोग दारा सुत
बन्धु आद जल को तरसावत है। सोचत अभिलाष काह
रीति ये पुराणी है मिथ्या पछितात तोहे आवागमन भावत
है ॥ ७ ॥ काहू को अधार राजकाज परवार धन काहू को
उपास नित्त काहू को वासी है । काहू को योग यज्ञ जप तप
स्नान ध्यान काहू को लोभ मोह काहू विषय वासी है ॥ काहू
को मुक्ति भक्त पूरण वैकुंठ धाम काहू को शोकदंड काहू नर-
कवासी है । काहू अनुकूल होत काहू प्रतिकूल होत वा की
अभिलाख ताहे पठवत चौरासी है ॥ ८ ॥ योगी अतीत पर-
म हंस जटाधारी दंडी आखंडी ध्यान रात दिन लगावे । ध्रुव
प्रहलाद आद याज्ञवल्क भरद्वाज वाल्मीक विश्वामित्र तेरी
गत न पावे ॥ शारद गणेश शेष रटत हैं महेश जाहे नारद
सनकादि आदि खोजत रह जावे । देख्यो अभिलाख सहत

प्रेम श गुपाल ब्रज की गवार लाहे गालन में नचावे ९
य ला और अ आप के मिटायवेको बांधत नंदरान
हा । ओखल में गुपाल के । धन्य वो माटी जो चाटी है राधा
रा ण धन्य वो स टी जो मारी ब्रजलाल के ॥ धन्य वो ग्राम
जहा करत विश्राम श्याम धन्य ब्रज धाम धन्य ग और
बाल के । कहत अभिलाख तिहूं लोक में धन्य है रटत दिन
रात जो नाम नंदलाल के ॥१०॥ रावण को मारिके बिभी-
षण का राज दिया कंस को निपात उग्रसन को बढायो है।
वालि को मार िव राजबाज दियो कौरवों को नशाय पां-
डव सुतन को बसायो है॥ निशिचर संहार सकल मुनिन को
उबार कियो हरिणाकुश मार प्रहलाद को बचायो है ।
अभिलाख ये कौन बाग करुणानिधान एक को बिगाड
एक का बनायो है ॥ ११ ॥ गीध को तार्‍यो दशकंधर संग
लडिवे में शिवरी को तार्‍यो जूंठे बोर के खियाये ते। विदुर को
तार्‍यो साग भात के खियायवे में सुदामा को तार्‍यो मूठी
तंदुल के चबाये ते ॥ गोपिन को तार्‍यो प्रेम प्रीत के ल
यवे में कुबरी को तार्‍यो तनक चंदन चर्चाये ते । कहत
लाख ऐसे तुर हो करुणानिधान तार्‍यो तो सब
कुछ न कुछ पाये ते॥१२॥पालन को मातपित भोजन
को देत सुधा सोभा अनेक भांत कोटन आराम है नौकर
अरु हितकारी व्योहारी अनेकन स्त्री परवार पुत्र
काज धाम है॥ वाजी गजराज साज अभिमत विस्तार

क
तोहे सूजत नहीं
को नाम है॥ १३ ॥
कमाई हेत
इ
लवडी
न परिवा किये चोरी और
गा ॥ अंत के
भर रैन कोई काम
के
की सोचत
ायो
र न हो
होय विवि
भांत से दुखारी
होय
स्त्र से न
भोजन न होय
आरी
पालक न
की
त्रु हितकारी हो
संयम पर कौन
हो ॥१५॥ रोगत शरीर
औषधि को
वैद्य दही भात वासी है।व
अधिक होत ऊ से बार बार आवत छीं
निरूप निर्वंश के
है न
उ है। ५
व
एक रु
है १६
नासी व
॥
है व
से का है

दण्ड के उपासी आठों याम के विलासी ऋद्धि सिद्धि आदि दासी अघनाशी उदासी है। एते कर्म के उपासी अभिलाख नर्कवासी राम कहत होत फांसी अंत भरमत चौरासी है ॥१७॥ सागर को थाह आये पुरी सातों घूमि आये तीर्थराज हूं नहाये भर्म आये चार धाम को। जटा योजनभर बढाये भस्म सेरों तन लगाये शंख रातों दिन बजाये नहीं बराये सेतधाम को॥ ब्राह्मण को जिमाये दान कोटन नित लुटाये गीता भागवत सुनाये पूज्य आये सुर विराम को। एते दुःख सब उठाये कोऊ काम नहीं आये एक नाम जो न गाये अभिलाख सिया राम को ॥१८॥ हात को बढाय दान पुण्य यथाशक्ति कियो पांव को बढाय घूम आयो सब धाम को। पेट को बढाय कियो कोटन पकवान भोग नाक को बढाय श्वास खींचो सुरधाम को॥ कान को बढाय सुनु अनहद की शब्द तान आँख को बढाय कियो दरशन अभिराम को। एते सब वढाय भयो पूरण अभिलाख नहीं जीभ को बढाय नहीं रटो सिया राम को ॥१९॥ सागर अथाह से उबाऱ्यो तोय दीनानाथ घाटपर लगायो तोय अवघट सुहात है। शूकर अरु कूकर के जोग जन्म तेरो भयो मानुष न दीन ताय पूछत नहीं बात है ॥ मेवा पकवान भोग विविध भांत पूरण सब आंधर असोज झूंठ भिष्टा क्यौं खात है। सोचत अभिलाख हान लाभ को विचार नहीं मूत से. सपूत फिर कपूत होन जात है ॥ २० ॥ साहिब के हजू-

र जब विचारैंगे कसूर दंड पावेंगे जरूर पाप शाहद बनि आवेंगे। देवेंगे गवाहि पकड मारैंगे सिपाहि तहाँ आवेगी तबाहि सजा कामिल फर्मावेंगे ॥ हाथी घोडा निशान स्त्री परवार द्रव्य यम के इजलास में न कोऊ काम आवेंगे। घामड अभिलाख चेत सीता राम याद राख माटी के भवन अंत माटी मिल जावेंगे॥२१॥काहू को भरो सो तीर्थ व्रत की कमाई में काहू को भरोसो दान पुण्य अरु स्नान का। काहू को भरोसो सेवा सिंगार प्रेम भाव में काहू को भरोसो सतसंग ब्रह्म ज्ञान का॥ काहू को भरोसो रामनाम के रटन में काहू को भरोसो योगदंड निर्वाण का। कहत अभिलाख यह भरोसो मोह कोऊ नहीं मोह तो भरोसो एक केवल भगवान का ॥२२॥ गज की पुकार में अवार तनक लायो नहीं द्रौपदी की लाज राख्यो सभा में सुनत हैं। भारत में बचायो अंड पंची गजघंट तरे उदर में बचायो प्राण प्रीछत को कहत हैं॥ व्रज को बचायो उठाय गोवर्धन पहाड भक्तनहित आप विविध रूप धरत रहत हैं। कहत अभिलाख मोहे आवत प्रतीत नहीं मेरे तो लाज प्राण दोऊ जान चहत हैं॥२३॥रावण को तार्‍यो महिरावण को उबार्‍यो तार्‍यो कुंभकर्ण सहसबांह के तरिया हो। कंस को तार्‍यो जरासंध को उबार्‍यो तार्‍यो शिशुपाल दंतवक्त्र के तरिया हो॥ कौरों को तार्‍यो पांडो सुतन को उबार्‍यो तार्‍यो हरिणाक्ष हरणकश्यप के तरैया हो। एते दुष्ट

तार्‍यो अभिलाख को न तार्‍यो तारो ए दुष्ट को तो जाने हम तरैया हो॥२४॥संतनहित मीन कमठ नरसिंह वराह भयो मार्‍यो सब दुष्ट सुयश त्रिभुवन में छायो है।संतनहित राजकाज अवधि की समाज छोड लीनो वनवास जाय लंकपत नशायो है ॥संतनहित नंदलाल गोपिन सों खेल कियो संतनहित नागनाथ पर्वत को उठायो है । संतनहित विविध भाँति पूरण अवतार लियो पापी अभिलाख को असंत क्यों बनायो है॥ २५॥ परशत रज चरणकमल गोतम त्रिय गई धाम धोवत निखाद के विषाद रह गयो नहीं । तोर्‍यो धन महाघोर त्रिभुवन में भयो शोर देखत परशुराम के क्रोध कुछ भयो नहीं ॥पालत सुग्रीव प्राण वाल काल कमलापति मार्‍यो लंकेश दुःख मुनेश के रह्यो नहीं॥है हो दयालु करत सब को सब विध निहाल तरसत अभिलाख ताय अबतक कुछ कह्यो नहीं॥२६॥परीक्षित को बचायो माता के उदर बीच ब्रज को बचायो उठाय गोवर्धन पहाडी को।गज की पुकार में अवार तनक लायो नहीं जरत विषम ज्वाला ते बचायो बालक मंजारी को ॥ ऐसे महाराज बीच सभा राख लियो लाज खींचे दुश्शासन हार्‍यो द्रौपदी की सारी को। कहत अभिलाख ऐसे कोमल चित्त होकर दयालु सुनत नहीं कौन भांत आरत ये दुखारी को॥ २७॥ पूजत रैदास भयो सधन भयो पावन परम जात को जुलाह्यो ताहे पदवी कबीर की। जे ते कपि भाल हते रावण संग्राम बीच ते ते सब

लियो अमर पदवी शुनासीर की ॥ विषय का अहारी निषाद भयो त्रिपुधारि गणिका कीर सहत तारी बडाई भई अहीर की। विनीत अभिलाख हाथ जोड सुनो करुणानिध कीजे सनाथ मोहे बारी है फकीर की ॥ २८ ॥ अवधि में न रैहों काशी पुरी छोड दीहों तीर्थराज हूँ न जैहों मथुरा स्वपन में न रहि हों । जहांतक अस्थान देव देवन के जगत् बीच तहाँतक जान प्रतिबिंब को बचै हों ॥ जे ते योगी अतीत परमहंस जटाधारी औरों अनेक भेष दर्शन को न जैहों।करि हों नहीं कोई काम एक नाम सीताराम पूरण अभिलाख सहत घर ही में कहिहों॥२९॥वेद के पढैया को अढैया भर अन्न नहीं आलह के गवैया को रुपैया रोज आवत हैं। साधु और संत मरत क्षुधावंत भूखन से विश्वा के हेत विविध व्यंजन बनवावत हैं॥ जननी और जनक दोऊ सेवक भये कुटुंब के ब्राह्मण अरु कामधेनु देखत दूरि आवत हैं। भारत की कहानी कहत ज्ञानी होय सूरकूर देखो अभिलाख राज कलियुग के आवत हैं ॥ ३० ॥ नाम की बडाई करत शारद सकुचाई गिरा बापुरी लजाई शेष वर्णत अष्ट याम है। निगम नीत कहे सुनाई वेद चार भांत गाई ब्रह्म ढूंडत सरमाई नहीं पाये ठौर ठाम है ॥ अद्भुत अपार अमित सूक्ष्म विस्तार आद अंत वे विचार सगुण निर्गुण बहु नाम है। भाषत अभिलाख वेद शास्तर पुराण साख नाम तो अनंत रामनाम परम नाम है ॥ ३१ ॥ वेद के पढाने में बुढाने ब्रह्मा अनेक शास्तर समजाने में लजाने

अवधपुरी सरयू नदी, सर्ग द्वार सुघाट
राजा राम नरेश है, सब विध पूरण थाट ॥ २ ॥
तहां वास अभिलाख को, गड उज्जैन मुकाम।
कार्तिक मास एकादशी, देवउठानी नाम ॥ ३॥
संवत् छत्तिस मध्य में, सोम दिवस के अंत।
संपूरण मंगल भवन, पाहि पाहि भगवंत॥४॥
मंगल भवन बनाय कर, विनवत हूँ कर जोर।
होय प्रसन्न वर दीजिये, श्रुत सिद्धांतन चोर॥५॥

कदाचित् ब्रह्म कुछ न होता और किसीको दर्शन न देता तो ऐसी बडाई कौन गाता॥लाखों भक्त का उपकार ब्रह्म प्रत्यक्ष कर चुका और कर्ता है।संदीपनगुरु का मरा हुवा पुत्र जीता करके दिया।सुदामाजी दरिद्री को चार पदार्थ दिये।गज को ग्राह से छुडाया॥शिवरी का बोर झूठा खाया। विदुर का साग भात खाया॥नंद यशोदा को माता पिता बनाया। अजामील को मुक्ति दिया॥छीपा की छाँय छबाया॥सेन बद्दल सेवा किया। धना जाट को गाय चराया। खेत जमाया। मलूक दास का माल ढोया॥ अहल्या को अप्सरा बनाया॥द्रौपदी की लाज रक्खा। ऐसी ब्रह्म की महिमा भूलकर बडाई आदिक को ब्रह्म कहना अज्ञान और मूर्खपना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद सातवें तरंगमें नवीं लहरी निराकारब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

आठवां तरंग प्रारंभ

मिथ्या ब्रह्म है ।

अथ श्रीनारदाय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अज्ञान के सत्संग से तुम को ऐसा निरर्थक परिश्रम हुवा और पैंतीस महात्मा की सेवा करना पडा । ब्रह्म का अर्थ भ्रम है जिस पदार्थपर निश्चय नहीं होता वो भ्रम है । सृष्टि का कर्ता आजतक किसी के निश्चय में नहीं आया, इस कारण उसपर सब को भ्रम है। ये संसार सर्व सृष्टि और पंचतत्व अनादि है, इस का सिद्धांत वेद नहीं कहसकता । सृष्टि का प्रमाण तथा विस्तार शास्त्र पुराण कोई नहीं कहसकता। अनंत द्वीप तथा खंड जो संसारमें है कोई नहीं जानता। जितने द्वीप और खंड हैं सब में दूसरा मत दूसरी विद्या दूसरा ब्रह्म दूसरा वेद है। हिंदुस्थान जिस को प्रसिद्ध करते हैं वो चार धामके भीतर है। इस द्वीप में पहिले राजा हिंदू थे, सूर्यवंशी चंद्रवंशी छत्री राज्य करते रहे,इन के राज्य के पहिले सब मनुष्य पशु समान रहते थे विद्या का व्यवहार नहीं था।बहुत काल पीछे जिस की संख्या कहना निरर्थक है। कोई पुरुष को अपने सत्संग से वैराग्य हुवा सर्व संपदा को छोडकर एकांत रहने लगा। एकांत रहने से कुछ विवेक विचार ज्ञान उत्पन्न हुवा और शरीर में जो श्वासा प्रधान है उस का भेद देखा तो समाधि का ज्ञान हुवा।पिंड के ज्ञानसे ब्रह्मांड का अनुभव हुवा उत्पत्ति का

गुण दोष संपूर्ण ज्ञान में आगया। संसारी मूर्खों को बहुत कुछ चमत्कार दिखाया, हजारो आदमी चेला होगये, कुछ अक्षर शब्द उन लोकोंने बनाया, छंद चौपई दोहा श्लोक मंत्र गायत्री कबित्त कुंडलियां सब बनाया, उस को देववाणी नाम रक्खा। बुद्धि और युक्तिसे संसारी लोकों को करामात और चमत्कार दिखाया, जब वो लोक अज्ञान में चलने लगे तब उन को जुदा जुदा कर्म बताया, चारवर्ण-ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र बनाया, रामकृष्ण जो उसवक्त राजा रहे उन को अवतार बनाया, अपनी सेवा पूजा सब में प्रधान रक्खा, अपना गुरु-नाम रक्खा, उन को शिष्यपदवी दिया, कोई शिष्य ने ब्रह्म को पूछा तौ उस को निर्गुण निराकार निरंजन बताया, जिस में वो सारी उमर ढूंडकर मरजावे पता न पावे। ब्रह्म की प्रशंसा अपनी सेवा में प्रकट किया। संसार के दिखलाने वास्ते जलसैन चौराशी धूनी शूल सज्जा झूला ऊर्ध्वबाहु ठाडेसरी मौनी फलहारी अनेक तपस्या किया। अठारा पुराणों में रामकृष्ण को ब्रह्म गाया उन के बनाये हुवे स्थान देवल को पुरी धाम बनाया, साधु ब्राह्मण गौ को पूजनीक बनाया, जैसा चाहा वैसा किया। जब राजा उन की सेवा करता था, तब सब जगत् उन की सेवा पूजा करता था। और जो शास्त्र वो बनाते थे उसपर राजा प्रजा सब चलते थे। उस वक्त मुसलमान अंग्रेज इस द्वीप में नहीं थे। समुद्रपार कोई नहीं जाता था, अगिन बोट जहाज पहिले नहीं था, अब प्रकट हुवे।

जो लोग मांसाहारी थे उन को शाक्तमत बनाया। जो नहीं थे उन को विष्णु शिव बनाया, सर्व व्यवहार का मंत्रशास्त्र बना दिया, मल मूत्र का मंत्र बनाया, सर्व संसार को अपने शास्त्र में कैद किया, गुप्त इंद्रजाल अपना संसारी लोकों से छिपाया, जैसे नाच जगत् को नचाया सब ने नाचा, लाखो पुरुष ब्रह्म निराकार की खोजना में राज परवार स्त्री धन आदिक छोडकर वन अरण्य में मरगये। जो महात्मा विद्यमान थे अपना मत चलाया, ब्रह्मचर्य वानप्रस्थ संन्यास परमहंस गुसांई बैरागी नाथ सेवडा जंगम हजारों नाम उस भेष का रक्खा। पीछे विद्याका ऐसा अधिकार हुवा कि लाखों ग्रंथ आचार्योंके बनाये हुवे मौजूद हैं। कहांतक इस का विस्तार किया जावे जिस को कुछ भी ज्ञान होगा। इस सिद्धांत को जान लेवेगा। और ब्रह्म का भ्रम स्वप्न में भी नहीं करेगा। जगत् का व्यवहार अनादि जानकर शांत हो जावेगा। गौ मारना भगवान् का हुकुम नहीं है। सर्व द्वीप में मुसलमान अंग्रेज खाते हैं। चोर डाकू कसाई परद्रव्य परस्त्री ग्रहण करनेवाला चारों युगमें रहते हैं। कुछ बुरा नहीं होता। जब से मुसलमान अंग्रेज इस टापू में आये तब से आचार्यों का पाखंड प्रगट होता जाताहै। तीर्थयात्रा, मूर्तिपूजना, यावत् हठयोगकरना कम होगया। हिंदू लोक ताजियादारी कबरपूजा उरस सब करने लगे। लाखों क्रिस्तान हो गये। लाखों धर्म छोडकर दूसरे द्वीप को चले गये। साधु सर्व भेष के गृहस्थ हो गये। लाखों

दादूपंथी नोकरी करते हैं। नाथ गुसांई खेती मजूरी करके पेट भरते हैं। बैरागी देनलेन दुकानदारी करते हैं। चारों वर्ण अपना धर्म छोडकर अंग्रेजी फारशी पढते हैं। रेल जहाज पर रोटी खाते हैं। कोई झाड वनस्पती बीज विना उत्पन्न नहीं होता। कोई जीव मैथुन विना पैदा नहीं होता। यावत् व्यवहार सृष्टिका जो होता है, सब का कारण जुदा दरसाता है। मेंडुक की मिट्टी पानी में डाले तो बहुत होजावें। संसार का कारज कुछ ब्रह्म के संबंध नहीं है। गंगा बारह बरस में नदी हो जावेगी। देव का पत्थर सेर पंसेरी के काम आवेगा। अठारह पुराणों में पसारी पुडियां बांधेंगे। जो काम पहिले परमार्थ रहा, अब स्वार्थ हो गया। गुरु शिष्य धनवान् ढूंडते हैं। ज्ञानवान से कुछ प्रयोजन नहीं। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य चोरी चमारी करते हैं। चमडा शराब हड्डी की दुकान रक्खते हैं। रेल में गौ की चरबी डालते हैं। मुसलमान सुवर का गोस्त पकाते हैं। अस्पताल में सर्वजात एक पात्र में शराब पीता है। नमक शक्कर में हड्डी खाते हैं। चरबी का दीपदान ठाकुर के पास होता है। छापा के ग्रंथ की पूजा होती है। अब कौन धर्म हिंदू का बाकी रहा। जो कुछ झूठा सच्चा दर्शाता है, थोडे काल में सब जाता रहेगा। आलमगीर औरंगजेब बादशाह दिल्ली का सब देवतों को फोड डाला। मालवा मारवाड में हजारों को मुसलमान कर डाला। पीछे वो हिंदू हो गये। कोई देव ने उस को दंड नहीं दिया। अंग्रेज

सरकार जो मेला यात्रा चाहता है, बंद कर देता है। कोई देव दंड नहीं देता। मुसलमानों के मत में बाबा आदम को सात हजार बरस हुवा। मोहंमद को तेरासो नव बरस हुवा। इस के पहिले कुछ नहीं था। अंग्रेज के मत में ईसा को अठारा सो एक्यानवे बरस हुवा। पहिले कुछ नहीं था। हिंदू के यहां त्रेतालिस लाख वीस हजार बरस का चारों युग होता है। एमे हजार चौयुगी जब व्यतीत होता है, तब ब्रह्म का एक दिन होता है। ये सब व्यास की बनावट है। सात हजार बरस के पहिले का कुछ अनुभव जगत् में नहीं है। पुराण का मत जगत् के प्रमाण में एसा है कि, साठ पल को एक घडी होता है। और साठ घडी का एक दिन होता है, और तीस वार को मास कहते हैं। बारा मास को साल कहते हैं। इस साल के प्रमाण से चारलाख बत्तीस हजार बरस का कलियुग, उस का दूना आठलाख चोंसठ हजार बरस का द्वापर, उस का त्रिगुण बारा लाख छाणवे हजार बरस का त्रेता, उस का चौगुण सत्रा लाख अठाईस हजार बरस का सत्ययुग, ये सब चारों युग त्रेतालीस लाख वीस हजार बरस हुवा। इस को एक कल्प कहते हैं। ऐसे नव सो चवऱ्यानवे कल्प का एक दिन ब्रह्मा का होता है, उस में चौदह मन्वंतर होते हैं। चार अरब उन्तीस करोड चालीस लाख अस्सी हजार बरस का दिन होता है। आठ अरब अठ्ठावन कडोर एक्यासी ला-

ख साठ हजार बरस का दिन रात हुवा। दो खरब सत्तावन अरब चौसठ करोड अडतालीस लाख बरस का मास हुवा, तेईस खरब एक्यानवे अरब ब्यहत्तर करोड छहत्तर लाख बरस का साल होता है। इस हिसाब से ब्रह्मा की आयुष्य सो बरस की है। उस का प्रमाण तीस नील एक्यानवे खरब ब्यहत्तर अरब छहत्तर करोड बरस ब्रह्मा जीता है। पीछे मर जाता है। इसी प्रमाण शून्य रहता है। पीछे दूसरा ब्रह्मा पैदा होता है वो सारा जगत बनाता है। और नित्य प्रलय जब ब्रह्मा सोता है तब होती है। प्रात जब जागता है, दूसरा बनाता है। ब्रह्मा की आयुष्य पचास बरस की हो चुकी। एक्यावन बरस में पहिला दिन है, तेरा घडी दिन चढा उस में छः मन्वंतर हो गये। सातवां व्यतीत होता है। तीस करोड सरसठ लाख बीस हजार बरस का एक मन्वंतर होता है। वैवस्वत नाम मन्वंतर सातवां व्यतीत होता है।सब मन्वंतर के नाम ये हैं— १ स्वायंभुव, २ स्वारोचिष, ३ उत्तम, ४ तामस, ५ रैवत, ६ चाक्षुष, ७ वैवस्वत, ८ सावर्णि, ९ दक्षसावर्णि, १० ब्रह्मसावर्णि, ११ धर्मसावर्णि, १२ रुद्रसावर्णि, १३ देवसावर्णि, १४ इंद्रसावर्णि, साल हालतक बारा करोड पांच लाख बत्तीस हजार नव सो नवासी बरस विवस्वत मन्वंतर में हुवा। अठारह करोड एकसठ लाख सत्यासी हजार ग्यारह बरस बाकी हैं। और नित्य प्रलय में एक अरब छानवे करोड आठ लाख बावन हजार नव सो नवासी

बरस हुवा। बाकी जो नित्य प्रलय में हैं, उस का प्रमाण दो अरब तेतीस करोड बत्तीस लाख सताईस हजार ग्यारह बरस रहा। एक मन्वंतर एकाहत्तर चौयुगी का होता है। उस में एक इंद्र राज्य करके नष्ट हो जाता है। भविष्य में राजा नल इंद्र होंगे, और हनूमान जी ब्रह्मा होवेंगे। विष्णु महादेव के दिन का प्रमाण इस से बहुत जादा है, और ब्रह्म का दिन इस से भी जादा है। ये पुराणों का मत है। विचार करके देखो तौ कुछ ज्ञान ध्यान में नहीं आता, जो पाप परमेश्वर के आज्ञा से नहीं होता, वो करनेवाला झाड मूल से नष्ट हो जाना चाहिये। सो कुछ नहीं होता, धर्मात्मा के अवलाद नहीं होती। कसाई के आठ आठ लडका होता है। जो पुण्यकर्ता है, सन्निपात में बहुत काल दुःखी रहता है। जो पाप करता है, सो बरस जीता रहकर हंसते बोलते शरीर छोड देता है। गौ विष्ठा खाती है। चमार भंगी भागवत पढते हैं। धर्मशास्त्र शरा आईन कानून सब का अर्थ एक है। आजतक किसी को ब्रह्म मिला नहीं। कदाचित् मिलता तो नाश न होता। और चोर के मुकाम का पता मिल जाता है। ब्रह्म का स्थान क्यों प्रगट नहीं होता। ये सब भ्रम हैं, जीवत्पर्यंत आत्मा शरीर का संबंध है। मरने उपरांत दोनों मिथ्या हैं। जैसे चिराग और उस की प्रकाश शुभाशुभ दोनों कर्म निरर्थक हैं। विचार करो, चालीस कुंडलियां ब्रह्म मिथ्या की देखो।

॥ कुंडलियां—मिथ्या ब्रह्म

निराकार निर्गुण अलख व्यापक ज्ञानस्वरूप। रजगुण तमगुण सत्वगुण अद्भुत अगम अनूप ॥ अद्भुत अगम अनूप निरंतर निशि दिन ध्याऊं। कारण कारज कर्म तिहूं को माथ नमाऊं॥ कहे दास अभिलाख आप को कर्ता मानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ १ ॥ नभ भीतर वायु रहे ता में पावक होय। ता ते जल पृथ्वी भयो पांच तत्त्व इक होय॥ पांच तत्त्व इक होय ताहे की देह बतावें। पांचो पांच सुभाव शुभाशुभ कर्म करावें॥ कहे दास अभिलाख पांच में पांच समानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ २ ॥ माया के स्पर्श से उपजे पंच ज्ञान। त्वचा घ्राण श्रवण गिरा चक्षू पंच प्रमान॥ चक्षू पंच प्रमान पंच को पंच बतावे। हाथ पांव मुख लिंग गुदा ये करम कहावे ॥ कहे दास अभिलाख चार अंतश पहचानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३ ॥ शब्द स्पर्श रूप से उपजे रस और गंध। काम क्रोध मद लोभ को मोह बतावत अंध॥ मोह बतावत अंध बूझ सपन्यो नहीं आवे। निद्रा मैथुन क्षुधा चराचर सब को भावे॥ कहे दास अभिलाख प्राण पांचों को जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥४॥ कारण कारज कर्म को कर्ता कहिये मूल। मिट्टी घडा कुम्हार में चाक भयो अस्थूल ॥ चाक भयो अस्थूल सदा चक्कर में रैहै। आगे करे विचार कर्म को कर्ता

अभिलाख आप से जुदा न जानो । निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥५॥ एक तत्त्व के पांच गुण पांचो पांच पचीस । जीव अविनाशी एक है ताहे कहत जगदीश । ताहे कहत जगदीश तिस के संग विराजे घटे बढे नहीं मरे सदां आनंद में राजे ॥ कहे दास अभिलाख उसी को भरम समानो॥निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ६ ॥ राजा से प्रजा भये प्रजा से भय राज । बाल तरुण वृद्धपन भये तीन ही काज ॥ भये तीन ही काज रोग सब एकी देखा । निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भय एकी लेखा ॥ कहे दास अभिलाख ज्ञान विन कर्म कमानो । निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ७ ॥ बीजरूप भगवान ने लिंगरूप धर मीन । शंखरूप भग मर्दकर श्वासा प्रगट कीन ॥ श्वासा प्रगट कीन चार अंतश् अनुमानो । साम यजुर ऋगवेद अथर्वण चार प्रधानो ॥ कहे दास अभिलाख प्रथम अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥८॥ कच्छरूप भगवान ने धऱ्यो पिंड का रूप । चौदा इंद्री प्रकट भई ताको रतन अनूप ॥ ता को रतन अनूप उदर को सागर कहहीं । इंद्री रतन बनाय शुभाशुभ कारज करहीं । कहे दास अभिलाख द्वितीय अवतार बखानो । निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ९ ॥ देह रूप भगवान ने फाड गर्भ को देत । हिरणाक्ष ते कहत है मलमूत्र के खेत ॥ मल मूत्र के खेत देह को बाहर लावे । ताहे कहत

वाराह रूप भगवत को गावे ॥ कहे दास अभिलाख तृतीय अवतार बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ १० ॥ शिशू रूप भगवान ने धर्‍यो सिंहनर रूप। जंघ फोड प्रगट भयो सुंदर परम अनूप॥ सुंदर परम अनूप मात हरिणाकुश जाने। चढ छाती पर दूध पिये शंका नहीं माने॥ कहे दास अभिलाख जीव प्रहलाद बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ११ ॥ बालक रूपी ब्रह्म को वामन रूप बखान। अपने मीठे बचन से छलत बडे बलवान ॥ छलत बडे बलवान वोही राजा बल गावें। हर पैठो पाताल बुद्ध बालक लै जावें ॥ कहे दास अभिलाख पंचम अवतार बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ १२ ॥ ब्रह्मचर्य की देह को परशुराम तू जान। भोग रूप संसार को सहसबाहु पहिचान॥ सहसबाहु पहिचान हजारो कर्म छुडावे। माता का संग त्याग पिता संग विद्या पावे॥ कहे दास अभिलाख छठा अवतार बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ १३ ॥ गृहस्थावस्था देह को ताय कहत हैं राम। दश इंद्री के भोग से दशरथसुत भये नाम ॥ दशरथसुत भये नाम बाल रावण को मार्‍यो। मद और क्रोध को मार सिया संग वन पग धार्‍यो॥ कहे दास अभिलाख अवध को अवध बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥१४॥ वानप्रस्थ शरीर को कहे कृष्ण अवतार। दंतवक्त्र शिशु-

पाल को छिन में डाऱ्यो मार। छिन में डाऱ्यो मार काम अरु क्रोध नसावे। मोह रूप है कंस ताहे को मार गिरावे॥ कहे दास अभिलाख भोग में जोग कमानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥१५॥ संन्यासी के रूप को कहे बुद्ध अवतार। हाथ पांव से रहित होय धऱ्यो मौन का धार॥ धऱ्यो मौन का धार जात को धरम नसायो। सबी जात एक जात भात घर घर को खायो॥ कहे दास अभिलाख नवां अवतार बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥१६॥ अंत अवस्था के मिले निष्कलंक होय जात। अकलंकि इस देह को त्याग मुक्त मिल जात॥ त्याग मुक्त मिल जात राजकलू को आयो। देह भसम हो जात ताहे प्रलय कहवायो॥ कहे दास अभिलाख दशम अवतार बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥१७॥ चार अवस्था आदि के सतयुग है प्रधान। तीन अवस्था पाद के त्रेता ताहे बखान॥ त्रेता ताय बखान द्वापर दो पद गावें। अंत अवस्था एक ताहे कलियुग कहवावें॥ कहे दास अभिलाख यही चारों युग मानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥१८॥ शैव विष्णु शाक्त तीनों मत परमान। स्वरग नरक अपवर्ग को चाहत सकल जहान॥ चाहत सकल जहान अनेकन जात बनावे। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र होय करम कमावे॥ कहे दास अभिलाख भेष सब उद्यम मानो। निर्गु

ण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ १९ ॥ चार वेद् षट शास्त्र और अठरा पुरान। पढ पढ सब पंडित भयो आयो एक न ज्ञान ॥ आयो एक न ज्ञान यज्ञ तर्पण सब करहीं। ब्रह्म भोज कुलश्राद्ध गया सब कर कर मरहीं ॥ कहे दास अभिलाख देव पितर सनमानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ २० ॥ सुत दारा भाई बहिन मात पिता परवार। फूफा मामा भानजा छूटजाय ससुरार ॥ छूट जाय ससुरार गुरू को बाप बनावे। आपन पुरखा छोड और का शिष्य कहावे ॥ कहे दास अभिलाख नहीं कुछ हान गिलानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥२१॥ रामनाथ दरशन करे बद्रीनाथ को जाय। जगन्नाथ के भात को शरभंगी हो जाय॥ शरभंगी होजाय द्वारिका छाप लगावे॥ पितृकर्म से जाय यज्ञ के काम न आवे ॥ कहे दास अभिलाख धाम चारों में छानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो॥२२॥ माया मथुरा कांची अवध द्वारिका जाय। काशी करवट ले मरें गड उज्जैन नहाय ॥ गड उज्जैन नहाय पुरी सातों में वासे। छोड्यो राज समाज धर्म कुल के सब नासे ॥ कहे दास अभिलाख अंत में वही ठिकानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥२३॥ नाथ गुसांईं सेवडा योगी जंगम दास। वैरागी रागी जती वन वन फिरें उदास ॥ वन वन फिरे उदास रात दिन ध्यान लगावें। सारी ऊमर गवांय अंत

योंहीं मर जावें ॥ कहे दास अभिलाख जगत सब भरम भुलानो । निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ २४ ॥ भगवां वस्त्र रंग के कंठी तिलक लगाय । भसम जटा कुंडल कडा जरे द्वारिका जाय॥ जरे द्वारिका जाय जनेऊ फूंक के तापे। घर घर मागे भीक एक छिन चित्त न धापे ॥ कहे दास अभिलाख जात को धर्म नसानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ २५ ॥ भूत भवानी देवता भैरों पवन कुमार। काली दुर्गा यक्षिणी कर्णपिशाची चार ॥ कर्णपिशाची चार मौक्कल जिन्न बुलावें । अंतकाल में जाय मौत कुत्ते की पावें ॥ कहे दास आभिलाख जगत को ठगत सयानो॥ निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ २६॥ ज्योतिष विद्या देखिके कहे गुप्त का हाल। लगन मुहूरत वार तिथ योग नक्षत्र संभाल ॥ योग नक्षत्र संभाल ग्रहों को भाव बतावें। सुता रांड हो जाय ज्योतिषी नाम धरावें॥ कहे दास अभिलाख करम गत कोई न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ २७॥ कल्प कीमियां धातु रस गुटका कज्जल वंग। बुटी जडी जहान की राखत अपने संग ॥ राखत अपने संग धातुको नित्य जलावें । घर घर मांगे भीक अंत चोरी कर जावें॥ कहे दास अभिलाख धातु को भेद न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ २८ ॥ इडा पिंगला सुषुमना नाडी जानो तीन। पांच तत्वको साधकर काम करत परवीन ॥

काम करत परवीन चंद्र को अचर बतावें। सूरज को चर कहें ज्ञान विन नाक दबावें॥ कहे दास अभिलाख मूख होवंत बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ २९॥ आसा सारंग गूजरी मारू फाग मलार। कल्याणी अरु भैरवी दीपक राग केदार॥ दीपक राग केदार नाद को आद बतावें। कसबी और कव्वाल भांड घर घर सब गावें॥ कहे दास अभिलाख आद सनकाद न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३०॥ नाडी देखें हात की कहें अंग के रोग। गर्मी सर्दी वात पित्त ता ते भयो वियोग॥ ताते भयो वियोग अनेकन दवा बतावें। काढा गोली तिला तेल मात्रा बनावें॥ कहे दास अभिलाख मौत की दवा न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३१॥ मुसलमान रोजा रहें सुन्नत करें नमाज। गौ मार कलमा पढें बुत सें करे लिहाज॥ बुत से करें लिहाज ताहे को काफर गावें। हसन हुसेन का रूप साल में सदा बनावें॥ कहे दास अभिलाख गौर का तौर न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३२॥ ईशाई सब कहत हैं ईसा बडे प्रधान। बाप नहीं फांसी मिलि गाय सूर को खान॥ गाय सूरको खान हगें फिर गांड न धोवें। सबी जात इक जात सात कुत्ते के सोवें॥ कहे दास अभिलाख धरम को नाम न जानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३३॥ जन्म भयो संसारमें

प्रगट्यो पुत्र सुजान।नाचरंग आनंद सब दान देत यजमान॥ दान देत यजमान चहुं दिश मंगल छावे। राजा रंक अमीर अंत की खबर न पावे॥ कहे दास अभिलाख मृत्यु के हाथ विकानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ३४ ॥ रामराम के कहे ते मरामरा होय जाय। मरामरा के कहे ते राम राम होय जाय॥ राम राम होय जाय उलट के अर्थ लगावें। घामड सब संसार ताहे जप जप मर जावें॥ कहे दास अभिलाख राम को मरा बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ३५ ॥ वेद कहे सर्वज्ञ है भक्त कहे वो एक। दर्शन होय करतार को जो हठ राखे टेक॥ जो हठ राखे टेक धना को गाय चरावे। ब्रह्मा विष्णु महेश ताहे को अंत न पावे॥ कहे दास अभिलाख झूंठ दोनों को मानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥३६॥ जती सेवडा धोंडिया मुह बांधें दिन रात। नागादेव बनायि के जूंठा घर घर खात॥ जूंठा घर घर खात कभी अस्नान न करहीं। पालें चीलर जुवां काम भंगी का करहीं॥ कहे दास अभिलाख जती को जाल बखानो। निर्गुण अलख अनाद ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ३७॥ मत अघोर सब से अधिक सर्व ऊपर है मान। मल मूत्र भोजन करें मुर्दा जिन्दा खान॥मुर्दा जिन्दा खान ग्यान सपन्यों नाहिं आवे। निशिदिन पियें शराब अडंगा घर घर लावे॥ कहे दास अभिलाख नरक का कीडा जानो॥ निर्गुण अलख

अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ३८॥ नाक दबावें ज्ञान बिन श्वासा लेय चढाय। धोती पोती गजकर्ण नौली करम कराय ॥ नौली कर्म कराय पांच मुद्रा को देखें। आसन पद्म लगाय छैउ चक्कर को सोधें॥ कहे दास अभिलाख समाधी समचित जानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ३९ ॥ ज्ञान योग वैराग्य सब भक्ती प्रेम विचार। दया धर्म जप तप क्रिया पूजा बरत अचार ॥ पूजा बरत अचार करें सब ध्यान लगावें। निद्रा मैथुन क्षुधा हर्ष भय नित्य सतावें॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या जानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ४० ॥ कुंडलियां चालीस कह्यो मिथ्या ब्रह्म बनाय। नास्तीक मत जानकर मत कोई रिसियाय॥ मत कोई रिसियाय कथा को अर्थ कहानी। गावें सुनें गवांर ताहे को सच्चा जानी॥ कहे दास अभिलाख झूंठ सब जगत बखानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो॥ ४१ ॥ जगत अनाद् युगाद् है कर्ता है संयोग। ब्रह्म निरंजन शून्य है निद्रा मैथुन भोग॥ निद्रा मैथुन भोग सदा जन्में और मरे। पूरी नहीं अभिलाख श्वान होय घर घर फिरे॥ कहे दास अभिलाख करम सब मिथ्या मानो। निर्गुण अलख अनाद् ब्रह्म को मिथ्या जानो ॥ ४२ ॥

मैं ने हाथ जोडकर कहा कि आप का ज्ञान नास्तीक मत है। और मैं कबूल करूंगा, परंतु जब सब शंका बोध

हो जावे। पहिले ये चालीस प्रश्न का उत्तर होना चाहिये। इस का विस्तार ग्रंथ के साथ है देखो ।

॥ प्रश्न चालीस॥

१ कर्ता जगत् का कोई है या नहीं अगर है तो कहां है और क्या नाम और क्या स्वरूप प्रत्यक्ष होना चाहिये।

२ जगत् संसार दुनिया ब्रह्मांड किस को कहते हैं इस की हद्द है या नहीं किस ने बनाया और कब बनाया क्यों कर बनाया ।

३ आकाश कुछ पदार्थ है कहां तक है इस की हद्दपर क्या है।

४ वायु क्या पदार्थ है कहां से आती है कहां जाती है सदा कहां रहती है ।

५ अग्नि किस से पैदा हुई ऐसा तेज उस में क्यों कर हुआ पत्थर लकडी में क्यों हुई।

६ जल क्यों कर बना पृथ्वी के ऊपर है या नीचे सदा कम होता है या जादा बर्षा समुद्र नदी कुवा में है।

७ पृथिवी किस ने बनायी हद्द है या नहीं किस के ऊपर है स्थिर है या चर है ।

८ सूरज क्या चीज है चर है या स्थिर जड है या चेतन रात को क्यों नहीं दरसाता ।

९ चंद्रमा क्या तत्व है कमासिवाय क्यों होता है चर है या स्थिर जड है या चेतन।

१० तारा मंडल छोटे बडे क्या है कितने हैं चर हैं या स्थिर ध्रुव क्यों नहीं चलता।

११ बिजली में चमक गर्ज तडप जलदी क्या है जमीन पर क्या गिरता है मुकाम कहां है।

१२ धनुष पांच रंग का वर्षा ऋतु में सदा भी निकलता है क्या है संपूरण भेद का विस्तार होना चाहिये।

१३ ग्रहण सूरज चंद्र में क्या है जोतिष में क्यों प्रकट हो जाता है। अमावस पूनम को क्यों होता है।

१४ मंडल जो सूरज चंद्र में होता है क्या है सदा क्यों नहीं दरसाता।

१५ आकाश में मार्ग जो दरसाता है वो क्या है बहुत करिके दो रास्ता दरसाते हैं।

१६ प्रातःसंध्या को लाल बादल या अरुण सूरज क्यों दरसाता है संपूरण व्यवस्था होना चाहिये।

१७ मेघ क्या काम करते हैं उनकी उत्पत्ति स्थिति नाश क्यों कर होती है।

१८ ओस रात को कहां से पडती है ठंड में जादा पडती है।

१९ कोहिरा प्रात को ठंड में क्यों पडता है वर्षा में भी पडता है।

२० वर्षा ऋतु में अनेक जानवर पडते हैं बीरबहोटी मेंडुक मछली छोटे जानवर बहुत

२१ गार या पत्थर पडता है कहां से पडता है कौन गिराता है।
२२ तारा रात को टूटता है वो क्या है।
२३ गर्मी सर्दी बरसात होने का कारण क्या है।
२४ दिन रात क्यों होता है कौन करता है।
२५ भूकंप जो कभी कभी होता है कौन करता है।
२६ नींद क्यों आती है चेतन कहां जाता है सपन देखना किस का धर्म है।
२७ क्षुधा तृषा क्यों होती है शांति किस को होती है।
२८ मैथुन कर्म की संपूरण सामर्थ्य कहां से आती है और बीज कहां रहता है।
२९ ज्ञान बुद्धि किस को है।
३० जन्म मरण किस को होता है जीव क्या पदार्थ है।
३१ पाप पुण्य किस प्रकार से लगता है कसाई चोर डाकू विषई सदां रहते हैं।
३२ भाग अभाग क्या चीज है कर्म आधीन है या लग्न आधीन है।
३३ जादू करामत यंत्र मंत्र प्रयोग आदिक जो होते हैं सच्च हैं या झूंठ हैं।
३४ अक्षर क्या पदार्थ है किस ने बनाया किस आधार पर।
३५ गुप्त भेद नाम अर्थ आदिक प्रगट हो सक्ता है या नहीं।
३६ चौराशी लाख परमाण क्यों सिद्ध हुआ किस ग्रंथ में संपूर्ण विस्तार है।

३७ दैत्य भूत प्रेत जिन्न राक्षस चुडैल डाकिनी यक्षिणी परी पिशाच्च आदिक सच्च हैं या झूंठ हैं।

३८ हनूमान भैरों पंढरीनाथ महादेव गणेश देवी आदिक सत्य हैं कहां रहते हैं।

३९ जात का धर्म सच्च है या झूंठ ब्राह्मण चमार मे क्या फरक है।

४० शरीर और जीव और हम तीनों का प्रत्यक्ष ज्ञान होना चाहिये।

चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण जो व्यास भगवान ने कहा उस का संपूर्ण पढनेवाला और समझनेवाला अब कोई नहीं है। संस्कृत विद्या देववाणी है। हिंदुस्थान तुर्कस्थान लंडन तीनों मुल्क में ये बोली नहीं है। जगन्नाथ धाम में जात का धर्म क्यों छोडते हैं। कामरू कमिक्षा में देवी तीन रोज रजस्वला रहती है। हिंगलाज के ब्रह्मयोनी से पानी निकलता है। ज्वालामुखी में लौ निकलती है। आलमगीर बादशाह ने उसपर लोह का तवा जडाया था फोडकर निकलती रही। भर्तरि गोपीचंद और बुखारा का बादशाह और अनेकन राजा महाराजा धनपरवार का सुख छोडकर जंगल में चले गये। कदाचित् उन सब को कुछ अनुभव प्राप्त न होता तो घर को पलट आते। रामचंद्र ने समुद्र में सेतु बांधा। श्रीकृष्ण ने गोवर्धन पर्वत को उठाया। हिंदुस्थान में इस प्रकार से भ्रम हुवा। दूसरे द्वीप में किस प्रकार

से भ्रम हुवा वो भी कहना चाहिये। ज्योतिष विद्यावाले सब का भविष्य कह देते हैं। बंगाले में साप का मंत्र ऐसा प्रसिद्ध है कि बहुत दिन पीछे मुर्दा जिलाते हैं। जादू से आदमी जानवर हो जाता है। चौराशी लाख सृष्टि का मैं ही ऐसा कहना मूरखपना है। जिस के एक नाम है वो झूंठा नहीं हो सकता। ब्रह्म के असंख्य नाम हैं वो क्यों कर झूंठा होगा। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद मिथ्याब्रह्मविचार नामनिरूपण आठवां तरंग संपूर्ण॥८॥

नौवां तरंग प्रारंभ।

॥ पहिली लहरी ॥

नेत्र ब्रह्म है

अथ श्रीव्यासदेवाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म नेत्र में रहता है। पूतली छोटी मूर्ति को कहते हैं।मूर्ति सब शरीर की नकल है और दृष्टि से पुरुष प्रकृति उत्पन्न हुई। पुरुष प्रकृति से सृष्टि उत्पन्न हुई। ऐसा सिद्धांत अनेक महात्मा का है। वर्तमान में बहुत महात्मा नेत्र से जोत का दर्शन करते हैं। उस को अपना इष्टदेव जानते हैं। दर्शन करने की क्रिया गुरु उपदेश प्रमाण बहुत हैं। चारों द्वारा जो ब्रह्मांड में हैं उन को इस रीति से बंद करे, दोनों अंगुष्ठ दोनों कान में दोनों तर्जनी दोनों नेत्र में दोनों मध्यमा दोनों नाक में

दोनों अनामिका ऊपर के ओंठ पर दोनों कनिष्ठिका दोनों नीचे के ओंठ पर ऐसा दबावे कि कान से शब्द सुने नहीं। आंख से रूप देखे नहीं नाक मुह से श्वासा निकले नहीं। पहिले श्वासा पूरक कर लेवे,उस समय पांच प्रकारका रंग झिलमिल देख पडता है। पीछे ज्योत दीख पडती है। वो ज्योतिस्वरूप के दर्शन समान है। इस के शिवाय जिस के नेत्र नहीं उस को किसी का दर्शन नहीं हो सकता। तीनों लोक चौदह भुवन उस को मिथ्या हैं। सर्व प्रकार का साधन जो साधक ज्ञानी करते हैं उस का फल नेत्र से प्राप्त होता है। विद्या मंत्र आदिक नेत्र के आधीन है शरीर मध्ये अनंत पदार्थ हैं। परंतु नेत्र की बराबरी कोई नहीं कर सकता। विवेक विचार प्राणायाम समाधि मानसी पूजा ध्यान लय चेतन आदिक जो ज्ञान के घर हैं वे सब नेत्र आधीन हैं। सूरदास भगवान् का दर्शन पाकर अंधे हो गये और अपने ब्रह्म को पूर्ण ब्रह्म में मिला दिया। कौवा पंछी एकरंग होता है। विष्ठा व्यंजन को एक जानता है। अद्वैत मत है मौत से नहीं मरता, इस कारण उस के एक आंख तथा एक पूतली है। और सर्व जीवों को दो पूतली हैं। जिस के एक नेत्र है वो दोन नेत्रवाले के बराबर देख सकता है। यह आश्चर्य की बात है। ज्योतिःस्वरूप साकार प्रत्यक्ष नेत्र में है, जो चैतन्य करके ढूंडेगा सो पावेगा। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि नेत्र ज्ञानइंद्रिय है ।रूप विषय से पैदा हुई। विषय

तत्व से प्रकट है। पंचतत्त्व की शरीर पहिले होना चाहिये पीछे नेत्र हो सकता है। जिस के शरीर नहीं उस के नेत्र नहीं। जो जीव अंधा होता है। उस में भी ब्रह्म का अनुभव होता है। जड जीव में नेत्र नहीं है। उस में भी परमेश्वर का अंश है। शरीरमध्ये नेत्र प्रधान जरूर है। परंतु ब्रह्म उस को कहना उचित नहीं होता। कदाचित् नेत्र में ब्रह्म होता तो चारों धाम सातों पुरी और तीर्थ गया में कोई नहीं जाता। जंगल पहाड में कंद मूल फल फूल खाकर कोई भजन न करता। चौराशी प्रकार की तपस्या हठयोग कोई न करता। नेत्र ज्ञानइंद्रिय है। उस में ब्रह्म देखना लडकों को समझाना है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें पहिली लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ दूसरी लहरी ॥

मन ब्रह्म है।

अथ श्रीचंद्राय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि अहं ब्रह्म है। अहं का रूप मन है। सर्व शरीर का धनी है। जैसा वो चाहता है वैसा शरीर करता है। यावत् व्यवहार शरीर का मन के आधीन हैं। और मन चालीस पदार्थ से संयुक्त होना तथा चालिस सेर और आठ पंसेरी का मन होता है। पांच तत्त्व पांच स्वभाव पांच प्राण पांच वायु अंतश्इंद्रि-

कर्मइंद्रिय

पसेरी पांच सेर को कहते हैं। जैसे न

खता है। ये दृष्टांत एकदेशी नहीं है सर्वदेशी है। और मन श-
रीर में राजासमान है। उस के दो स्त्रियें हैं। औलाद बहुत है।
उस का यंत्र मानसी पूजन की लहरी में मौजूद है देखो।
बहुत आचार्यों का मत ऐसा है कि मनरूपी ब्रह्म को भ्र-
मरूपी निद्रा होने से जगत् भासता है जब भ्रमरूपी निद्रा
जाती रही तब स्वप्नरूपी जगत् अदृष्ट हो जावे। "मन के हारे
हार है, मन के जीते जीत। परब्रह्म को पाहिये, मनही की
परतीत॥" सर्व व्यवहार पाप पुण्य का मन के आधीन है।
कदाचित् मन शुद्ध हो जावे तो शरीर शुद्ध हो जावे। जो
मन अशुद्ध रहेगा तो शरीर भी अशुद्ध रहेगी। शरीर जड है
उस को मान नहीं है। मान अपमान मन को है। सतसंग
आदिक से जो मन स्थिर हो जाता है वो जीवन्मुक्त हो जा-
ता है। ज्ञान ध्यान पूजा पाठ भक्ति प्रेम सब मन के आधीन
हैं। स्वप्न में स्त्री बनाकर भोग करता है। क्षणमात्र में चौदह भु-
वन बनाता है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि अंतःकरण में पांच
इंद्रिय हैं। उस में एक मन है। चित्त बुद्धि अहंकार मनसमान
हैं। स्वप्न में जो रचना होती है वो जाग्रत का अधिष्ठान है।
सुषुप्ति में पांचों अंतःकरण नाश हो जाते हैं। पंच ज्ञानइंद्रिय
मारग जो जीव को ज्ञान रहता है वो ही स्वप्न में भासता

है। अच्छे अच्छे ज्ञानी मन को मारते हैं। दुःखसुख का मूल मन है। मन की औलाद जो प्रवृत्ति से उत्पन्न हुई पापरूप दुःखदाई है। ब्रह्म की औलाद पापी नहीं होना चाहिये। ब्रह्म के शरीर नहीं है तो दो स्त्री होना असंभव है। मन शुभ अशुभ दोनों में रहता है। ब्रह्म विषय नहीं करता और अद्वैत है। मन अनंत है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंग में दूसरी लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ तीसरी लहरी ॥

लिंग भग ब्रह्म है।

अथ श्रीरुद्राय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि लिंग ब्रह्म अहं ब्रह्म है। चौराशी लाख जीव लिंग से उत्पन्न होते हैं और अनाद से लिंग भग का पूजा प्रधान है। उस को संस्कृत में शिवशक्ति कहते हैं। लिंगपुराण जो व्यास ने बनाया वो देखो। शिव भी लिंग है। लिंग की महिमा ब्रह्मा ने नहीं पाया। कोई पुरुषलिंग है कोई स्त्रीलिंग है। सारा जगत् लिंग दर्शाता है। गुजराथ कांठियावाड में संन्यासीपरमहंस का लिंग अबतक पूजा जाता है। लिंग की पूजा चौवीस अवतार ने किया। फिर उस को ब्रह्म होने में क्या संशय? राम कृष्ण परशुराम जिस की पूजा करे उस को ब्रह्म नहीं कहना मूरख का काम है। लिंग ब्रह्म भग माया उस पर वो मोहित रहता है। जब दोनों का संयोग हुआ सृष्टि उत्पन्न

हुई । मैं ने हाथ जोडकर कहा कि लिंग शब्द स्वतः नहीं है। पहिले शरीर का अनुमान होगा तब लिंग का अनुमान होगा। जब शरीर नहीं तब लिंग नहीं। वेदशास्त्र में जो लिंग प्रधान है वो लिंग शिव का है। शिव भगवान् सामर्थ्यवान् थे। उन के लिंग की पूजा जगत् में प्रसिद्ध है। और लिंग-पुराण में शिव के लिंग की महिमा व्यास ने गाई। हिजडा के लिंग नहीं होता। गुजरात में महात्मा का लिंग पूजा जाता है, सब का नहीं। बडे बडे राजा महाराजा संसार छोडकर वन (आरण्य) में कंद मूल खाकर भजन करते हैं। सारी ऊमर भूखा में रहते हैं। लिंग को गरम राख से नाशकर देते हैं। कोई लोह का कडा उस में छिद्र कर पहिनाता है। और हजारों लिंग भग के औलाद नहीं है, इस का क्या कारण? शरीर में पांच कर्मइंद्रियें हैं उस में लिंग भी है। और सृष्टि की उत्पत्ति लिंग भग से नहीं है, बीज से है। जिस की धातु नष्ट हो जाती है उस के औलाद नहीं होती। लिंग को ब्रह्म कहना मूर्ख का काम है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें तीसरी लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ चौथी लहरी ॥

अंड ब्रह्म है।

अथ श्रीशंकराय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया।

और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि ब्रह्म अंड है। रति माया है।संस्कृत विद्या में उस को विष्णु लक्ष्मी कहते हैं। जिस महात्मा ने लिंग ब्रह्म कहा वो चूक है। देखो जानवर का अंड संसारी लोग निकाल डालते हैं।वो जानवर नपुंसक हो जाता है। उस का लिंग बना रहता है, परंतु कुछ काम नहीं आता। और जिस स्त्री का ऋतु बंद हो जाता है वो वांझ हो जाती है।भग में कुछ सामर्थ्य नहीं है। इस जगत को ब्रह्मांड कहते हैं अथवा ब्रह्म का अंड है। उस प्रमाण मूर्ति शालिग्राम की बनाया,विष्णु लक्ष्मी देवता नाम प्रगट किया। शरीर में थोडी चोट अंडपर लगे प्राण निकल जाता है।पुराण में ऐसा लिखा है कि गोलाकार शक्ति पर शेषजी है।उस पर जगत है। उस का अर्थ ऐसा है कि अंड के ऊपर लिंग उस पर शरीर है। मेरे ज्ञान में अंड ब्रह्म जरूर है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि शरीर में अनेक अंग हैं उस में अंड भी है। जबतक शरीर नहीं तबतक अंड का अनुभव नहीं हो सकता। जानवर का अंड आदमी खाता है। जनाना बाइला आदमी अंड और लिंग सब कटवाता है। मरता नहीं, जीता रहता है। अंड सब के पास है। ब्रह्म सब के पास नहीं है। अंड के रूप है, ब्रह्म अरूप है।अंड शरीर के अ-धीन है, ब्रह्म स्वतः है। ब्रह्मांड का अर्थ वो अंड है। जिस में पंछी पशु बच्चा देते हैं। आजतक कोई अधिकारी ने लिंग त-था अंड की पूजा नहीं किया। और भजन भी अंड का को-

ई नहीं गाता। ऐसा कैसा ब्रह्म है? जिस को लोग धोती के नीचे छिपाते हैं। प्रगट हो जाने में शरमाते हैं। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें चौथी लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण सम्पूर्ण।

॥ पांचवीं लहरी ॥

मैथुन ब्रह्म है।

अथ श्रीहरिहराय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि मैथुन ब्रह्म है। आद में ब्रह्म निराकार अपनी इच्छा से एक स्त्री बनाया और अपना रूप पुरुष बनाकर उस के संग भोग किया। जब मैथुन का स्वाद पाया तब उस स्त्री को चौराशी लाख रूप बनाया। और आप भी उस के समान पुरुष बना मैथुन किया। वो औलाद चौराशी लाख जगत में है। और संपूर्ण सृष्टी मैथुन से उत्पन्न हुई। और अब भी सब जगत् मैथुन से पैदा होता है, सृष्टि के शिवाय और जो पदार्थ जगत् में है सब सिद्ध महात्माओं ने बनाया। जैसे वर्तमान में रेल तार आगपेटी अंजन कलबाजा आदिक अनेक प्रगट हुए हैं। वेद में ऐसा प्रमाण है कि ये जगत् मैथुन सृष्टि है। और जो सृष्टि का कर्ता होगा वो ब्रह्म होगा। यह सिद्धांत अचल है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि अब वो ब्रह्म कहां है। और पांच तत्व को मैथुन सृष्टि कहना

अज्ञान का काम है।सूरज चंद्रमा तारा बिजली बादल आदिक किस विद्वान् ने बनाया।ब्रह्म का जन्म मरण नहीं होता।सृष्टि उस की औलाद होकर क्यों मर जाती है। बाप की संपूर्ण प्रकृति औलाद में होती है। चोराशी लाख ब्रह्मपुत्र हैं तो नरक में कौन जाता है। ऊष्मज योनी जो इक्कीस लाख प्रसिद्ध हैं मैथुन सृष्टि नहीं है।जैसे गूलर फल का कीडा और साधु संत महात्मा मैथुन वृत्ति को त्याग देते हैं। शास्त्र में मैथुन कर्म राक्षसी कर्म है।यतिकर्म से वैकुंठ मिलता है।मैथुन करिके अच्छे विचारवान् स्नान कर डालते हैं।मैथुन ब्रह्म कहना गू खाना बराबर है।यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें पांचवीं लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ छठी लहरी ॥

बीज ब्रह्म है।

अथ श्रीपार्वतीपतये नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि बीज ब्रह्म है। शरीर झाड है।बीजरूपी ब्रह्म जब एक से अनेक होता है जगत हो जाता है। जब अनेक से एक हो जाता है तब बीज हो जाता है।और जो जो गुण ब्रह्म में है वही गुण बीज में संपूर्ण दरसाते हैं।देखो

सब में है किसी में नहीं है १ । दूसरे सब से बडा और सब से छोटा २ । तीसरे अवस्था और प्रकृति नहीं ३ । चौथे अनंत नाम और अनंत गुण ४ । पांचवें इच्छारूपी और दूसरे की इच्छा से प्रगट होता है ५ । छठवें निराकार व निष्काम है ६ । सातवें घटघटव्यापक ७ । आठवें आनंदस्वरूप ८ । ये आठ गुण ब्रह्म और बीज दोनों में समान हैं । और बीज शब्द को उलटा करिके देखो तो जीव होता है । और जीवआत्मा को परमात्मा कहते हैं । वेद में ब्रह्म बीजरूपी लिखा है । और सृष्टि का कर्ता बीज दर्शाता है । मैं ने हाथ जोडकर कहा कि एक बीज में एक झाड होता है। एक झाड में करोडो बीज होता है। और साल दरसाल होता है। इस सिद्धांत में झाड बीज से बडा हुआ। अंत दोनों का कोई नहीं कह सकता। जो बीज उत्पन्न होता है उस का नाश हो जाता है। जगत् की उत्पन्न होने से ब्रह्म का नाश नहीं होता। और बीजरूपी ब्रह्म का पूजा भजन ध्यान किसी गुरू ने उपदेश नहीं किया। और कोई अधिकारी पूजता हुआ नहीं दर्शाया । और किसी को आजतक कुछ फल प्राप्त नहीं हुआ। प्रत्यक्ष उस का स्वरूप मल मूत्र समान है। स्वप्नअवस्था में कदाचित् गिर जाता है तो जिज्ञासु उसी समय स्नान कर डालते हैं। तुम को कुछ अनुभव हुआ हो तो उपदेश कीजिये मैं साधन करूंगा।

प्रत्यक्ष अनुभव होना चाहिये। बीज को ब्रह्म कहना अनर्थ है। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें छठी लहरी अहंब्रह्मविचार नामानिरूपणं संपूर्ण ।

॥ सातवीं लहरी ॥

विषयानंद ब्रह्म है।

अथ श्रीमहादेवाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि विषयानंद ब्रह्म का नाम है। जो विषय के आनंद को भोगता है वो ब्रह्म है। जो साधन करिके उस आनंद का अनुभव लेवेगा ब्रह्मानंद को पावेगा। इस सिद्धांत के अनुभव देखने में पच्चीस रुपैय्या खर्च होवे तो प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होवे। मैं ने उसी वक्त पच्चीस रुपैय्या महात्मा गुरु के हाथ पर रख दिया। तब महात्मा गुरु बोले कि आज शामतक व्रत निर्जल रहना चिराग जलने पीछे स्नान वगैरह करके हमारे पास आना। यहां सब सामान अनुभव देखने का तैयार रहेगा। मैं महात्मा गुरु की आज्ञानुसार विधिपूर्वक व्रत रहकर शाम को पहुंचा वहां का तमाशा यह दरसाया। कुछ स्त्री कुछ पुरुष जवान रंगीले रसीले बैठे हैं। एक कलश मृत्तिका का कोठरी में मध्य सभा के बीच पांच बत्ती का रक्खा था। और होम भी

अनेक साकुल्ल का आरंभ हो चुका था। नैवेद्य के वास्ते कई शीशा बारनी कई सेर सिद्धि और मुक्ति पूडी कचोरी भजिया आदिक परातों में रक्खी थीं । और सामान पूजा का धूप कर्पूर सेंदुर आदिक रक्खा था । सब स्त्री पुरुष हवन में आहुती छोडते थे। और महात्मा गुरु एक माला मूगा की हाथ में लेकर कुछ मंत्र पढते थे और स्वाहा बोलते थे। मेरे को भी आहुती छोडने की आज्ञा हुई। सब के बराबर मैं भी छोडने लगा। दो पहर उपरांत महात्मा गुरु का मंत्र पूरा हुआ । उस समय एक जोत नई बहुत प्रकाशमान् एक आरती में प्रगट हो गई। तब महात्मा गुरु बोले कि सब कोई खडे होकर आरती पढो और सब साकुल्ल हवन में छोड दो। और वो सब नैवेद्य उस ज्योत में सन्मुख रख दिया। और सोलह बत्ती की आरती उस ज्योत को करके परिक्रमा दिया।और साष्टांग दण्डवत किया तब वो जोत अंतर्ध्यान हो गई। सब लोक बहुत आनंदित हुए। जैसे ब्रह्म का दर्शन पाया पीछे वो सब नैवेद्य एक थाली में खाने लगे।और बारनी भी एक पात्र में पान करने लगे।मुझ को भी खान पान की आज्ञा हुई।मैं ने हाथ जोडकर पूंछा कि ब्रह्म का अनुभव कब होगा तब महात्मा गुरु बोले कि एक प्रहर पीछे अनुभव होगा। मैं बैठा रहा । थोडी देर में जब नशा हुवा तब एक औरत एक मर्द आपुस में विषय करने लगे।जो सब से अच्छी थी वो महात्मा गुरु के संग में रही मैं अपना मुंह छिपाकर वहां

से भागा। अपने आसन पर आया। दिनरात भूखा रहा। पच्चीस रुपैयों का नुकसान हुआ। यह ब्रह्म का अनुभव पाया। महात्मा गुरु डर से भाग गये।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंग में सातवीं लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ आठवीं लहरी ॥

शरीर ब्रह्म है।

अथ श्रीभैरवाय नमः। मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि शरीर ब्रह्म है। जिस को शरीर का ज्ञान होगा, उस को ब्रह्म का ज्ञान होगा। सर्व संसार शरीर के संयोग से कुछ झूंठा सच्चा पदार्थ है। कदाचित् शरीर न होवे तो उस का कुछ अनुमान नहीं हो सकता। पंचतत्त्व की शरीर सब को प्रगट है। उस में जो भेद गुप्त है वो जानना बहुत कठिन है। पहिले पंचकोश का ज्ञान होना चाहिये। जैसे जल के कोई जीव पर शंख आदिक हाड होते हैं, उस प्रमाण अपनी शरीर है। उस के ऊपर पंच कोश हैं। अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनंदमय ये पांचों कोश के नाम हैं। रोम चर्म मांस रुधिर अस्थि सुद्धां जो शरीर है उस को अन्नमयकोश कहते हैं। उस के भीतर पंच प्राण व्यान समान उदान अपान ये प्राण-

मय कोश हैं। उस के आधार से पंच ज्ञानइंद्रिय द्वारा पंच विषय जानकर पंच कर्मइंद्रिय से क्रिया करना, और मन के भीतर अनेक विचार करना, उस को मनोमयकोश कहते हैं। और मनोमयरूपी ज्ञानवृत्ति से ऐ-सा विचार करना कि मैं कौन हूं, तथा मैं कर्ता हूं, उस को विज्ञानमयकोश कहते हैं। और विज्ञानमयकोश धारण होने से चारों कोश की भावना रहने की नहीं। मैं साकार कैवल्य पंच महाभूत का पूतला हूं। पंच प्राण के आधार से ज्ञान हो जाता है। ऐसी भावना होने से विस्मृति होती है, उस को आनंदमयकोश कहते हैं। ये पंच कोश शरीर में प्रधान हैं। शरीर को सब ज्ञान है। अन्नमयकोश में पंच महा-भूत का पच्चीस भाग हैं। जिस को प्रकृति कहते हैं, विस्तार उस का ग्रंथ में बहुत जगह है। प्राणमयकोश में पंच प्राण हैं। सर्व शरीर में जो वायु है उस को व्यान कहते हैं। नाभी में जो वायु है उस को समान कहते हैं। कंठ में जो वायु है उस को उदान कहते हैं। हृदय में जो वायु है उस को प्राण कहते हैं। गुदा में जो वायु है उस को अपान कहते हैं। ये पंच प्राण के आधार से श्वांसा चलता है। पंच प्राणरूपी कोथली में प्राण है, वो अन्नमयकोश के भीतर है। प्राणमय कोश के आधा-र से स्वप्न आदिक तथा कल्पित सृष्टि की रचना होती है। प्राणमय कोश के भीतर मनोमयकोश है। पंच ज्ञानइंद्रिय

से पंच विषय भोगनेवाला पंच कर्मइंद्रिय से क्रिया करने-वाला पंच अंतःकरणरूप मनोमयकोश से होता है। प्राण-मयकोश के अंतर जो वायु व्यापक है वो ही मनोमय कोश है। उसी को ब्रह्मज्ञानी ब्रह्म, आत्मज्ञानी आत्मा कह-ते हैं। जबतक शरीर है तबतक ब्रह्म माया जगत् है। शरीर का उत्पन्न होना पंच तत्व का संयोग है। ये सर्व पृथिवी जल सुद्धां सब हाली है। उस के हलने से पवन जो शरीर के बाहिर और भीतर है। परदा के ऊपर प्राणमय कोश में धक्का लगता है। उस प्राणमय कोश में जो मनोमय कोश वायु व्यापक है वो अनुभव लेवे है। वही परलो अपरलो मानते हैं। ताते सुख दुःख का अनुभव होता है। इस की रीत ऐसी है कि मनोमय को स्पर्श होनेवाली वस्तु कदाचित् कोमल और शीतल है तो परलो लागत है। और कदाचित् वो ही वस्तु कठिन गरम है तो अपरलो लागत है। परलो अपरलो सब शरीर को होता है। जीव आत्मा शरीर की शक्ति है। ऐसा मनोमय का स्वभाव है। शरीर के भीतर रक्त उस में प्राण की वस्ती है। जब अन्नमय कोश को धक्का पवन के स्पर्श से प्राणमय कोश में लगता है तब मनोमय कोश के जानिवे में आवता है। नेत्रइंद्रिय में रूप विषय का ज्ञान है। जिव्हा इंद्रिय में रस विषय का ज्ञान है। नासि-का इंद्रिय में गंध विषय का ज्ञान है। त्वचा इंद्रिय में स्पर्श-विषय का ज्ञान है। कान इंद्रिय में शब्द विषय का ज्ञान है।

पंच विषय को पंच ज्ञान इंद्रियें जानती हैं। उस पंच ज्ञानइं-द्रिय से मनोमय कोश तदाकार है। इस कारण पंचइंद्रिय का ज्ञान अंतःकरण पंचक को होता है। अंतःकरण पंचक मनोमय कोश में है। कदाचित् इस पांच ज्ञानइंद्रिय में कोई नष्ट हो जावे तौ उस विषय का ज्ञान अंतःकरण को नहीं होगा। ये सर्व व्यवहार पंचप्राण के आधार से मनोमय कोश में जो अंतःकरण है उस को होते हैं। अंतःकरण भी पंच तत्व का ज्ञान है। प्राणमयकोश के आधार से मनोमय कोश को भावना होती है, अर्थात् पंचप्राण के आधार से अंतःकरण पंचक को ज्ञान होता है कि, मैं कौन हूँ या वो हूँ उस को विज्ञानमय कोश कहते हैं। कदाचित् इन तीनों कोश विना भावना करे कि मैं शरीर ब्रह्म हूं तौ होवे नहीं। कारण सूक्ष्म वायु हिलाने विना भावना होती नहीं। प्राण-मय के आधार से मनोमय को भावना होती है। प्राणमय जड है। मनोमय चैतन्य है। विज्ञानमय अनुभव पावे है। उस अनु-भव से आनंद होता है। उस को आनंदमयकोश कहते हैं। ये पंच तत्त्व की शरीर प्राणमय। उस में पंचप्राण प्राणमय, उस में अंतःकरण पंचक मनोमय, उस में ज्ञान विज्ञान-मय, उस में आनंद आनंदमय कोश है। अन्नमय पृथिवी, प्राणमय जल, मनोमय अग्नि, विज्ञानमय वायु, आनंदमय आकाश ये पांच कोश पंच तत्त्व का आधार है। ब्रह्म कदा-चित् निराकार सिद्ध होवे तौ झूंठा जानो। और साकार

सिद्ध होवे तो शरीर जानो। पंचतत्त्व का शरीर होगा। शरीर रहित पदार्थ मिथ्या प्रसिद्ध है। जिस के शरीर नहीं वो कर्ता नहीं। शुभ अशुभ कर्म शरीर से होता है। और सर्व शरीर चौराशी लाख सृष्टि की एक है, जैसे मृत्तिका का पात्र छोटे बडे अनेक रंग के हैं। शरीर जब शक्तिरहित हो जाती है तब नाशवान् हो जाती है। पहिले स्थूल का नाश होता है, पीछे सूक्ष्म का होता है। स्वरूपवान् पदार्थ कुछ काल झाड बनकर मर जाता है। जैसे वर्षाऋ-तु की वनस्पती उत्पन्न होकर नाश हो जाती है। अब शरीर का लक्षण कहता हूं कि, शरीर पांच प्रकार की हैं। स्थूल सूक्ष्म कारण महाकारण उन्मनी तथा केवल ये पांच शरीर हैं। स्थूल शरीर पंच महाभूतात्मक ही है। आकाश वायु अग्नि जल पृथिवी उस में पांचों तत्त्व का पांच पांच भाग हैं। जिस को प्रकृति कहते हैं। आकाश का भाग काम[1] क्रोध[2] लो-भ[3] मोह[4] मद[5]। वायु का पांच भाग चलना[1] दौडना[2] कूदना[3] फैलना[4] सुकडना[5]। अग्नि का पांच भाग तेज[1] क्षुधा[2] तृषा[3] नींद[4] आल्कश[5]। जल का पांच भाग बीज[1] रुधिर[2] चरबी[3] पसीना[4] लार[5]। पृथिवी का पांच भाग रोम[1] चरम[2] नाडी[3] मांस[4] अस्थि[5] ये पांच तत्व और पच्चीस प्रकृति को स्थूल शरीर कहते हैं। अब सूक्ष्म शरीर का प्रमाण कहता हूं कि इस शरीर में तत्व नहीं है प्रकृति है आकाश का पांच भाग अंतः-करण मन चित्त बुद्धि अहंकार अंतश्इंद्रिय। वायु का पांच भा-

ग व्यान समान प्राण उदान अपान पंचप्राण। अग्नि का पांच भाग आंख नाक कान जिव्हा त्वचा ज्ञानइंद्रिय। जल का पांच भाग हाथ पांव मुख लिंग गुदा कर्मइंद्रिय। पृथिवी का पांच भाग शब्द स्पर्श रूप रस गंध पंचविषय। इस को सूक्ष्म शरीर तथा लिंगशरीर कहते हैं। सर्व व्यवहार लिंग-शरीर से होता है, इस प्रमाण विचार करके सुनो। आकाश का पहिला भाग अंतःकरण व्यान वायु के आधार से कान ज्ञानइंद्रिय मारग शब्दविषय जानकर मुख कर्म-इंद्रिय से बोलता है। आकाश का दूसरा भाग मन समान वायु के आधार से त्वचाइंद्रिय ज्ञान मारग स्पर्शविषय को जानकर हाथ कर्मइंद्रिय से लेत देत है। आकाश का तीसरा भाग चित्त उदान वायु के आधार से नेत्र ज्ञानइं-द्रिय मारग रूपविषय जानकर पांव कर्मइंद्रिय से चलता है। आकाश का चौथा भाग बुद्धि प्राणवायु के आधार से जिव्हा ज्ञानइंद्रिय मारग रसविषय को जानकर लिंग कर्म-इंद्रिय से बीज मूत्र त्यागता है। आकाश का पांचवां भाग अहं-कार अपान वायु के आधार से नासिका ज्ञानइंद्रिय मारग गंधविषय को जानकर गुदा कर्मइंद्रिय से मल त्यागता है। इस प्रमाण आकाश का पांचो भाग अंतःकरण पंचप्राण के आधार से पंच ज्ञानइंद्रिय मारग पंच विषय को जानकर पंच कर्मइंद्रिय से क्रिया करते हैं। सर्व जगत का व्यवहार लिंगशरीर से होता है। यह शरीर अंगुष्ठप्रमाण शास्त्र में कह-

ते हैं। अब कारण शरीर का प्रमाण कहता हूं कि स्थूलशरीर में तत्व प्रकृति दोनों हैं। और सूक्ष्म में तत्त्व नहीं है, प्रकृति है। कारण शरीर में बीज है। स्थूल सूक्ष्म का साक्षी है अपने को नहीं जानता है कि मैं कौन हूं। यथार्थ में वो शरीर अज्ञानरूप हैं। उस का जन्म मरण होता है। यह कारणशरीर लिंगशरीर का बीज है। लिंगशरीर स्थूल शरीर का बीज है। और स्थूलशरीर पंचतत्व का बीज है। पंच तत्व अनादि है। कारणशरीर नाश हो जाने पर अंतःकरणपंचक भुने हुए बीज के समान हो जाता है। फिर उस का पुनर्जन्म नहीं होता। जैसे भुना हुवा बीज पृथिवी में नहीं जमता उसी प्रमाण कारणशरीर की नाश होने उपरांत शरीर का पुनर्जन्म नहीं होता। पंचतत्व में यह शरीर मिल जाती है। अथवा अज्ञानरूपी कारणशरीर जब नाश हो जाती है तब ज्ञानरूपी केवल शरीर निर्विकार हो जाती है। इसी को लिंगभंग शरीर कहते हैं। कारणशरीर अग्नि का अंश है। स्थूल शरीर स्वरूप है। सूक्ष्म शरीर शक्ति है। कारणशरीर ज्ञान है। अब महाकारणशरीर का लक्षण कहता हूं कि, तेरे को ऐसा निश्चय है कि मैं ब्रह्म हूं, परंतु ये खबर नहीं कि ब्रह्म कौन है। और कहां रहता है, और क्या पदार्थ है। जो जिस को जानता है वो उस से न्यारा है। तीनों शरीर के आधार से यह निश्चय होता है कि मैं ब्रह्म हूं। कदाचित् तीनों का आधार छोड

तौ

पोल से संकल्प होता नहीं। निश्चल शांतरूप में
भावना प्राणवायु के आधीन है। कल्पना मात्र प्राणवायु
के आधार से होती है। महाकारणशरीर को शिवोहं अ-
हंकार व्यापक है। और सर्व वस्तु की साक्षी है, कर्ता है।
यह शरीर सब शरीरन की पुंजी है। इस की नाश होने
उपरांत चारों शरीर का स्मरण भी नहीं रहता। शरीर को
सर्व ज्ञान है। ब्रह्म का ज्ञान इस कारण नहीं है कि वो
आप ब्रह्म है। अपना ज्ञान अपने को नहीं होता। स्थूल
शरीर सब को दर्शाती है। सूक्ष्मशरीर प्रकृति है। कारण-
शरीर बीज है। महाकारणशरीर श्वासा है। कैवल्यशरीर
ज्ञान है। उस शरीर की नाश नहीं होती। उन पांचो
शरीर की पांच अवस्था है। उस का लक्षण कहता हूं। जा-
ग्रत स्वप्न सुषुप्ति तुरीया उन्मनी उस का भेद ये हैं। पहिले
जाग्रत का लक्षण सुनो। अंतःकरणपंचक पंच प्राणवायु के
आधार से पृथिवीरूपी बोझा शरीर का उठाकर चलता
फिरता है और पंचविषय का भोगी होकर पंच ज्ञानइंद्रिय
द्वारा सर्व व्यवहार जानकर पंच कर्मेंद्रिय से क्रिया करता है।
पांचों तत्त्व अपने काम में चैतन्य ज्ञानवान् रहते हैं। अ-
र्थात् अंतःकरण पांचों तत्त्व में लय रहता है। उस को जा-
ग्रत अवस्था कहते हैं। स्वप्न का लक्षण ये हैं कि वो ही
अंतःकरणपंचक पृथिवीरूपी बोझा छोडकर जलतत्त्व में

लय हो जाता है। तथा अंतःकरण पृथिवी से विलग हो जाता है। अथवा पृथिवी की प्रलय हो जाती है। तथा नाश होकर जल हो जाती है। उस समय कल्पित सृष्टि की रचना होती है। जैसे स्वप्न में सृष्टि, विना पृथ्वीतत्व के वन जाती है। दश इंद्रियों का व्यवहार नहीं होता। सर्व व्यवहार कल्पना से होता है। उस को स्वप्न अवस्था कहते हैं। सुषुप्ति का लक्षण सुनो। जब पृथिवी और जल का नाश हो जाता है, तब अंतःकरण पृथिवी का भारी बोझा जल का हलका बोझा दोनों को छोडकर अग्नितत्व में लय हो जाता है। अर्थात् अंतःकरण पृथिवी और जल से जुदा होकर तेजतत्व में रह जाता है। वहां अद्वैतरूप संकल्परहित हो जाता है। जैसे बोझा शिर से उतर जाने में हमाल सुख पावता है। उसी तरह अंतःकरण पृथिवी जल का बोझा उतर जाने से परम आनंद को प्राप्त होता है। न ब्रह्म की खोजना, न माया का व्यवहार, न जगत का पता, न अपनी खबर ऐसी अवस्था सुषुप्ति हो जाती है। केवल श्वासा वायु रहता है। संकल्प विकल्प जो दुःख का मूल है सो नाश हो जाता है। तीन अवस्था का ज्ञान रहता नहीं, उस को सुषुप्ति अवस्था कहते हैं। तुरीया अवस्था का लक्षण सुनो कि, तीनों तत्व पृथिवी जल अग्नि नाश होकर वायु में लय हो जाते हैं। अथवा तीनों की नाश हो जाती है। अंतःकरण पंचक केवल वायु में

कोई ो कहता है। कोई अर्ध नीद्रा
। कोई मृतक शरीर को
तुरीया कहता है। ये शुद्ध नहीं। तुरीया उस को कहते हैं जैसे, कोई पुरुष अब विद्या और सतसंग को प्राप्त होवे उस का अर्थ पायकर उस ज्ञान में विदेह हो जावे। सर्व आकाश में प्रकाशमान् सर्व जगह सहज स्वरूप भरपूर है। सर्व वस्तु की साक्षी है। उस का नाम तुरीया अवस्था कहते हैं। अब उन्मनी अवस्था पांचवी का लक्षण कहता हूं कि, चारों अवस्था से विस्मृति हो जाना, आकाशरूप निर्मल निराकार शांतरूप हो जाना, सर्व भावना का अभाव हो जाना तथा कल्पना छोडकर जैसा का तैसा हो जाना, अथवा कुछ न जानना उस को उन्मनी अवस्था कहते हैं। ये अवस्था मुक्तिसमान है। अब अंतःकरणपंचक का लक्षण कहता हूं कि, निराकार शक्ति जो घटाकाश में व्यापक है सो प्रथम शरीर को साक्षी होकर तदाकार होता है। हम तथा मैं ज्ञान दृढ हो जाता है। पंच ज्ञानेंद्रिय का अनुभव उस को होता है। उस को अंतःकरण कहते हैं। उस के पीछे संकल्प विकल्प, मान अपमान, बंध मोक्ष, सुख दुःख, मोह वैराग्य, शांत भ्रम, सच्च झूंठ, विद्या अविद्या, परलो अपरलो उसी को होता
ज्ञान करिके सर्व वस्तु को मानता है। उस को मन

पी ... ग्री नई ... चितवन

कर ... उस की

चिंता करना उस को चित्त कहते हैं। जिस का चित्त शुद्ध नहीं उस की शरीर अशुद्ध है। पीछे चितवन की हुई पदार्थ पर विवेक करना अथवा ये काम करूं या न करूं, अच्छा होगा या बुरा होगा, ये विचार करना बुद्धि का काम है। पीछे विवेक हुए पदार्थ पर दृढ होकर क्रिया करना। अथवा ये कार्य निश्चय करूंगा उस को अहंकार कहते हैं। ये सर्व व्यवहार अंतःकरणपंचक का है। जीवे जहां तक अच्छी तरह रहना, मरने की चिंता करना, सुख की इच्छा रखना, दुःख की त्रास मानना, मेरे पीछे कैसा होगा ये सब भावना अंतःकरण की है। अंतःकरण सर्व वस्तु का जानुकार है। और शरीर मध्ये अंतश्इंद्रिय प्रधान हैं। पंच शरीर १ पंच अवस्था २ पंच अंतश्इंद्रिय ३ पंच ज्ञानेंद्रिय ४ पंच कर्मेंद्रिय ५ पंच विषय ६ पंच तत्व ७ पंच प्राण ८ ये सब विस्तार शरीर का है। जन्म मरण शरीर का होता है। जीवन भी शरीर का होता है। यह शरीर पंचतत्त्व में मिल जाती है। पंचतत्व से उत्पन्न होती है। वो ज्ञान गुप्त प्रगट का है, नाशमान् नहीं होता। चौराशी लाख सृष्टि में शरीर एक है। सब में पंचतत्व की रचना है। पंच तत्व अनादि है, उन को ज्ञान नहीं है। जब शरीर उत्पन्न होता है तब ज्ञान होता है। शरीर ब्रह्म है। जीव निराकार शक्ति है। जो

शरीर अशक्त हो जाती है तब पंच तत्त्व में मिलकर दूसरी शरीर उत्पन्न होती है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि शरीर का ज्ञान बहुत उत्तम है। परंतु ब्रह्म का बोध कुछ नहीं हुवा। कदाचित् ये शरीर नाशमान् न होती और आत्मा छोडकर चला न जाता तौ मैं कुछ बोध करता।मर जाने से कुछ उत्तम पदार्थ निराकार चैतन्य का शरीर से निकल जाना प्रत्यक्ष दरशाता है।जब वो शक्ति निकल जाती है तब शरीर भयंकर रूप हो जाती है।कुछ काम नहीं आती।अशुद्ध नाशमान् हो जाती है।नाश हुवा वो कुछ नहीं रहा। उस को ब्रह्म कहना मूरख का ज्ञान है। जिस की शरीर नाशमान् न हो, वो इस ज्ञान को प्रधान जाने। मेरे ज्ञान में जो चैतन्य शरीर से निकल जाता है वो कुछ पदार्थ होगा। उस के चले जाने से परवार के प्राणी शरीर को फूंक देते हैं। यह शरीर ब्रह्म कहना दोष और अनुचित है। कदाचित् शरीर ब्रह्म है तौ रोग व्याधि चोट चिंता ग्लान वृद्धपन अधेड मूक अपंग शरीर को क्यौं होता है। धामपुरी जाना, भजन करना, पुण्य-पाप का विचार नहीं होना चाहिये। यह सुनकर महात्मा गुरु चुप हो रहे।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें आठवीं लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

नौवीं लहरी ॥

अथ श्रीनिराकाराय नमः । मैं दूसरे महात्मा के पास गया। और सब हाल अपना कहा । तब महात्मा गुरु बोले कि शरीर नाशवान है। उस को ब्रह्म कहना उचित नहीं " । आत्मा जो शरीर से जुदा है और घट घट व्यापक है और सर्वज्ञ है वो ब्रह्म है । क्यौं कि जो ज्ञान शरीर का महात्मा गुरु ने बताया उस का संपूर्ण जाननेवाला आत्मा निज वस्तू निराली है । सांख्यशास्त्र वेदांतशास्त्र प्रमाण आत्मा ब्रह्म है। कलियुग में अनेक ग्रंथ महात्माओं ने बनाये। सब में आत्मा को ब्रह्म कहा है । जीवआत्मा परमात्मा शब्द में कुछ भेद नहीं है। अज्ञान दूर होने से जीव आत्मा परमात्मा हो जाता है। और इस के शिवाय कुछ सूक्ष्म आत्मज्ञान सर्व वेदांत का मूल कहता हूं। विचार करके सुनो बोध हो जावेगा। जो जाग्रत तेरे देखने में आता है पंच भूतरूपी विलास है तू जहां तहां स्थिर है और शांत है। जहां तहां अंतराल भासे है। उस पोलाण में पंचमहाभूत की आकृति बिलग बिलग निराकार साकार शुभरूप तू है। तेरे प्रकाश से तू आप आनंद है। तेरे रूप की कुछ उपमा नहीं। तेरी आत्मा स्वरूप में चंद्र सूरज तारागण तीनों लोक चौदह भुवन कल्पना करने से भासते हैं। परस्पर की आकर्षण से तेरे रूप के बीच

[illegible] और पृथिवी [illegible]

निराकार में [illegible] उस को अनंत ब्रह्मांड कहते हैं। ता के ऊपर सब का ठिकाना है। उस पर जीवों की वस्ती है। सो ब्रह्मांड तथा रूप के भीतर अथवा बाहिर जो पोलाण है उस ठिकाना समप्रकाश निर्मल वस्तू तू है। और तेरे स्वरूप के भीतर भूगोल आदिक सर्व गोल प्रकट हैं। ता के ऊपर सर्व जीव रमण हो रहे हैं। इस वास्ते उसे निराकार रमण करनेवाले जीव आत्मा को राम कहते हैं। जो सर्व जगह भरपूर है और शिव आत्मा के विश्राम की जगह है। मन के भीतर बोलनेवाला सर्व इंद्रियरहित तू आत्मा कारणशरीर है, और पंच महाभूत तेरे आत्मा रूप का क्षेत्र है। शरीर भीतर तथा बाहिर जो आकाश भर रहा है ता को अपनी जानी जगह जानता है, सो ही प्रकाश ज्ञानरूपी आत्मा है। ऐसा स्थितरूप आकाश सो ही आत्मा है। शरीर के भीतर जो आकाश व्यापक है, उस के भीतर पंचप्राण के आधार ते निराकार आत्मा रहता है। अपने इंद्रियन ते मालूम नहीं होता ता के लिये आकाशरूपी पोलाण भासता है। बोलने को आकाश वाणी कहते हैं। तेरे स्वरूप में माथे के भीतर दोनों नेत्रन के बिंदु में जो काली पीली धोली नीली लाल रंग की कल्पित सृष्टि देखने में आती है सो ही देखनेवाला ज्ञानरूपी आत्मा है। तेरे निराकाररूप आत्मा

को जगत् की खबर नहीं है । जैसे सुषुप्ति अवस्था में रा तेरे को खबर रहती नहीं । अज्ञान तथा द्वैत से तेरा रूप न्यारा है। पंचविषय और दश इंद्रियें पंच प्राण अंतःकरण पंचक को छोडकर निराकार अपने स्वरूप के ऊपर विश्राम लेने से निराकार स्वरूप का बोध होता है। निमिष मात्र अपने निराकाररूप का चितवन करनेवाला आत्मज्ञान का सुख पाता है। जैसे पात्र में जल आने से सूर्य का प्रतिबिंब दिखाई देता है तैसे शरीररूपी पात्र में पंचप्राणरूपी जल आने से ज्ञानरूपी आत्मा का अनुभव होता है ।और इस ज्ञान प्राप्त होने से आत्मा शरीर का विवेक शुद्ध होता है। अज्ञान से इस पंच महाभूत के साथ तू ज्ञानरूपी आत्मा तदाकार होकर साक्षीपने का ज्ञान छोडकर सुखःदुख भोगता हो गया । तुझ को ऐसा देखने में आता है कि मैं सर्व कर्म का कर्ता हूं, और मैं सुखदुःख का भोगता हूं। परंतु विचार से देखे तौ तूं पंच महाभूत के साथ साक्षी है। तू पच्चीस प्रकृति का जाननेवाला आत्मा शरीर से न्यारा है। तू जिस को जानता है वो हि कैसे होगा तेरा स्वरूप इंद्रिय आदिक के देखने और विचार ने में नहीं आता। कारण सब विचार तेरी आत्मा को है। जब तू अपने स्वरूप को विचार करिके निराकार में लक्ष लगावेगा तब अंतःकरण आदिक लय हो जावेंगे। उस वक्त तुझ को निर्विकल्प

स्थिति प्राप्त होगी और तू नहीं रहेगा। केवल निराकार आत्मा बहुत सुखी होगा। शरीर के हाथ पांव टूटने से तू नहीं टूटेगा। जैसे खड्ग म्यान में न्यारो है। पंचविषय आदिक जगत् को जाननों तथा इंद्रियन को जाननों अथवा पंचप्राण या अंतःकरण पंचक को जाननो सब को छोडकर मन स्थिर करिके अपने भीतर को देखने लगे गो, तौ तू कौन वायु के जोर से समुद्र जैसे खलबलात है उसी प्रमाण देखने में आवेगा। तेरे स्वरूप में अनेक गोल और समुद्र हैं। जो तेरे शरीर का जाननेवाला ज्ञानरूपी आत्मा उस को खबर पडे है। ता के ऊपर अथांगपानी का जमाव तथा जीवसृष्टि भासती हैं, परंतु वो सब निराकार तेरे स्वरूप में केवल कलपना मात्र बारीक प्रमाण तद्वत है। और तू ऐसा है कि तुझ को किसी का संग नहीं। तू आप अपने स्वरूप में शांत है। तेरे रूप को पाप पुण्य पुनर्जन्म स्वर्गनरक में डालनेवाला अज्ञान करिके मैं मैं ऐसी मन में कल्पना करनेवाला जो अभिमान सो मिथ्या है। तेरे निराकार स्वरूप को कुछ पीडा नहीं कर सकता। तू गुणदोष में लेपायमान नहीं होगा। सुषुप्ति अवस्था अज्ञानरूप है तू ज्ञानरूप है। जैसे जल के ऊपर कुमुदिनी दूर होने से निर्मल जल देखने में आता है, उसी प्रमाण अज्ञानरूपी कुमुदिनी दूर होने से निर्मल ज्ञानरूपी जल देखने में आता है। उसी ज्ञान को मैं निरा-

कार शांतरूप आत्मा हूं ऐसी स्थिति प्राप्त होती है। उस को तुरीया अवस्था कहते हैं। तू ज्ञानरूपी आत्मा निर्विकल्प है। तेरे निराकार रूप में पंच महाभूत की सृष्टि मृगजलस-मान भासती है। तेरे निराकाररूप विना कोई जानी जगह ब्रह्मांड में नहीं है। जैसे जल में प्रतिबिंब हिलने से आदमी हिलता हुवा देख पडता है, तैसे तू निराकार शांतरूप आ-त्मा इंद्रियप्राण मन की कल्पना को भ्रम होने से अपनी कल्पना जानता है। और अपने निराकाररूप को भूलकर पंच महाभूत के पिंजरा को अपना रूप जानता है। साक्षी-पने का ज्ञान छोडकर तदाकार हो जाता है। कदाचित् सा-क्षीपने का ज्ञान दृढ होवे तौ पंच विषय दश इंद्रिय पंच प्राण पंच अंतःकरण की बाधा होवे नहीं। जैसे कोई मारा जाता है तौ उस के साक्षी को चोट नहीं लगती। साक्षी से तदाकार हो जाना यही माया भूल अज्ञान का मूल है। उस का मूल मोह है। और मोह आकाश की प्रकृति है। शरीर पात्र है। उस में पंच प्राण जल हैं। और पंच विषय लहर है। उस के भीतर पंच ज्ञानइंद्रिय की शक्ति तदाकार है। इस कारण अंतःकरण पंचक को अपना प्रतिबिंब दिखाई देता है। ज्ञानरूपी आत्मा को अनुभव होता है। उस अनुभव से अज्ञान होकर अपना रूप जानकर प्रतिबिंब को पकड लेता है। अपने शुद्ध निराकार को भूल जाता है। इ-स कारण सुखदुःख होता है। शरीर के संग नाना संकट

सहता है। ये भूल है
हो जावे, तौ ज्ञान कहां से आवे। इस कारण आत्मा अ-
शक्त हो गया और जीवपद्वी पाया। और वासना दृढ हो-
ने से जन्ममरण भी होता है। चौरासी भोगना पडता है।
वो ही अज्ञानरूपी प्रतिबिंब संसारी मोह को नहीं छोड-
ता। इस कारण जीवपद्वी बनी रहती है। आत्मज्ञान प्रा-
प्त होने पर जन्म मरण नहीं होता। शरीर की नाश हो जाती
है। जैसे जल से भरा हुवा पात्र फूट जाने में सूर्य नाश नहीं
होता, इसी तरह आत्मा का जन्म मरण नहीं होता। अंतः-
करण के सुख दुःख से तुझ को कुछ वास्ता नहीं, जैसे प्र-
तिबिंब जुदा है। सुषुप्ति अवस्था में अंतःकरण पंचक
वायु शरीर में लय हो जाता है, इस कारण सुख दुः-
ख रहता नहीं। जाग्रत स्वप्न में अंतःकरणपंचक को सब
सुःख दुख होता है। निराकार आत्मा कदांचित् तदाकार
शरीर का न हो जावे। केवल साक्षी का ज्ञान दृढ रक्खे तो
उस को सुख दुःख न होवे। मूर्च्छा काल में अंतःकरण लय
हो जाता है। उस को मुक्ति कोई नहीं कहेगा। जीवन्मुक्ति
का स्वरूप ऐसा है कि स्थूल सूक्ष्म शरीर से सर्व व्यवहार
जगत का कर्ता है, और अंतःकरण में अपने निराकाररूप
आत्मा को जुदा जाने, और अहंरूपी अहंकार को झूंठा
समझे। रोम से अस्थितक जो शरीर है उस में हंपदार्थ
कुछ नहीं है। कदाचित् ऐसा ज्ञान हो कि मैं आत्मा शरीर

अवस्थातक यावत् व्यवहार शरीर का अपने आधीन नहीं है। बाल वृद्ध तरुण होना, रोग आदिक होना, निद्रा मैथुन क्षुधा तृषा मल मूत्र करना, सर्व प्रकृति शरीर की मैं मैं के आधीन नहीं है। हम चाहते हैं कि क्षुधा तृषा जाती रहे परंतु नित्य होती है। इस सिद्धांत में हम शरीर के धनी नहीं हुवे। शरीर को अपनी मानना मुर्खपना है। ऐसी वस्तु को अपना रूप जानना विना अर्थ उस के सुखदुःख में आप सुखी दुःखी होना कैसी बडी मूर्खता है। ऐसे मूर्ख को ज्ञान होना असंभव है। आत्मा सर्व जगत् की एक है इस का बोध अनेक मत से है। और प्रत्यक्ष भी निद्रा मैथुन अहार हर्ष भय यही पांचों प्रकृति सर्व जीवमात्र को हैं। आत्मज्ञानी को देखने में सब आता है। आत्मज्ञानी को अपने आत्मा की और सर्व आत्मा की खबर रहती है। और सर्व आत्मा को अपनी आत्मा जानता है, और सर्व जगह सम भरपूर है। और रजोगुण सतोगुण तमोगुण सर्व आत्मा में एकरूप से दरसाता है। शरीर तथा प्रकृति दोनों को छोडकर जब अपने रूप को देखता है तब वृत्ति की नाश हो जाती है। कोई भी संकल्प तथा भावना रहती नहीं। उसी निराकार आत्मा को बडी शांति प्राप्त होती है। वो सुख मुख से कहने में आवता नहीं। और तू मुक्त है तथा बंध में है, यह दोनों निराकार आत्मा में नहीं है।

है,

हैं कि चाह हैं

वार्ता से सिद्ध होता है कि अपना रूप प्राण से जुदा है। अपना रूप क्या है यह ज्ञान नहीं है। प्राण जाने पीछे कैसे रहूंगा इस अंधकार का नाश होने के वास्ते सिवाय गुरु-कृपा के और कोई यतन नहीं । आत्मज्ञानी को अद्वैतरूप जगत् दरसाता है, और प्रत्यक्ष जगत् का मूल पंचतत्त्व से है, और पंचतत्व एक तत्व से है। उत्पन्न पालन संहारण पानी का बुद्बुदा तथा लहरी के समान है। आत्मा की एकता सर्व जगत् में प्रसिद्ध है । जैसे परमात्मा सर्व जगत् की जड चैतन्य में एकरूप से व्यापक है, उसी प्रमाण आत्मा शरीर में व्यापक है। पिंड ब्रह्मांड में एकता है। जिस को शरीर में आत्मा का अनुभव होवे उस को ब्रह्मांड में परमात्मा का अनुभव हठ करिके होवे। घट उपाधि से अनेक दरसाता है, और एक दूसरे से वैर रखता है। किसी को अपना किसी को पराया जानता है। अपने से प्रीत पराये से वैर, अपने लडके का मलमूत्र राजा प्रजा सब उठाता है। दूसरे का उठावे भंगी कहलावे । अपना साला या साली गाली देते हैं तो अंतःकरण को सुख प्राप्त होता है। दूसरा देवे तो दुःख होवे। यह अज्ञान छूट जावे, सर्व आत्मा एक दरसावे । आत्मज्ञानी को वैर प्रीत

हो

का

न होवे।

जो बुद्धि में आवे आत्मा

न बुद्धि कुछ नहीं है। अंतःकरण में आत्मा का सूक्ष्म अभ्यास है, उस अभ्यास से अंतःकरण चैतन्य है। सर्व व्यवहार शरीर का अंतःकरण से होता है। पंच विकार के सत्संग से निराकार रूप का ज्ञान भूलकर विषयानंद ज्ञान में लेपायमान होकर इच्छानंद के वास्ते नाना प्रकार का दुःख उठाता है; कोई योगानंद में ब्रह्मानंद को पाता है, परंतु आत्मज्ञान प्राप्त हुवे विना परमानंद नहीं होता। शरीर से आत्मा जुदा होकर कुछ करे या सुखदुःख पावे। इस का अनुभव सब को नहीं है। जानना चाहिये कि स्वप्न अवस्था में जो सर्व व्यवहार जाग्रत समान होता है आत्मा से होता है। शरीर से कुछ कार्य नहीं। आत्मा निराकार है, परंतु परमात्मा के समान साकार भी है। यह पंच महाभूत का पूतला जो मूत्र का स्वरूप है क्षणमात्र में संयोग पायकर नाश हो जाता है। अपने देखते लाखों नित्य नाशवान होते हैं। सौ बरस के भीतर कोई समय संयोगआधीन अपना पूतला निश्चय करिके नष्ट होगा। इस में कुछ भ्रम करना या अमर होने की आसरा करना मूरख का काम है, और पुतला नष्ट होने पीछे जो

प्रगट है। जैसे घट में जल भरा है ... में दरसाता ।

ऐसे पूतला को अंत में नाना प्रकार का दुःख उठाना मोह भ्रम का कारण है। कोई पुराण का ऐसा मत है कि प्रीत दृढ होने से पुनर्जन्म होता है। और वैराग्य धारण होने से तू आत्मा सर्व वायु में मिलकर परमात्मा स्वरूप हो जावेगा। राजा जनक ने गुरु करने के वास्ते जब सभा किया था, तब सब ऋषि मुनि आये, पीछे सब के अष्टावक्र ऋषि आये, उन को आठ अंग से टेढा देखकर सारी सभा हंसी। उन को क्रोध आया सब को चमार कह दिया। विश्वामित्रजी ने चमार कहने का कारण पूंछा। अष्टावक्र ने हंसने का कारण पूंछा। विश्वामित्र ने उत्तर दिया कि तुह्मारे स्वरूप से हास्यरस आप उत्पन्न होता है। अष्टावक्र ने कहा कि हमारा रूप सब के समान है हमारा चमडा टेढा है। तुम सब ने हम को नहीं पहिचाना, चमडा पहिचाना। जो चमार का कर्म है। सब कोई चुप हो रहे। कपिल भगवान् ने देवहूति को यही ज्ञान दिया। श्रीकृष्ण भगवान् ने अर्जुन को गीता में यही ज्ञान दिया। वासिष्ठजी ने रामचंद्र को यही ज्ञान दिया। यह ज्ञान प्राप्त होना भाग्य आधीन है। इस का सुख कहने योग्य नहीं है। आत्मज्ञानी जाने। जबतक शरीर का संब-

ध है तबतक उस को आत्मा कहना चाहिये। पीछे इस के त्याग में परमात्मा प्रसिद्ध है। जो दृष्टांत दासबोध में कहा गया है देखो। आत्मा ब्रह्म, ऐसा सब का मत है। व्यास भगवान् ने वेदांत में आत्मा को ब्रह्म कहा। तुम को भी उस प्रमाण मानना चाहिये, और शांति करना चाहिये। भ्रम करना निरर्थक दुःख है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि आप का आत्मज्ञान वेदांत का मूल है। कोई आचार्य कवि पंडित ने ऐसा निर्मल नहीं कहा, मेरे को आत्मा का ज्ञान संपूरण हो गया, परंतु ब्रह्म की प्राप्ति नहीं हुई। जो शंका मेरे मन में है वो कहता हूं। इस सिद्धांत में आत्मा का लक्षण पांच दरसाया। प्रथम घटघट व्यापक है। उस में ये शंका है कि अपने घट की उत्पत्ति का भेद जो संपूरण देखने में आया तो आत्मा का पता न पाया। जीव और शरीर दोऊ प्रधान हैं। दोनों की उत्पत्ति का भेद ये है कि अनादि सृष्टि प्रमाण स्त्री पुरुष का संयोग होकर मैथुन होता है। उस मैथुन में रजवीर्य दोनों वायु के साथ सर्व शरीर से निकलता है। स्त्री के गर्भस्थान में दोनों वायु के जोर से टकराता है, और एक होकर चक्कर खाता है। वो दोनों वायु एक होकर उस रजवीर्य के गोला में बंद हो जाती है। वायु का जीव रजवीर्य का शरीर उत्पन्न होता है। स्त्री का बल विशेष होने से पुत्री, पुरुष का बल विशेष होने से पुत्र, दोनों

स में जो

ऋतु का

ी वायु सर्व शरीर में

वायु बलवान् होकर संपूरण बंद हो जावे तो बच्चा की ऐष सो बरस की होवेगी। कदाचित् कम रहेगी तो कमी प्रमाण जीता रहेगा। घडी और सायत स्त्री पुरुष का चित्त अच्छा होगा तो बालक अछा होगा। जिस के ऊपर ध्यान रहेगा वैसी सूरत शकल होगी। यह सिद्धांत शरीर और जीव का है। उस के सिवाय आत्मा कौन पदार्थ है, जो ब्रह्म समान होकर प्रगट नहीं होता। घट उत्पत्ति के पहिले आत्मा का कुछ अनुभव नहीं, और घट नाश होने उपरांत भी कुछ पता नहीं। आत्मा कदाचित् कुछ होता तो घट से जुदा भी कुछ अनुभव होता। दूसरे अद्वैत है। उस में यह शंका है कि राम कृष्ण परशुराम आदिक अवतारों ने दैत्यों को मारा। सिंह आदिक अनेक जानवर नित्य जीव का अहार करते हैं। एक रोता है, एक हंसता है। एक पूजनीय है, एक मलक्ष है। एक नरक में जाता है, एक सुरलोक में जाता है। धर्मराज यमराज दो नाम क्यों हुवा। एक गुरु है, एक चेला है। अद्वैत का ज्ञान नहीं हो सकता। अद्वैत कहनेवाला या समझनेवाला अद्वैत से न्यारा होगा। आत्मा परमात्मा जब दो होवे तब सर्व व्यवहार शुद्ध होवे। स्त्री माता में द्वैत का विचार सिद्ध होगा। विष्ठा व्यंजन एक नहीं,

हो सकता। गौ ब्राह्मण बकरा मेंढा एक जानना पाप है। तीसरे सर्वज्ञ है, उस में यह शंका है कि जहांतक दृष्टि जाती है उस के उपरांत आत्मा को कुछ ज्ञान नहीं होता। घर में चोरी हो जाती है, जानवर आदमी भाग जाता है। आत्मा को जान नहीं पडता कि वोह वस्तु कहां है। और नरक स्वर्ग पाप पुण्य में एक पदार्थ नहीं होगा। सर्वज्ञ उस को कहना चाहिये। जिस को तीनों लोक चौदह भुवन घरसमान दरसावे। स्त्री अर्धांगी है, उस का भी हाल आत्मा को नहीं मालूम होता। चौथे ज्ञानरूपी, उस में यह शंका है कि आत्मा को अपना हाल नहीं मालूम होता कि मैं कौन कहां से आया, कहां जाऊंगा, इडा पिंगला सुषुम्ना नाडी अपने शरीर में बदलती है, आत्मा को नहीं मालूम होता। पलक अपने आंख की खुलती बंध होती हैं, आत्मा को नहीं मालूम होता। सृष्टि में चौराशी लाख योनि है। सिवाय मनुष्य योनि के और सब अज्ञान दरसाते हैं। मनुष्य योनि में भी लाखों में कोई ज्ञानी दरसाता है। वोभी ज्ञान इंद्रिय के अनुभव प्रमान जानता है। बुद्धि ज्ञान एक अर्थ है। पांचवें अविनाशी है, उस में यह शंका है कि जिस शरीर की नाश हो जाती है, उस का आत्मा पीछे अनुभव में नहीं आता। कोई शरीर अविनाशी नहीं है शरीर से रहित निराकार पदार्थ अनुमान न होगा। और निराकार पदार्थ झूंठा पद बराबर है। जिस के आकार नहीं उस की आत्मा कहां

ने से नपुंसक पैदा होता है। नवमास में जो
[illegible]
ही वायु सर्व शरीर में व्यापक हो जाती है। स्त्रीपुरुष की वायु बलवान् होकर संपूरण बंद हो जावे तौ बच्चा की ऐप सो बरस की होवेगी। कदाचित् कम रहेगी तौ कमी प्रमाण जीता रहेगा। घडी और सायत स्त्री पुरुष का चित्त अच्छा होगा तौ बालक अछा होगा। जिस के ऊपर ध्यान रहेगा वैसी सूरत शकल होगी। यह सिद्धांत शरीर और जीव का है। उस के सिवाय आत्मा कौन पदार्थ है, जो ब्रह्म समान होकर प्रगट नहीं होता। घट उत्पत्ति के पहिले आत्मा का कुछ अनुभव नहीं, और घट नाश होने उपरांत भी कुछ पता नहीं। आत्मा कदाचित् कुछ होता तो घट से जुदा भी कुछ अनुभव होता। दूसरे अद्वैत है। उस में यह शंका है कि राम कृष्ण परशुराम आदिक अवतारों ने दैत्यों को मारा। सिंह आदिक अनेक जानवर नित्य जीव का अहार करते हैं। एक रोता है, एक हंसता है। एक पूजनीय है, एक मलक्ष है। एक नरक में जाता है, एक सुरलोक में जाता है। धर्मराज यमराज दो नाम क्यों हुवा। एक गुरु है, एक चेला है। अद्वैत का ज्ञान नहीं हो सकता। अद्वैत कहनेवाला या समझनेवाला अद्वैत से न्यारा होगा। आत्मा परमात्मा जब दो होवे तब सर्व व्यवहार शुद्ध होवे। स्त्री माता में द्वैत का विचार सिद्ध होगा। विष्ठा व्यंजन एक नहीं,

हो सकता। गौ ब्राह्मण बकरा मेंढा एक जानना पाप है। तीसरे सर्वज्ञ है, उस में यह शंका है कि जहांतक दृष्टि जाती है उस के उपरांत आत्मा को कुछ ज्ञान नहीं होता। घर में चोरी हो जाती है, जानवर आदमी भाग जाता है। आत्मा को जान नहीं पडता कि वोह वस्तु कहां है। और नरक स्वर्ग पाप पुण्य में एक पदार्थ नहीं होगा। सर्वज्ञ उस को कहना चाहिये। जिस को तीनों लोक चौदह भुवन घरसमान दरसावे। स्त्री अर्धांगी है, उस का भी हाल आत्मा को नहीं मालूम होता। चौथे ज्ञानरूपी, उस में यह शंका है कि आत्मा को अपना हाल नहीं मालूम होता कि मैं कौन कहां से आया, कहां जाऊंगा, इडा पिंगला सुषुम्ना नाडी अपने शरीर में बदलती है, आत्मा को नहीं मालूम होता। पलक अपने आंख की खुलती बंध होती हैं, आत्मा को नहीं मालूम होता। सृष्टि में चौराशी लाख योनि है। सिवाय मनुष्य योनि के और सब अज्ञान दरसाते हैं। मनुष्य योनि में भी लाखों में कोई ज्ञानी दरसाता है। वोभी ज्ञान इंद्रिय के अनुभव प्रमान जानता है। बुद्धि ज्ञान एक अर्थ है। पांचवें अविनाशी है, उस में यह शंका है कि जिस शरीर की नाश हो जाती है, उस का आत्मा पीछे अनुभव में नहीं आता। कोई शरीर अविनाशी नहीं है शरीर से रहित निराकार पदार्थ अनुमान न होगा। और निराकार पदार्थ झूंठा पद बराबर है। जिस के आकार नहीं उस की आत्मा कहां

रहेगी। निर्गुण है तो चार वेद छः शास्त्र अठारह पुराण में गाया है। निराकार है तो चौविस अवतार कौन का हुवा। लाखों भक्त को दर्शन कौन देता जात धर्म तीर्थ यात्रा ब्रह्मभोज दान यज्ञ पाप पुण्य गया काशी शादी क्रिया करम इस ज्ञान में सब मिथ्या होता है। देवता ऋषि मुनि साधु सिद्ध सब निरर्थ हो जावेंगे। आत्मा ब्रह्म होता तो शरीर का मालिक वो ही है। अकर्म कोई न करता। सब को शांतपद प्राप्त होता, सब स्वर्ग में जाता। जानबूझकर नरक में कोई न जाता। ऐसी अनेक शंका आत्मा ब्रह्म होने में उत्पन्न होती है। विद्वान् जान लेवेंगे।
य हिंदुस्थान के दुनिया में बहुत मुल्क हैं। उन का मत देखो तो आत्मा का नाम भी कोई नहीं जानता, और पुनर्जन्म भी जीव का नहीं होता। मनसूर नें अनलहक्क कहा, उस को सुली पर चढाया। अपनी आत्मा ब्रह्म है तो दिन रात कौन करता है। और पानी पत्थर कौन वरसाता है। आत्मा के शुभ अशुभ कर्म का फल कौन देता है। और अपनी आत्मा अनादि नहीं है। उस को किस ने बनाया। और चार महिना बर्षा और चार महीना गरम और चार महीना सरद किस के हुक्म से होता है। मेरे ज्ञान में आत्मा परमात्मा एक नहीं है। कदाचित् कोई आज्ञानी एक कहे तो परमात्मा कहनेवाला कौन है। ये सुनकर महात्मा गुरु बोले कि आजतक सब ग्रंथ कर्ता का मत ऐसा रहा कि आत्मा ब्रह्म

है। मैं उस प्रमाण तुम को उपदेश किया। अब तुह्मारे ज्ञान मैं नहीं आता तो विचार करो। मेरे को इस के सिवाय विशेष ज्ञान नहीं है ...

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद नौवें तरंगमें नौवीं लहरी अहंब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

इति नौवां तरंग समाप्त ॥ ९ ॥

दशवां तरंग प्रारंभ

॥ पहिली लहरी ॥

अथ श्रीनिरंजनाय नमः। मैं आत्मा खंडन हो जाने में वहुत सोचमान हुवा। ब्रह्मप्राप्ति की आस निरास हो गई। अब उदास होकर एक पर्वत पर चला गया। जिस को वहां के रहनेवाले कैलास कहते थे। उस पर जाकर क्या चमत्कार देखा कि एक बडका झाड बहुत बडा है। उस के नीचे एक चौतरा श्वेत पाषाण का बना हुवा है। उस पर एक महात्मा सदाशिव शंकर महादेव समान विराजमान हैं। अनेक चेला अधिकारी अपने अपने काम में लगे हैं। धूनी अखंड होमके समान जल रही है। गांजा चरस के धुवां की धूम हो रही है। भांग का कुंडी सोंटा खटक रहा है। व्याघ्रांबर मृगशाला पर बहुत संत महात्मा बैठे सतसंग कर रहे हैं। मैं उन को सदाशिव समझा परंतु महादेव वो नहीं थे। उन के ऊपर संपूर्ण कृपा शंकर की रही।

मैं उन का दर्शन पायकर बहुत आनंदी हुवा और अष्टांग दंडवत करिके उन के पास गया। और सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु हंसकर बोले कि बडे आश्चर्य की बात है कि दत्तात्रय ने चौवीस गुरु करके अपना बोध कर लिया, परंतु तुम को पैंतालीस गुरु से बोध न हुवा। सब महात्मा गुरु मूर्ख नहीं थे। जिस ने जो सिद्धांत कहा सो सत्य कहा, तुह्मारी मूर्खता अज्ञानता सिद्ध होती है। अब मैं तुम को सच्चा ब्रह्म जो महात्माओं ने गुप्त रक्खा है उपदेश करूंगा। और सर्व शंका और भ्रमना तुह्मारी नाश कर देऊंगा। पीछे जब रत्ती प्रमाण शंका न रहे। और संपूर्ण पंच ज्ञानइंद्रिय से निश्चय हो जावे तब बोध करना। ब्रह्म निर्गुण निराकार निरंजन निरामय निर्भय निर्वैर नाम है। शरीर जगत है, आत्मा माया है। ब्रह्मांड में जगत माया ब्रह्म तीन पदार्थ प्रधान हैं। पिंड में शरीर आत्मा नाम जो पिंड में वो ब्रह्मांड में यह सब का मत है। ये पिंड ब्रह्मांड के आकार हैं। जिस ने पिंड का ज्ञान पाया ब्रह्मांड का निश्चय करके पाया।और ब्रह्मशब्द भी नाम है।कोई पदार्थ ब्रह्मांड में नामरहित नहीं है। रूप की नाश हो जाती है।नाम की नहीं होती। ब्रह्म का ज्ञान बहुत दुर्लभ और कठिन है।इस प्रकार का विचार ब्रह्म का आजतक नहीं हुवा। पहिले के आचार्य ऋषि मुनि पंडित ने जो ग्रंथ बनाया दूसरे ग्रंथ के आधार से बनाया। अनुभव करके नहीं बनाया।इस कारण ब्रह्म

की निश्चय आजतक प्रगट नहीं हुई। अब तुम ने इस झ-
गडा को अंत किया। इस कारण ब्रह्म का भी अंत हो गया।
[illegible] नहीं है। पंच तत्व से शरीर
की उत्पत्ति है और पंचतत्व निराकार की शक्ति से जीव
की उत्पत्ति है। और पंच तत्व के मूल से नाम की उत्पत्ति
है। पंच तत्व का मूल शून्य आकार सिद्ध होता है। शरीर
को जगत इस सिद्धांत से कहना चाहिये कि नाशवान् है।
जीव को माया इस कारण कहना चाहिये कि पुनर्जन्म
होता है। नाम को ब्रह्म इस सिद्धांत से कहना चाहिये कि
शरीर और जीव नाश होने उपरांत वो जैसा का तैसा बना
रहता है। जैसे जगत की नाश होने उपरांत ब्रह्म बना रह-
ता है उसी तरह नाम भी बना रहता है। विचार से जगत
और माया का धनी ब्रह्म अनुमान होता है। वैसे शरीर और
जीव का धनी नाम प्रत्यक्ष दर्शाता है। जौतिष आदिक गुप्त
विद्या जाननेवाला नाम के ऊपर से शरीर जीव का भूत
भविष्य वर्तमान कह देते हैं। पुरश्चरण प्रयोग अनुष्ठान सब
नाम के ऊपर होता है। विवाह आदिक में नाम प्रधान है।
शरीर और जीव का भेद नहीं देखा जाता। बडे बडे राजा
प्रजा बादशाह महाजन शूर वीर ऋषि मुनि महात्मा दे-
वता दैत्य नाम की बढाई चाहते हैं। इस की शांति
जीवमात्र को नहीं है। नाम के वास्ते शरीर जीव दोनों नष्ट
कर देते हैं। बडा छोटा चारों वर्ण नाम को डरता है। दान

पुण्य विवाह मरौनी सब नाम के वास्ते हैं । बाग बावडी [illegible] देवल सब नाम के वास्ते [illegible]

के वास्ते । [illegible]

सिवाय और व्यवहार जो संसार में है सब नाम के वास्ते। नाम की प्रशंसा से शरीर प्रसन्न होती है। निंदा से मलीन होती है । यावत् व्यवहार जगत का या शरीर का नाम के आधार से होता है, और भजन कीर्तन स्मरण में सब नाम प्रधान है। मंत्र स्तोत्र गायत्री संध्या पूजा सब नाम का आधार है। तुलसीदास की चौपाई का पद ऐसा है । ' राम न सकें नाम गुण गाई '। उस के सिवाय गुरु नानकशाह साहेब ने सत्यनाम को ब्रह्म जाना और उसी को सत्य माना। अनेकन आचार्य वेदांतग्रंथवाले कलियुग में हुये सब ने नाम प्रधान किया। और शास्त्र का मत ऐसा भी है कि कलियुग में सिवाय नाम के और अनेक प्रकार की तपस्या निरर्थक है, केवल नाम मुक्तिदाता है। और जो कोई तीनों काल में कुछ पाया नाम से पाया। चोर शरीर से चोरी करता है। ग्रंथ में उस का नाम प्रगट होता है। आठ प्रकार का तंत्र मंत्र यंत्र सब नाम पर होता है। विचार से देखो तौ पदार्थ का मूल नाम अनुमान होता है। नाम में दो अक्षर ना और मा, जिस का अर्थ मैं नहीं। वो ही उत्पत्ति नाश संसार का काम है। कभी है कभी नहीं। अनुलोम करने से मान होता है, मान

प्रत्यक्ष ज्ञा है

ब्रह्म का स्व

आगे के महात्मा और ऋषियों ने इस सिद्धांत को प्रगट

।

तथा संपूरण जाता रहेगा। निर्गुण निरंजन निराकार श-
ब्द संसार में नाम है। कदाचित् ऐसी शंका कोई करे

है, है

रव का है। कोई पदार्थ नया उत्पन्न नहीं होता। चौरासी
लख योनि के एक कीडी भी उत्पन्न नहीं हो-
ती। सर्व नाम आदि का है। नाम मनुष्य योनि में है,
और किसी योनि में नहीं है। वो भी पंडित लोग नक्षत्र
प्रमाण रख देते हैं। शेषजी दो हजार जिव्हा से सदा नाम
हैं अंत नहीं पाया। नाम आधीन शरीर प्रत्यक्ष दरसाता है।
कोई जानवर का नाम रक्खो तो वो बुलाने से आता है।
अनाम उस को कहते हैं। नाम सब को है। नाम के ना-
म नहीं है। विचार करिके देखो, नाम की महिमा ऐसी
अगम अपार है कि कोई नहीं कह सकता। नाम का ज-
पना भक्तिमार्ग है। नाम का अनुभव लेना ज्ञानमार्ग है।
भक्तिमार्ग सहज है और सब को सुगम है। नाम का अनुभव
होना कठिन है। इस अनुभव के वास्ते गुरु ऐसा होना
चाहिये कि जो सर्वज्ञ ज्ञान को जानता हो, और अनु-
भव पाया हो। शिष्य भी अधिकारी होना चाहिये। गुरु-

सेवक हो ऐसा संयोग प्रारब्ध योग जब होवे मनोरथ सिद्ध हो जावे। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि आप का ज्ञान ब्रह्म प्राप्ति की खान है। ऐसा निर्मल शुद्ध विचार नाम ब्रह्म का कोई नहीं जानता। जैसे गुरु की खोजना आपने उपदेश किया, वैसे तथा उस से हजारगुण जादा आप हैं। और जैसे शिष्य की खोजना उपदेश हुवा उस से कुछ जादा दास भी है। यह संयोग प्रारब्ध के योग से बहुत अच्छा मिला है। और जो आप विचार करेंगे वो जरूर होगा। पैंतालीस महात्मा गुरु का उपदेश हो चुका। जो महात्मा ब्रह्म का लक्षण कहता है वो सुनकर परम आनंद हो जाता है। परंतु जब विचार करिके शंका की जाती है तब वो मिथ्या हो जाते हैं। आपने नाम को ब्रह्म कहा और बहुत प्रकार का दृष्टांत और बोध दिया, परंतु खंडन होने के पीछे मिथ्या हो जावेगा। आप लोग बात जानते हैं। बात का भेद नहीं जानते। नाम शब्द स्वतः नहीं है रूप आधीन है। जैसे परमेश्वर का नाम जपो विद्वान् विचार करेंगे। मेरा नाम घर में और था, सरकार में और था, अब और है। नाम चिन्ह है, जैसे पलटनवालों का नाम दूसरा होता है, और अक्षर आधीन है। कदाचित् अक्षर न होवे तौ नाम या कोई शब्द उच्चारण न होवे। छोटी जातवाले लडका लडकी का नाम अविचार से रखते हैं। कोई नाम दुष्ट है। कोई सज्जन है, नाम कुछ पदार्थ नहीं

है । ब्र-

नाम डूब जाता है।
नाम में बट्टा लगता है। नाम की निंदा होती है। जिस योनि में नाम नहीं है उस में ब्रह्म का अनुभव किस प्रकार से होगा। जो मनुष्य विद्या के अधिकारी हैं उन के सतसंग में नाम का चर्चा है। नाम को ब्रह्म कहना अपराध है। तब महात्मा गुरु बोले कि ऐसा झगडा ब्रह्म ज्ञान का देखने में नहीं आया, और सब ग्रंथ वेदांत के सरिता समान हैं। ये अभिलाखसागर महासिंधु है। इस के पार जाना कठिन दुर्गम है। मेरे को दृढ ज्ञान हो गया था कि मैं तत्व पद को जानता हूं। वो ज्ञान आज जाता रहा। तुमारे विचार से नाम ब्रह्म नहीं है, और यथार्थ में अक्षर आधीन है, परंतु एक उपदेश करता हूं कि यहां से थोडी दूर पर आगे एक पर्वत है। तुम को रास्ता में मिलेगा। उस पर एक महात्मा सिद्ध जिन के पास देवलोक से देवता आते हैं, वो विराजमान है, कदाचित् उन की कृपा तुह्मारे ऊपर होवेगी तो तुह्मारा सब भ्रम दूर हो जावेगा।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद दशवें तरंग में पहिली लहरी ब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

॥ दूसरी लहरी ॥

प्रत्यक्ष दर्शन हुवा।

अथ श्रीहनुमते नमः॥ जब नाम ब्रह्म भी खंडन

मिथ्या हुवा। दुनियां में कोई उद्यम करके पडे रहते। धनपरवार भोग का सुख प्राप्त होता। ब्रह्म की खोजना में बुढे हो गये। अब ब्रह्म में भ्रमका ज्ञान प्राप्त हुवा। ऐसी ग्लानि करिके चला जाता था। कि, उसी पर्वत पर कुछ दूर से धूम नजर आया। मैं वहां गया तो बहुत अच्छा एक बंगला रंगीन पत्थर का बना हुवा है। उस में पलंग चांदी का बहुत मनोहर बिछा हुवा है। बहुत भक्त लोग सेवा में बैठे हैं। स्वामी जी विष्णुस्वरूप विराजमान हैं। दश पांच चेला अधिकारी अपने २ काम में लगे थे। मैं साष्टांग दंडवत् किया। महात्मा गुरु ने बडी कृपा से मेरा हाल पूंछा। मैं ने सब हाल अपना कहा। तब महात्मा गुरु बोले कि नाम ब्रह्म जरूर है, परंतु ये काम जल्दी का नहीं है। बहुत काल सतसंग होगा तब तुह्मारी शांति होगी। वो महात्मा गुरु जिन ने नाम को ब्रह्म कहा था हमारे गुरु भाई हैं। शंका समाधान करना सिद्ध का काम है। पहिले तुम इस पहाड पर एकांत में एक स्थान अपने रहने के वास्ते बनाओ। और अपना चित्त एकाग्र करिके उस में रहो। पीछे जैसा हम उपदेश करेंगे वैसा करना। मैं महात्मा गुरू की आज्ञानुसार एक फूस का बंगला उसी पहाड पर अच्छे मोके से एकांत सतसंग योग्य बनवाया। पचास रुपैया उस में खर्च हुवा। महात्मा गुरु ने अपने पास से दिया। मैं उस स्थान में आनं-

द से भजन करता रहा। महात्मा गुरु नित्य आठ बजे दि-
न को आवें। बारा बजेतक मुझ को कुछ उपदेश करें।
पीछे रात को आठ बजे आवें। बारा बजे राततक ज्ञान
ध्यान बतावें। छः मास इसी प्रकार नित्य सत्संग रहा।
जो महात्मा गुरु ने तेरा(१३) प्रश्न किये वे सूक्ष्म कहता हूं।
पहिला प्रश्न ये किया कि, ब्रह्म निराकार अथवा साकार।
जिस को तू जानता है वो क्या पदार्थ है, और तू जो चा-
हता है वो कौन है। दोनों का तत्वभेद जैसा तुह्मारे मन में
आवे सो कहो। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि ब्रह्म का स्वरूप
कुछ नहीं है। और मेरे स्वरूप का भी कुछ पता नहीं है।
निश्चय करिके दोनों नाम प्रसिद्ध हैं। या में वो सिद्ध हो
ता है। इस का भेद कठिन है। मैं और ब्रह्म दोनों नाम हैं।
दूसरा प्रश्न ये किया कि जब तू गर्भ में रहा तथा पैदा
हुवा या बालक रहा, उस समय कैसा रहा। और अब कै-
सा है। मैं ने कहा कि जब गर्भ में था तब कुछ नहीं था।
पैदा हुवा तो बच्चा अज्ञान रहा। जब नाम हुवा तो मैं अ-
भिलाखदास होगया। अब मैं नाम हूं ऐसा सिद्ध होता है।
तीसरा प्रश्न ये किया कि जो कोई किसी को पुकारता है तो
वो बोलता है। दोनों में जो शब्द उच्चारण हुवा उस का
भेद कहो। मैं ने कहा कि रामदास ने शामसुंदरदास को
पुकारा उस ने हां कहा। ये शब्द उच्चारण का भेद हुवा।
महात्मा गुरु बोले कि शामसुंदरदास नाम है या सरूप

है। मैं ने कहा नाम है। [illegible]
को हां कहने की सामर्थ नहीं [illegible]
नाम आधीन है। और सरूप को न [illegible] का ज्ञान है। चौथा
प्रश्न ये किया कि एक पुरुष को तू पहिचानता है, नाम
उस का नहीं जानता । दूसरे पुरुष का [illegible]
सरूप का पहिचान नहीं। कदाचित् दोनों अपने से विछड
जावें तो किस को ढूंड सकता है। मैं ने कहा कि जिस का
नाम जानता हूं उस को ढूंड सकता हूं। अनाम की खो-
जना नहीं हो सकती । पांचवां प्रश्न ये किया कि कोई
कर्जा लेनेवाला रुपैया लेवे और कागद लिख देवे उस
पर अपनी तसबीर बनावे तथा अपने शरीर का रुधिर
उस पर छिडक देवे तो कागद पक्का होवे या नहीं । मैं ने
कहा जब नाम उस पर लिखा जावेगा तब पक्का होगा।
कचेरी सरकार में नाम प्रधान है । छठवां प्रश्न ये किया
कि मानुषयोनि और पशुयोनि में क्या भेद है। अच्छी त-
रह विचार करिके कहो। मैं ने विचार से देखा तो निद्रा
मैथुन आहार हर्ष भय प्रकृति उत्पत्ति जीवन मरण दोनों
को समान हैं। मैथुन सृष्टि से दोनों की उत्पत्ति है। केवल
ये भेद है कि जानवर को नाम नहीं है । आदमी को नाम
है। और सब काररवाई व्यवहार बराबर है। दोनों में नाम
का भेद है। महात्मा गुरु से ये विचार कह दिया कि, प-
शुयोनि और मानुषयोनि में नाम का भेद है। सातवां प्रश्न

ये किया कि जो कर्म से होता है उस का

पीछे उस कर्म के कौन पाता है। मैं ने कहा कि सब

अग्नि वायु निराकार में लय हो जाती है।

होकर मिल जाता है। नाम बना रहता है।

नेकनामी बदनामी नरक स्वर्ग नाम को होता है। आठवां

कि जो मंत्र किसी को वश कर-

उच्चाटन मारन करता है तथा देव-

के ऊपर कर्ता है तो किस तरह

करता है। मैं ने कहा कि उन के नाम पर कर्ता है। जब

नाम वश हो गया तब स्वरूप आप वश हो जाता है। प-

रमेश्वर भी नाम लेने पर प्रगट होता है। आठ प्रकार का

मंत्र यंत्र तंत्र नाम पर होता है। नवां प्रश्न ये किया कि

नप्रस्थ संन्यास परमहंस पांचों आश्रमवाले किस का रटन

करते हैं। और शैव वैष्णव शाक्त अर्थात् योगी जंगम से

बडा नाथ उदासी कबीरपंथी दादूपंथी सत्तनामी रामस-

नेही परनामी मानभाउ किस का भजन करते हैं। विचार

करिके कहो। मैं ने कहा कि सब नाम रटन करते हैं। और नाम

का भजन करते हैं। प्रत्यक्ष सरूप की पूजा कोई नहीं क-

रता। दशवां प्रश्न ये किया कि तुम अयोध्या में रहते हो। काशी

में तुह्मारे सेवक और चेला ने तुह्मारा नाम लेकर कुछ साधन

किया वो सिद्ध हो गया। और शरीर से तुम ने उपकार किया नहीं हुवा। तो कौन बडा हुवा। मैं ने कहा कि नाम बडा हुवा।
[illegible] किया कि ब्रह्म निराकार आकार होकर
[illegible]
[illegible] करे। और नाम प्रगट होने पर कदाचित् नीच योनि भी होवे सूकर आदिक तो सब कोई पूजा करे सेवा करे। झाड मशान आदिक में देव का नाम प्रसिद्ध हो जाता है, तो यात्रा मेला लगता है। मैं ने कहा कि इस सिद्धांत में भी नाम प्रसिद्ध होता है। बारहवां प्रश्न ये किया कि कोई महाजन करोडपति दूसरे शहर में जावे अपने सरूप के विश्वास से एक रुपैया उधार मांगे कोई न देवे। नाम से हुंडी लिख देवे लाखों रुपैया मिल जावे। कौन बडा हुवा। मैं ने कहा कि नाम बडा हुवा। यही दृष्टांत हाकिम पर जानों। तेरहवां प्रश्न ये किया कि नाम का भेद और रूप जो तेरे ज्ञान में आता है वो कहो। मैं ने कहा कि नाम का रूप अक्षर दरसाता है। और अक्षर का रूप शब्द दरशाता है। शब्द का रूप आकाश अनुभव होता है। आकाश का रूप नाम और कुछ रूप आकार साकार नहीं है। आकाश केवल नाम है। ये तेरह (१३) प्रश्न महात्मा गुरु ने किये और कहा कि, कुछ काल इस का विचार करो। जो जो शंका तुह्मारे ज्ञान में आवे [illegible] होकर करो। जो पदार्थ निराकार है तथा शब्द है

है दी

से नहीं होगा। त

ता है। निराकार का नहीं। जैसे आकाश के शरीर नहीं है। नाम और गुण है। उसी तरह ब्रह्म नाम है। विचार करो। मैं इस तेरह (१३) प्रश्न को विचार की आंख से देखा तो अणुप्रमाण नाम ब्रह्म होने में शंका नहीं रही। ये सिद्धांत ऐसे अचल है कि अज्ञानी को भी ब्रह्म का ज्ञान हो जावे। लवलेश शंका न रहे। ऐसा सिद्धांत ब्रह्मज्ञान का अनुभव सहित आजतक देखने में नहीं आया। अनेकन ग्रंथ वेदांत के आचार्यों ने बनाये, परंतु ऐसी शांति किसी में प्राप्त नहीं होती। मेरे ज्ञान में नाम के सिवाय और कोई ब्रह्म नहीं है। परंतु एक संदेहनाश नहीं हुआ ये कि नामरूपी ब्रह्म जगत् का कर्ता नहीं हो सकता। तब महात्मा गुरु बोले कि संपूर्ण सृष्टि अनादि है। इस की आद् अनुमान करना मूर्ख का काम है। मनुष्य सृष्टि और पशु समान दोनों जंगल में रहते थे। उन को कुछ ज्ञान अक्षर का नहीं था। निद्रा मैथुन आहार जानते थे। जैसे अब भी बहुत टापू में मनुष्य पशुसमान पहाडों में रहते हैं। बहुत काल पीछे जिस की संख्या कहने में कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण नहीं है, आर्या देश में संस्कृत विद्या उत्पन्न हुई। तैसा आठ तरंग में नास्तिक मतवाले ने वर्णन किया। उस विद्या के आधार से ब्रह्म माया और जगत तीन नाम प्रधान

वे। पीछे चौ सी ल

रक्खा गया। और अनेकन ग्रंथ स

से ब्रह्म का नाम प्रगट हुवा तब से ब्रह्म हुवा। कदा वो कुछ हो, इसी तरह जगत और माया का जिस वक्त नाम रक्खा गया, उसी वक्त वो भी उत्पन्न हुवा। अथवा जिस रोज तुह्मारा नाम रक्खा गया उस रोज तुह्मारी उत्पत्ति हुई। जिस पदार्थ का नाम जब रक्खा गया तब वो पदार्थ उत्पन्न हुवा। जबतक नाम नहीं होगा वो कुछ पदार्थ अनुमान नहीं होगा। ये सिद्धांत अशंक है। पुराण आदिक में जो कथा लिखी है वो बहुत दिन पीछे की है। उस में गुप्त अर्थ और है। अब भी कवी लोग पुराणी कथा को छंद चौपाई में कह देते हैं, तो वो काव्य पुराणी दरसाती है। लंडन में दो हजार बरस से विद्या हुई। अर्बस्थान पारस में सात हजार बरस से विद्या हुई। हिंदुस्थान में बहुत पहिले हुई। जब से अक्षर शब्द हुवा तब से ब्रह्माण्ड हुवा। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि ये सिद्धांत मेरे ज्ञान में दृढ हो गया कि, जब अक्षर हुवा तब से शब्द हुवा। और जब शब्द हुवा तब नाम हुवा। जब नाम हुवा तब सर्व पदार्थ का अनुभव हुवा। इस ज्ञान से नामरूपी ब्रह्म जगत् का कर्ता हुवा। परंतु एक संदेह और है कि नामरूपी ब्रह्म का भजन करने से क्या अर्थ सिद्ध होगा। अपना कुछ भला बुरा वो ब्रह्म कर सकता है या नहीं। तब महात्मा गुरु बोले कि प्रत्यक्ष देखो।

गुरु नानकशाह साहेब दादु साहेब कबीर साहेब शंकरस्वा-
मी रामानंदस्वामी तुलसीदास सूरदास पलटुदास ऐसे अनेक
महात्मा कलियुग में नाम के आधार से ब्रह्मसमान पूजे जाते
हैं।इस के सिवाय और क्या अर्थ सिद्ध होगा। वर्तमान में गुरु
माधवदासजी युगलानंदजी रघुनाथदासजी तिवारी–उ-
मापतजी बावा रामप्रसादजी अयोध्या में देवता समान
हो गये। नामरूपी ब्रह्म से सब अर्थ सिद्ध हो सकता
है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि मुझ को अब कोई
शंका नहीं है। सर्व मोह संदेह भ्रम वासना शंका ना-
श हो गया। निष्काम शांति ज्ञान बोध प्राप्त हो गया। ये
सब आप की कृपा है। मेरे को प्रत्यक्ष ब्रह्मप्राप्ति का
आसरा हो गया। तब महात्मा गुरु बोले कि श्रवण मन-
न अभ्यास का बीज सतसंग है। और तीनों मूल हैं।
उस में ज्ञानरूपी झाड तीन शाखा से प्रगट हुवा। ब्रह्मज्ञा-
न आत्मज्ञान मायाज्ञान जिस को अनात्मज्ञान भी कहते
हैं। श्रवणमूल से अनात्मज्ञान हुवा। मननमूल से आ-
त्मज्ञान झाड हुवा। अभ्यासमूल से ब्रह्मज्ञान का झाड
प्रगट हुवा। उस ज्ञान का लक्षण ये है। पहिले अनात्मज्ञा-
न का लक्षण और भेद कहता हूं। जैसे जल में लहरी या
बुद्बुदा उत्पन्न और नाश होता है, उस प्रमाण पंचम-
हाभूत से चौरासी लाख सृष्टि की उत्पत्ति नाश होती है। उ-
स संपूर्ण सृष्टि में कोई छोटा बडा अधिक न्यून उत्तम

मध्यम भला बुरा नहीं है। सब की उत्पत्ति और स्थिति और नाश अद्वैत स्वरूप है। उसी को तीन गुण तीन काल कहते हैं । पंचमहाभूत अनादि हैं । उन का भेद कोई नहीं कह सकता। मैं कुछ अनुमान से कहता हूं कि पहिले आकाशरूपी ब्रह्म निर्गुण निराकार निर्विकार निश्चल निरंजन अनादि है। उस निराकार की इच्छा मूलमाया प्रकृति चलायमान होकर वायुरूप हुई। वायु आकाश से प्रकाश हुवा। उस को तेज कहते हैं। ये दोनों स्वरूप सूक्ष्म हैं। स्थूल नहीं, परंतु ज्ञान से वायुतेज का अनुभव हो सकता है। आकाश का नहीं। उस दोनों से जल पृथिवी हुवा। जो प्रत्यक्ष सृष्टि का मूल है। पृथिवी से स्वरूप, जल से बीज, अग्नि से ज्ञान, वायु से श्वासा उत्पन्न और नाश हुवा करता है। स्थूल सूक्ष्म होना अनादि जगत् का स्वभाव है। इस को अनात्मज्ञान कहते हैं। अब आत्मज्ञान लक्षण और भेद कहता हूं कि उस चारों तत्व सूक्ष्म स्थूल के भीतर या बाहिर जो आकाश तीन रूप से व्यापक है । घटाकाश मठाकाश चिदाकाश। वोही आत्मा है,वो अपनी माया को चार खान से देखकर चौरासी लाख घट में अपने अद्वैत रूप को जुदा जुदा जाना, और माया से द्वैतज्ञान दृढ होकर अहंरूपी अहंकार प्रगट हुवा। उस अहंकार से मैं मैं की कल्पना उत्पन्न होकर संकल्प विकल्प सुखदुःख भोगने लगा। परंतु आकाश के आधार विना चारों तत्व से घट की उत्पत्ति

नहीं हो सकती। इस को आत्मज्ञान कहते हैं। अब ब्रह्म-ज्ञान का लक्षण कहता हूं कि उस तीनों आकाश के भीतर बाहिर जो महाआकाश शून्य आकार है, जिस का अंत कोई नहीं जानता। उस में अथवा वो ही निर्गुण निराकार ब्रह्म मूलतत्व अद्वैत अखंड पदार्थ है। वो ही ब्रह्म है। उस का अनुभव ब्रह्मज्ञानी को होता है। सुषुप्ति अवस्था में जो सुख भोगता है अथवा पांच ज्ञानइंद्रिय में जिस की सत्ता है वो ही ब्रह्म है। उस के रंग रूप नहीं है। यथार्थ में अनुराच है। अधिकारी ब्रह्मज्ञानी निराकार नामरूपी ब्रह्म को पहिचान कर निर्गुण मुक्ति को प्राप्त होते हैं। इस को ब्रह्मज्ञान कहते हैं। इस तीनों ज्ञान के बल से तू सर्व भ्रमना को छोडकर शांत स्वरूप जीवन्मुक्त रहे। अंत में निर्गुण मुक्ति को प्राप्त होकर निराकार नामरूपी ब्रह्म में लय हो जावेगा। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि अब मेरे रोम रोम में ब्रह्म का ज्ञान व्यापक और प्रवेश हो गया। कुछ शंका संदेह नहीं रही, अब कृपा करिके केवल उस के रूप का अनुभव अथवा मरने उपरांत उस के रूप में लय हो जाने की विधि संपूर्ण प्रमाण से इस दासानुदास को उपदेश कीजिये। जिस में जन्म मरन आवागमन से रहित हो करके निर्गुण मुक्ति को प्राप्त हो जाऊं। और अद्वैत अखंड पदवी को प्राप्त होकर अभिलाखदास से अभिलाखशाह हो जाऊं। तब महात्मा गुरु बोले कि जबतक

चैतन्य शक्ति का पंचतत्त्व की शरीर से संयोग अर्थात् संबंध है तबतक उस में लय नहीं हो सकता। शरीर छोडने उपरांत कदाचित् सब संयोग मिल जावे तो हो सकता है। संयोगका विस्तार ऐसा है कि पहिले शिष्य अधिकारी संबंधी होना चाहिये। अधिकारी उस को कहते हैं कि जो चार साधन में प्रवृत्त हो। मलविक्षेप अज्ञान को छोडना चाहिये। मल निष्काम से, विक्षेप उपासना से, अज्ञान ज्ञान से नाश होता है। और चार साधन के नाम ये हैं—विवेक वैराग्य समाधि मोक्ष। आत्मा को अविनाशी अचल जानना। जगत् नाशवान जानना, ये लक्षण विवेक का है। ब्रह्मलोकतक के सुख को विष्ठा समान जानना, ये लक्षण वैराग्य का है। समाधि में छः भेद हैं शम दम श्रद्धा समाधान उपरम तितिक्षा। मन को रोकना शम है। इंद्रिय को रोकना दम है। वेद गुरुवाक्य पर निश्चय करना श्रद्धा है। मन की भ्रांति जाय वो समाधान है। साधन से विषयकर्म को त्याग करे, वो उपरम है। आतप शीत क्षुधा वर्षा एक जानकर सहन करे वो तितिक्षा है। भ्रम की नाश और ब्रह्म की प्राप्ति, उस को मोक्ष कहते हैं। इस चार साधन के मूल तीन हैं, श्रवण मनन अध्यास। तत्पद त्वंपद असिपद महावाक्य है। कोई तत्त्वमसि कहता है। इस का अर्थ अंतरंग और बहिरंग और जैसा का तैसा। विवेक आदिक अंतरंग है। युग आदिक बहिरंग है। अंतरंग

समीप बहिरंग दूर, जिस की बुद्धि में विपर्यय असंभावना नहीं है, उस को आसिपद कहना चाहिये। श्रवण बिना विवेक आदिक होवे नहीं।श्रवण सब का मूल है। ज्ञान भी श्रवण से होता है। श्रवण युगादिक बहिरंग है। उस में ज्ञान नहीं है। विवेक आदिक में है। विवेक श्रवण से होवे है। बहिरंग से अंतरंग होता है। वेद वाक्य दो प्रकार के। आवांतर वाक्य महावाक्य, उस का लक्षण ये है कि आवांतर वाक्य प्रत्यक्ष ज्ञान, है। उस का अर्थ ब्रह्म है। महावाक्य अप्रत्यक्ष ज्ञान, उस का अर्थ मैं ब्रह्म हूं। प्रत्यक्ष ज्ञान विवेक आदिक से होता है। अप्रत्यक्ष ज्ञान श्रवणआदिक से होता है। ये लक्षण अधिकारी का है। और संबंधी उस को कहते हैं कि ग्रंथ में जो जीव और ब्रह्म की एकता है वो प्रतिपादन है। और करनेवाला प्रतिपादक है। फल प्राप्य है। अधिकारी प्रापक है। जो वस्तु प्राप्त होवे प्राप्य है। और जीव ब्रह्म की एकता विषय है। अधिकार और विचार में संबंध कर्ता कर्तव्य का है।अधिकारी कर्ता हुवा। विचार कर्तव्य हुवा। ग्रंथ और ज्ञान में संबंध जन्य जनक का है। ग्रंथ जनक है। ज्ञान जन्य है। जैसे उत्पत्ति करनेवाला जनक है। जो उत्पन्न होवे सो जन्य है। जन्म मरण आवागमन की निवृत्ति ब्रह्म की प्राप्ति प्रयोजन है। इस से ज्ञान आत्मा अप्राप्त हुवा, ये शंका बने नहीं। आत्मा सदा प्राप्त है। जैसे हाथ का

दूसरे के उपदेश से पाया। रज्जू में सर्प

का भान अधिष्ठान से नाश हुवा। अज्ञान को ज्ञान होता है।
है,

[illegible]

घ्र सर्प आधिभौतिक, यक्ष राक्षस प्रेत ग्रह सीतपात आ-
धिदैविक। इन तीनों दुःख से निवृत्ति मोक्ष है। निवृत्ति
[illegible] की उत्पत्ति और निवृत्ति

अध्यास से है। इस ज्ञान का जाननेवाला शिष्य
अधिकारी और संबंधी होता है। ऐसे शिष्य को
प्रारब्ध के संयोग से सतगुरु भी ऐसा मिलना चाहिये
कि जो दूसरा व्यास हो। अठाईस ग्रंथ का सार जानता
हो। योगशास्त्र संपूर्ण अभ्यास किया हो। समा-
धि आदिक का फल पा चुका हो। निराकार ब्रह्म का भेद
जानता हो, और पंचीकरण त्रिगुण का ज्ञाता हो। संत महा-
त्मा का सतसंग कर चुका हो। चारों धाम सातों पुरी देख
चुका हो। चौदह विद्यानिधान हो। मैं ने हाथ जोडकर कहा
कि गुरु और शिष्य संयोग से दोनों अच्छे हैं। जो आप कृ-
पा करेंगे वो होगा। दास को जबतक प्रत्यक्ष ब्रह्म का अनु-
भव नहीं होगा तबतक चित्त शांत नहीं होगा। तब महात्मा
गुरु बोले कि ब्रह्म परमेश्वर भगवान् नारायण राम सर्वज्ञ
अविनाशी निर्गुण निरंजन निराकार अनंत नाम जिस के
है वो देखने सुनने सूंघने छूने छुबुकने पांचों ज्ञान में
[illegible]।। वो निराकार उपमा देने योग्य नहीं है। शरीर

ब्रह्म जो उस का अंश है और घट घट मे

में रहते हैं, वो भी यथार्थ में ब्रह्म है । परंतु वो ब्रह्म जो अपने में " जैसे वायु घटाकाश मठाकाश चिदाकाश में एक है। मैं मैं की कल्पना मिथ्या है। सब अनुभव उसी ब्रह्म निराकार का है। उस रूप में लय होने से आत्मा परमात्मा एक हो जाता है। अंत में निर्गुण मुक्ति को प्राप्त होता है। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि मुझ को प्रत्यक्ष ब्रह्म अनुभव होने की विधि संपूर्ण उपदेश कीजिये। मैं केवल उस के दर्शन का भूखा हूं। तब महात्मा गुरु बोले कि तुम को हठयोग बताना उचित नहीं है। राजयोग की विधि उपदेश होना चाहिये।दूसरा योग तुह्मारे योग्य नहीं है। ब्रह्म का प्रत्यक्ष अनुभव देखना बहुत कठिन है। जैसा मैं उपदेश करता हूं उस प्रमाण से कदाचित् चालीस दिन मन कर्म वचन से साधन करोगे तो वो प्रगट में दर्शन देवेगा।पहिले इस स्थान कोठे का परदा होना चाहिये। जिस में हवा धूप गर्द पिस्सु मछड दुखदाई जीव न आवैं१। और स्थान को अंजनी गौ के गोबर से तीन वार लीपना चाहिये। पीछे सफेद मिट्टी से ऊपर नीचे पोतना चाहिये २। और एक धोला कपडा छत में दीवाल में लगाना चाहिये। जिस में ध्यान के समय कूडा कचरा ऊपर से या बाहिर से न आवे। मक्खी मछड पि-

रसु खटमल मकोडा कोई जीव दुखदायीपास न आवें ३।
अच्छे अच्छे पात्र मृत्तिका के उस में छोटे छोटे झाड सुगं-
ध शोभावाले सर्व स्थान में रखना चाहिये। उस में जल
भरा रहना चाहिये ४। उदबत्ती लोबान कपूर धूप कस्तूरी
आदिक चालीस रोज पूजन के समय जलाना चाहिये ५।
घृत का दिपक पांच बत्ती का, पूजन के वक्त जलता रहे।
एक दीपक तिल के तेल का अष्टप्रहर चालिस रोज अ-
खंड उस स्थान में जलता रहे ६। मोगरा चमेली चंपा
गुलाब जूहि केतकी केवडा का फूल माला गुलदस्ता नि-
त्य नया आना चाहिये ७। एक चौकी चंदन की आसन
प्रमाण बहुत सुंदर बनवाना चाहिये। एक वाघंबर जो
संपूरण नख शिख से हो, उस पर बिछाना चाहिये। उस
के ऊपर पंचरंगी आसनी बहुत मुलाईम ऊन की बिछा-
ना चाहिये ८। अपने पहरने के वास्ते एक जोडा
धोती दुपट्टा रेशमी पीतवर्ण, पूजन के वास्ते मंगाना
चाहिये ९। नैवेद्य के वास्ते कृष्णा गौ का दूध एक सेर
मिश्री पावसेर चावल छटांक मेवा छटांक उस की खीर
देवनिमित्त निराकार अर्पण करिके एकवार तारा देखकर
भोजन करना चाहिये १०। पीछे पान इलायची जावित्री सब
मसाला संयुक्त दो बीडा पान का खाना चाहिये ११। अबीर
अरगजा अतर कस्तूरी केसर आदिक शरीर और
वस्त्र में लगाना चाहिये। ऐसा सब सामान चालीस रोज के

वास्ते जमा करना चाहिये १२। पीछे अच्छा दिन विचार करके पूजा आरंभ करे। नित्य प्रहर रात्र बाकी रहे उठे। झाडा जंगल जावे। दंतमंजन करे। सूक्ष्म गजकरण क्रिया करे। गरम जल में भागीरथी गंगा जल थोडा छोंडे। शुद्ध होकर स्नान करे। पांव में खडाऊं राखे। स्थान का दरवा-जा भीतर से बंद कर लेवे। कोई नादान आते जाते पुकारे नहीं। वो रेशमी वस्त्र पहर करिके उस चौकी पर सिद्ध आसन बैठे। कंगा से केश आदिक को सफा करे। अष्टगं-ध का तिलक लगावे। बांस की पत्ती समान खडा धूपदानी दीपदानी अच्छी तरह जलती रहे। पहिले आसनशुद्धि का मंत्र पढे। पीछे शरीररक्षा पढे। फिर विघ्ननिवारण पढे। चंद्र सूर्य की नाडी एक करिके सुषुम्ना नाडी को चलावे। पद्मासन लगावे। उन्मनी मुद्रा धारण करे। सद्गुरु का मंत्र जो कान में अथवा एकांत में बताया हो वो ही गुरु गायत्री है। उस को अजपा जाप करे। श्वासा में ओहं सोहं का व्यवहार रक्खे। गुदा मुख से श्वासा बंद करे। मन की संकल्प विकल्प को नाश करे। चित्त श्वांसा में रक्खे। बुद्धि दृष्टि में रक्खे। सतोगुणी अहंकार को अपना रूप जानकर ज्ञानदृष्टि से देखे। शरीर को ब्रह्मांड जाने। ब्रह्मांड को ब्रह्मलोक जाने। हम अहं-कार को नाश करे। शुद्ध चैतन्य जो संकल्प विकल्प से रहित है उस को अपना रूप जाने। नासिकाग्र में ध्यान

राखे। दृष्टि बंद करे। उलटा हृदय को देखे। गुदा स्थान से नेत्रस्थान तक षट् चक्र हैं। उन में बावन कमलदल हैं। पंच-प्राण पंचवायु अंतःकरणपंचक पच्चीस प्रकृति सब का स्वरूप और गुण दरसावेगा। पंच विषय पंच ज्ञानेंद्रिय पंच कर्मइंद्रियों को भूल जावे। हृदय को अच्छी तरह ध्यान करे। श्रवणमार्ग को रुई से बंद कर देवे। आंख को पलक से, नाक को अंगुलि से, मुह को हाथ से, त्वचा को चित्त से रोके। श्वासा प्रमाण से खींचकर रोके। जब श्वासा ब्रह्मांड में स्थिर हो जावे तो जिव्हा से तालमा को बंद करे। तुरीया अवस्था ग्रहण करे। अष्टदल चक्र ब्रह्मांड में है, उस को देखे। पहिला अठवाडा ये ध्यान दुःख देवेगा। शरीर में अनेक प्रकार की पीडा प्रगट होगी। प्राण घबरावेगा। दूसरे अठवाडा में मनोहर भयानक शांत अनुभव बहुत दरसावेगा। उस समय भयमान नहीं होना चाहिये, और चित्त चलायमान न होना चाहिये। साधन को कम सिवाय न करना चाहिये। तीसरे अठवाडा में गुदास्थान से हृदय कंठ स्थान तक सूक्ष्म प्रकाश दरसावेगा। चौथे अठवाडा में ब्रह्मांड का प्रकाश और हृदय का प्रकाश दोनों एक होकर करोड सूरज के समान चमत्कार दरसावेगा। द्वैतबुद्धि और भ्रम नाश हो जाता है। दिव्य रूप दिव्य दृष्टि दिव्य बुद्धि प्राप्त हो जाती है। अपने रूप का भान भूल जाता है। पांचवें अठवाडा में प्रत्यक्ष साकार रूप

जैसा मैं उपदेश कर चुका हूं अनुभव होगा। चालीस दिन में मनोरथ की सिद्धि हो जाती है। नित्य सूरज के उदय से अस्ततक ये ध्यान रखना चाहिये। पीछे तारा देखकर भोजन करे। एक प्रहर शरीर को आराम देवे। प्रहर रात्र व्यतीत होने उपरांत संध्या पूजा का ध्यान करे। बारह बजे से चार बजे तक उसी चौकीपर शयन करे। चार बजे फिर वो ही नित्य कर्म ऊपर लिखे प्रमाण करे। इस प्रकार से चालीस दिन तक अनुष्ठान करता रहेगा, तो मनोरथ सिद्ध होवेगा। गर्मी का दिन होवे तो पंखा, फराशी, ठंड का दिन होवे तो लोह की अंगीठी, जिस में कोईला निर्धूम भरा हुवा हो, सन्मुख रक्खे। जाप के वास्ते मूंगा की माला या मोती की माला अष्टोत्तरी हाथ में रक्खे। चालीस दिन पीछे कदाचित् अपना मनोरथ सिद्ध हो जावे तो एक भंडारा संत महात्माओं का करना होगा। और ये गुप्त ध्यान जो हम, ने बताया, किसी को प्रगट न करना। कदाचित् कोई शिष्य शुद्धआचरण का तत्वज्ञानी होवे तो उस को गुप्त उपदेश करना। ये उपदेश संपूर्ण मुक्तिदाता है। जो सतोगुणी अहंकार शरीर में परमेश्वर का अंश है। वही परमात्मा से मिलकर अपनी भावना को शांत करता है। अथवा जो चैतन्यशक्ति शरीर में है, वो सर्व शक्ति से मिलकर अपना निराकार रूप रखकर प्रगट होती है अनुभव, इस के सिवाय और जो महात्मा गुरु ने ब-

ताया सब सामान बहुत द्रव्य खर्च करके मंगाया और अच्छी सायत देखकर साधन का आरंभ कर दिया। उस वक्त चार चेला मेरे साथ थे। पहिले अठवाडा में ऐसा दुःख मालूम हुवा कि उस दुःख की सहन कोई नहीं कर सकता। हजार विछु मारनेके बराबर शरीर में दुःख हुवा। पीछे दूसरे अठवाडा में वो दुःख जाता रहा। परंतु भयानक मनोहर चमत्कार हजारों दरसाया। मैं गुरु की कृपा से कुछ भयमान नहीं हुवा। पीछे तीसरे अठवाडा में वो चमत्कार शांत हुवा, और गुदास्थान से हृदय तक सूक्ष्म चमत्कार चंद्रसमान दरसाया। और रोम रोम का ज्ञान हो गया। शरीर मध्ये जो जो भेद गुप्त था सब देखने में आया। चौथे अठवाडा में वो प्रकाश ब्रह्मांड में पहुंचकर करोडों सूरज के समान हो गया। अपने शरीर के भीतर सात आकाश सात पाताल संपूरण मृत्युलोक सातों समुद्र सूरज चंद्रमा सब देखने में आये। उस प्रकाश को देखकर मैं अपने को भूल गया। सहज समाधि लग गई। सुषुम्ना नाडी दिनरात चलने लगी। ओहं सोहं श्वासा में सरूपमान हो गया। एक आसनपर आठ दिन मुर्दा समान बैठा रहा। निद्रा क्षुधा आहार तृष्णा आलकस का ज्ञान जाता रहा। पांचवें अठवाडा में मुझ को सर्वव्यापक ब्रह्म का दर्शन हुवा। अथवा आत्मा जीव ने परमात्मा ब्रह्म का दर्शन पाया। तथा द्वैत का भ्रम जाता रहा। उस मोहनी स्वरूप की शो-

भा देखकर मैं ऐसा मोहित हो गया कि आठ दिनतक आंख नहीं खोला। वो सोला दिन मेरे को समाधि में व्यतीत हो गये। श्वासा चौथे शुन्न में जाता रहा। सतरावीं कला जोती कला ब्रह्मगुफा ब्रह्मरंध्र सब गुप्त स्थान प्रगट हो गये। चक्रों में जो देवता वा ऋषि हैं, मेरे को दंडवत प्रणाम किया। पांचों मुक्ति, पांचों आनंद, पांचों अहंकार का सुख तुच्छ दरसाया। चारों अवस्था चारों शरीर की नाश होकर केवल ज्ञानस्वरूप निर्मल अवस्था हो गई। चौदह भवन, तीनों लोक, चौराशी लाख सृष्टि का ज्ञान नाश होकर, सर्वंग प्रकाश दरसाया। जो सुख इंद्र को है वो सुख उस से हजारगुणा जादा प्राप्त हुवा। अपना स्वरूप आनंदस्वरूप हो गया। जब सोला दिन मैं बाहिर नहीं निकला, तब एक चेला मेरा बहुत घबडाकर महात्मा गुरु के पास गया। और सब हाल मेरा कहा। तब महात्मा गुरु भी बडी चिन्ता में हुवे जलदी से आयकर स्थान का दरवाजा बाहिर से खोला और योग की युक्ति से मेरे प्राण को ब्रह्मांड से शरीर में उतारा। और बहुत धीरज से मेरे को चैतन्य किया। उस समय में उस ध्यान छूटने से बहुत दुःखी हुवा, और क्षुधा तृषा के कारण गिर पडा। शरीर को बैठे रहने की सामर्थ्य नहीं रही। तब महात्मा गुरु ने उठाकर मेरे को गोद में बैठाया। कुछ दूध शक्कर घी गरम करके पिलाया। तब मुझ को होश आया। और कुछ

शांति हुई। महात्मा गुरु को पहिचानकर उन के चरण-कमल को मथ्था टेक करिके विनंती किया कि आप की कृपा से मेरा मनोरथ सिद्ध हो गया। जो पदार्थ मैं सारी उमर चारों दिशा में खोजता रहा, वो आप की कृपा से अब प्राप्त हुवा। अब मेरे को सात स्वर्ग का सुख तुच्छ द-रसाता है। मैं तत्वपद को प्राप्त हो गया। जो पदार्थ देव-ता सिद्ध ऋषि मुनि सदा खोजते रहते हैं। जल्दी प्राप्त नहीं होता। वो पदार्थ मेरे को आप की कृपा से प्राप्त हो गया। अब मैं निर्भय निष्काम परमानंद में मग्न हूं। तब महात्मा गुरु बोले कि तेरे को जो स्वरूप देखने में आया, उस रूप की शोभा कुछ सूक्ष्म वर्णन करो। मैं ने हाथ जोडकर कहा कि कदाचित् चौरासी लाख जन्म लेकर मैं उस आनंद और सुख को कहूं तौ भी पूरा नहीं हो सकता। आप अंतर्यामी हैं। आप को सब दरसाता है। मेरे को जो दरसाया वो भी आप की कृपा से हुवा। मैं अ-पने रूप को देखकर मस्त हो गया। मेरा रूप बहुत सुंद-र शृंगार आदिक से संयुक्त मेरे देखने में आया। अर्थात् ब्रह्म निराकार परमात्मा का प्रत्यक्ष अनुभव आत्मा ने पाया। मैं ज्ञानी हूं। मेरा रूप निश्चय करिके ब्रह्म है। ये मेरे को दृढ निश्चय हो गई। कदाचित् जगद्गुरु मेरे को दूसरा उपदेश देवें मैं नहीं मानूंगा। आत्म प्रचीती गुरुप्रचीती शास्त्रप्रचीती तीन प्रकार की निश्चय है। मेरे को संपूरण

तीनों प्रकार से निश्चय हो गई । जब पांचवें अठवाडा में करोड सूरज के समान प्रकाश हो गई। और मैं उस प्रकाश में तदाकार हो गया। उस समय एक पुरुष उत्तम वर्ण शाम रंग अलसी के फूल समान बडे बडे रत्नारे आंख रसीली जादु भरे, कुंदुरु समान अरुण पतले पतले ओंठ, अमृत भरा हुवा तोता के ठोड समान लंबी ऊंची नाक, गुलाब के फूल समान गोल गोल कपोल, उस पर काला तिल, भँवर समान बांकी तिरछी भौंह बिच्छू के डंक समान बरोंणी । जिस के देखने से काम का जहर चढ जावे । छोटे छोटे कान, जिस में जडाउ बाला मोती मानक के पडे हुये । शिर पर एक दुपट्टा रेशमी कामदार जरी का बंधा, ललाट पर केशर का तिलक, खडा बांस की पत्ती समान कमलनाल समान हाथ, लंबे लंबे गोल गोल जिस में हीरा आदिक का नवरतन जडावु भुजदंड, कलाई में जडावु पंहुची, अंगुली में लाल मानीक हीरा की मुद्रिका, गले में हीरा मानीक, नीलम का कंठा, सुवर्ण का जनेउ, चौडी छाती, पतली कमर, गंभीर नाभ, रेशमी पीतांबर की धोती, कामदार चोलना, जरी का चांदी की पांवडी, हाथ में सुवर्ण की छडी, मुख में पान का बीडा, मोती समान दांत, नारंगी समान ऐंडी, नख की उजियारी दुईज के चन्द्र समान, कोकिला शब्द, सिंह हठवन, किशोर अवस्था, बहुत शोभायमान, शांतरूप, मोहनी स्वरूप, लंबे लंबे काले बाल नाग स-

मान घुंघरवारे, पूरण चंद्र समान मस्तक, वृषभ कंध ऐसे और अनेक शोभा से संयुक्त ऐसा मेरा रूप उस प्रकाश में प्रकट हो गया। उस रूप का दर्शन करिके मैं अपने को भूल गया। अथवा मेरा चैतन्य उस रूप में समा गया। ये पंच महाभूत का पिंजरा मुर्दा के समान श्वासारहित दो अठवाडा बैठा रहा। उस का धनी मैं सतोगुणी अहंकार से अपने असली स्वरूप अविनाशी प्रकाशमान में बहार करता रहा। स्वर्ग, नरक, वैकुंठ, ब्रह्मलोक, शिवलोक, इंद्रलोक, सूर्यचंद्रलोक अनेकन लोक मेरे को प्रत्यक्ष दरसाया। मेरी दिव्यदृष्टि चौदह भुवन में सर्वग हो गई। कदाचित् आप योग की युक्ति से मेरे को इस शरीर में न लाते तो मैं कोट जन्म नहीं आता । तब महात्मा गुरु बोले कि अब उस रूप को दृढ करिके हृदय में रक्खो । सर्व पूजा पाठ भजन कीर्तन प्रगट में जो करते हो छोडो। केवल उस रूप का ध्यान करो । निर्भय होकर जहां चाहे वहां रहो। मन में दया रक्खो। आत्मा सर्वज्ञ एक है। उपकार करना धर्म का मूल है। इसी प्रमाण अनेक सिद्धांत का उपदेश करिके बहुत प्रसन्न होकर मेरे को अपनी छाती से लगाया। हाथ पांव माथा चूमा, और बहुत भांति का आशीर्वाद और वरदान देकर पीठ ठोककर देखते देखते अंतर्ध्यान हो गये। मैं पीछे उन के एक भंडारा यथाशक्ति प्रमाण उस जगह किया। अच्छे अच्छे संत महात्मा जो उस पर्वत पर र-

हते थे सब कृपा करके आये। आठ दिन उत्साह रहा। पांच हजार रूपैया उस भंडारे में खर्च हुवा। जो कुछ ज्यादाद अपने पास थी सब खर्च कर डाला। सब की पूजा करिके बिदा किया। पीछे सब साधन भजन स्मरण जो नित्य कर्म करता रहा सो त्याग दिया। केवल उस मोहनी रूप को हृदय में दृढ कारिके पकड लिया, और महात्मा गुरु के रूप को भी ध्यान में रक्खा। जिस की कृपा से सर्व मनोरथ सिद्ध हुवा। भविष्य में मेरे को आसरा है कि शरीर छूटने उपरांत मेरा चैतन्य उस रूप में लय हो जावेगा। वो मेरा रूप सर्वसृष्टि व ब्रह्मांड का कर्ता है, और मूल है। श्रोता, वक्ता जन ज्ञान के अधिकारी भक्ति प्रेम के संबंधी मेरे अविचार और मूर्खता और अवगुण को विचार न करिके इस ग्रंथ अभिलाखसागर में जो सार चीज पदार्थ निर्मल उत्तम देखें हंसरूपी ग्रहण करें। जलरूपी असार वार्ता को त्यागन करिके मेरे सर्व अपराध को क्षमा करें। और सिद्धांत में यह ग्रंथ सिद्धांतसागर जानकर सिद्धांत अर्थ ग्रहण करें।

इति श्रीग्रंथ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद दशवें तरंग में दूसरी लहरी प्रत्यक्षब्रह्मविचार नामनिरूपण संपूर्ण।

इति दशवां तरंग समाप्त॥ १०॥

अथ ग्यारहवाँ तरंग प्रारंभ।

प्रत्यक्ष अनुभव वर्णन।

अथ श्रीभागीरथ्यै नमः। अब ग्रंथ श्रीअभिलाख सागर गुरुशिष्य का संवाद, वेदांत का मूल, ज्ञान का सिंधु, दश तरंग में समाप्त हुवा। उस के पीछे एक तरग सिद्धांत ब्रह्मज्ञान का केवल शिष्य अभिलाखदास अपने ज्ञान व विचार से जो प्रत्यक्ष अनुभव में आया सूक्ष्म वर्णन करता हूं। श्रोता जन ज्ञानअधिकारी बहुत सावधान होकर चित्त एकाग्र करिके श्रवण करें।(१) जगत् अथवा ब्रह्मांड तथा संसार का आद् अंत मध्य कोई नहीं जानता१। आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी पांचों तत्व का भेद कोई नहीं जानता२। चौरासी लाख सृष्टि का भेद कोई नहीं जानता ३। सूरज, चंद्र, तारा, बिजली, धनुष आदिक अनेक चमत्कार का भेद कोई नहीं जानता४। तीन प्रकार के काल, छः प्रकार की ऋतु जो होती है उस का भेद कोई नहीं जानता५। निद्रा, मैथुन, क्षुधा तीन प्रकार की प्रकृति, जीवमात्र को है। उस का भेद कोई नहीं जानता६। नाम, जीव, शरीर तथा ब्रह्म, माया, जगत् क्या पदार्थ है, कोई नहीं जानता ७। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध पांच विषय का भेद कोई नहीं जानता८। काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद पांचों विकार का भेद कोई नहीं जानता९। पांचों शरीर पांचों अवस्था का भेद कोई नहीं जानता१०। अंडज,

पिंडज, ऊष्मज, स्थावर, मेघ, पांच योनि का भेद कोई नहीं जानता ११। बारा राशि,नव ग्रह, नक्षत्र,योग, करण क्या पदार्थ है; कोई नहीं जानता १२। सर्व प्रकार के देवता, दैत्य जो गुप्त योनि हैं, सच्च हैं, या झूठ हैं। कोई नहीं जानता १३। प्रथम बीज है अथवा झाड है कोई नहीं जानता १४। चुंबक पत्थर लोहा खींचता है । पारसपत्थर लोहा को सोना-करता है। कारण कोई नहीं जानता १५। भृंगी कीडा को भृंगी करता है। उस का भेद कोई नहीं जानता १६ ॥ यावत् व्यवहार इस ब्रह्मांड में जो हो चुका और होता है। उस का भेद कोई नहीं जानता । इस भेद का जाननेवाला अबतक कोई नहीं हुवा और आगे भी नहीं होगा। जो काम कभी नहीं हुवा और किसी से नहीं हुवा वो अब भी नहीं हो सकता। (२) जो अबतक किसी के जानिवे में नहीं आया वो अब भी नहीं आवेगा १। जो अनहोनी बात है वो होवंत नहीं होगी २। जो होवंत है वो अनहोनी नहीं होगी ३। जो प्रमाण है वो अप्रमाण नहीं होगा ४। जो अप्रमाण है वो प्रमाण नहीं होगा ५। जो साकार है वो निराकार नहीं होगा ६। जो निराकार है वो साकार नहीं होगा ७। जो भूत वर्तमान में नहीं है वो भविष्य में नहीं होगा ८। जो अचल है वो चलायमान नहीं होगा ९। जो विष है वो अमृत नहीं होगा १०। जो गुप्त है वो प्रगट नहीं होगा ११। जो अंधकार है वो प्रकाश नहीं होगा १२। जो निर्गुण है

वो सगुण नहीं होगा १३। जो शांत है वो भ्रमित नहीं होगा १४। जो शुद्ध है वो अशुद्ध नहीं होगा १५। जो ज्ञान है वो अज्ञान नहीं होगा १६। जो काम अनादि जगत् का संयोग वियोग आधीन जैसा चला आता है चला जावेगा,ये सिद्धांत अचल है। (३) संयोग वियोग सृष्टि का मूल है। जगत् की उत्पत्ति नाश संयोग से है १। चौरासी लाख का जन्म मरण संयोग से है२। स्त्रीपुरुष होना संयोग से है ३। ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र होना संयोग से है ४। राजा प्रजा साधु होना संयोग से है ५। मूरख ज्ञानी पंडित होना संयोग से है६।गृहस्थ त्यागी होना संयोग से है७।बडा छोटा उत्तम मध्यम होना संयोग से है ८। धनवान् दरिद्री होना संयोग से है ९। सतसंग को संग होना संयोग से है १०। गरमी सरदी बरसात संयोग से है११।दिनरात होना संयोग से है१२।मूरख होना ज्ञानी होना संयोग से है१३।धन परवार आरोग्यता बडाई मिलना संयोग से है१४। हार जीत होना संयोग से है १५। सर्व प्रकार का दुःख सुख होना संयोग से है १६। संयोग का पूर्वरूप अनुमान में नहीं आता। (४) स्त्रीपुरुष का संयोग होता है। वायु के आधार से रक्त बीज गर्भ योनि में स्थिर होता है। वायु से जीव, बीज से शरीर उत्पन्न होता है। नवमास गर्भ में रहकर पूतला मातापिता समान बन जाता है। स्त्री का रुधिर जो रजस्वला धर्म में मास मास जाता है वही बंद

होकर पूतला बनता है । पीछे नवमास के वो पूतला पेट से बाहिर निकलता है। माता का बल अधिक हुवा तो पुत्री, पिता का बल अधिक हुवा तो पुत्र, दोनों समान हुवा तो नपुंसक होता है। संपूर्ण वायु बीज स्थिर हुवा तो ऐश सो बरस की होगी। बहुत कम होने में बालक मरा हुवा उत्पन्न होता है, तथा गर्भ गिर जाता है। वही वायु बीज गर्भस्थान में दो भाग से स्थिर हुवा तो बच्चाजोडा पैदा होता है। खंडन वायु बीज स्थिर होने से बालक हाथ पांव से खंडन होता है । राजसी दरिद्री मूर्ख ज्ञानी चोर महात्मा रोगी निरोगी होने का कारण स्त्रीपुरुष का स्वभाव है। माता का लक्ष जिस रूप पर होगा वैसा स्वरूप बालक का होगा। उत्पत्ति के पहिले जीव रहता है, ज्ञान नहीं रहता। प्रथम बालक माता को पहिचानता है। पीछे परवार को पहिचानता है। तोता मैना के समान सर्व परिवार शब्द सिखाते हैं। जो धर्म मर्याद परिवार का है वो ही व्यवहार उस को सिखाते हैं। जो विद्या का मान उस देश में होता है, वो ही विद्या पढाते हैं। मुंडन कानछेदन जनेऊ विवाह कुलरीतप्रमाण माता पिता करते हैं। विवाह पीछे वो ही पुत्र स्त्री को माता पिता से विशेष जानेगा और ससुरार की प्रीति परिवार से अधिक करेगा। स्त्री के कहने से मातापिता को छोड देवेगा । मातापिता मर जावेंगे तो यथाशक्ति क्रिया कर्म करेगा। अनेक उद्यम

उत्तम मध्यम करिके परिवार की पालना करेगा। सर्व परिवार के दुःख सुख को अपना दुःख सुख जानेगा। जब पंच महाभूत का पूतला निर्जीव हो जावेगा, जैसा का तैसा हो जावेगा। ये सिद्धांत जन्ममरण का है।(५) अपने२गुणबुद्धिप्रमाण सर्व जीव अपना निर्वाह करता है। कोई वेद पुराण शास्त्र पढकर निर्वाह करता है १। कोई त्याग वैराग्य में निर्वाह करता है २। कोई देव का पुजारी होकर निर्वाह करता है ३। कोई नीच व्यापार करिके निर्वाह करता है ४। कोई सेवा चाकरी में निर्वाह करता है ५। कोई युद्ध संग्राम करके निर्वाह करता है ६। कोई चोरी आदिक नष्ट कर्म करिके निर्वाह करता है ७। कोई मध्यान्ह काल में चार घर से भिक्षा करके निर्वाह कर्ता है ८। कोई रात को टुकडा मांगकर निर्वाह करता है ९। कोई जंगल में घास का दाना जमा करिके निर्वाह करता है १०। कोई राजा बादशाह महाजन होकर निर्वाह करता है ११। कोई मांस मदिरा बेंचकर निर्वाह कर्ता है १२। कोई संसारी विषय भोग में निर्वाह करता है १३। कोई अखंड समाधि में निर्वाह करता है १४। कोई इंद्रजाल जादु करके निर्वाह करता है १५। कोई खेती मजूरी करके विर्वाह करता है १६। सारा जगत् अनेक प्रकार का उत्तम मध्यम उद्यम करिके निर्वाह करता है। (६) बहुत जीव ऐसे हैं कि जिन का निर्वाह आपीआप होता है। उद्यम करना नहीं पडता। जल

में अनेक प्रकार के जीव रहते हैं १। वनस्पती के मूल झाड पान फूल फल में बहुत जीव रहते हैं २।शरीर में अनेक जीव रहते हैं ३। सर्व जीव के मलमूत्र में जीव रहते हैं ४। सूखे लक्कड पत्थर में जीव रहते हैं ५। धान में अनेक जीव रहते हैं ६। आकाश वायु में अणु प्रमाण जीव रहते हैं ७। गूलर के फल में जीव रहते हैं ८।मरे हुवे शरीर में जीव रहते हैं९। मेवा मिठाई में जीव रहते हैं १०। मुख में नाक में कान में गुदा में जीव रहते हैं ११। अच्छे अच्छे व्यंजन में जीव रहते हैं १२। मिट्टी के बीड में जीव रहते हैं १३। वस्त्र में जीव रहते हैं १४। ग्रंथ में जीव रहते हैं १५। अग्नि में जीव रहते हैं १६। ऐसे जीव अनंत हैं। उन को अपने निर्वाह के कारण उद्यम करना नहीं होता। (७) और बहुत जीव ऐसे हैं कि अपनी क्षुधाशांति के निमित्त दूसरे जीव को खा जाते हैं। नाहर गौ मारता है १। चीता हिरण मारता है २। बिल्ली मूंस मारती है ३। मोर सांप मारता है ४। भोई मच्छी मारता है ५। कसाई बकरा मारता है ६। बाज कबूतर मारता है ७। बगुला मेंडुक मारता है ८। किलकिला गिर-गट मारता है ९। चरस कुत्ता मारता है १०। कुत्ता खरगो-श मारता है ११। बदुह जातवाले खीरवाले हवषवाले आदमी मारते हैं १२। छपकली मकडी मारती है १३। डाकू मुसाफर मारते हैं १४। अंग्रेज लोग सूरमा मारते हैं १५। भेडिया भेड मारता है १६। ऐसे लाखों जीव हैं। जिन

को जीव मारने में दया नहीं आती। (८) मनुष्य योनि जो विद्या और ज्ञान रखते हैं वो भी अपने स्वार्थ के वास्ते दूसरे जीव को दुःख देने में दया नहीं करते। दुष्ट राजा को प्रजा के दुःख देने में दया नहीं आती १। बेइमान महाजन को व्याजपर व्याज लेने में दया नहीं आती २। घूंस खानेवाले हाकिम को झूंठा इनसाफ करने में दया नहीं आती ३। चोर को दूसरे का माल चुराने में दया नहीं आती ४।ठग को बटोई लूटने में दया नहीं आती ५।खोटे को किसी की बहु बेटी बिगाडने में दया नहीं आती ६। हिंदुस्थान के क्षत्रियों को लडकी मारने में दया नहीं आती ७। पाखंडी साधु को विश्वासी भक्त के ठगने में दया नहीं आती ८। दुष्ट किरसान को बूढे बैल के जोतने में दया नहीं आती ९। कुचाल पुत्र को मातापिता के जुदा करने में दया नहीं आती १०। कलियुग के गृहस्थ को भूंखे साधू संत पर दया नहीं आती ११। कुपात्र स्त्री को पुरुष छोडने में दया नहीं आती १२ । उद्यमी पुरुष को शहद निकालने में दया नहीं आती १३। झूंठे दुकानदार को दूना चौगुना पैसा लेने में दया नहीं आती १४। अंग्रेजों को कुत्ता मारने में दया नहीं आती १५। दुष्ट जीव को जानवर बधिया करने में दया नहीं आती १६। इसी प्रमाण अनेक जीव को दूसरे जीव के दुःख देने में दया नहीं आती। कोई अनादि स्वभाव से दया नहीं करता। कोई संयोग से

। बडाई इस संसार में बडी वस्तु है। जिस तरह ज्ञानी मुक्ति चाहते हैं उसी प्रमाण विषयी पुरुष बडाई चाहते हैं। (९) यथार्थ में बडाई वैकुंठ समान है। बडाई के वास्ते कष्ट करिके अनेक गुण सीखते हैं १। बडाई के वास्ते मकान बाग बावडी बनाते हैं २। बडाई के वास्ते धर्मशाला देवमंदिर बनाते हैं ३। बडाई के वास्ते विवाह मरोनी में लाखों रुपैया खर्च करते हैं ४। बडाई के वास्ते पाखंडी साधु अनेक ढोंग करते हैं ५। बडाई के वास्ते सदावर्त अन्नछत्र बनाते हैं ६। बडाई के वास्ते हाथी घोडा ऊंट रथ सवारी रखते हैं ७। बडाई के वास्ते राजा लोग सिक्का चलाते हैं ८। बडाई के वास्ते धर्मपुत्र लेते हैं ९। बडाई के वास्ते तीर्थ में घाट बनवाते हैं १०। बडाई के वास्ते गया काशी जाते हैं ११। बडाई के वास्ते महाजन करोडपति कौडी कौडी जमा करते हैं १२। बडाई के वास्ते हाथी शेर का शिकार करता हैं १३। बडाई के वास्ते फौज खजाना मुल्क रखते हैं १४। बडाई के वास्ते पैहलवान कुस्ती मारते हैं १५। बडाई के वास्ते संग्राम में सन्मुख शूर वीर सिर कटवाते हैं १६। सर्व जीव छोटा बडा बडाई चाहता है। यथार्थ में बडाई मिलना बहुत कठिन है। (१०) बडा उस को कहना चाहिये जो यथार्थ में बडा होकर छोटा जाने १। दूसरे का दुःख दूर

करे २ । यथाशक्ति दाता और दानी हो ३। धनवान् दयावान् हो ४। मिथ्या शब्द न बोले ५। सच्चा व मीठा बोलनेवाला हो ६। संत महात्मा गुरु का सेवक हो ७। गौ ब्राह्मण का पूजनीक हो ८। परस्त्री परद्रव्य को विष्ठा जाने ९। काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह न हो १०। आशा वासा तृष्णा न हो ११। शील लज्जा आदर भाव हो १२। मन कर्म वचन से परउपकारी हो १३। जगत् के विषय से त्याग वैराग्य हो १४। माता पिता की सेवा करता हो, परिवार का पालनहार हो १५। माया ब्रह्म जगत् तीनों को जानता हो १६। ऐसे और अनेक लक्षण में प्रधान हो, तब वो बडाई पावेगा। (११) अनक व्यवहार जो सृष्टि में हैं कुछ अपने आधीन नहीं हैं। हमरूपी अहंकार तथा मैंरूपी अज्ञान को मिथ्या जाने। चार अंतरिंद्रियें अपने आधीन नहीं १। पंच ज्ञानइंद्रियें अपने आधीन नहीं २। पंच कर्मेंद्रिय अपने आधीन नहीं ३। पंच प्राण पंच वायु अपने आधीन नहीं ४। पंच विकार तीन ताप अपने आधीन नहीं ५। तीनों नाडी का बदलना अपने आधीन नहीं ६। आंख का खुलना बंद होना अपने आधीन नहीं ७। चार प्रकार की अवस्था अपने आधीन नहीं ८। निद्रा मैथुन आहार अपने आधीन नहीं ९। स्त्री अर्धांगी है अपने आधीन नहीं १०। पुत्र अपना रूप है अपने आधीन नहीं ११। अनेक प्रकार की बीमारी अपने आधीन नहीं १२। सर्व प्रकार का हानि

लाभ अपने आधीन नहीं १३। ठोकर लगना, झाडपर से गिर पडना अपने आधीन नहीं १४। सांप काटना, बिछु मारना अपने आधीन नहीं १५। लडका होना, लडकी होना अपने आधीन नहीं १६। कोई व्यवहार शरीर का अपने आधीन नहीं है। जो इस शरीर को अपनी जानता है, वो निपट मूर्ख है। ये भूल जबतक नहीं छूटे तबतक वो दुःख सुख का मूल बना रहेगा। इस भ्रम का नाश होने वास्ते अथवा दुःख छूटने वास्ते जो वेद पुराण शास्त्र देखा तो कुछ बोध नहीं हुवा। चार वेद चार प्रकार का हैं, और अठारह पुराण में अठारह कथा हैं। और छः शास्त्र में छः उपदेश हैं। इस के सिवाय तीन शास्त्र और हैं। उन का मत जुदा है।(१२) कोई ग्रंथ में ब्रह्म पुरुष है १। कोई ग्रंथ में ब्रह्म स्त्री है २। कोई ग्रंथ में ब्रह्म नपुंसक है ३। कोई ग्रंथ में कर्म प्रधान है ४। कोई ग्रंथ में निष्कर्म प्रधान है ५। कोई ग्रंथ में आत्मा ब्रह्म है ६। कोई ग्रंथ में आत्मा जीव है ७। कोई ग्रंथ में वैष्णव मत प्रधान है ८। कोई ग्रंथ में शाक्त मत प्रधान है ९। कोई ग्रंथ में जीव मारना दोष है १०। कोई ग्रंथ में बलिदान हवन करना मुक्तिदाता है ११। कोई जैनमार्गी हैं, उन का ग्रंथ जुदा है १२। कोई ग्रंथ में नाम की रटन प्रधान है १३। कोई ग्रंथ में ब्रह्म निरंजन निर्गुण निराकार है १४। कोई ग्रंथ में ब्रह्म चौवीस अवतार होकर अनेक लीला करता है १५। कोई ग्रंथ में

है, विराट्
अनेक उपदेश श्रवण करिके महा भ्रम
भ्रांति प्राप्त होती है।(१३
ये जो संसार में प्रसिद्ध हैं उन

अनेक प्रकार का है। कोई शैव है १। कोई शाक्त है २। कोई रामानंदी है ३। कोई नानकशाई है ४। कोई कबीरपंथी है ५। कोई दादूपंथी है६। कोई रामसनेही है७। कोई तुकारामी रामदासी है८। कोई मानभावु है९। कोई सत्यनामी है १०। कोई नाथ है ११। कोई परनामी है १२। कोई विन्द्रावनी है १३। कोई नंगावत जंगम है १४। कोई पल्टूदासी है १५। कोई अघोरमत है १६। ऐसे अनेक मत हैं।(१४) और अनेक प्रकार की तपस्या करते हैं। कोई मौन धारण करता है१। कोई शूलशय्या पर शयन करता है२। कोई जलशयन लेता है ३। कोई पंच धूनी तापता है ४। कोई समाधि लगाता है ५। कोई खडा रहता है ६। कोई हाथ उठाता है ७। कोई इंद्री में कडा डालता है ८। कोई नंगा रहता है ९। कोई वज्रलंगोट चढाता है १०। कोई दंड कमंडलु धारण करता है ११। कोई झूला लटकता है १२। कोई नख जटा बढाता है १३। कोई गू मूत खाता है १४। कोई नींब खाता है १५। कोई दूध पीकर रहता है १६। इ प्रमाण लाखों तपस्या व योग प्रसिद्ध हैं। जितने आचार्य हैं उतने मत है। आगे भी अनेक मत प्रगट होंगे। अपने अ-

हैं ई छोटा नहीं हो सकता है।
(१५)सजन कसाई शालिग्रामकी मूर्तिसे मांस तोलताथा १। रोहिदास चमार जूता बनाता था २। नामदेव दरजी कपडा सीता था ३। सैना नाऊ हजामत बनाता था ४। कबीरदास कपडा बुनता था ५। गणिका वेश्या नाचना गावना करती थी ६। अजामील भील डाका मारता था ७। नखाद मच्छी मारता था ८। धनाजाट हर जोतता था ९। पीपा कपडा
था १०। कालु भाइ मच्छ ख
जूठा खाती थी १२। जटाइ धूर खाता था १
खाता था १६। ऐसे अनेक प्रकार के नांच कर्म करनेवाले परम भक्त और देवतासमान हो गये।उन को सहजमें भगवान् भी प्राप्त हुवा। (१६) वर्तमान में जो संत महात्मा कलियुग में हैं उन की करामात सिद्धि अनेक प्रकार की प्रसिद्ध है। कोई मोक्कलको तावे में रखता है१।कोई जिन्नात को वश कर लेता है २। कोई सब प्रकार का मेवा विलायत से छिनमात्र में मंगा देता है ३। कोई सेरों मनों मिठाई गुप्त से मंगवा देता है ४। कोई हाजरात में जिन्नात के बादशाह को मय फौज कचेरी बुलाता है, और उस से गुप्त भेद विचार कर लेता है ५। कोई गडा हुवा धन दिखा देता है ६। कोई आदमी को बिमार कर देता है ७। कोई बावला बनादेता है ८। कोई मूठ से मार डालता है ९। कोई अगिया वेता-

ल से आग लगा देता है १० । कोई अ न के नीचे से रुपैया निकालता है ११। १२ कोई र मंगवा लेता है १२ । कोई अपने शरीर को टुकडा करिके दिखाता है १३ । कोई औरत के पगर लगा देता है १४। कोई आठ प्रकार का तंत्र जो मोहन वशीकरण आकर्षण स्तंभन विद्वेषण शांति उच्चाटन मारन प्रसिद्ध कर सकता है १५। कोई लोप हो जाता है १६। कोई जोत खडी करता है १७। कोई सोना चांदी बनाता है १८। कोई गुटिका बनाता है १९।कोई शेर हो जाता है २०।कोई जादु से दूसरे को तोता बकरा बैल बनाता है २१। कोई परी को वश करता है २२। कोई यक्षिणी साधन करता है २३। कोई आशाता का मंत्र जानता है २४। कोई नजरबंद खेल जानता है २५। कोई भूत प्रेत की बजार भराता है २६। कोई बांझ को लडका देता है २७। कोई नित्य रुपैया दो रुपैया गुप्त से पाता है २८। कोई अन्नपूर्णा को बुलाता है २९। कोई देव का दर्शन करा देता है ३०। कोई पानी बरसाता है ३१। कोई रात को पत्थर बरसाता है ३२। ऐसे नाना प्रकार के करामात सिद्धिवाले महात्मा कलियुग में प्रकट हैं, देशांतर में उन का नाम प्रसिद्ध है। जब से तुकाराम सदेह वैकुंठ को गये उन के सिवाय लाखों [illegible] निराकार गृहस्थ कालवलिया संयोगी हिंदु मुसलमान साधु [illegible] रूप बनाकर अच्छे दिगंबर खाकी

और इंद्रजाल आदिक ग्रंथ पढकर सर्व प्रकार का यंत्र मंत्र तंत्र जान लेते हैं। रुपैया पैदा करने के उपरांत स्त्री लेकर भाग जाते हैं। सर्व प्रकार का खोटा कर्म करते हैं। इस वक्त हिंदुस्थान में हजारों पाखंडी साधु बंदीखाने में चक्की चलाते हैं। उन के सतसंग से ज्ञान नहीं होगा। और कुछ भी बोध नहीं हो सकता। सर्व भेष ऊपर लिखे प्रमाण गृहस्थ हो गया। भेषबाना का कुछ माहात्म्य नहीं रह गया॥(१७)गृहस्थाश्रम धर्मशास्त्र जो उन की मर्यादा है स्वप्न में नहीं देखते। गुरु धनवान् खोजते हैं १। गयाश्राद्ध क्रिया कर्म बडाई निमित्त करते हैं २। लडकी बेचकर पैसा खाते हैं ३। दान पुण्य करजा समान दंडप्रमाण अदा करते हैं ४। तीर्थयात्रा माल खरीदने तमाशा देखने जाते हैं ५। जो जानवर बूढा मरने के समान हो गया वो दान देते हैं ६। साधु संत को सडी ज्वारी तथा उस का आटा देते हैं ७। देव निमित्त हलका कपडा और खोटा पैसा चढाते हैं ८। अपने देस परिवार की मर्यादा छोडकर दूसरे विलायत का वस्त्र शृंगार धारण करते हैं ९। ब्राह्मण संस्कृत विद्या छोडकर अंग्रेजी फारसी पढता है। पाद्री डाक्तर होकर वेद खंडन करता है। मुर्दा फाडता है। गाय का रुधिर निकालता है। सेवा चाकरी की नोकरी करता है। इसी प्रमाण लाखों खोटा कर्म करता है १०। क्षत्री जो राजा शू-

र वीर होते थे वो खेती मजूरी डंडी तौलना वैश्य का कर्म शू-
द्र का कर्म करते हैं । नाऊ बारी के समान जूंठा खाते हैं।
स्त्री पुरुष छोडकर दूसरे शूद्र के पास जाती है । लडकी
बेचकर पैसा लेते हैं । और सर्व मध्यम कर्म करते
११। वैश्य जो महाजनी करते थे और झूंठा नहीं बोलते
थे वो लाखों रुपैया का सट्टा करते हैं । व्याज का
व्याज लेते हैं । ब्राह्मण साधु देवता से व्याज नफा
। चमडा दारु हड्डी का व्यापार करते हैं १२।
शूद्र सब विद्वान् हो गये । गीता भागवत रामायण का
पाठ करते हैं । जनेऊ पहिरते हैं। तिलक लगाते हैं । कथा
सुनते हैं। त्रिकाल गायत्री पढते हैं १३ । पुत्र मातापि-
ता का आदर नहीं करता १४ । चेला गुरु को नहीं मान-
ता १५। स्त्री पुरुष को नोकर समान जानती है१६ । जो व्य-
वहार संसारी गृहस्थों का धर्मशास्त्र प्रमाण रहा वो सब
जाता रहा । (१८) पशुयोनि जो अनादि चाल चलती थी
बदल गई । गौ ऐसी पूजनीक गू खाती है । बकरी
समान दूध देती है १ । कुत्ता बारा मास भोग करता
है २ । काग पंछी सर्व रात बोलता है ३ । चकवी
चकोर रात को जुदा नहीं होते । और आग नहीं खाते
४। घुघु दिन को बोलता दिखता है ५ । मोर पंछी
विषय करता है ६ । मछली विना पानी के पहाड में रहती
है ७। कोला जानवर दिन को बोलता दिखता है ८। खं-

जन पंछी वर्षा ऋतु में दरसाती है ९ । कोयल का अंडा काग सेवन नहीं करता १०। हाथी शहर में बच्चा देता है ११। कूकडा सुबह के वक्त नहीं बोलता १२। बैल का सांड भैंस पर चढता है १३ । पपैया नदी कुए का पानी पीता है १४। सर्प के मणी नहीं होती १५।हाथी के गजमुक्ता नहीं होता १६। ऐसे सब पशु पंछी कलियुग में अनादी चाल छोडकर कुचाल चलते हैं।(१९) और जडयोनि वनस्पति आदिक का भी स्वभाव कुछ बदल गया। सारा व्यवहार उलटा पलटा हो गया । जिस बीड में लाख पूला घांस होता था, अब पचास हजार होता है १। जिस झाड में दश हजार फल फूल लगते थे अब पांच हजार लगते हैं २। जिस खेत में वीस मन धान होता था अब दस मन होता है ३ । जिस कुए का पानी मीठा होता था अब खारा होता है ४। बरषा ऋतु आगे पीछे होकर समय पर नहीं होती ५। जिस पृथिवी का महसूल सौ रुपैया था अब हजार रुपैया हो गया ६। बहुत नदी नाला जो हमेशा भरे रहते थे तथा बहते थे अब सूखकर बंद हो गये ७। सोना चांदि आदिक धातु कम निकलती है। लोहा बहुत निकलता है ८। समुद्र में मोती बडा मोलवाला कम निकलता है ९। झन्नापन्ना की पृथिवी में हीरा बडा भारी नहीं निकलता १०। जडी बूटी औषधी में वो गुण पिछला नहीं रहा ११। फल फूल खानेवाले झाड जंगली जो हरसाल फलते थे अब

तीन चार साल में कुछ नाम को फलते हैं १२। भूचाल तूफान आंधी बुंडल पहिले से अब बहुत आता है १३। मरी की बीमारी जिस को हैजा ऊबा कहते हैं हरसाल आती है १४। नदी के पूर से हरसाल हजारों गांव बह जाते हैं १५। टीडी हरसाल खेत खा जाती है १६। ऐसे अनेक प्रकार की रीति जड योनि की पहिले से अब बदल गई। (२०) प्रत्यक्ष देखो। भविष्य में ये निश्चय है कि हिंदुस्थान का संपूर्ण धर्म नष्ट हो जावे। छसों बरस इस द्वीप में मुसलमान का राज्य रहा १। सौ बरस से अंग्रेज सरकार का राज्य है २। सात सों बरस से हिंदु का धर्म विना राजा नष्ट होता जाता है ३। पहिले लाखों आदमी मुसलमान हो गये। अब क्रिस्तान होते जाते हैं ४। पाद्री लोग गांव गांव बाजार में खडे होकर वेद शास्त्र पुराण देवता मूर्ति की निंदा करते हैं ५। कुछ काल से हैद्राबाद में नेचर मत प्रगट हुवा है। बडे बडे आदमी उस मत में चले गये ६। मुंबई में ब्रह्मसमाज मत प्रगट हुवा है। हजारों आदमी उस मत के अधिकारी हो गये। और होते जाते हैं ७। अच्छे अच्छे विद्वान् ब्राह्मण क्षत्रिय और मुसलमान अंग्रेजों के साथ बैठकर भोजन करते हैं ८। अच्छे अच्छे शहर में सब गृहस्थ चारों वर्ण नल का पानी पीते हैं ९। जो लोग सोला पहिरते थे अब चमडा का वस्त्र पहिरते हैं १०। सुवर्ण रूपा ताम्र आदिक के बर्तन में पूजन भोजन जलपान करते थे। अब कलई

गिलट कोपरबरास में सर्व कार्य होता है ११। इस जंबूद्वीप में अथवा चारों धाम के भीतर गौ मारना नहीं होता था। अब अच्छी अच्छी पुरी व धाम में नित्य गौ मारी जाती है १२। अस्पताल में दारु मिली हुई दवा अथवा मांस मिली हुई चारों वर्ण एक पात्र में पीते हैं १३। गौ का रुधिर बच्चा को माता गोदकर उस के नस में लगाते हैं। उस का अंश उस के शरीर में लय हो जाता है। सारा घर इसहिसाब से भ्रष्ट हुवा १४। रेल या जहाज लक्कड के पाट समान है। उस पर जो कुछ भोजन करे सर्व जात का छूना सिद्ध हो गया १५। वेद पुराण शास्त्र पंडितलोग शूद्र मुसल्मान के निकट नहीं बोलते थे अब वो ही वेद अंग्रेज मुसल्मान सब पढते हैं १६। आगे के महात्मा कवि लोग कलियुग का गुण जैसा कह गये हैं, उस के प्रमाण उस से जादा हो रहा है।(२१) आगे एक पुरुष आठ स्त्री रखता था, अब एक का समाधान नहीं होता। वो स्त्री दूसरे के पास जाती है। कोई पुरुष साथ ले जाता है। बुलाकर लाता है१। बारा बरस की लडकी पहिले वस्त्र नहीं पहिरती थी अब उस के लडका होता है २। आगे कोई मर्द सृष्टिविरुद्ध काम नहीं करता था। अब गांव गांव में चौथाई आदमी सृष्टिविरुद्ध काम करते हैं। स्त्री से जादा उन का मान है ३। आगे कोई अज्ञानी अधर्मी परस्त्री को गमन करता था। अब मा बहिन बहु बेटी से अच्छे अच्छे नामवाले खोटा काम करते हैं ४। वैश्य महाजन

जैनवाले जीवरक्षा निमित्त सरकारमें लाखों रुपैया पचोसन का देकर दूकान दारु मांस बढभूंजा आदिक की बंद कराते थे, और रात को रसोई नहीं खाते थे, मुँह बांधते थे, अब वो कपास का रेचा चलाते हैं। लाखों जीव छनमात्र में जलकर मर जाते हैं। चरबी आदिक गौ की मोल लेते हैं५। सट्टा का काम पूरा जुवा है। चिठ्ठी डालना, घुडदौड करना, वर्षा की निश्चय करना ये सब जुवा हैं। वो हाकिम अमीर महाजन व्यापारी सब करते हैं ६। आगे कोई कर्ज उधार जो लेता था कागद वगैरह कुछ नहीं लिखाता था वायदे पर दय आता था, वो मर जाता था, तौ उस का बेटा हात बांधकर देता था। अब जो कर्ज लेता है ष्टांप पर कागज लिखता है। रजिष्टरी कराता है। जमानत देता है। पीछे अदा करने समय ये बिचार सब झूंठ करिके बेइमान हो जाता है और कदाचित् तीन बरस महाजन न मांगे तो उस को कानून बताते हैं कि मियाद जाती रही। कचेरी में गंगा गौ धर्म इमान कर लेते हैं ७। आगे दो आदमी झगडा करते थे, हाकिम उन का झगडा मिटाता था, दोनों को दंड बक्षीस करता था, अब वो झगडा तैशील्दार मिटाता है। तो डिपटी कमिशनर पलटाता है। वो फैसला कमिशनर झूंठ कर देता है। कमीशनर का किया रेसिडंट उलट देता है। उस का किया हायकोर्ट में रद होता है। उस का किया विलायत में झूंठा होता है। कोई हाकिम को दंड

नहीं होता। सिद्धांत में ये व्यवहार दुकानदारी है ८। आगे किसी की बहू बेटी कुचाल चलती थी, तो घरवाले मार पीट करके सुचाल कर लेते थे, राजा कुछ नहीं बोलता था, अब स्त्री को मारो तो फौजदारी में सजा मिले। जिस के साथ राजी हो जावे उस की है९। आगे कोई साधु पाखंडी कमाई के वास्ते स्वरूप बनाता था, तो हम लोग तथा अखाडेवाले उस का इमतहान लेते थे, अगर पूरा आता था तो छोड देते थे, नहीं तो सब जादाद उस की जप्त कर लेते थे, और गधा पर सवार करके निकाल देते थे, अब जो चाहे सिद्ध महात्मा का स्वरूप बनाकर चोरी छिनारा करे। हजारों करते हैं। सिद्ध महात्मा बदनाम होते हैं १०। आगे हिंदुस्थान में ऐसे बलवान राजा होते थे कि दैत्यों से युद्ध करते थे, और हजारों सिपाई को अकेले मारकर हटा देते थे, अब उसी खानदान में ऐसे राजा लोग हैं कि जब दोनों तरफ से दो आदमी बगल में हाथ देते हैं तब खडे होते हैं ११। राजा बलि, राजा कर्ण, राजा भोज, राजा नृग, राजा विक्रम, राजा नल, राजा रघु, राजा परीक्षित, राजा हरिश्चंद्र ऐसे दानी हो गये कि नित्य एक भार सोना देते थे। जहां संकल्प की गौ खडी होती थी वहां तालाव हो जाता था। करोड गौ नित्य दान देते थे। अब उसी गद्दी पर जो राजा है नोकरों से व्याज लेते हैं। साधु ब्राह्मण से कर लेते हैं। उस पर भी लाखों रुपैया के क-

जंदार हैं १२ । आगे कोई झूंठी सौगंध खाता था तथा गंगा उठाता था तो उस को तुरत दंड होता था । अब जिले की कचेरी में सौ पचास आदमी झूंठी गंगा उठाने के वास्ते सदा बैठे रहते हैं । उन का यही उद्यम हो गया । वकील बालिष्टर जालफरेब की रोटी खाते हैं १३ । आगे पिता के जीते हुवे पुत्र नहीं मरता था और एक पुत्र सब के होता था अब पिता से पहिले पुत्र मरता है । और दों को औलाद है तो चार के नहीं है । सब जगत् औलाद का दुखी है । जिस के है भी तो शत्रु समान है १४ । आगे जो धान, घी, तेल एक रुपैया का मिलता था वो अब पांच रुपैया का नहीं मिलता, कारण दूसरे द्वीप को चला जाता है १५ । आगे जो गांजा भांग दारु अफीम एक रुपिया का मिलता था । अब दस रुपैया पर नहीं मिलता । इस प्रकार अनेक व्यवहार जगत् का पहिले के प्रतिकूल हो गया । आगे नित्य सर्व व्यवहार परमार्थ का स्वार्थ हो जावेगा । धर्म दान पुण्य डूब जावेगा । लाखों में एक सज्जन पुरुष होगा । सर्व मनुष्य परसंतापी होंगे । इस का विस्तार सारी उमर लिखने में पूरा नहीं हो सकता । इस कारण सूक्ष्म वर्णन किया गया । विद्वान् ज्ञानी जान लेवेंगे । ऐसे जगत् को और युग को अपना नमस्कार है । और चौरासी लाख सृष्टि को अपना वंदना है । निराकार से भी वंदना है कि ऐसे युगमें मेरा जन्म इंद्रपदवी पर भी न देवे और जलदी

मेरी निर्मल आत्मा शुद्ध स्वरूप को इस जगत् के विषय से निर्मोह करिके अपने निराकार प्रकाश में मिला लेवे। मेरे को इस संसार में एक क्षण एक कल्प के समान व्यतीत होता है। श्रोता वक्ता ग्रंथ के अधिकारी संबधी मेरे संपूर्ण अपराध को मूर्ख अज्ञान जानकर अपनी कृपा से क्षमा करिके कुछ दोष न देवें। जैसा मेरी दृष्टि और बुद्धि और ज्ञान में आया तथा सूक्ष्म व्यवहार सर्वसंसार का जो प्रत्यक्ष दरसाया वर्णन किया १६।

इति श्रीग्रन्थ अभिलाखसागर गुरुशिष्यसंवाद ग्यारहवां तरंग वर्तमानज्ञानविचार नामनिरूपण संपूर्ण ॥ ११ ॥

श्री स्वामीजीमहाराजबाबा माधवदासजी उदासी अयोध्यावासी के शिष्य अभिलाखदास कृत अभिलाखसागर ग्रंथ समाप्त।

पुस्तक मिलने का ठिकाना-
गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेंकटेश्वर" छापाखाना,
कल्याण-- मुंबई.

अंश-पंचीकरण स्वरूप तत्व.

		पृष्ठ २४	पृष्ठ २६	पृष्ठ २९	पृष्ठ ३१	पृष्ठ ३३
नंबर	नाम	पृथ्वि	जल	अग्नि	वायु	आकाश
१	देह शरीर	स्थूल	सूक्ष्म	कारण	महाकारण	केवल
२	स्वरूप	ताडक	डंडक	कूंडल	अर्धचंद्र	बिन्दू
३	प्रमाण	उलटपलट	अंगुष्ठप्रमाण	अर्धप्रमाण	मसूरप्रमाण	अनुप्रमाण
४	अवस्था	जाग्रत	स्वप्न	सुषुप्ति	तुरिया	उन्मनी
५	विषय	गंध	रस	रूप	स्पर्श	शब्द
६	अंतः इन्द्रि	अहंकार	बुद्धि	चित्त	मन	अंतःकरण
७	कर्मेंद्रियें	गुदा	लिंग	पाव	हाथ	मुंह
८	ज्ञानेंद्रियें	नाक	जिव्हा	नेत्र	त्वचा	कान
९	आकाशप्रकृति	रोम	लार	नींद	फैलनो	काम
१०	वायुप्रकृति	चिरम	चरबी	तृषा	दौडनो	क्रोध
११	अग्निप्रकृति	नाडी	पसीना	क्षुधा	कूदनो	लोभ
१२	जलप्रकृति	मास	बीज	तेज	चलनो	मोह
१३	पृथ्वीप्रकृति	अस्थि	रुधिर	आलस्य	सुकडनो	मद
१४	वाक	वैखरी	मध्यमा	पश्यंति	परा	परमपरा
१५	गुण	रजोगुण	सत्वगुण	तमोगुण	सगुण	निर्गुण
१६	अभिमान	शरीर	बीज	ध्यान	आत्मा	निराभिमान
१७	अहंकार	हंस	कोहम	सोहम्	शिवोहं	निरोहं
१८	प्राण	अपान	उदान	प्राण	समान	व्यान
१९	वायु	धनंजय	देवदत्त	किरकिल	कूर्म	नाग
२०	कोश	अन्नमय	प्राणमय	मनोमय	विज्ञानमय	अनंदमय
२१	प्रतिमा	गणेश	सूर्य	लिंग	शक्ति	ओंकार
२२	इष्ट	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	ईश्वर	सदासीव
२३	देव	इंद्र	वरुण	यम	कुबेर	विष्णु
२४	प्रधान	वेद	दशअवतार	द्वादशलिंग	मंत्र	समाधी
२५	वर्ण	पीत	रक्त	कृष्ण	नील	श्वेत
२६	रस	मधुर	लोन	चरपरा	खाटा	फिका
२७	क्रिया	उत्पत्ती	पालन	परलय	सर्वसाक्षी	सर्वत्याग
२८	योन	भोचर	जलचर	नभचर	चराचर	अचर
२९	खान	पिंडज	अंडज	उश्वमज	स्थावर	मेघ
३०	अवस्थागुण	नेत्र	कंठ	हृदय	मूर्धा	शिखा
३१	अवस्थानिर्गुण	त्रिपुटी	श्रीहाट	गुल्हाट	अमरगुंफा	ब्रम्हरन्ध्र
३२	रूप	विराट	हिरण्यगर्भ	सूर्यज्योती	महत्तत्व	कर्ता
३३	आसन	कलेजा	फिफडा	तिल्ली	बुक्का	पित्ता
३४	आवन	मुख	जिव्हा	वामचक्षु	वामनासिका	वामकान

नंबर	नाम	पृष्ठ २४	पृष्ठ २६	पृष्ठ २९	पृष्ठ ३१	पृष्ठ ३३
३५	जीवन	गुदा	लिंग	दक्षचक्ष	दक्षनासीका	दक्षकान
३६	ज्ञान	अनरीती	अनिथ्या	अविचार	अविवेक	अद्वैत
३७	भोग	स्थूल	परविगत	आनंद	अपरमेय	निरामय
३८	निरन्धं	क्षर	अक्षर	कूटस्थ	आत्माप्रीता	उत्तमपुरुष
३९	मार्ग	पपील	विहंगम	कपी	मीन	शेष
४०	दिशा	पुर्व	पश्चिम	उत्तर	दक्षिणा	उर्ध्व दिशा
४१	कोन	नैरृत्य	इशान्य	आग्नेय	वायव्य	अर्धकोन
४२	आकाश	घट	मठ	मध्य	चदा	शून्य
४३	मात्रा	अकार	इकार	उकार	मकार	पूर्ण ओंकार
४४	मात्रादुसरी	ह्रस्व	दिर्घ	पुलित	अर्ध	अनुराग
४५	शून्य	अर्धशून्य	उर्ध्वशून्य	मध्यशून्य	अर्धशून्य	
४६	मुद्रासमाधि	खेचरी	भोचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
४७	मुद्राज्ञान	संमुखि	उन्मनी	शांभवी	आत्मभासिनी	पूर्वबोधिनी
४८	वेद	ऋग्वेग	यज		अथर्वणावेद	आकाशवाणी
४९	गायत्री	प्रथमपदा	द्वितीयपदा	तृतियपदा	चतुर्थपदा	
५०		तत	वितत	मृदग	सुस्वर	आहद
५१	लोक	मृत्युलोक	वकुटलोक		सत्यलोक	लोकालोक
५२	अग्नि	वडवा	मंद	उदर	शोक	कपरा
५३	दुसरीअग्नि	ऊहा	काम	दग्न	संभिता	ब्रह्म
५४	आनंद	विषयानंद	योगानंद		परमानद	ब्रह्मानंद
५५	मुक्ति	सालोक	सामीप्य	सारूप्य		स्वयंभू
५६	शक्ति	क्रिया	ज्ञान	इच्छा	आदिविज्ञान	मूलप्रकृति
५७	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	प्रासाद	ब्रह्मलिंग
५८	मुख	सद्वजात	वामदेव	तत्वपुरुष	ईशानमुख	अधामुख
५९	कला	उरमय	धुमरा	जोती	जोआला	कलातीत
	भूमिका	पास्तपा	गताजाता	सलाकता	सूलीनता	साक्षात्कार
६१	पुरुषार्थ	धर्म	अर्थ	काम	मोक्ष	निर्विकल्प
६२	भक्ति	श्रवण	मनन	निजध्यास	साक्षात्	पुरणकाहा
६३	प्रकृति	भय	मैथुन	क्षुधा	हर्ष	निद्रा
६४	सुर	उदात्त	अनुदात	स्वरित		अनहद
६५	दुसरासुर	जडेसुर	मनजलेसुर	आतकसुर	सुसुर	रभसुर
६६	शस्त्र	फरसा	अकुश	भाला	खाडा	बाण
६७	स्वरूप	चौकोर	लबा	त्रिकोन	गोल	शून्य
६८	अहार	अन्नजल	मैथुन	मोह	गध	शद्ब
६९	रोग	रक्त		पित्त	वात	सान्नपात
७०	प्रमाणाअंगुल	बारह १२	सोला १६	चार ४	आठ ८	शून्य
७१	आश्रम	ब्रह्मचारा	गृहस्त	वानप्रस्थ	संन्यास	परमहंस
७२	पंचसुख	संतान	धन	रुप	बल	बुद्धिज्ञान

यंत्र विराटरूपब्रह्म निराकार पृष्ठ २९

नंबर	विराट	सूक्ष्म	बोध
१	ब्रह्म	अंतःकरण	अंतनइंद्रीय १
२	शक्ति	मन	२
३	विष्णु	चित्त	३
४	ब्रह्मा	बुद्धि	४
५	शिव	अहंकार	५
६	कुबेर	कान	ज्ञान इंद्रिय १
७	गणेश	त्वचा	२
८	सूर्य	आंख	३
९	सरस्वती	जिव्हा	४
१०	अश्विनीकुमार	नाक	५
११	वरुण	मुख	कर्म इंद्रिय १
१२	इंन्द्र	हाथ	२
१३	दिग्पाल	पांव	३
१४	प्रजापति	लिंग	४
१५	यमराज	गुदा	५
१६	आकाश	शिर	आकाशप्रकृती
१७	कैलास	कंठ	२
१८	वैकुंठ	हृदय	३
१९	क्षीरसागर	पेट	४
२०	मध्यलोक	कमर	५
२१	विराट	फैलना	वायुप्रकृति १
२२	वायु	दौडना	२
२३	आवागवन	कुदना	३
२४	स्वासा	चलना	४
२५	आद्रष्ट	सकुडना	५
२६	मौत	नींद	अग्निप्रकृति १
२७	प्यास	तृषा	२
२८	तृष्णा	क्षुधा	३
२९	अग्नि	तेज	४

यंत्रविराटरूप ब्रह्मनिराकार पृष्ठ ३९			
नंबर	विराट	सूक्ष्म	बोध
३०	नीद	आलस	५
३१	तेल	लार	जलप्रकाति १
३२	दुध	चरवी	२
३३	ओस	पसीना	३
३४	वरफ	वीज	४
३५	जल	रुधीर	५
३६	वनस्पती	रोम	पृथ्वी प्रकृती १
३७	दशोदिशा	चर्म	२
३८	नदी	नाडी	३
३९	मिट्टी	मांस	४
४०	पहाड	अस्थ	५
४१	ब्रह्मलोक	ब्रह्मांड	सर्वशरीर १
४२	वादल	चोटी	२
४३	चंद्र	मस्तक	३
४४	वर्षाऋतु	भों	४
४५	तारा	वरोनी	५
४६	रात	पलक वद होना	६
४७	दिन	पलक खुलना	७
४८	ग्रहण	नेत्र दुखना	८
४९	संध्या	पलक	९
५०	सुगंध	इंगला	१०
५१	दुरगंध	पिंगला	११
५२	लज्जा	उपरका होट	१२
५३	प्रीत	नीचेका होट	१३
५४	वैर	दंत	१४
५५	अरुणमेघ	हसना	१५
५६	विजली	छींक	१६
५७	कोहरा	सुखधुम	१७
५८	अक्षर	बोलना	१८

अंगविराटरूपब्रह्मनिराकार पृष्ठ ३९			
५९	जि लोक	गरदन	१९
६०	उदया अस्थाचल	कंधा	२०
६१	देवता	अंगुली हात	२१
६२	भाग	रेषा	२२
६३	धनुष	नारवुन	२३
६४	कल्पवृक्ष	छाती	२४
६५	कामधेनु	चुची	२५
६६	नरक	पीठ	२६
६७	शून्यलोक	नाभी	२७
६८	मैथुन	अंड	२८
६९	जीव	मल	२९
७०	शरीर	मुत्र	३०
७१	अतलवितल लोक	चुतड	३१
७२	सुतल लोक	जंघा	३२
७३	रसातल लोक	घुटना	३३
७४	महीतल लोक	पिडंली	३४
७५	पाताललोक	पांव	३५
७६	तलातल लोक	तलवा	३६
७७	दैत्य लोक	अंगुली पाव	३७
७८	भोर	कपोल	३८
७९	चारों युग	अवस्था	३९
८०	खटरस	जिव्हा	४०
८१	उत्पत्ति	जागना	४१
८२	भुकंफ	करवट बदलना	४२
८३	चौरासी लाख योन	अहार	४३
८४	शीशमार चक्र	घुमना	४४
८५	माया	इच्छा	४५
८६	काम	अग	४६
८७	वर्षाकाल	बाल अवस्था	४७
८८	सर्दकाल	तरूण अवस्था	४८
८९	अतपकाल	वृद्ध अवस्था	४९

यंत्र अक्षर पृष्ठ ४ ६

नंबर	स्वरअक्षर	अक्षरहृदय	गरडु १				मारजारी २					सिंह ३					स्वान ४					सर्प ५					मोरा ६				
			अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
			१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
१	अ	अ	अ	इ	उ	ए	क	ख	ग	घ	ङ	च	छ	ज	झ	ञ	ट	ठ	ड	ढ	ण	त	थ	द	ध	न	प	फ	ब	भ	म
		आ	आ	ई	ऊ	एा	का	खा	गा	घा	ङा	चा	छा	जा	झा	ञा	टा	ठा	डा	ढा	णा	ता	था	दा	धा	ना	पा	फा	बा	भा	मा
२	इ	इ	अि	इि	उि	एि	कि	खि	गि	घि	ङि	चि	छि	जि	झि	ञि	टि	ठि	डि	ढि	णि	ति	थि	दि	धि	नि	पि	फि	बि	भि	मि
		ई	अी	ईी	उी	एी	की	खी	गी	घी	ङी	ची	छी	जी	झी	ञी	टी	ठी	डी	ढी	णी	ती	थी	दी	धी	नी	पी	फी	बी	भी	मी
३	उ	उ	अु	इु	उु	एु	कु	खु	गु	घु	ङु	चु	छु	जु	झु	ञु	टु	ठु	डु	ढु	णु	तु	थु	दु	धु	नु	पु	फु	बु	भु	मु
		ऊ	अू	इू	उू	एू	कू	खू	गू	घू	ङू	चू	छू	जू	झू	ञू	टू	ठू	डू	ढू	णू	तू	थू	दू	धू	नू	पू	फू	बू	भू	मू
४	ए	ए	अे	इे	उे	ऐ	के	खे	गे	घे	ङे	चे	छे	जे	झे	ञे	टे	ठे	डे	ढे	णे	ते	थे	दे	धे	ने	पे	फे	बे	भे	मे
		ऐ	अै	इै	उै	ऐै	कै	खै	गै	घै	ङै	चै	छै	जै	झै	ञै	टै	ठै	डै	ढै	णै	तै	थै	दै	धै	नै	पै	फै	बै	भै	मै
५	व	ओ	ओ	इो	उो	एो	को	खो	गो	घो	ङो	चो	छो	जो	झो	ञो	टो	ठो	डो	ढो	णो	तो	थो	दो	धो	नो	पो	फो	बो	भो	मो
		औ	औ	इौ	उौ	एौ	कौ	खौ	गौ	घौ	ङौ	चौ	छौ	जौ	झौ	ञौ	टौ	ठौ	डौ	ढौ	णौ	तौ	थौ	दौ	धौ	नौ	पौ	फौ	बौ	भौ	मौ
६	अं	अं	अं	इं	उं	एं	कं	खं	गं	घं	ङं	चं	छं	जं	झं	ञं	टं	ठं	डं	ढं	णं	तं	थं	दं	धं	नं	पं	फं	बं	भं	मं
		अः	अः	इः	उः	एः	कः	खः	गः	घः	ङः	चः	छः	जः	झः	ञः	टः	ठः	डः	ढः	णः	तः	थः	दः	धः	नः	पः	फः	बः	भः	मः

सिद्धांतगुप्तअर्थरामायण पृष्ठ ६७

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
१	हिमाचल	आकाश	कैलासब्रह्मांड	१२	राम	मन	चैत्रसुदी नोमी कोजन्महुवा
२	मइना	वायु		१३	लक्ष्मण	चित्त	
३	शीव	अग्नि		१४	भरत	बुद्धि	
४	पार्वती	शक्ति		१५	शत्रुघ्न	अहंकार	
५	शामकार्तिक	जल		१६	सुमंत	स्वभाव	
६	गणेश	पृथ्वी		१७	विश्वामित्र	विद्या	कुवारवदी १२को रामचंद्रगये
७	अबद	देह	बालकांडप्रारंभ	१८	तारिका	अविद्या	कुवार सुदी १को मारा
८	वशिष्ठ	आत्मा		१९	गंगानदी	निश्चय	
९	दशरथ	दशइंद्रिय		२०	अहिल्या	प्रित	
१०	तीनोराणी	त्रिगुणीमाया	रजोगुण सत्वगुणात्मोगुण सुमित्रा कैकइ कौसल्या	२१	जनकपूर	सत्यदेश	
११	शृंगऋषी	संजोग		२२	राजाजनक	धरम	

सिद्धांतगुप्तअर्थरामायण पृष्ठ ६७

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
२३	सुनेना राणी	स्पर्धा		३४	बनयात्रा	भ्रमणा	विवाहपीछेबारा वर्षअवधमेरहे
२४	धनुष्य	बंधन		३५	निखादु खेवट	धीरज	
२५	परशुराम संवादु	परिक्षा		३६	गंगाउतारा	भवसागर	
२६	विवाह	विश्वास	पंद्रावर्षपीछेहुवा	३७	प्रयागराज	गुरु	
२७	जानकी	शक्ति	चैत्रसुदी२कोप्रगट हुइ चौदावर्षमें विवाह हुवा	३८	भरद्वाज	विवेक	
२८	नारद	भुल	अयोध्याकांडप्रारंभ	३९	वाल्मीक	विचार	
२९	राजतिलक	भोग		४०	चित्रकोट	एकांत	बारावर्षरहे
३०	सरस्वती	होवंत		४१	दशरथ मरण	प्राणायाम	
३१	मंथराचेरी	कारण		४२	भरत मिलाप	ममता	
३२	दशरथकैकेइतमोगुणसंवाद	अकर्म		४३	पादुका	वैराग्य	
३३	बदीनदो	फलशुभ अशुभ		४४	जेतांइंद्रसुत	चिंता	अरण्यकांड प्रारंभ

सिद्धांत गुप्त अर्थ रामायण पृष्ठ ६७

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
४५	अत्रीऋषी	योग		५६		असत्यदशा	
४६	अनुसुया	सिद्धि		[illegible]	सिवरी भिलणी	[illegible]	
४७	विराध दैत्य	वृद्ध		५८	हनु[illegible] बंदर	दिनता	सुंदरकांडप्रारंभ
४८	शरभंग ऋषी	शुद्धता		५९	सुग्रीव बंदर	ज्ञान	
४९	[illegible]क्ष्ण ऋषी	प्रेम		६०	[illegible]णी	असंग	
५०	अगस्ती ऋषी	आनंद		६१	[illegible] [illegible]ावंदर		
५१	गिध जटायू	दृढता		६२	अंगद [illegible]	अभ्यास	
५२	शुर्पणखा राक्षणी	लोभ		६३	जामवंत रिछ	पुरुषार्थ	
५३	खरदूषण राक्षस	कामक्रोध		६४	संपाति गिध	प्रकाश	अगहन सुदी नौमीको हनुमानसें पतापाया
५४	रावण मारिच	मोहमदु		६५	सुषांनागनी	आशा	धाकांडप्रारंभ
५५	जानकी हरण	शक्ति	फाल्गुनवदी अष्टमीको हरण हुवा	६६	निश्चरी राक्षणी	तृष्णा	

सिद्धांत गुप्तअर्थरामायण पृष्ठ ६७

नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा	नंबर	प्रगट	गुप्त	खुलासा
६७	लंकिनी राक्षणी	वासना	अगहन सुदी १२ को हनुमानसी ताके पास गये	७८	कुंभकर्ण		
६८	नल नील बंदर	मार्ग	पौष्य बदी १ कोलंका जलाया पौस बदी ७ को रामचंद्र को खबर दी बदी	७९	मकरध्वज	ताप	
६९	समुद्र	हृदय	८ अष्टमी को फौज रवाना हुइ				
७०	शेत	सत्संग					
७१	रामेश्वर	सतगुरु	पोस सुदी १० को सरू हुवा १३ को तैयार पुल होगया	८०	मही रावण	परसताप	वैशाख सुदी २ को राज्य बिभीषणको मिला सुदी ३ को जानकी से मिलाप हुवा ४ को तैयारी अयोध्याकी हुई ५ मीको भारद्वाजकी कुटीपर गये वैशाख सुदी ६ को भरत मिलाप हुवा.
७२	भिबिषण	निर्मलबुद्धि	पोस सुदी १४ को मिलाप हवा				
७३	अश्विनी कुमार	अविचार	लंकाकांड प्रारंभ	८१	त्रिजटा		
७४	कालनेम	दंभ		८२	मंदोदरी	शांति	
७५	मेघनाद	भ्रम	माघ बदी ४ लंका पहूंचे माघ सुदी २ से वैशाख बदी १४ तक लडाइ रही	८३	सब सैन्य परिवार	मायापरवार	
७६	सुलोचना			८४	राजगद्दी	निष्काम	उत्तरकांड प्रारंभ वैशाख कोराज्य पाया।
७७	रावण	मोह	वैशाख बदी ३ को जलाया	८५	अंतर ध्यान	निर्गुण मुक्ति	
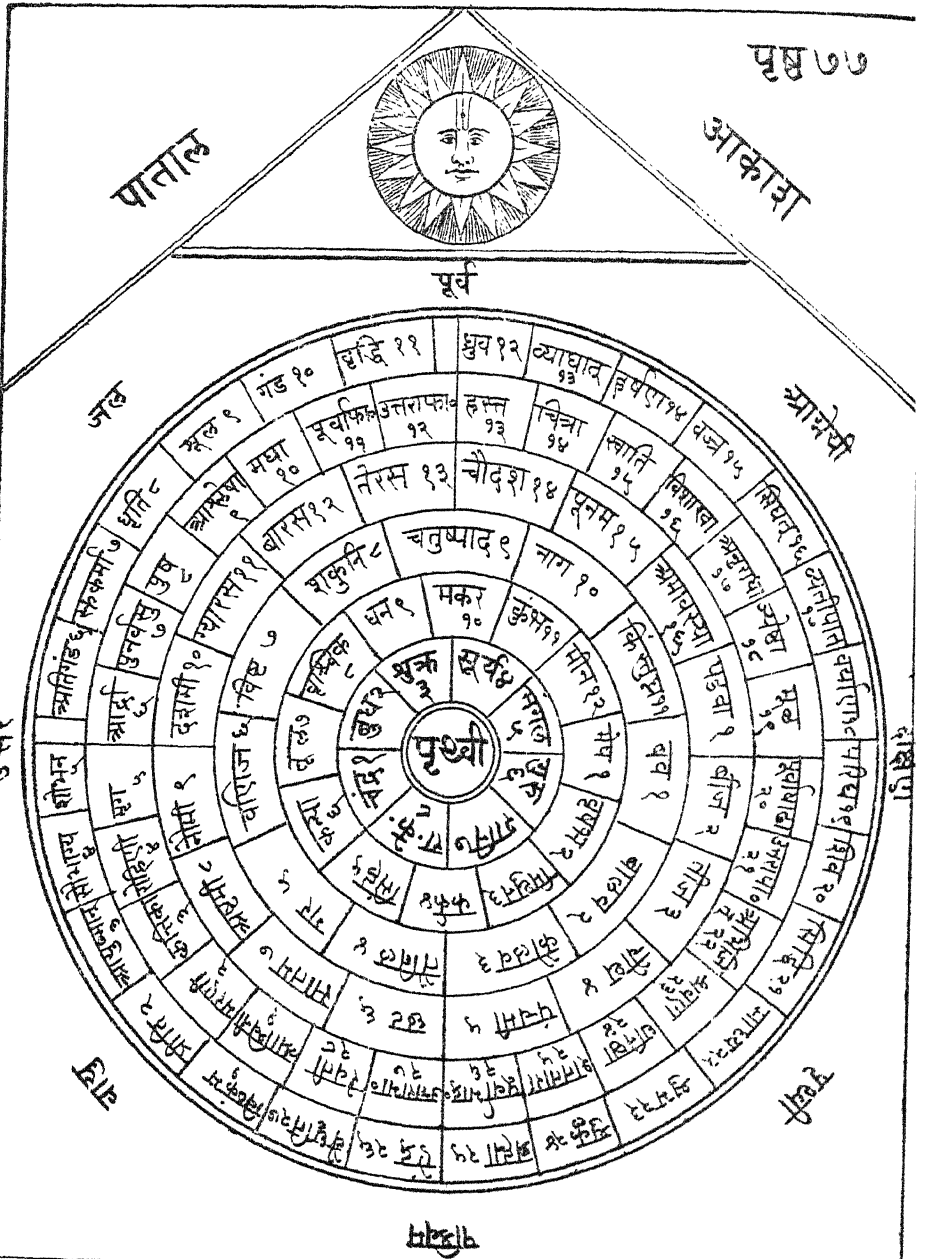
उत्तरायण						दक्षिणायन					
शरदकाल				वर्षाकाल				आतपकाल			
शिशिरऋतु		हेमंतऋतु		शरदऋतु		वर्षाऋतु		ग्रीष्मऋतु		वसंतऋतु	
फाल्गुन	माघ	पौष्य	मार्गशीर्ष	कार्तिक	आश्वीन	भाद्रपद	श्रावण	आषाढ	जेष्ट	वैशाख	चैत्र

ब्रह्मझाड पृष्ठ ८१
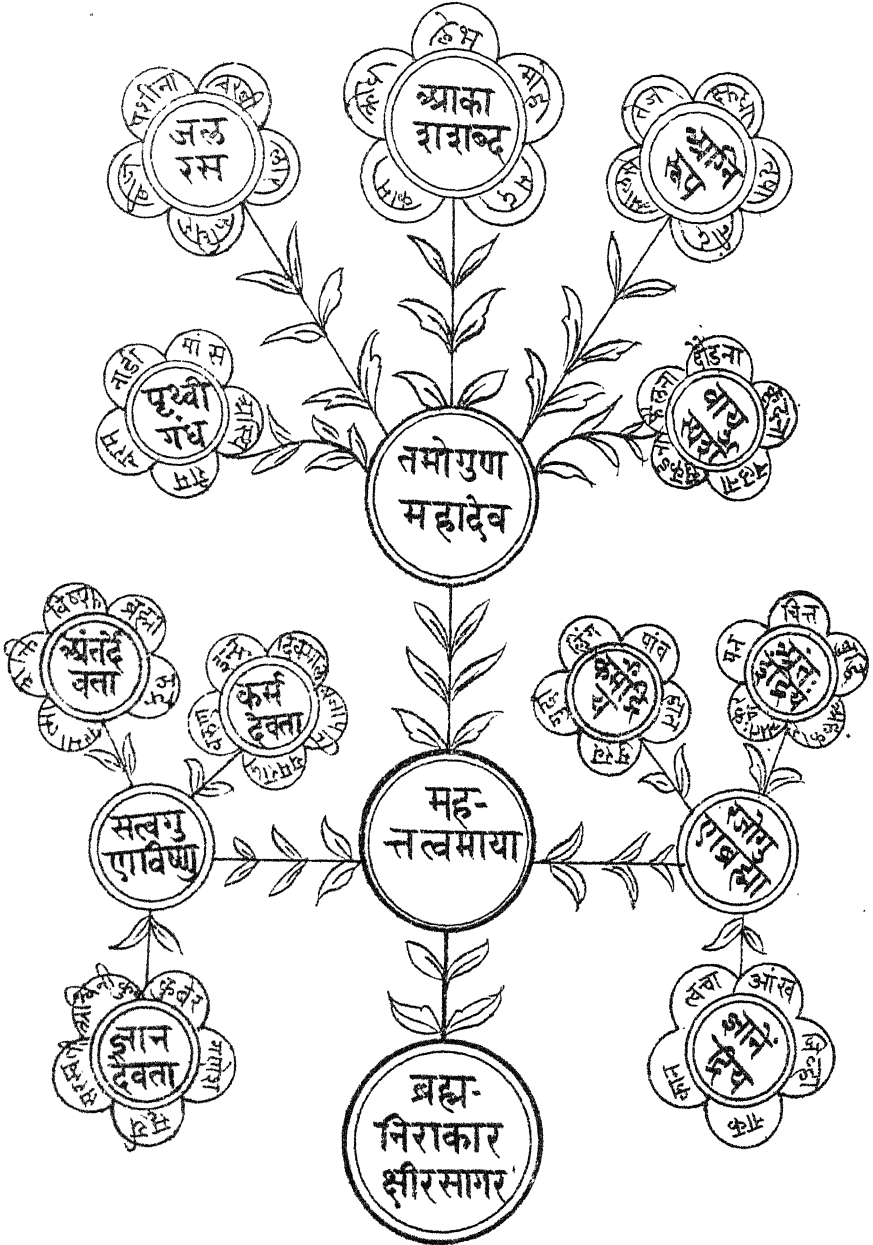
आकाशमें एक गुण शब्द ॥ वायुमें दोगुण शब्द, स्पर्श ॥ अग्निमें तीनगुण शब्द, स्पर्श, रूप ॥ जलमें चारगुण शब्द स्पर्श, रूप, रस ॥ पृथ्वीमे ५ गुण, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध ॥

यंत्र पंचदेव पृष्ठ ९६

नंबर	नामदेव	विष्णु	शक्ति	रुद्र	ब्रह्मा	गणेश
१	तत्व	आकाश	वायु	अग्नि	जल	पृथ्वी
२	वर्ण	श्वेत	नील	कृष्ण	रक्त	पीत
३	स्वाद	फिका	खाटा	चर्परा	खारा	मधुर
४	क्रिया	त्याग	साक्षी	प्रलय	पालन	उत्पत्ति
५	अहंकार	निराहम	श्वाहंम	सोहंम	कोहंम	अहंम
६	मुक्ति	निर्गुणमुक्ति	सायुजमुक्ति	सारुपमुक्ति	सामीपमुक्ति	सालोकमुक्ति
७	आनंद	ब्रह्मानंद	परमानंद	अद्वैतानंद	योगानंद	विषयानंद
८	शरीर	केवल	महाकारण	कारण	सूक्ष्म	स्थूल
९	गुण	निर्गुण	सगुण	तमोगुण	सत्वगुण	रजोगुण
१०	अवस्था	उन्मनी	तुर्या	सुषुप्ति	स्वप्न	जाग्रत
११	स्थान	ब्रह्मरंन्धर	भ्रमरगुफा	गुल्लाट	श्रीहाट	त्रिकूट
१२	स्वरूप	कर्ता	महत्तत्व	स्वयंजोती	हिरण्यगर्भ	वैराट
१३	वाहन	गरुड	सिंह	वृषभ	हंस	हस्त
१४	चाल	शेष	मीन	कप	विहंगम	पिपिल
१५	लोक	लोकालोक	सत्यलोक	कैलासलोक	वैकुंठलोक	मृत्युलोक
१६	प्रमाण	बिन्दु	अर्धचन्द्र	कुंडल	दंडक	ताडक

यंत्रलोकद्विप पृष्ठ १००

नंबर	नाम	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायू	आकाश	विज	शक्ति
१	आकाश लोक	सत्यलोक	तपलोक	जिनलोक	निजलोक	इंद्रलोक	भवरलोक	म्हरलोक
२	पाताल लोक	अतललोक	वितललोक	सुतल लोक	मीमानलल लोक	तलातल लोक	रसातल लोक	पाताल लोक
३	उपरलोक	ब्रह्मलोक	वैकुंठलोक	शिवलोक	सुरजलोक	देवलोक	पित्रलोक	सिद्धलोक
४	निचेलोक	मायालोक	यमलोक	गंधर्वलोक	यक्षलोक	किन्नर लोक	नागलोक	दैत्यलोक
५	शरीरमेनिराकारलोक	सभावी कला	अमरगुंफा	ब्रह्मरंध्र	उलट पलट	गुल्हाट	श्रीहाट	त्रिकूट
६	शरीरमेसाकारलोक उ·	ब्रह्मांड	नेत्र	कान	नाक	मुंह	कंठ	हृदय
७	शरीरमेनीचेलोक	हात	पेट	पीठ	पाव	लिंग	गुदा	नाभी
८	सप्तसमुद्र	नीरसमुद्र	क्षीरसमुद्र	दधिसमुद्र	क्षारसमुद्र	रत्नाकर समुद्र	मधुसमुद्र	घृतसमुद्र
९	दिपलोक	जंबुदीप	शंकरदीप	कुशादीप	कोंजदीप	शालमली दीप	श्वेतदीप	पुस्कर दीप
१०	शरीरदिप लोक	मेदा	अस्थ	सुरा	रक्त	मास	त्वचा	रोम
११	तारालोक	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनीश्वर
१२	सप्तऋषी	पुलाह	पुलीस्त	भारद्वाज	वशीष्ट	आंगीरा	भृगू	मरीच
१३	सप्तपुरी	अयोध्या	मथुरा	काशि	हरीद्वारतथा माया	नासकतथा कांची	उज्जेनतथा अवंती	द्वारका
१४	सप्तदेश	रूष	चिन	रूम	तुर्कस्थान	हिंदुस्थान	लबलख	खुराशान
१५	सप्तखान	सुनां	चांदी	लोहा	जस्त	कलई	तांबा	शीसा
१६	नौखंड	१ भारतखंड पूर्व मनिखंड इशान्य ८	२ परबरखंड आग्नेय सुवर्णखंड मध्य ९	३ नीराकार रामखंड द· काशीखंड १०	४ दक्षपालन खंड नैऋत्य	५ केतपाल खंड पश्चिम	६ हरिखंड वायव्य	७ पृथुखंड उत्तर

यंत्र षट् चक्र शरीर में पृष्ठ १३३

१३३
अनुहातचक्र हृदयमें
विशुद्धचक्र कंठमें

सूर्यकला.

किरनी १ ह्लालिनी २ दहनी ३ दीपिनी ४ जोतनी ५ तेजनी ६ इदपतिजंती ७ शशिप्रभा ८ सोसनी ९ तापनी १० लोहकी ११ दाहकी १२.

हं ३२ — अग्नचक्रनत्र में — शं ३४
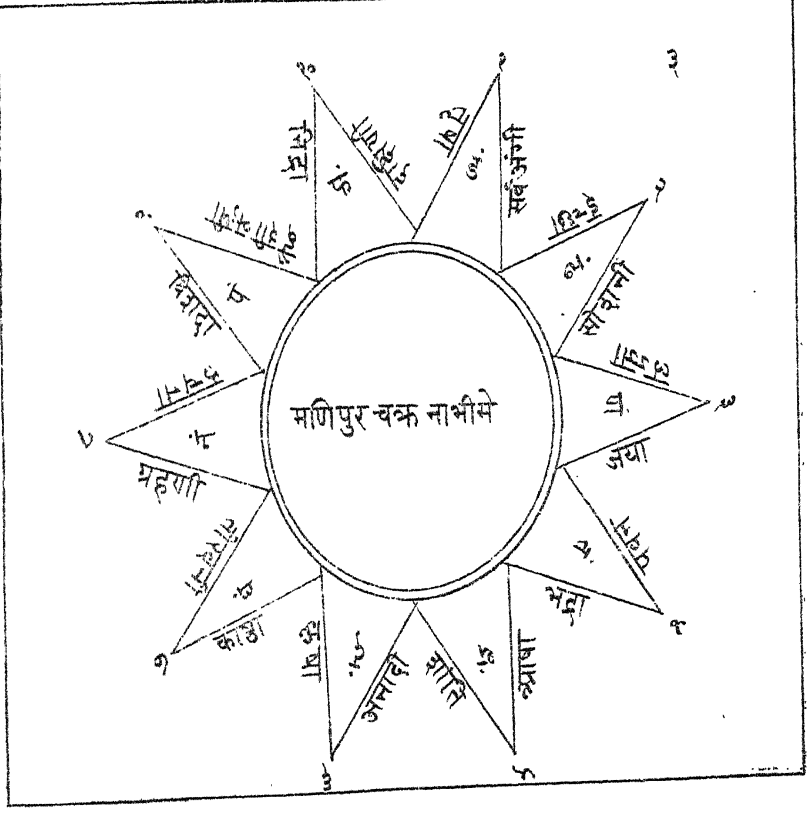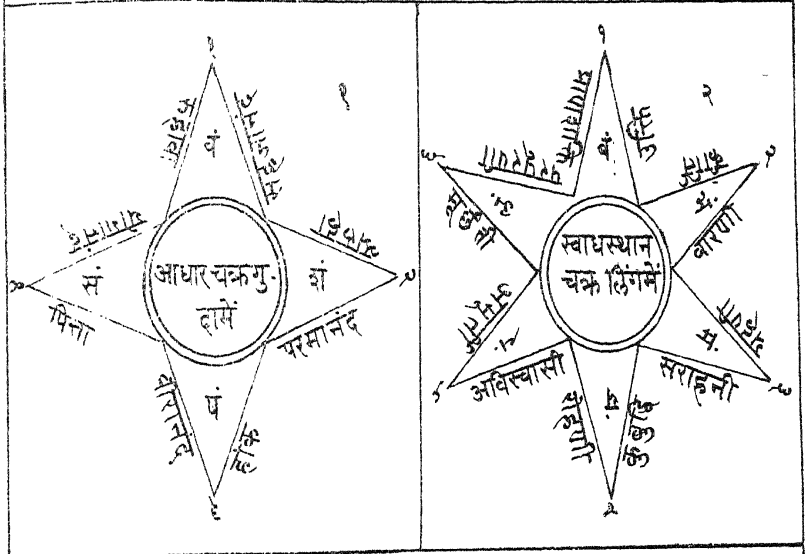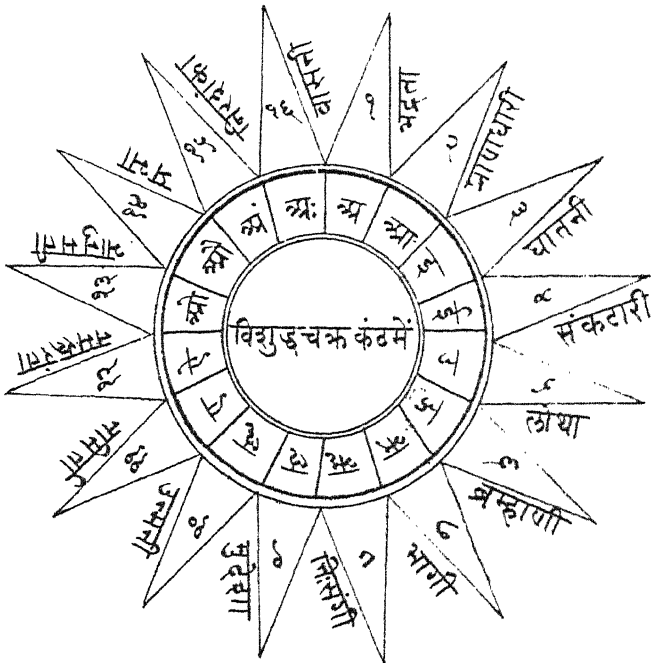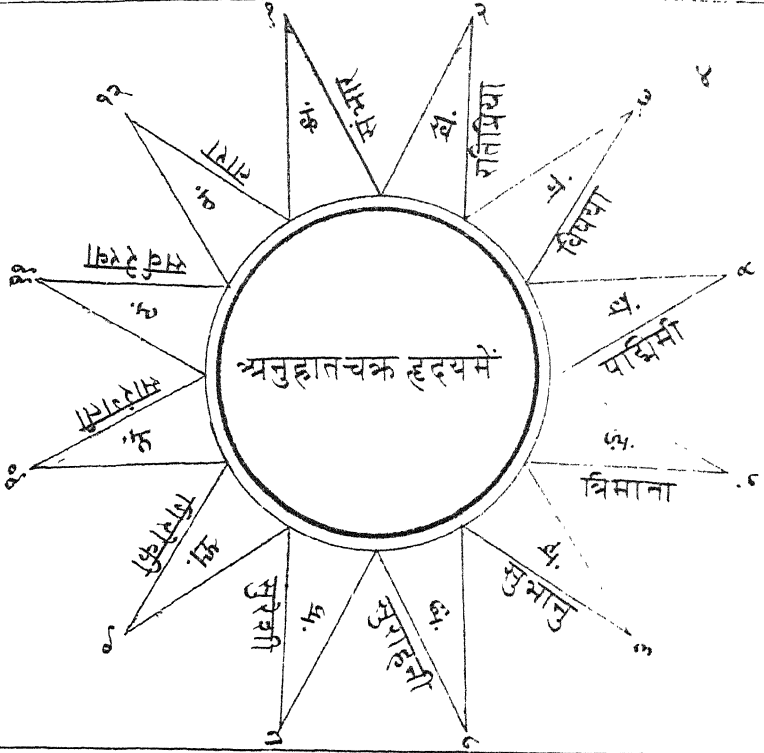
चंद्रकला.

पूर्वनी १ भद्रा २ अलह्लादी ३ सुनेरवी ४ कमोदनी ५ असोदनी ६ मोहनी ७ करसुदनी ८ चिदा ९ कामनी १० लक्ष्मी ११ व्यापनी १२ पद्मिनी १३ मतनी १४ वकाशी १५ उदाकी १६

॥ धारणा लक्षण पांच तत्वके जुदाजुदा ॥ पृथ्वीधारना चौकोर वः अक्षर पीत वरण जलमंडल तेजकरे प्राणाको वह स्तंबन करे ॥ जलधारणा बकार अक्षर चंद्रखंड कंठमें तेजकरे वहा स्तंबन करे ॥ अग्नधारणा त्रकोण फाः अक्षर पद्मराग अभाशइंद्रगूप तालुका मध्य रुद्रनिवास तेजकरे ॥
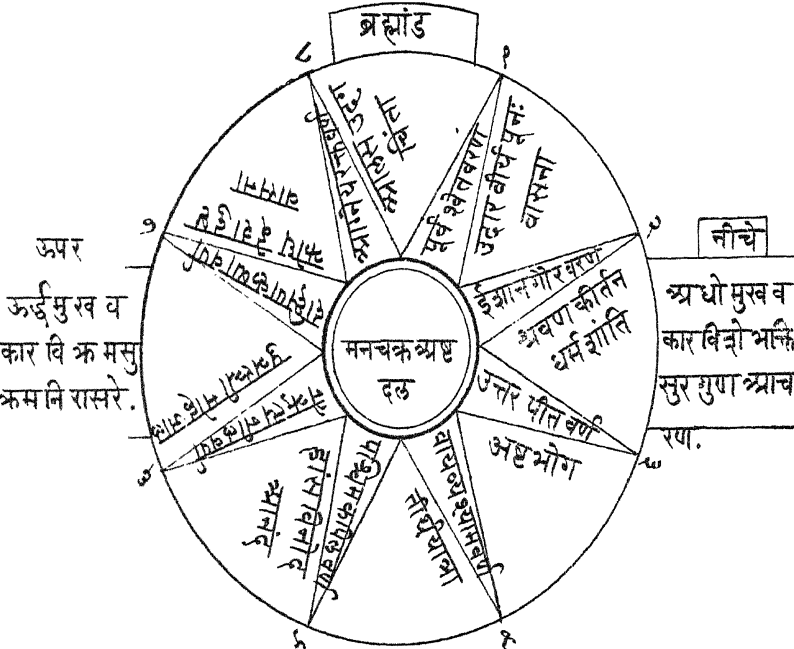
१३३ **ब्रह्मांड स्थान**

तेज वरण सोमनाथ देवता आदि शक्ति नारद [illegible] आदि [illegible] [illegible] मात्रा हरण गर्भ शरीर अजपाजाप अधोमुख गति ॥ वायु धारणा [illegible] [illegible] अक्षर षट्कोण मेघ वरण ईश्वर निवास खेचरी मुद्रा धारणा करै सिद्धि पावे ॥ आकाश धारणा ब्रम्ह रंध्र अकार विष्णु निवास हो [illegible] परम मुक्ति दाता॥ धारनाकानाम ॥ वहतनी पृथ्वी ॥ दाउनी जल ॥ दहनी अग्न ॥ ओपूनी वायु ॥ भ्रामनी आकाश ॥
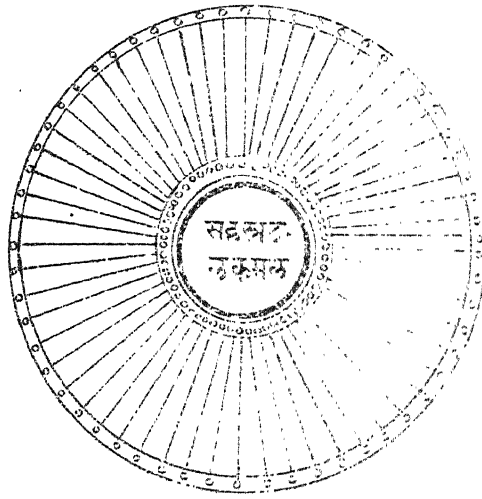
तालुस्थान सहस्त्रदल कमल [illegible] वरण सद्गुरु देवता [illegible] मकार मात्रामाया शरीर यथार्थ वेद्र निगमय अभिमान अजपाजाप १००० ॥ ध्यानवर्णन॥ पदरक्षा कुंभकमें मंत्र जपै अक्षरका ध्यानकरे ॥१॥ पिंडरक्षा षट्चक्रको और सद्गुरुका ध्यान करे ॥२॥ रूपरक्षा त्रिकुटी मध्यमें सूक्ष्म लिंगको ध्यानकरें पहले दीपजोत पीछे दीप मालिका उसके पीछे नक्षत्र मालिका उसके उपरांत बिजलीकी परकाश अंतमें अनंतकोट चंद्र सूर्यकी प्रकाश देखै दशोदिशा झलामल ज्योत प्रगट हो जाती हैं ॥३॥ रूपातीत शुन्य ध्यान रूपरेख नही- नीचेकी गति गगमें जानेकी आपीआप कुछ द्वैत नही ॥४॥ समाधीलक्षण॥ शीत ॥१॥ उष्ण ॥२॥ वर्षा ॥३॥ क्षुधा ॥४॥ मूर्छा ॥५॥ भ्रम ॥६॥ आलस ॥७॥ जागृत ॥८ स्वप्न ॥९॥ सुशोप्त ॥१०॥ कुछ रहे नही जैसे नमक-

दूध पानीमें मिल जाताहै उसीप्रमाणे भिन्न भाव रहे नहीं हर्ष शोक दुःख सुखमान अपमान ज्ञान अज्ञान जात कुल वरण आश्रम जीव ब्रह्मका भेद जाता रहे अखंड अद्वैत एक हो जाताहै.
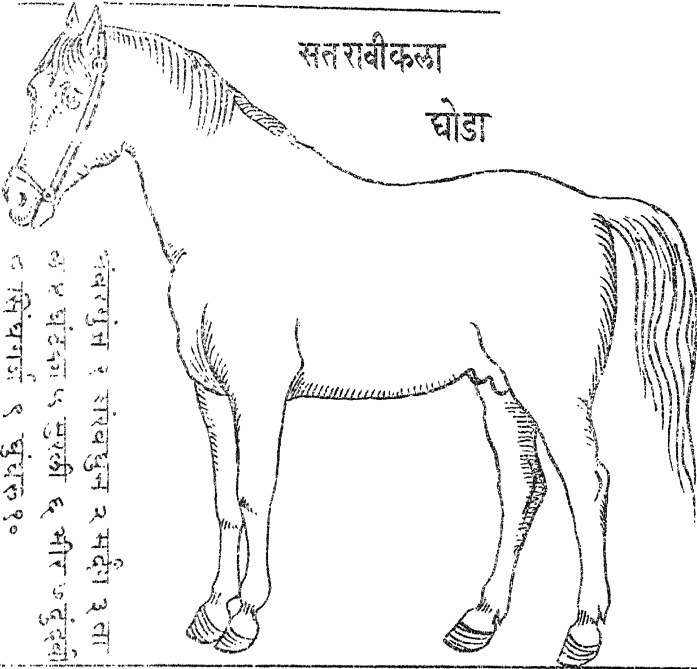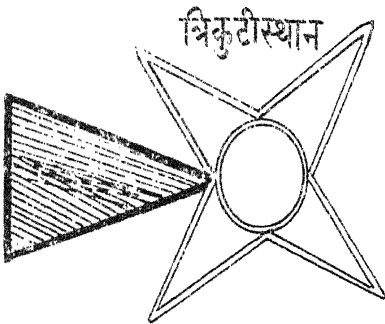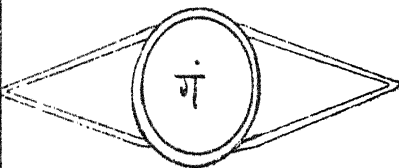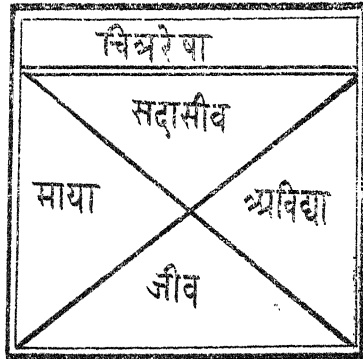
१३३
॥ यमदसप्रकार ॥ १ ॥ नेमदसप्रकार ॥ २ ॥ आसनदोप्रकार ॥ ३ ॥ व्रतपत्याआहार ॥ ४ ॥ प्राणायम ॥ ५ ॥ धारणा ॥ ६ ॥ ध्यान ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ यमके लक्षण दसहै ॥ प्रथमअहिंसा मन बचन कर्मसे दुःख नकरे ॥ १ ॥ दूसरालक्षण सत्यवो दो प्रकारका सत्य बोले ब्रह्म निराकारको सत्यजाने ॥ २ ॥ तीसरालक्षण असत्य तनमनसे चोरीनकरे ॥ ३ ॥ चौथालक्षण ब्रह्मचर्य आठप्रकारका कामरोके ॥ ४ ॥ पांचमा मैथुनआठप्रकारका ॥ सुमरण १ श्रवण २ दृष्टी ३ भाषण ४ प्रेम ५ स्पर्श ६ हांस ७ रत ८ कोत्यागकरे ॥ ॥ ५ ॥ छटवांलक्षण क्षमाकोदुष्टकी मारगारी कटुक बचन सहे ॥ ॥ ६ ॥ सातवा धृतकोलक्षण कालसे न डरे सदांकाल धैर्य राखै ॥ ७ ॥ आठवादयाको लक्षण सब जीवोको अपने समान जाने ॥ ८ ॥ नवां अरजूको लक्षण कोमलरहे मधुर बोले ॥ ९ ॥ दसवांलक्षण मिता आहार सात्विक अन्न सुद्ध पावे रागदोषत्यागे ॥ १० ॥ नेमको लक्षण दस प्रकार ॥ प्रथम लक्षण शब्द स्पर्श रूप रस गंधको त्यागे ॥ १ ॥ दूसरासतोषको लक्षण जो प्रालब्ध प्रमाण प्राप्तिहै उसपर सतोष रखै ॥ २ ॥ तीसरा आस्तिक लक्षण वेदगुरु

ऊपर

अधो शुन्य

बीच

मध्य सुन्य

शास्त्र बचनको माने ॥ ३॥ चौथा दानको लक्षण दो प्रकारका अ-
न्नवस्त्र जलसे पोषणाकरे ॥१॥ ज्ञान उपदेशाकरे ॥२॥ ४॥ पां-
चवा लक्षण पूजा सोला प्रकारसे पूजन करे प्रीत निष्काम रहे ॥५॥
छटवां लक्षण श्रवणको जो शब्द अपने कानमे
आवे उसका सुने हंसके प्रमाणपा
नी छोडकर दूध पीवै ॥ ६ ॥ सात
वा लाजको लक्षण गुरु संत घटकी लज्जारख्यै
॥ ७ ॥ आठवां दृढमति लक्षण मान अपमानको
समान जाने ॥ ८ ॥ नवांलक्षण जापको पवन पकडके मौन होक
रके जापकरे ॥ ९॥ द- शवां लक्षण होमको ब्रह्म
अग्नि योग अग्निको प्रगट करके मोहको ज-
लावे ॥ १० ॥ आस- न लक्षण दो प्रकारका
सिद्ध आसन ॥ १ ॥ पद्मासन ॥ २॥ वाये
पाऊ की एडी गुदाके फूल पर दवावे और दहना पांव लिंगके
ऊपर दवावें वो सिद्ध आसन है ॥ वाये पाउ पर दहना पाउ
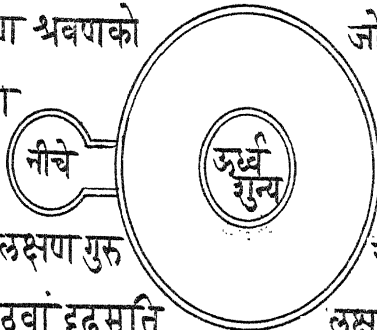
हाथभी उल

लक्षण तीनोंनाडीको जा ने दशवायुको जाने षट्
चक्रको जाने ये वि- स्तार संपूरण देख्यै पीछे
प्राणायामकरे इंडा नाडी वामस पुरककर
स्वासाको रोकै उसको कुंभक है पिंगला

ातं
ा-
मू,
ाद-
वार
ानां
न्मी-
ख्या-
ादश-
षिक-

दिखा-
ख्या से
यार है.
तिसहित
हरभाष्य
चन्द्रिका

नाडी दक्षिणसे रेचक करे बीजमंत्र संयुक्त स्वांदम पूरककरे॥ चोसठ कुंभक करे द्वात्रिंशत् रेचक करे पीछे विपरजे करे तथा पिंगलासे पूरक करे ३२ इडासे रेचक करे यह ऋषियोंका मतहै. गोरखमत छ चोपाईमे ऐसा है. सोहं सोहं सोहं हंसो ॥ सोहं सोहं सोहं अंसो १ स्वासा स्वासा सोहं जापं । सोहं सोहं आपै आपं ॥२॥ द्वादशमात्रा पूरक भरना ॥ द्वादशमात्रा कुंभक करना ॥३॥ द्वादशमात्रा रेचक जानं ॥पूर अपूर विपरजे ठानं ॥४॥ अधम मात्रा द्वादशजुगतं ॥ मध्यम मात्रा दोगुणा युगतं ॥५॥ उत्तम मात्रा त्रिगुणा कहीये ॥ प्राणायाम सो विरती लहीये ॥६॥ कुंभक आठ प्रकारका ॥ सूरजभेदन १ उजाई २ सीतकार ३ सीतली ४ भद्रका ५ भ्रामरी ६ मोरछा ७ केवल ८ यह आठ पवन औरोधनहै ॥ कुंभकनाम मुद्रा दस प्रकारकी है ॥ शुन्यमहामुद्रा १ महावेधक २ महावेधकखेचरी ३ उड्यानवेदक ४ मूलवेदक ५ बन्धजालिंदर ६ विप्रीत ७ क्रोणीपणा ८ जनोली ९ शक्ति १० ॥

यंत्र षट्चक्र योग समाधी पृ० १३३							
नंबर	नाम	आधारचक्र	स्वाधिष्टानच०	मनीपुरच०	अनुहातच०	विसुद्धच०	आग्निचक्र
१	अस्थान	गुदा	लिंग	नाभी	हृदय	कंठ	नेत्र
२	प्रमाणदल कमल	४	६	१०	१२	१६	२
३	वरण	पीत	रक्त	नील	कृष्ण	श्वेत	श्याम
४	देवता	गणेश	ब्रह्मा	विष्णु	रुद्र	जीव	परमहंस
५	शक्ति	सुद्धिबुद्धि	सावित्री	कमला	उमा	विद्या	इगलापिंगला सुसमना
६	ऋषी	ईश्वर	सूर्य	पवन	इंद्र	अग्नी	हंस
७	कला	कुरंम	उरमे	जोती	धुमरा	ज्वाला	सतरावी
८	मात्रा	आकार	हरिष	दीर्घ	पुलता	अर्ध	अनुराच
९	शरीर	विराटतथा अस्थूल	लिंगतथा सूक्षम	कारन	महाकारण	केवल	ज्ञान
१०	वाक्य	वैखरीजिव्हामें	मध्यमा कंठमें	पश्यंत हृदयमें	परानाभीमें	परमपरालिंगमें	अनुराच
११	वेद	रघुवेद	यजुर्वेद	श्यामवेद	अथर्वणवेद	सुख्मवेद	आकाशबाणी
१२	तत्वधारणा	पृथ्वी	जल	अग्नि	वायु	आकाश	शुन्य
१३	लिंग	आचार्य	गुरु	शिव	जंगम	जोति	सिद्ध
१४	मुद्रा	खेचरी	चाचरी	भोचरी	अगोचरी	उन्मनी	श्यामभवी
१५	पवन	अपान	समान	प्राण	उदान	वयान	मन
१६	मुक्ति	सालोक	सामीप	सारूप	सायुज्य	स्वयंभू	निर्गुण
१७	जाप	६००	६०००	६०००	६०००	१०००	२०००
१८	अवस्था	जागृत	स्वप्न	शिषोप्त	तुर्या	उन्मनी	उत्पत्तिइ स्थितीप्रलय
१९	अभिमान	विश्व	शरीर	राजस	आत्मा	ज्ञान	निरअभिमान
२०	आनंद	विश्यानंद	योगानंद	अद्वैतानंद	परमानंद	ब्रह्मानंद	नित्यानंद
२१	आसन	पद्मासन	सिद्धआसन	वज्रासन	कुरंमआसन	धनुषआसन	सिंहासन

यंत्रमुद्रा पृष्ट १३३

नंबर	नाम	खेचरी	भोचरी	चाचरी	अगोचरी	उन्मनी
१	मुकाम	जिव्हा	नाक	आख	कान	काम
२	स्वाद	खटरस्स	गंध	रूप	पाद	इंद्रिय
३	चाल	मीन	भ्रमर	वेग	मृग	गज
४	मुक्ति	सालोक	सामीप	सारूप	सायूज	स्वयंभू
५	शून्य	उर्ध	मध्य	अधो	चुथा	निरालंभ
६	गुण	रजोगुण	सत्तोगुण	तमोगुण	शुद्धसत्वगुण	परब्रह्मगुण
७	कला	८	२	१२	१४	१६
८	वायु	अपान	समान	प्राण	उदान	व्यान
९	संयुक्त	बुध	मन	चित्त	नाद	अनहद

बिजली

नामक ग्रन्थ (कीमत १२ आ०) केवल भाषाटीका सहित गुटका की० ८ आना । सो ये चार पुस्तकें अत्यंत सुंदर छोटे बडे अक्षरों में छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत हैं जिन महाशयों को लेने की इच्छा हो, वे शीघ्र सूचना करें।

मदनपालनिघंटु.

वैद्यजनों का परम सहायक और संपूर्ण द्रव्यों के नाम गुण बतानेवाला चमत्कारक प्राचीन ग्रन्थ भाषाटीकासहित छपकर तैयार है. ग्लेज कीमत २। रु० । रफ की० २ मात्र.

श्रीमद्भागवत भाषाटीकासहित.

यह पुराण ग्रंथ तो सब भारत वर्षमें प्रसिद्धही है सब पुराणोंमें श्रीमद्भागवत परम कठिन है जिसके अर्थविचारमें बडे बडे पंडित तथा शास्त्री लोगोंकीभी बुद्धि रुक जाती है औरभी महात्माओंने कहा है कि " विद्यावतां भागवते परीक्षा " (विद्वानोंकी भागवतमें परीक्षा) तस्मात् इसका वर्णन मनुष्यवाणीसे नहीं हो सक्ता । विशेष यह कि परमप्रिय सुमधुर ब्रजभाषामें श्रीमन्नारायणशास्त्रीजीने कीहुई " पदार्थमुक्तावली " नामक भाषाटीका सहित श्रीमद्भागवत चार प्रकारसे छपता है । जिसमें एकमें तौ **मूल और भाषाटीका** । दूसरे केवल भाषा, इसमें श्रीमद्भागवतके प्रत्येक अध्यायके आदि अंतका श्लोक लिखकर शेष श्लोकांक और महापुराणमें कथा कहनेवालोंके उपयोगी सब दृष्टांत पांच सो (५००) टिप्पणीरूपसे लगाकर इसका यथार्थ नाम **श्रीमद्भागवतभाषा** रक्खा गया है, यह पुस्तक पौराणिक लोगोंके सुभीतेके लिये खुले पत्रोंका रक्खा है। तीसरा प्रकार **श्रीमद्भागवतभाषा-शुकसागर** इस नामसे किया है, इसमेंभी ऊपर लिखे हुए प्रकार प्रत्येक अध्यायके आदि अंतका श्लोक आदि लगाकर भागवतके प्रेमी लोगोंके बाचनेके वास्ते जिल्द बनाई है । चौथा केवल **श्रीमद्भागवत मूल** यह पुस्तकभी पाठक लोगोंके वास्ते बडा अक्षर और खुले पत्रोंका है । इन चार प्रकारोंसे पंडित लोगोंसे पुनः पुनः शुद्ध करवाकर तृतीयावृत्ति हालमें छपती है ।

मुहूर्तचिन्तामणि--(भाषाटीकासहित) द्वितीयावृत्ति शुद्धतापूर्वक छपके तैयार है. की. १। रु० ।

षट्पंचाशिका भाषाटीकासहित, यह भाषाटीका बहुत विशाल सुबोध लिखी गई है. इसमें जिस जिस विषयकी अपेक्षा है ... और ग्रंथोंसे समावेश किया है और स्पष्टताके लिये के